



# ★ प्रशस्ति-संग्रह ★

( आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर के संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश,  
एवं हिन्दी भाषा के ग्रन्थों की ग्रन्थ तथा लेखक—  
प्रशस्तियों का अपूर्व संग्रह )

★

सम्पादक:—

श्री कस्तूरचन्द कासलीवाल एम. ए., शास्त्री

प्रकाशक:—

बन्धीचन्द गंगवाल

मंत्री—

प्रबन्ध कारिणी कमेटी

श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र महावीरजी

महावीर पार्क रोड

जयपुर

प्रथमावृत्ति

४०० प्रति

आवण वीर निर्माण सं० २४७६

वि० सं० २००६०

अगस्त १९५०

मूल्य

छह रुपया



पुस्तक — प्राप्ति स्थान

१—मंत्री कार्यालय

श्री दि. जैन अ. क्षेत्र श्री महावीरजी

महावीर पार्क रोड जयपुर (राजस्थान)

२—क्षेत्र कार्यालय

श्री दि. जैन अ. क्षेत्र श्री महावीरजी

श्री महावीरजी [ जिला जयपुर ]



मुद्रक—

भंवरलाल जैन न्यायतीर्थ,

श्री.वीर प्रेम,

मनिहारों का रास्ता, जयपुर।



# दो शब्द

—:०:—

यह लिखते हुये अत्यधिक दुःख एवं वेदना होती है कि आज भा० रामचन्द्रजी खिन्दूका मन्त्री अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी इस संसार में नहीं रहे। यदि वे होते तो वे ही इस पुस्तक के प्रकाशक बनते। इस प्रशस्ति-संग्रह को शीघ्र प्रकाशित देखने की उनकी अतिशय उत्कंठा थी। लेकिन काल के सामने किसी की भी नहीं चली, यही सोच कर सन्तोष कर लेना पड़ता है। श्री खिन्दूकाजी के हृदय में साहित्य प्रकाशन की कितनी प्रबल इच्छा थी—यह उनके प्रकाशकीय वक्तव्य से अच्छी तरह जाना जा सकता है। राजस्थान के जैन भण्डारों की विस्तृत सूची बनाने के बृहद् कार्य को प्रारम्भ तो वे कर गये; लेकिन दुःख है कि वे इसे पूर्ण नहीं देख सके। अब हमें साहित्य प्रकाशन के इस पवित्र कार्य को और भी तेजी के साथ करना है जिससे उनकी स्वर्गीय आत्मा को भी शान्ति मिल सके। मैं आशा करता हूँ मुझे समाज का अधिक से अधिक सहयोग मिलेगा जिससे राजस्थान के अज्ञात अवस्था में पड़े हुये साहित्य को प्रकाश में लाया जा सके।

बधीचन्द गंगवाल

जयपुर

मन्त्री—प्रबन्ध कारिणी कमेटी

ता० ३१-७-५०

दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी





## प्रकाशकीय

राजस्थान और विशेषतः जयपुर प्रान्त में दि० जैन मन्दिरों में बहुत सा प्राचीन साहित्य अज्ञात अवस्था में पड़ा हुआ है, किन्तु किस किस मन्दिर एवं ग्रन्थ भण्डार में कितनी संख्या में कौन कौन से शास्त्र विराजमान हैं, हमारे पास इतनी भी सूचना का संकलन नहीं है। इन ग्रन्थ भण्डारों में जो अमूल्य साहित्य बिखरा पड़ा है वह अपने उद्धार की वाट देख रहा है। राजस्थान में उपलब्ध जैन साहित्य के प्रकाशन एवं शोध की नितान्त आवश्यकता को ध्यान में रखकर दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी की प्रबन्ध कारिणि कमेटी ने अनुसंधान विभाग खोलने का विचार किया। सबसे पहिले प्रबन्ध समिति ने राजस्थान के नहीं, तो कम से कम जयपुर के जैन भण्डारों की एक संक्षिप्त सूची बनवाने तथा उनमें उपलब्ध उपयोगी साहित्य का प्रकाशन कराने का कार्य आरंभ किया। इसी के फलस्वरूप आमेर शास्त्र भण्डार जो भारत के प्रसिद्ध शास्त्र भण्डारों में गिना जाता है उसकी एक विस्तृत सूची प्रकाशित की गयी।

यह प्रशस्ति संग्रह भी इसी विभाग द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें केवल आमेर शास्त्र भण्डार के ही संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दी भाषा के उपलब्ध ग्रन्थों की प्रशस्तियों का ही संकलन है। ग्रन्थ प्रशस्तियों के साथ २ लेखक प्रशस्ति भी जोड़ दी गयी हैं जिससे ग्रन्थ के समय आदि के निर्णय में काफी सहायता मिलेगी। अपभ्रंश साहित्य की ४० से अधिक ग्रन्थों की प्रशस्तियां इस संग्रह में मिलेंगी जो इस साहित्य के महत्त्व को प्रकट करने में काफी सहायता देगी। इस संग्रह के प्रकाशन से जैन साहित्य की खोज में कितनी सहायता प्राप्त होगी इसका अनुमान तो विद्वानगण ही कर सकेंगे।

इस प्रकाशन के अतिरिक्त ५० अख्यराज कृत 'चतुर्दश गुणस्थान चर्चा' शीघ्र ही पाठकों के सामने आने वाली है। अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध महाकवि नयनन्दि कृत 'सुदर्शन चरित्र' का भी सम्पादन हो रहा है और उसके प्रकाशन का कार्य शुरू होने वाला है। जयपुर और राजस्थान के दि० जैन शास्त्र भण्डारों की विस्तृत सूची का कार्य भी प्रारम्भ होने वाला है जिससे कम से कम उपलब्ध ग्रन्थों का साधारण परिचय तो प्राप्त हो सकेगा। प्रबन्ध कारिणि के सामने साहित्य प्रकाशन की बहुत बड़ी योजना है। तामिल, तेलगू और कन्नड भाषा में जो महत्त्वपूर्ण साहित्य अप्रकाशित अवस्था में है उसे भी प्रकाशित करवा कर जन साधारण के लिये सुलभ बना देने की हार्दिक इच्छा है। इस दिशा में श्री० सी० एस० मल्लिनाथजी, भूतपूर्व सम्पादक अंग्रेजी जैनगजट द्वारा भी कार्य शुरू कर दिया है। इधर जैन समाज के प्रसिद्ध साहित्य सेवी बाबू जुगलकिशोरजी साहव मुख्तार देवबंद वालों से उनका श्री वीर सेवा मन्दिर श्री महावीरजी में लाने तथा वहीं बैठकर साहित्योद्धार का कार्य करने की बातचीत चल रही है। यदि वह बातचीत सफल हो गयी तो यह कार्य और भी तेजी से हो सकेगा-ऐसी आशा है।

साहित्योद्धार का कार्य कितना उपयोगी एवं आवश्यक है यह सब कुछ जानते हुये भी जैन समाज की इस सम्बन्ध में घोर उदासीनता बड़े दुःख की बात है। जो समाज देव शास्त्र गुरु का बराबर का दर्जा

मानती है, नित नये मन्दिर तथा नयी प्रतिमाओं का निर्माण कराती हैं और लाखों रुपया मेले प्रतिष्ठादि कार्यों में प्रतिवर्ष व्यय करती है, उस समाज के लिये किसी एक ग्रंथ की १००० कापी भी नहीं खरीद सकना कितनी लज्जा की बात है। इस तरफ समाज का लक्ष्य होना ही चाहिये। यदि नये प्रकाशित ग्रन्थोने वाले थों की १००० प्रतियों में से ५०० भी ग्रन्थ के छपते ही विक्रि जावें तो भी बहुत से ग्रन्थों का उद्धार हो सकता है इसलिये समाज से मेरी नम्र प्रार्थना है कि जो भी ग्रन्थ प्रकाशित हों उसकी एक एक कापी हर एक शास्त्र भण्डार तथा पंचायती मन्दिरों में अवश्य विराजमान करें — जैन धर्म की स्थिरता एवं उन्नति का यह सबसे बड़ा साधन है। आशा है कि हमारी धर्मप्राण समाज इस तरफ अवश्य ध्यान देगी और साहित्य प्रचार के पवित्र कार्य में सहयोग देकर साहित्य सेवियों का उत्साह बढ़ावेगी

जयपुर  
तारी १-६-५०

विनीत  
रामचन्द्र खिन्दूका  
मंत्री प्र० का० कमेटी  
दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

## प्रस्तावना

प्राचीन काल में मुद्रण यन्त्र (छापाखाना) के आविष्कार के पहिले मनुष्य ने पुस्तकें (तन्त्रिपत्र व तांडपत्र) तथा कागजों पर हाथ से लिख लिख कर ही अपने साहित्य एवं ज्ञान की वृद्धि की थी। उस समय भी भारत में सैकड़ों एवं हजारों विद्वानों ने जन्म लिया और अपनी लेखनी से भारतीय साहित्य के सभी अंगों को पूर्ण किया। हाथ से लिखने के उस युग में शास्त्र भण्डारों एवं पुस्तकालयों की संख्या पर्याप्त थी। प्रत्येक नगर एवं गांव में मन्दिरों तथा अन्य धर्मस्थानों में शास्त्र भण्डार होते थे जिनका प्रत्येक मनुष्य पठन पाठन के लिये उपयोग कर सकता था।

जैनाचार्यों ने दान के चार भेदों में शास्त्रदान को सम्मिलित किया और इसी के सहारे ज्ञान के विशिष्ट साधन पुस्तकों के लिखने लिखवाने को श्रावकों के दैनिक जीवन में उतारा। जिस तरह मन्दिरों को बनवाने एवं प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा करवाने में पुण्यलाभ बतलाया उसी प्रकार शास्त्रों को लिखकर अथवा लिखवा कर शास्त्रभण्डारों को भेंट करने में भी कम पुण्यलाभ नहीं बतलाया। यही नहीं, किन्तु जितनी भक्ति व श्रद्धा उपास्य देवताओं में रखने के लिये उपदेश दिया उतनी ही श्रद्धा व भक्ति शास्त्रों के प्रति भी प्रदर्शित करने को कहा। जैनाचार्यों के इस उच्चतम उपदेश के कारण ही आज हमें प्रत्येक मन्दिर में शास्त्रभण्डार के दर्शन होते हैं अन्यथा हजारों वर्षों से राध्याश्रयहीन जैन धर्म का साहित्य आज इस विशाल मात्रा में नजर नहीं आता। श्रद्धालु श्रावकों ने आचार्यों के इस उपदेश को अक्षरशः पालन किया और अपने जीवन अथवा द्रव्य का बहुते भाग इस पुण्य कार्य में भी व्यतीत किया।

शास्त्र लिखने और लिखवाने में साधुओं और गृहस्थों का समान हाथ रहा है। साधुओं ने हजारों शास्त्र लिखकर जैन वाङ्मय की वृद्धि की तथा श्रावकों ने शास्त्रों की प्रतिलिपियां करवाकर उसका अत्याधिक प्रचार किया और साधुओं से अनुरोध करके नवीन साहित्य का निर्माण भी करवाया। जैनों का अधिकांश अपभ्रंश एवं हिन्दी साहित्य का निर्माण इन्हीं श्रावकों के अनुरोध एवं भक्ति का परिणाम है।

दो प्रकार की प्रशस्तियां इस संग्रह में दी गई हैं। एक तो वे जो स्वयं कवि अथवा ग्रन्थकर्त्ता द्वारा लिखी गयी हैं तथा दूसरी वे जो लिपिकारों ने लिखी हैं। पहिली का नाम ग्रन्थ प्रशस्ति तथा दूसरी का नाम लेखक प्रशस्ति है। ग्रन्थ प्रशस्ति में कवि का परिचय, भट्टारक परम्परा का उल्लेख, तत्कालीन भट्टारक का नाम; देश व स्थान व समय का निर्देश तथा वहां के शासक का परिचय आदि दिये हुये होते हैं। लेखक प्रशस्ति में सबसे पहिले समय, फिर ग्राम व नगर का नाम, वहां के शासक का नाम, उसके पश्चात् भट्टारक परम्परा का उल्लेख तथा तत्कालीन भट्टारक का नाम, इसके पश्चात् लिपि करवाने वाले का विस्तृत वंश-परिचय, लिपि किस निर्मित से करायी गयी और अन्त में लिपि का नाम दिया हुआ मिलता है। किसी प्रशस्ति में निर्दिष्ट बातों से कम अथवा ज्यादा का भी वर्णन मिल जाता है।

ग्रन्थ कर्त्ता जब साधु अथवा भट्टारक होते हैं तो वे अपना वंश परिचय नहीं लिखते किन्तु जिस आचार्य अथवा भट्टारक के शिष्य होते हैं उसका ही परिचय लिखते हैं। संस्कृत ग्रन्थों की अधिकांश ग्रन्थ प्रशस्तियां इसी

प्रकार की हैं। यही नहीं किन्तु इनके लेखकों ने श्रवकों के अनुरोध का भी बहुत कम उल्लेख किया है। इस दिशा में अपभ्रंश ग्रन्थों की प्रशस्तियां बड़े महत्त्व की हैं। इन ग्रन्थ प्रशस्तियों में कवियों अथवा ग्रन्थकर्त्ताओं ने अपने परिचय से भी अधिक उन श्रावकों का परिचय लिखा है, जिनके अनुरोध से उन्होंने ग्रन्थ का निर्माण किया था। उदाहरणार्थ महाकवि श्रीधर ने अपने पार्श्वनाथ चरित्र में श्रावक नट्टल साह का जो सुन्दर वर्णन लिखा है वह पठनीय है। श्रीधर ने ही नहीं किन्तु महाकवि पुष्पदन्त, वीर, नयनन्दि, श्रीचन्द्र, यशःकीर्ति, धनपाल, रङ्गू, माणिक्यराज आदि सभी ने श्रावकों का बड़ा ही सुन्दर परिचय लिखा है। इस प्रकार हिन्दी ग्रन्थों की प्रशस्तियां भी कम महत्त्व की नहीं हैं। अधिकांश प्रशस्तियों में कवियों और लेखकों ने अपना अच्छा परिचय लिखा है। हिन्दी और अपभ्रंश भाषा में ग्रन्थ सनाभि का भी समग्र प्रायः सभी लेखकों ने दिया है।

इन सबके अतिरिक्त ग्रन्थ प्रशस्तियों में ग्रन्थकारों ने अपने पूर्ववर्ती आचार्यों, लेखकों का भी नामोल्लेख किया है जो बड़े महत्त्व का है। इन पूर्ववर्ती आचार्य-लेखकों का उल्लेख संस्कृत ग्रन्थ में कम एवं अपभ्रंश साहित्य में अधिक हुआ है। संस्कृत ग्रन्थों में पूर्ववर्ती आचार्यों का उल्लेख करने वालों में ज्ञानभूषण, नेमिदत्त एवं श्रुतसागर आदि प्रमुख हैं तथा अपभ्रंश साहित्य में नयनन्दि, श्रीचन्द्र, हरिपण, कनकामर, तथा धनपाल आदि प्रमुख हैं। महाकवि धनपाल ने तो नामोल्लेख के अतिरिक्त उन आचार्यों की कृतियों का भी उल्लेख किया है। महाकवि नयनन्दि ने अपने सकलविधि निधान काव्य में जैनतर विद्वानों के नामों का भी उल्लेख किया है जो इतिहास की दृष्टि से बड़े महत्त्व की वस्तु है। जैनतर विद्वानों के नामों में वररुचि, वामन कालिदास, मयूर, श्रीहर्ष, शेखर, पद्मजलि आदि प्रमुख हैं। संस्कृत भाषा के ग्रन्थों में किसी किसी ग्रन्थकर्त्ता ने अपनी अन्य २ कृतियों का भी उल्लेख किया है और इस दिशा में भट्टारक शुभचन्द्र प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

इस संग्रह में केवल आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर में उपलब्ध शास्त्रों की प्रशस्तियों का ही संग्रह है। भण्डार में सभी प्रतियां कागज पर ही लिखी हुई हैं। सन् १३६१ में लिखित प्रति भण्डार में सबसे प्राचीन हस्तलिखित प्रति है। इस भण्डार के शास्त्रों की प्रतिलिपियां भारत के प्रायः सभी ग्राम व नगरों में लिखी गयी हैं और फिर वहां से इस भण्डार को भेंट स्वरूप दी गयी हैं। दक्षिण में बीजवाड़ा तथा सिकन्दराबाद, उत्तर में लाहौर तथा मुल्तान, पूर्व में ढाका और पश्चिम में गुजरात आदि प्रान्त एवं नगरों में लिखित प्रतियों का भण्डार में संग्रह है। इससे इस भण्डार की महत्ता को काफी अच्छी तरह से समझा जा सकता है। साधारण रूप से दिल्ली, आगरा, नागपुर, ग्वाल्हियर तथा जयपुर प्रान्त में लिपिवद्ध प्रतियों का संग्रह है। बैलगाड़ियों के उस युग में तथा मुगलों के कठोर शासन में भी श्रद्धालु श्रावकों ने जैन साहित्य की कितनी वृद्धि की तथा उसे सुरक्षित रखा यह हमारे लिये किनने गौरव की बात है।

भाषा के अनुसार प्रशस्तियों को तीन भागों में बांटा गया है: प्रारम्भ में संस्कृत ग्रन्थों की प्रशस्तियां दी गयी हैं, तत्पश्चात् प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा की प्रशस्तियां आती हैं तथा अन्त में हिन्दी ग्रन्थों की प्रशस्तियों का संग्रह है। ग्रन्थ प्रशस्ति के साथ लेखक प्रशस्ति भी लगा दी गयी है जिससे ग्रन्थ की कितनी विषय कब और कहां कहां हुई इस परिचय के साथ २ ग्रन्थ निर्माण के समय का भी अनुमान लगाया जा

सकता है। अब तीनों भागों का संक्षिप्त परिचय पाठकों के सामने उपस्थित किया जाता है—

### संस्कृत विभाग—

इसमें ५९ ग्रन्थ-प्रशस्तियों एवं ५० लेखक-प्रशस्तियों का संग्रह है। इन प्रशस्तियों में जिनसेन, अमितिगति एवं आशाधर आदि प्राचीन आचार्यों को छोड़ कर शेष १५वीं शताब्दी से लेकर १८वीं शताब्दी तक के विद्वानों द्वारा निर्मित ग्रन्थों की प्रशस्तियों का ही संकलन है। इन विद्वानों में सकलकीर्ति, शुभचन्द्र, सकलभूषण, ज्ञानभूषण, धर्मकीर्ति, मेधावी, सोमकीर्ति, रायमल्ल, नेमिदत्त, जिनदास, ज्ञानकीर्ति आदि प्रमुख हैं। इन विद्वानों का बहुत कुछ परिचय इन प्रशस्तियों के आधार पर एकत्रित किया जा सकता है। अधिकांश विद्वानों ने साधु अवस्था धारण करने के पश्चात् ग्रन्थ निर्माण किया था इसलिये अपनी गृहस्थ अवस्था का परिचय कुछ भी नहीं लिखा। गत ५०० वर्षों में इन विद्वानों ने संस्कृत साहित्य की अत्यधिक सेवा की है। हिन्दी के लगातार जनप्रिय बनते रहने पर भी इन विद्वानों ने संस्कृत साहित्य का निर्माण करके संस्कृत पठन पाठन के प्रति प्रेम ही प्रदर्शित नहीं किया किन्तु अपनी विद्वत्ता का भी परिचय दिया। इस युग में पुराण एवं कथा साहित्य ही अधिक लिखा गया। इससे ऐसा मालूम होता है कि उस युग में भी साधारण जनता सिद्धान्त ग्रन्थों के स्वाध्याय में उतनी दिलचस्पी नहीं लेती थी जितनी पुराण एवं कथा साहित्य के पठन पाठन में लेती थी। इसी से विद्वानों ने भी इस प्रकार साहित्य के द्वारा ही सिद्धान्त एवं पौराणिक ज्ञान को जीवित रखने का एकमात्र उपाय समझा।

### प्राकृत अपभ्रंश-विभाग—

हिन्दी भाषा के पूर्व अपभ्रंश बोलचाल की भाषा होने के कारण जैनाचार्यों ने श्रावकों के अनुरोध से इस भाषा में अपरिमित साहित्य का निर्माण किया। इसलिये जितना अपभ्रंश साहित्य जैनाचार्यों द्वारा लिखा गया है उसका एकांश भी अन्य विद्वानों द्वारा लिखा हुआ नहीं मिलता। इस संग्रह में अपभ्रंश के ४९ ग्रन्थों की प्रशस्तियां दी गयी हैं। इन ग्रन्थ प्रशस्तियों में अपभ्रंश भाषा के प्रायः सभी विद्वानों का परिचय मिल सकता है। अपभ्रंश भाषा के इन आचार्यों में स्वयंभु, पुष्पदंत, पद्मकीर्ति, वीर, नयनन्दि, श्रीधर, श्रीचन्द्र, हरिपेण, अमरकीर्ति, यशःकीर्ति, धनपाल, श्रुतकीर्ति, रङ्गू, माणिक्यराज आदि प्रमुख हैं। अपभ्रंश भाषा के साहित्य का अधिकांश निर्माण १३वीं शताब्दी तक ही हुआ है यद्यपि इसके पश्चात् भी रङ्गू, यशःकीर्ति, धनपाल, श्रुत कीर्ति, और माणिक्यराज ने १६वीं शताब्दी तक इस भाषा में खूब साहित्य लिखा है। भण्डार में अपभ्रंश ग्रन्थों की जितनी प्रतियां हैं वे प्रायः सभी १७वीं शताब्दी तक की हैं। अधिकांश प्रतियां १६वीं और १७वीं शताब्दी की हैं। यह उस समय भी अपभ्रंश का जनप्रिय बना रहना सिद्ध करता है। ग्रन्थ प्रशस्तियां प्रायः सभी विपद एवं विस्तृत हैं। सभी कवियों ने अपने आश्रयदाता श्रावकों का विशद एवं सुन्दर परिचय लिखा है। अपभ्रंश भाषा के अधिकतर विद्वान गृहस्थ थे इसलिये इन्होंने अपने कुल एवं जाति का भी अच्छा परिचय लिखा है। अमेरशाख भण्डार अपभ्रंश-साहित्य-संग्रह के लिये भारत में सबसे आगे है। इस भण्डार में किसी ग्रन्थ की तो दस दस प्रतियां तक मिलती हैं। कुछ ऐसी भी प्रतियां हैं जो भारत के अन्य



भण्डारों में अभी तक नहीं मिली हैं अथवा जिनकी भारत में एक-दो प्रतियां ही हैं। इनमें सकलविधि विधान (नयनंदि), बाहुबलि चरित्र (धनपाल) तथा परमेष्ठि प्रकाशसार (श्रुतकीर्ति) आदि उल्लेखनीय हैं। भण्डार में प्राकृत साहित्य तो काफी मात्रा में है किन्तु प्राकृत ग्रन्थों की प्रशस्तियां बहुत ही कम हैं—इसीलिये इनका अधिक संग्रह नहीं दिया जा सका।

### हिन्दी विभाग—

हिन्दी भाषा की ८८ पुस्तकों की प्रशस्तियों का संग्रह दिया गया है। १५वीं शताब्दी से पूर्व की भण्डार में कोई रचना नहीं है। भट्टारक सकलकीर्ति द्वारा निर्मित 'आराधनासार प्रतिबोध' प्रशस्ति संग्रह में हिन्दी की सबसे पुरानी रचना है। १६वीं शताब्दी के प्रमुख कवियों में जिनदास, भट्टारक ज्ञानभूषण, धर्मदास, चतुर्म्मल एवं ठक्कुरसी की रचनायें उल्लेखनीय हैं। इन रचनाओं में धर्मोपदेश श्रावकाचार (धर्मदास) तथा पंचेन्द्रिय बोल (ठक्कुरसी) दो रचनायें भाषा और शैली की दृष्टि से भी उत्तम हैं। १७वीं शताब्दी में पद्य के साथ-साथ गद्य के भी दर्शन होते हैं। पांडे राजमल्ल कृत समयसार भाषा की रचना संवत् १६८० के आस पास हुई थी। इस रचना में हमें आज से ४०० वर्ष पूर्व की हिन्दी गद्यशैली के दर्शन होते हैं। अखयराज कृत चतुर्दशगुणस्थानचर्चा आदि कृतियां भी इसी शताब्दी की रचनायें हैं। १७वीं शताब्दी के प्रमुख कवियों में ब्रह्म रायमल्ल, बनारसीदास, रूपचन्द, त्रिभुवनदास, कुसुमचन्द्र आदि उल्लेखनीय हैं। इन सभी कवियों की कृतियां सभी दृष्टियों से उत्तम हैं। १८वीं शताब्दी में गद्य साहित्य खूब लिखा गया। ऐसा मालूम पड़ता है कि जन साधारण में गद्य की ओर रुचि बढ़ रही थी। गद्य लेखकों में पांडे रूपचन्द, हेमराज, दीपचन्द कासलीवाल आदि हैं। इन लेखकों ने हिन्दी गद्य में अनेक ग्रन्थों का अनुवाद ही नहीं किया; किन्तु दीपचन्दजी ने तो स्वतन्त्र रचनायें भी लिखीं। इसी प्रकार इस शताब्दी में पद्य साहित्य में भी उत्कृष्ट रचनायें मिलती हैं। इनमें भैरव्या भगवतीदास एवं भूधरदास आदि की रचनायें उल्लेखनीय हैं। इसके आगे की रचनायें भण्डार में बहुत ही कम हैं तथा उनमें कोई विशेष उल्लेखनीय नहीं है।

### भट्टारक इतिहास—

जैन साहित्य के निर्माण में भट्टारकों का प्रमुख हाथ रहा है। प्राचीन काल में इनका अधिकांश समय साहित्य निर्माण में ही व्यतीत होता था। एक-एक भट्टारक की अधीनता में बहुत से शिष्य रहा करते थे। इनका कार्य पठन पाठन के अतिरिक्त ग्रन्थों की प्रतिलिपियां करना भी होता था। भट्टारक गण श्रावकों को उत्साहित एवं प्रेरित किया करते थे जिससे श्रावकगण प्रायः व्रतविधान समाप्त करने पर अथवा अन्य समय पर ग्रन्थों की प्रतिलिपियां करवा कर शास्त्र भण्डारों को भेंट करते थे। जब कोई भट्टारक नवीन रचना का निर्माण करते तब तो उसमें अपने से पूर्व के प्रायः सभी प्रमुख भट्टारकों का परिचय लिखते थे। यही नहीं; किन्तु जब उनके शिष्य भी किसी ग्रन्थ की प्रतिलिपि करते तब भी अपने गुरु भट्टारक की परम्परा का उल्लेख करते थे। प्रशस्ति-संग्रह में इस सम्बन्ध में काफी साहित्य मिलता

है। संग्रह में अधिकांश प्रशस्तियां एवं लेखक-प्रशस्तियां आचार्य कुन्दकुन्द, भट्टारक पद्मनन्दि तथा शुभचन्द्र आम्नाय में होने वाले भट्टारकों द्वारा लिखी हुई मिलती हैं। यद्यपि इनमें भी आगे चलकर कितनी ही नवीन भट्टारक परम्पराओं का जन्म होता है, उदाहरणार्थ भट्टारक सकलकीर्त्ति ने आचार्य कुन्दकुन्द एवं भट्टारक पद्मनन्दि को ही आदि मान कर एक नवीन परम्परा को जन्म दिया तथा इसके पश्चात् होने वाले सकलकीर्त्ति के सभी पट्टधर शिष्यों ने उसी प्रकार भट्टारक परम्परा का उल्लेख किया। इसके अतिरिक्त सेनगण, पुष्करगण एवं विद्यागण में होने वाले भट्टारकों का भी काफी अच्छा परिचय उपलब्ध होता है।

### जैन समाज की प्रमुख जातियाँ—

उत्तर भारत में खण्डेलवाल और अग्रवाल इन्हीं दो जातियों का जैन साहित्य की रक्षा एवं वृद्धि में विशेष हाथ रहा है। राजस्थान में प्रारम्भ से ही खण्डेलवाल जाति का प्रभुत्व रहा इसलिये यहाँ के साहित्य निर्माण एवं प्रचार का अधिकांश श्रेय इसी जाति को है। अग्रवाल जाति का दिल्ली, आगरा, ग्वालियर आदि स्थानों में व्यापक प्रभाव रहा है। अपभ्रंश साहित्य के निर्माण का अधिकांश श्रेय इसी जाति को दिया जा सकता है। अपभ्रंश ग्रन्थों के बहुत से लेखक भी इसी जाति में उत्पन्न हुये थे। प्राचीन काल में अग्रवाल जाति के लोगों का सारे भारत पर प्रभाव था। इस जाति का एक हजार वर्ष का इतिहास तो प्रशस्तियों के आधार पर तैयार किया जा सकता है। श्रीधर ने १२वीं शताब्दी की रचना में जिस नट्टल साह की प्रशंसा की है उसने भी इस जाति को सुशोभित किया था। कवि के अनुसार नट्टल साह का प्रभाव कलिंग, द्राविड़, कर्नाटक, महाराष्ट्र, पंचाल, सिंधु, गौड़ आदि सभी देशों में व्याप्त था। महा पंडित रङ्ग ने अपनी अधिकांश रचनायें इसी जाति में उत्पन्न होने वाले श्रावकों के अनुरोध से की थीं। इन दोनों जातियों के अतिरिक्त बघेरवाल, श्रीमाल, पुरवाल, लमेचू, जैसवाल आदि जातियों में उत्पन्न श्रावकों द्वारा भेंट दिया हुआ साहित्य भी काफी संख्या में मिलता है। इसी प्रकार इत्थाकु, तोमर, चालुक्य, राठौर आदि क्षत्रिय वंश के एवं कायस्थ, माथुर आदि अन्य जातियों के महानुभावों ने भी साहित्य प्रचार में काफी सहयोग दिया है।

पाठकों की साधारण जानकारी के लिये प्रशस्ति-संग्रह में आये हुये आचार्य-लेखकों एवं कवियों का अति संक्षिप्त परिचय भी उपस्थित किया जा रहा है—

### संस्कृत भाषा के विद्वान्

१. भट्टाकलंकदेव—जैनधर्म के सुविख्यात सैद्धान्तिक एवं दार्शनिक आचार्यों में आप अग्रगण्य हैं। आपके जीवन के सम्बन्ध में अनेक कहानियाँ प्रचलित हैं। बौद्ध दर्शन के उत्कर्ष काल में आपने जैन दर्शन को जीवित ही नहीं रखा किन्तु उसे अजेय एवं उत्कर्षमय बना दिया। आपने संस्कृत में अनेक ग्रन्थों की रचना की है। इनकी राजशार्तिक, अष्टशती, न्यायविनिश्चयालंकार आदि प्रसिद्ध रचनायें मिलती हैं।



आप ११वीं शताब्दी के महा विद्वान् थे।

२. अमितिगति—परमारवंश के राजाओं से सम्मानित विद्वानों में इनका विशेष स्थान माना जाता है। ये माथुरसंघ के आचार्य थे तथा माधवसेन के शिष्य थे। इन्होंने सुभाषितरत्नसंदोह (१०५०), धर्मपरीक्षा (१०७०), पंचसंग्रह (१०७३), उपासकाचार, सामायिकपाठ, भावनाद्वात्रिंशिका एवं योगसार प्राकृत आदि ग्रन्थों की रचना की है। इनकी भाषा काफी प्रौढ़ एवं उच्चकोटि की है।

३. आशाधर—ये मूल निवासी मांडलगढ़ थे लेकिन शहाबुद्दीन गौरी के आक्रमणों से त्रस्त होकर धारा नगरी में आकर रहने लगे थे। ये ब्रधेरवाल जाति में उत्पन्न हुये थे। इनके पिता का नाम सल्लक्षण, माता का नाम श्री रत्नी, पत्नी का नाम सरस्वती एवं पुत्र का नाम छाहड था। आशाधर जीवन भर गृहस्थ रहे और इसी अवस्था में रह कर उन्होंने अपरिमित साहित्य का निर्माण किया। इनका काव्य, न्याय, सिद्धान्त, अलंकार, योगशास्त्र एवं वैद्यक आदि सभी विषयों पर अधिकार था। इन्होंने २० से भी अधिक ग्रन्थों की रचना की। आशाधर ने जैन साहित्य पर ही कलम नहीं चलायी किन्तु जैनेतर साहित्य पर भी अपने पांडित्य की अमिट छाप छोड़ी और अष्टांगहृदय, काव्यालंकार, अमरकोष जैसे ग्रन्थों पर टीका लिखी। जैन ग्रन्थों में जिनयज्ञकल्प, सागार और अनगारधर्मासूत, त्रिपद्मिस्मृतिशास्त्र आदि ग्रन्थ ही उपलब्ध हैं, शेष प्रमेयरत्नाकर, भरतेस्वराभ्युदय, ज्ञानदीपिका, राजमतीविप्रलम्भ, आध्यात्मरहस्य, काव्यालंकार टीका, अष्टांगहृदय द्योतिनी टीका अभी तक अप्राप्त ही हैं। आप १३वीं शताब्दी के उत्कृष्ट विद्वान माने जाते हैं।

४. श्री कृष्णदास—कवि लाहौर के निवासी थे। लेकिन ग्रन्थ को काल्यवल्ली नगर में समाप्त किया था। इनके पिता का नाम हर्ष था जो तत्कालीन व्यापारियों में बड़े प्रसिद्ध थे। काष्ठासंघ से इनका सम्बन्ध था और रत्नभूषण इनके गुरु थे। श्री पूरमल्ल के आग्रह से इन्होंने मुनिसुत्रत पुराण की रचना की थी। इनके छोटे भाई का नाम मंगलदास था।

५. गुणसुन्दर—इन्होंने संवत् १४२६ में भक्तामर स्तोत्र की वृत्ति लिखी थी। ये आचार्य गुणचन्द्रसूरि के प्रमुख शिष्य थे। इनका सम्बन्ध रुद्रपल्लीय गच्छ से था।

६. गुणाकर सूरि—इन्होंने संवत् १५०४ सम्यक्त्व कौमुदी की रचना की थी। कवि ने अपने आपको चैत्रगच्छ से सम्बन्धित बतलाया है।

७. गुणभद्राचार्य—भगवज्जिनेसनाचार्य के समान गुणभद्र भी प्रतिभा सम्पन्न विद्वान थे। इन्होंने आदिपुराण को ही पूरा नहीं किया किन्तु उत्तरपुराण, आत्मानुशासन और जिनदत्तचरित्र की भी रचना की। इनका समय विद्वानों ने शक संवत् ७४० से ८२० से पूर्व तक निश्चित किया है।

८. चन्द्रकीर्ति—सारस्वत व्याकरण के टीकाकार हैं। नागपुरीय तपोगच्छ के आप अधिनायक आचार्य रहे थे। संवत् ११७४ के पश्चात् होने वाले सभी आचार्यों का आपने स्मरण किया है। इस गच्छ के

प्रतिष्ठाता पद्मप्रभसूरि थे। टीका का नाम सुबोधिका टीका है।

९. चन्द्रकीर्ति—काष्ठासंघ में होने वाले भट्टारक रामसेन की परम्परा में ये श्री विद्याभूषण के शिष्य थे। इन्होंने पद्मपुराण की रचना इन्हीं के पास रह कर की थी। चन्द्रकीर्ति मुनि थे।

१० चारित्रसुन्दराणि—कवि ने सर्वप्रथम विजयेन्द्र सूरि को स्मरण किया है उनके पश्चात् होने वाले शिष्यों का उल्लेख करते हुये इन्होंने अपने को रत्नसिंह सूरि का शिष्य लिखा है। महीपाल चरित्र को कवि ने १५२५ के आस पास समाप्त किया था। यह काव्य जामनगर से प्रकाशित हो चुका है।

११. जिनसेनाचार्य—हरिवंश पुराण के कर्ता आचार्य जिनसेन पुन्नाट संघ के आचार्य थे। इनके गुरु का नाम कीर्तिपेण एवं दादा गुरु का नाम जिनसेन था। इन्होंने हरिवंश पुराण को वर्द्धमानपुर में शके संवत् ७०५ में समाप्त किया था। हरिवंश पुराण की गणना जैन पुराणों में सर्वोपरि है। इसका ग्रन्थ परिमाण चारह हजार श्लोक प्रमाण है। पूरा पुराण ६६ सर्गों में समाप्त होता है। जिनसेनाचार्य ने अपनी रचना के ६६वें सर्ग में भगवान महावीर से लेकर लोहाचार्य तक की आचार्य परम्पर का उल्लेख किया है।

१२. ज्ञानकीर्ति—यशोधर चरित्र के रचयिता श्री ज्ञानकीर्ति यति वादिभूषण के शिष्य थे। इन्होंने उक्त काव्य की रचना श्री नानू के आग्रह से की थी। नानू उस समय बंगाल के गवर्नर (राजपाल) महाराजा मानसिंह के प्रधान अमात्य थे। जब प्रधान अमात्य सम्मेल शिखर की यात्रा पर गये तो वहां इन्होंने जीर्णोद्धार भी कराया था। कवि स्वयं बंगाल प्रान्त के अकच्छरपुर नामक नगर के रहने वाले थे। इन्होंने ग्रन्थ को संवत् १६५६ में समाप्त करके प्रधान मंत्री को भेंट किया था।

१३. ज्ञानभूषण—भट्टारक सकलकीर्ति के प्रशिष्य एवं भुवनकीर्ति के शिष्य थे। ज्ञानभूषण संस्कृत, हिन्दी और गुजराती के अच्छे विद्वान थे। इनका मूल निवास स्थान गुजरात था। इन्होंने भट्टारक वनने के पश्चात् अहीर, वागड़, तौलव, तैलंग द्राविड़, एवं महाराष्ट्र आदि दक्षिण के प्रान्तों और गाँवों में ही बिहार नहीं किया किन्तु उत्तरी भारत में भी घूम कर जैनधर्म का प्रचार किया। इनके द्वारा रचित तत्त्वज्ञान-तरंगिणी सुन्दर एवं सरस रचना है। आपने सिद्धान्तसारभाष्य एवं कर्मकाण्ड टीका भी लिखी है। हिन्दी भाषा में भी आपकी कई रचनायें मिलती हैं इनमें आदीश्वरपाग उल्लेखनीय है। आपका समय १५२५ से १५७५ तक अनुमानित किया गया है। तत्त्वज्ञान तरंगिणी का रचना काल संवत् १५६० है।

१४. धर्मकीर्ति—इन्होंने पद्मपुराण की रचना सरोजपुरी (मालवा) में की थी। भट्टारक ललितकीर्ति इनके गुरु थे। धर्मकीर्ति का नामोल्लेख अनेकप्रशस्तियों में हुआ है। इन्होंने उक्त ग्रन्थ को संवत् १६६९ में समाप्त किया था। संवत् १६७० की प्रति में लिपिकार ने इनको भट्टारक नाम से सम्बोधित किया है इससे यह ज्ञात होता है कि पद्मपुराण की रचना के पश्चात् ये भट्टारक बने थे।

१५. आचार्य नरेन्द्रसेन—इन्होंने सिद्धान्तसारसंग्रह की रचना की है। आप वीरसेन के प्रशिष्य एवं गुणसेन के शिष्य थे।

१६. **प्रभाचन्द्र**—परमार नरेश भोजदेव के उत्तराधिकारी महाराजा जयसिंहदेव के शासन काल में इन्होंने साहित्य निर्माण किया था। इन्होंने प्रमेयकमलनार्णव एवं न्यायकुमुदचन्द्र जैसे उच्चकोटि के ग्रन्थों की रचना की है। महाकवि पुष्पदन्त के आदिपुराण और उत्तरपुराण पर टिप्पणी लिखी है। इनके अतिरिक्त जैनेन्द्र व्याकरण, शब्दान्मोजभास्कर, रत्नकरण्डटीका, क्रियाकलापटीका, समाधितंत्रटीका, आत्मानुशासनतिलक, द्रव्यसंग्रह पंजिका, प्रवचनसरोजभास्कर, सर्वार्थसिद्धि टिप्पण आदि रचनायें भी इन्हीं की लिखी हुई हैं।

१७. **कायस्थ पद्मनाभ**—कायस्थ जाति में होने वाले जैन कवियों में आपका नाम उल्लेखनीय है। आपने महासुनि गुणकीर्ति के उपदेश से तोमर वंश में उत्पन्न राजा वीरमेन्द्र के शासन काल में रचनायें की थीं। वीरमेन्द्र के महानात्य श्री कुशराज थे और इन्होंने ही पद्मनाभ को यशोधर की रचना करने के लिये उत्साहित किया। ग्रन्थ तैयार होने के पश्चात् संतोष नाम के जैसवाल ने उसकी बहुत प्रशंसा की तथा विजयसिंह जैसवाल के पुत्र पृथ्वीराज ने उक्त ग्रन्थ की अनुमोदना की थी। पद्मनाभ ने कुशराज के वंश का वितृप्त परिचय दिया है। कवि ने यशोधरचरित्र को १५ वीं शताब्दी के प्रथम काल में लिखा था।

१८. **भगवज्जिनसेनाचार्य**—ये हरिवंशपुराण के कर्त्ता आचार्य जिनसेन से भिन्न आचार्य हैं। इनके गुरु का नाम आचार्य वीरसेन था। जिनसेन अपने समय के महान विद्वान् एवं सिद्धान्त के प्रकाण्ड ज्ञाता थे। इन्होंने धवला और जय धवला की टीका को पूर्ण करके जैन समाज का महान उपकार किया है। इन टीकाओं के अतिरिक्त आदिपुराण एवं पार्श्वभ्युदय की भी रचना की। आचार्य सहोदय ने आदिपुराण को पूर्ण करने से पहिले ही संसार से विदा ले ली किन्तु आपके महान् कार्य को योग्य एवं प्रतिभाशाली शिष्य आचार्य गुणभद्र ने पूरा किया। आदिपुराण उच्च श्रेणी का प्रथमानुयोग महाकाव्य है।

१९. **पं० मेधावी**—श्री जिनचन्द्रसूरि के शिष्य थे। धर्मसंग्रहश्रावकाचार को हिसार नगर में प्रारम्भ करके नागपुर में संवत् १५४१ में समाप्त किया था। उस समय नागपुर पर फिरोजशाह का शासन था। मेधावी ने श्रावकाचार की सनन्तभद्र, वसुनन्दि एवं आशाधर कृत श्रावकाचारों के अध्ययन के पश्चात् रचना की थी।

२०. **रामचन्द्र मुमुक्षु**—पुण्याश्रवकथाकोष के कर्त्ता श्री रामचन्द्र मुमुक्षु मुनि केशवनन्दि के शिष्य थे। पुण्याश्रवकथाकोष का जैन समाज में बहुत अधिक प्रचार है। इनके वंश परम्परा के सन्बन्ध में अधिक परिचय नहीं मिलता है।

२१. **रत्नमन्दिरगणि**—भोजप्रबन्ध के कवि श्री रत्नमन्दिर गणि तपोगच्छ के साधु थे। इनके गुरु का नाम सोमसुन्दरगणि था। इन्होंने अपनी रचना को संवत् १५१७ में समाप्त किया था।

२२. **वादिचन्द्र**—ज्ञानसूर्योदय नाटक के कारण वादिचन्द्र जैनसमाज में बहुत प्रसिद्ध हैं। उक्त नाटक की रचना प्रबोधचन्द्रोदय के आधार पर की गई है। ज्ञानसूर्योदय को इन्होंने संवत् १६४८ में समाप्त किया था तथा इसके पश्चात् यशोधरचरित्र को संवत् १६५७ में रचा। इनका पञ्चदूत नामक एक स्तव

काव्य भी है जिसकी पद्य संख्या १०१ है । इन्होंने अपने को प्रभाचन्द्र का शिष्य लिखा है ।

२३. विवेकनन्दि—इनका जन्म घघेरवाल जाति में हुआ था । इनके नाना श्री नारायण तथा माता विजोणी थीं । त्रिभंगीसार की टीका पहिले श्रुतमुनि ने कर्णाटक भाषा में लिखी उसके पश्चात् सोमदेव ने उसका लाटी भाषा में परिवर्तन किया उसी के आधार पर इन्होंने संस्कृत में टीका का निर्माण किया था ।

२४. ब्रह्म कामराज—इनके गुरु का नाम पद्मनन्दि था और इन्हीं के उपदेश से इन्होंने जयकुमार पुराण की रचना की । कवि ने सकलकीर्ति की भट्टारक परम्परा में होने वाले भट्टारकों की अन्धरी नामावली दी है । प्रशस्ति में इन्होंने अपने को भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति का भी शिष्य लिखा है । पण्डित जीवराज ने उक्त ग्रन्थ को कवि से अनुरोध करके लिखवाया और फिर मन्दिर में स्थापित किया ।

२५. ब्रह्मजिनदास—भट्टारक सकलकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे । अपने गुरु के समान इन्होंने भी हिन्दी संस्कृत, गुजराती आदि भाषाओं में रचनायें लिखी हैं । संस्कृत में इन्होंने १२ से अधिक ग्रन्थ रचना की है जिनमें हरिवंश पुराण, पद्मपुराण, जम्बूस्वामी चरित्र, हनुमन्चरित्र, व्रतकथा कोष आदि उल्लेखनीय हैं । हिन्दी में आदिनाथपुराण, श्रेणिक चरित्र, सम्यक्त्वरस, यशोव्ररस, धनपालरास, व्रतकथाकोष आदि रचनायें उल्लेखनीय हैं । इन पर गुजराती का अत्यधिक प्रभाव झलकता है ।

२६. ब्रह्मनेमिदत्त—ये अग्रवाल जाति के थे । गोयल इनका गोत्र था । मालव देश में आशानगर के रहने वाले थे । भट्टारक मल्लिभूषण इनके गुरु थे । संवत् १५८५ में इन्होंने श्रीपाल चरित्र की श्री शांतिदास के अनुरोध से रचना की थी । इसके अनिरिक्त सुदर्शनचरित्र एवं नेमिनाथपुराण आदि ग्रंथों की भी आपने रचना की है । सुदर्शनचरित्र में इन्होंने ग्रंथ समाप्ति के समय 'मल्लिभूषण शिष्याचार्य श्री सिंहनन्दि' यह विशेषण नहीं लगाया है और शेष दो में यह विशेषण मिलता है इससे यह मात्तूम पड़ता है कि सुदर्शनचरित्र इनकी सबसे पहिले की रचना थी ।

२७. ब्रह्मरायमल्ल—हूचड़ जाति में इनका जन्म हुआ था । इनके पिता का नाम महीय एवं माता का नाम चंपा था । समुद्र तट पर स्थित ग्रीवापुर में इन्होंने भक्तामर स्तोत्र की वृत्ति को समाप्त किया था । संवत् १६६७ में रचित इस रचना के अतिरिक्त लेखक की अन्य रचना उपलब्ध नहीं है ।

२८. ब्रह्मजित—सुरेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य एवं विद्यानन्दि के शिष्य थे । आपका जन्म गोलश्रंगार जाति में हुआ था । इनके पिता का नाम वीरसिंह तथा माता का नाम पीथा था । हनुमन्चरित्र इनकी उल्लेखनीय रचना है ।

२९. भट्टारक सोमसेन—ये सेनगण के आचार्य गुणभद्र के शिष्य थे । इन्होंने पद्मपुराण की रचना घेराठ (जयपुर) प्रान्त के जितुरनगर में की थी । उक्त ग्रन्थ को इन्होंने शक संवत् १६५६ में निर्माण किया ऐसा वर्णन मिलता है । लेकिन इसी की एक लेखक प्रशस्ति में शक संवत् १६१६ दे रखा है ।

३०. सकलकीर्ति—१५ वीं शताब्दी के बड़े भारी विद्वान् एवं साहित्य सेवी थे । इन्होंने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, गुजराती आदि भाषाओं का गहरा अध्ययन किया था । इन्होंने अपने आपको भट्टारक

पद्मनन्दि का शिष्य लिखा है। अपने जवरदस्त प्रभाव के कारण इन्होंने एक नयी भट्टारक परम्परा की स्थापना की। इनकी परम्परा में ब्रह्मजिनदास, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र आदि उच्च कोटि के साहित्य निर्माता हुये। इन्होंने सभी भाषाओं में साहित्य सर्जना की। आदिपुराण, धन्यकुमार चरित्र, पुराणसारसंग्रह, यशोधर चरित्र, वर्द्धमानपुराण, आदि रचनायें संस्कृत में एमोकारमन्त्रफलीगीत, आराधनासार आदि रचनायें हिन्दी में लिखीं।

३१. सकलभूषण—भट्टारक शुभचन्द्र के समय के विद्वान् थे। इन्होंने भट्टारक शुभचन्द्र के पास ही अध्ययन किया और उन्हीं की देख रेख में ग्रन्थ रचना की। शुभचन्द्र ने करकण्डवचरित्र के निर्माण में इनसे काफी सहायता ली थी। सकलभूषण भट्टारक वादीमसिंह के शिष्य एवं सुमतिकीर्ति के बड़े भाई थे। सन् १६२७ में इन्होंने स्वतन्त्र रूप से उपदेशरत्नमाला नामक ग्रन्थ का निर्माण किया। रचना सुन्दर एवं सरस है।

३२. सोमकीर्ति—भट्टारक रामसेन की शिष्य परम्परा में से भट्टारक भीमसेन के शिष्य थे। इन्होंने संवत् १५३० में प्रद्युम्नचरित्र को समाप्त किया था।

३३. सोमप्रभसुरि—सिन्दूर प्रकरण कवि की रचना है। इसमें अच्छी २ सूक्तियाँ हैं। इसका हिन्दी अनुवाद महाकवि बनारसीदास एवं कौरपाल ने मिलकर किया था। इसी से उक्त रचना का महत्त्व जाना जा सकता है। इसका दूसरा नाम सूक्तमुक्तावली भी है। कवि ने विजयसिंहाचार्य के चरण कमलों में बैठ कर इसकी रचना की थी।

३४. श्रुतसागर—ये १६ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। इनके गुरु का नाम विद्यानन्दि था। श्रुतसागर ने अपने को कालकालसबद्ध, कलिकालगौतम, उभयभाषाकविचक्रवर्ति, व्याकरणकमलमार्तण्ड आदि अनेक विशेषणों से अलंकृत किया है। इन्होंने अधिकांश ग्रन्थों की टीका लिखी है उनमें से यशस्तिलकचन्द्रिका, तत्त्वार्थवृत्ति जिनसहस्रनामटीका औदार्यचिन्तामणि, महाभिषेकटीका, व्रतकथाकोष आदि रचनायें उल्लेखनीय हैं।

३५. शुभचन्द्र—भट्टारक शुभचन्द्र १६-१७ वीं शताब्दी के महान् साहित्य सेवी थे। भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में आपका स्थान सर्वश्रेष्ठ है। पटभाषाकविचक्रवर्ति, त्रिविधविद्याधर आदि विशेषणों से आप जनता द्वारा विभूषित किये गये थे। आपने सिद्धान्त एव पुराण साहित्य का गम्भीर अध्ययन किया था। इन्होंने संस्कृत में ४० से भी अधिक ग्रन्थों की रचना की है। इनमें से चन्द्रप्रभुरित्र, जीवधर चरित्र, पाण्डवपुराण श्रेणिकचरित्र, स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा की टीका आदि उल्लेखनीय हैं।

३६. हर्षकीर्ति—इन्होंने योगचिन्तामणि ग्रन्थ का संग्रह किया था। यह आयुर्वेद का प्रसिद्ध ग्रन्थ माना जाता है। इनका सन्धन्व नागपुर के तपोगच्छ से था तथा चन्द्रकीर्ति इनके गुरु थे।

### प्राकृत-अपभ्रंश ग्रन्थों के लेखक

३७. स्वयंभू—अपभ्रंश भाषा के आचार्यों में आप सबसे प्राचीन आचार्य हैं। इनके पिता का नाम

मारुतदेव तथा माता का नाम पद्मिनि था। इनका सबसे छोटा पुत्र त्रिभुवन स्वयंभु था। स्वयंभु ने गृहस्थावस्था में ही साहित्य निर्माण किया। इन्होंने तथा त्रिभुवन स्वयंभु ने मिलकर तीन ग्रन्थों की रचना की - पद्मचरिय, रिद्वेगेमिचरिउ या हरिवंशपुराण, पंचमिचरिउ। तीसरा ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं हो सका है। अपभ्रंश भाषा के उपलब्ध साहित्य में स्वयंभु की रचनायें सबसे प्राचीन हैं। रचनायें साहित्य की सभी दृष्टियों से परिपूर्ण मानी जाती हैं। ये कवि रविषेणाचार्य के पीछे हुये हैं। विद्वानों ने इनको ९वीं शताब्दी का कवि माना है।

३८. पद्मकीर्ति—माधवसेन के प्रशिष्य एवं जिनसेन के शिष्य थे। ये मुनि थे। संवत् ९९९ में इन्होंने पार्श्वनाथ-चरित्र की रचना समाप्त की थी। अपभ्रंश भाषा का यह बहुत पुराना काव्य है। इसमें १८ संधियां हैं। संवत् १४६६ की लिखित उसकी एक प्रति भण्डार में है।

३९. पुष्पदंत—अपभ्रंश भाषा के सर्व श्रेष्ठ महाकवि माने जाते हैं। ये काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम केशवभट्ट और माता का नाम मुग्धा देवी था। राष्ट्रकूटों की राजधानी मान्यखेट में रहकर इन्होंने साहित्य निर्माण का पवित्र कार्य किया था। कवि के आश्रयदाता महामात्य भरत और नन्न थे। ये दोनों पिता पुत्र थे और महाराजा कृष्णराज (तृतीय) के महामात्य थे। अभिमानमेरु, अभिमानचिन्ह, काव्यरत्नाकर, कविकुलतिलक सरस्वतीनिलय आदि इनकी पदवियाँ थीं। महाकवि की तीन रचनायें मिलती हैं। महापुराण के दो खंड हैं एक आदिपुराण और दूसरा उत्तरपुराण। नागकुमार चरित्र एक खण्ड काव्य है और यशोधर चरित्र भी इसी तरह एक खण्ड काव्य है। विद्वानों ने इनको ११वीं शताब्दी का विद्वान् माना है।

४०. हरिषेण—इन्होंने अमितिगति के २२ वर्ष पहिले संवत् १०४४ में धर्मपरीक्षा को समाप्त किया था। ये मेवाड़ देश में श्रीउजपुर ग्राम के रहने वाले थे। इनके पितामह का नाम कुसलु, पिता का नाम गोवर्द्धन एवं माता का नाम धनवती था। सिद्धसेन इनके गुरु थे। इन्होंने मंगलाचरण में चतुर्मुख, स्वयंभु, तथा पुष्पदंत का भी स्मरण किया है। धर्मपरीक्षा में कुल ११ संधियां हैं तथा यह अपभ्रंश भाषा की उत्तम रचना है।

४१. महाकवि वीर—कवि वीर के पिता गुडखेड देश के निवासी थे। इनका वंश अथवा गोत्र लाड वागड था। यह काष्ठा संघ की एक शाखा है। इनके पिता का नाम देवदत्त था। कविवर का बहुत समय राज्यकार्य, धर्म और अर्थ की चर्चा में समाप्त होता था। इसलिये कवि को जग्वृत्तामी चरित्र लिखने में एक वर्ष लगा था। कवि ने इसको संवत् १०७६ माघ शुक्ला दशमी के दिन समाप्त किया था। कवि भक्ति रस के प्रेमी भी थे। इन्होंने मेघवन में पत्थर का एक विशाल जिनमन्दिर बनवाया था। इनके ४ स्त्रियां जिनवती, ओमावती, लीलावती, और जपादेवी और नेमिचन्द्र नामका एक पुत्र भी था।

४२. श्रीचन्द—ये १२वीं शताब्दी के कवि थे। इन्होंने रत्नकरण्ड को संवत् ११२० में समाप्त किया था। ये मुनी थे और इसी अवस्था में इन्होंने अपने ग्रन्थ को समाप्त किया था। श्रीवालपुर के शासक कर्ण



नरेन्द्र के अध्ययन के लिये ग्रन्थ रचना की थी। कर्ण नरेन्द्र का उल्लेख मुनी कनकामर ने भी किया है। कवि ने अपने पूर्ववर्ति आचार्यों—वीरनन्दि, समंतभद्र, विद्यानन्दि, वीरसेन, जिनसेन, गुणभद्र, सोमदेव, स्वयंभु, पुष्पदंत, श्रीधर आदि का उल्लेख किया है। कवि श्रुतकीर्ति के शिष्य थे।

४३. नयनन्दि—महाकवि स्वयंभु एवं पुष्पदंत के पश्चात् इनका नाम अपभ्रंश के श्रेष्ठ कवियों में गिना जाता है। इनके दो महाकाव्य मिलते हैं, सुदर्शन चरित्र और सकलविधिविधान और ये दोनों ही सभी दृष्टियों से उच्च श्रेणी के काव्य हैं। सुदर्शन चरित्र की रचना इन्होंने संवत् ११०० में भोजदेव के राज्य में की थी। सकलविधिविधानकाव्य को इन्होंने आचार्य हरिसिंह के अनुरोध से बनाया था। इस काव्य में अपने वररुचि, वामन, कालिदास, घाण, मयूर, जिनसेन, श्रीहीर्ण, राजशेखर, पाणिनी, प्रवरसेन, वीरसेन, अकलंक रुद्र गोविंद, भामह, भारवि, चंडमुह स्वयंभु, पुष्पदंत, श्रीचन्द्र, प्रभाचन्द्र आदि आचार्यों का स्मरण किया है। नयनन्दि आचार्य माणिक्यनन्दि के शिष्य थे। कवि ने धारा नगरी एवं राजा भोज का बड़ा ऐतिहासिक वर्णन किया है। इन दोनों काव्यों के आधार पर कितने ही ऐतिहासिक तथ्यों की खोज की जा सकती है।

४४—श्रीधर — अपभ्रंश भाषा के महाकवि पं० श्रीधर १२ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। इनके द्वारा लिखित ३ रचनायें उपलब्ध हैं, पार्श्वनाथचरित्र, भविष्यदत्तचरित्र तथा सुकुमालचरित्र। पार्श्वनाथचरित्र को संवत् ११८६ में भविष्यदत्त को १२३० में तथा सुकुमालचरित्र को संवत् १२०८ में समाप्त किया था। इनके अतिरिक्त अन्य कितनी रचनायें अपभ्रंश में लिखीं, इसका कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिला है। ये कायस्थ जाति के थे और माथुर कुल में पैदा हुये थे। इनके पिता का नाम नारायण एवं माता का नाम रूपिणी था। ये देहली के रहने वाले थे। इन्होंने दिल्ली को 'दिल्ली' नाम से सम्बोधित किया है। अपने प्रथम महाकाव्य को इन्होंने नटूल साह के आग्रह से लिखा था। उस समय नटूल साह सारे भारत में प्रख्यात थे। कवि ने लिखा है कि अंग बंग कर्लिंग आदि सभी देश में आपकी कीर्ति व्याप्त थी।

४५—महाकवि अमरकीर्ति — इन्होंने संवत् १२७४ में पट्कर्मोपदेशरत्नमाला को समाप्त किया था। रचना बहुत ही सुन्दर एवं प्रिय है। इनकी रचना के आधार पर ही पीछे के संस्कृत कवियों ने अनेक रचनायें लिखीं। इनकी माता का नाम चच्चिजणी एवं पिता का नाम गुणपाल था।

४६—कनकामर — ये मुनि थे। इन्होंने अपने गुरु का नाम पं० मंगलदेव लिखा है। ये ब्राह्मण वंश के चन्द्र ऋषि गोत्र में उत्पन्न हुये थे और वैराग्य लेकर दिगम्बर मुनि बन गये थे। करकण्डु चरित्र को इन्होंने 'आसाइप' नगरी में लिखा था। कवि ने अपनी रचना में सिद्धसेन, समंतभद्र, अकलंक, जयदेव, स्वयंभु और पुष्पदंत का उल्लेख किया है। कनकामर ने अपनी रचना में कर्ण नरेन्द्र का उल्लेख किया है। इन्हीं के आश्रित श्रीचन्द्र कवि भी थे जिन्होंने रत्नकरण्ड को ११२० में समाप्त किया था। इसी के आधार पर इनका समय १२वीं शताब्दी निश्चित होता है।

४७—यशःकीर्ति — अपभ्रंश साहित्य में यशःकीर्ति द्वारा लिखित दो काव्य मिलते हैं—पाण्डवपुराण तथा चन्द्रप्रभचरित्र। यशःकीर्ति मुनि थे और इसी अवस्था में इन्होंने दोनों काव्यों की रचना की थी।

पाण्डवपुराण को इन्होंने संवत् ११७६ कार्तिक शुक्ला अष्टमी के दिन समाप्त किया था। इस काव्य को अग्रवाल वंश में उत्पन्न साधु पील्हा के सुपुत्र श्री हेमराज ने नवगात्रपुर में लिखवाया था। चन्द्रप्रभचरित्र गुज्जरदेश के निवासी सिद्धपाल के अनुरोध से लिखा गया था। ये गुणकीर्ति के शिष्य थे। चन्द्रप्रभचरित्र में इन्होंने 'महाकवि' विशेषण से अपने आपको अलंकृत किया है।

४८—पं० लाखू — इन्होंने संवत् १२७५ में जिनदत्त चरित्र को समाप्त किया था। ये जैसवाल जाति में उत्पन्न हुये थे। इनके पिता का नाम साहु साहुल था। इनका दूसरा नाम लक्खण भी था। आपका सम्मान करने वालों में श्रीधर श्रावक उल्लेखनीय हैं और इन्हीं के अनुरोध के कारण पं० लाखू ने जिनदत्त चरित्र की रचना की थी। श्रीधर उस समय काफी प्रसिद्ध थे।

४९—गणिदेवसेन — अपभ्रंश भाषा में इन्होंने सुलोचना चरित्र लिखा है। ये विमलसेन के शिष्य थे। सुलोचना चरित्र अपभ्रंश की प्राचीन रचना है।

५०—जयमित्रहल — इन्होंने अपभ्रंश में वर्द्धमान चरित्र लिखा है। इनके पिता का नाम सहदेव था। कवि ने अल्लाउद्दीन खिलजी के शासन का उल्लेख किया है। इस आधार पर कवि का समय १३ वीं शताब्दी होता है। इनके गुरु मुनि पद्मनन्दि थे।

५१—धर्मदासगणि — प्राकृत भाषा में इनके द्वारा रचित उद्देशमाला श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों सम्प्रदायों में ही बहुत प्रिय रही है। उक्त रचना पर २२ से अधिक टीकायें मिलती हैं इससे ही कृति की प्रियता जानी जा सकती है। धर्मदासगणि का समय १० वीं शताब्दी या इससे भी पूर्व का माना जाता है।

५२—नरसेन — वर्द्धमान कथ और श्रीपालचरित्र इन दो काव्यों की इनने रचना की है। कवि ने रचनाओं में नाम के अतिरिक्त अपना अधिक परिचय नहीं दिया। नरसेन स्वयं पंडित थे और गृहस्थावस्था में ही रहकर काव्य रचना की थी। ये १४ वीं अथवा १५ वीं शताब्दी या इससे पूर्व के कवि होंगे, क्योंकि संग्रह में १५१२ में लिखी हुई श्रीपाल चरित्र की एक प्रति मिलती है।

५३—महाकवि सिंह या सिद्ध — इनके पिता का नाम रल्लण था। कवि गुज्जर कुल के सूर्य थे। प्रद्युम्न चरित्र को इन्होंने अपनी माता के अनुरोध से बनाया था। कवि अमृतचन्द्र (अमियचन्दु) के शिष्य थे।

५४—महाकवि धनपाल — ये १५वीं शताब्दी के कवि थे। इनके द्वारा लिखित बाहुबलिचरित्र तथा भविष्यदत्तचरित्र १५वीं शताब्दी की रचनायें हैं। महाकवि ने बाहुबलिचरित्र काव्य के प्रारम्भ तथा अन्त में बहुत सुन्दर अशक्ति लिखी है। ये गुज्जर देश के रहने वाले थे। पिल्हणपुर इनका निवास स्थान था। उस समय वहाँ वीसलदेव राजा राज्य करते थे। इनके पिता का नाम सुहदेव तथा माता का नाम सुहदा था। ये पोखर जाति में उत्पन्न हुये थे। इन्होंने दिल्ली को योगिनीपुर लिखा है तथा वहाँ



के शासक का नाम महम्मदसाह लिखा है। ग्रंथ को लिखाने वाले श्रावक का कवि ने विस्तृत परिचय दिया है। इन सब के अतिरिक्त कवि ने अपने पूर्ववर्ती महाकवियों का नामोल्लेख उनकी कृतियों के साथ साथ किया है।

५५—धनपाल (द्वितीय)—महाकवि धनपाल से ये भिन्न कवि हैं। इनका जन्म धक्कडवाण वंश में हुआ था। इनके पिता का नाम माएसर तथा माता का नाम धनश्री था। इनके द्वारा लिखित भविष्यदत्त चरित्र अपभ्रंश भाषा के प्रकाशित होने वाले काव्यों में सर्व प्रथम है।

५६—पंडित रङ्गू—अपभ्रंश भाषा में सबसे अधिक रचनायें लिखने वालों में पं० रङ्गू का नाम सर्व प्रथम आता है। इनके काव्यों में उच्च साहित्य के दर्शन होते हैं। इनके गुरु का नाम गुणकीर्ति था। ये ग्वालियर के निवासी थे और अधिकांश साहित्य का निर्माण उक्त स्थान पर ही किया था। इन्होंने आत्मसंवोधन काव्य, धनकुमारचरित्र, पद्मपुराण, मेघेश्वरचरित्र, श्रीपाल चरित्र, सन्मतिजिनचरित्र, नेमिनाथचरित्र, आदि-पुराण, यशोधरचरित्र, जीवंधरचरित्र, पार्श्वनाथपुराण, सुकौशलचरित्र आदि २५ से अधिक की रचना की हैं। इन्होंने प्रत्येक ग्रन्थ के अन्त में अपने संक्षिप्त परिचय के अतिरिक्त ग्रन्थ लिखाने वाले का विस्तृत परिचय दिया है और इसके साथ साथ वहां के राज्य शासन का भी इतिहास लिखा है। इनके समय में ग्वालियर पर तोमर वंश के मणि श्रोङ्गरेन्द्र सिंहजी का शासन था तथा वहां के राजकुमार का नाम कीर्तिपाल था। इनका समय १५ वीं शताब्दी का अनुमानित किया गया है।

५७—श्रुतकीर्ति—ये १६ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। ये देवेन्द्रकीर्तिके प्रशिष्य एवं त्रिभुवनकीर्ति के शिष्य थे। मालवा प्रान्त में मंडवगढ इनका निवास स्थान था। इन्होंने हरिवंश पुराण की रचना संवत् १५५२ में समाप्त की थी तथा परमेष्ठिप्रकाशसार को संवत् १५५३ में समाप्त किया था। दोनों ही काव्य भाषा की दृष्टि से उत्तम हैं।

५८—माणिक्यराज—ये जैसवाल जाति में उत्पन्न हुये थे। इनकी माता का नाम वसुधरा था। माणिक्यराज के गुरु पद्मनन्दि थे इनके पहिले पांच आचार्य हो गये थे। इन्होंने दो चरित्र काव्यों की रचना की है अमरसेन चरित्र को सं० १५७६ चैत सुदी ५ के दिन रोहतक में देवराज चौधरी से आग्रह से समाप्त किया था तथा नागकुमार चरित्र को संवत् १५७६ फाल्गुण सुदी ६ के दिन संपूर्ण किया था। इसमें जगसी के पुत्र साहु टोडरमल्ल का विस्तृत परिचय एवं प्रशंसा की गयी है। श्री टोडर मल्ल के पढ़ने के लिये ही उक्त चरित्र का निर्माण करना पड़ा था। दोनों ही काव्य अपभ्रंश की सुन्दर रचनायें हैं।

५९—भगवतीदास—ये देहली के भट्टारक गुणचन्द्र के प्रशिष्य तथा भट्टारक महेन्द्रसेन के शिष्य थे। हिसार, सहिजादपुरा, संकिसा, कपिस्थल आदि स्थानों में रहने के पश्चात् ये दिल्ली में आकर रहने लगे थे। इनके पूर्वज अम्बाला जिले के बूढिया नामक ग्राम के निवासी थे। ये अपभ्रंश दि. जैन थे। अपभ्रंश भाषा में

इन्होंने मृगांकलेखा चरित्र लिखा है। जिसको संवत् १७०० में समाप्त किया था। यह अपभ्रंश भाषा का अन्तिम कान्य है। ये हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। हिन्दी में इनकी २० से अधिक रचनायें मिलती हैं।

## हिन्दी साहित्य के कवि एवं लेखक

६०—किशनसिंह — कवि रामपुर के निवासी संगही कल्याण के पौत्र तथा आनन्दसिंह के पुत्र थे। ये खण्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा पाटनी इनका गोत्र था। कवि रामपुर को छोड़ कर सांगानेर आकर रहने लगे थे और यहीं पर त्रेपनक्रियाकोश को संवत् १७८४ में समाप्त किया था। इस रचना के अतिरिक्त भद्रबाहुचरित्र एवं रात्रिभोजनकथा भी इन्हीं के द्वारा लिखी हुई है।

६१—कुमुदचन्द्र — ये भट्टारक रत्नकीर्ति के शिष्य थे। इन्होंने भी त्रेपनक्रियाविनती, ऋषभविवाहलो, भरतबाहुबलिछन्द आदि रचनायें लिखी हैं। भरतबाहुबलिछन्द कवि की सुन्दर रचना है इसको इन्होंने संवत् १६०७ में समाप्त किया था।

६२—कुसुललाभगणि — संवत् १६१६ में जैसलमेर में इन्होंने 'माधवानलचौपाई' को पूर्ण की थी। ये श्वेताम्बर सम्प्रदाय के साधु थे।

६३—खडगसेन— ये लाभपुर (लाहौर) के निवासी थे। लाहौर में उस समय अच्छे विद्वान् रहते थे। इन्हीं की संगति से इनको लिखने की इच्छा उत्पन्न हुई। इनके पिता का नाम लूणराज था। कवि के पूर्वज पहले नारनोल में रहा करते थे। यहीं से लाहौर जाकर रहने लगे थे। नारनोल में चतुर्भुज बैरागी के पास शिक्षा प्राप्त कर तथा अनेक ग्रन्थों का अध्ययन करके त्रिलोकदर्पण को संवत् १७१३ में सम्पूर्ण किया था।

६४—खुशालचन्द काला— भट्टारक लक्ष्मीदास के पास इन्होंने विद्याध्ययन किया था। इनका मूल निवास स्थान देहली था। लेकिन सांगानेर भी कभी आकर रहा करते थे। इनके पिता का नाम सुन्दर एवं माता का नाम अमिधा था। इन्होंने हरिवंशपुराण (१७८०), पद्मपुराण (१७८३), धन्यकुमारचरित्र, जम्बूचरित्र, व्रतकथाकोश आदि ग्रन्थों की रचना की है।

६५—चतुरमल— ये ग्वालियर के निवासी थे। इनके पिता का नाम जसवंत था। इन्होंने संवत् १५७१ में 'नेमीश्वर गीत' को समाप्त किया था। इनके समय में ग्वालियर के शासक महाराजा मानसिंह थे। नेमीश्वर गीत एक साधारण रचना है।

६६. छीतर ठोलिया— ये मोजमावाद के रहने वाले थे। इन्होंने होली की कथा को संवत् १६६० में समाप्त की थी। उस समय जयपुर के राजा मानसिंह का वहां राज्य था। रचना साधारण है।

६७. जयसागर—ये भट्टारक महीचन्द्र के शिष्य थे। गंधार नगर के भट्टारक श्री मल्लिभूषण की शिष्य-

परम्परा से इनका सम्बन्ध था। हूम्बड जाति में उत्पन्न श्री रामा तथा उसके पुत्र के पढ़ने के लिये संवत् १७३२ में इन्होंने 'भीताहरण' नामक काव्य की रचना की थी।

६८. जोधराज गोदीका—ये सांगानेर के निवासी थे। इनके पिता का नाम अमरराज था। हरिनाभ मिश्र के पास रह कर इन्होंने प्रीतिकर चरित्र, कथाकोष, धर्मसरोवर, सम्यक्त्वकौमुदी, प्रवचनसार, भावदीपिका आदि रचनायें लिखी थीं।

६९. जयताराय—ये आगरे के निवासी थे। इनके पिता का नाम नंदलाल था। सिवल इनका गोत्र था। संवत् १७२२ में इन्होंने पञ्चनदिपंचविंशिका को समाप्त किया था। इसके अतिरिक्त आगम विलास एवं सम्यक्त्वकौमुदी आदि भी इन्हीं की लिखी हुई हैं।

७०. टीकम्—इन्होंने संवत् १७१२ में चतुर्दशीचौपई नामक रचना समाप्त की थी। ये 'कालख' (जयपुर) के रहने वाले थे। आप धार्मिक चर्चाओं के अच्छे जानकार थे।

७१. ठकुरसी—इन्होंने 'कृष्णचरित्र' तथा 'पंचेंद्रिय बेल' ये दो रचनायें लिखी हैं। दोनों ही भाषा और भावों की दृष्टि से उत्तम रचनायें हैं। पंचेंद्रिय बेल को क.व. ने संवत् १५८५ में समाप्त किया था। इनके पिता का नाम घेल्ह था और ये भी अच्छे कवि थे।

७२. त्रिशुवनचन्द्र—ये महाकावि बनारसीदास एवं रूपचन्द्र के समकालीन कवि थे। इन्होंने अनित्यपंचाशत, प्रस्ताविकदोहे, प्रद्वयवर्णन, फुटकरकवित्त आदि रचनायें लिखी हैं। सभी रचनायें उच्चकोटि की हैं।

७३. दीपचन्द्र कामलीवाल—ये सांगानेर के रहने वाले थे लेकिन फिर आमेर आकर रहने लगे थे। इन्होंने गद्य और पद्य/दोनों ही प्रकार का साहित्य लिखा है। चिद्विलास, गुणस्थानभेद, अनुभवप्रकाश आदि गद्य में तथा अध्यात्म पच्चीसी, द्वादशानुप्रेक्षा, परमात्मपुराण आदि पद्य में इनकी रचनायें मिलती हैं। चिद्विलास को इन्होंने संवत् १७७६ में समाप्त किया था।

७४. पं० दौलतरामजी—ये मूल निवासी बंसवा के थे। जयपुर के महाराजा का इन पर विशेष प्रेम था। ये उदयपुर में महाराजा की ओर से राज्य कार्य करते थे। श्रावकों की संगति से इनको जैन ग्रन्थों के अध्ययन की रुचि हुई। धीरे धीरे इनकी रुचि बढ़ती गई और ये अपना अधिकांश समय साहित्य-सर्जना में ही लगाने लगे। इन्होंने मुण्याश्रवकथाकोश, क्रियाकोश, अर्ध्यात्मवारहखड़ी, वसुनन्दिश्रावकाचार की टीका तथा पद्मपुराण की भाषा लिखी है। वसुनन्दिश्रावकाचार की टक्का टीका इन्होंने उदयपुर में बेलजी सेठ के अनुरोध से की थी। ये श्री आनन्दराम के पुत्र थे। संवत् १८०० के पूर्व ही इन्होंने

रचनायें लिखी हैं ।

७६—**देवेन्द्रकीर्ति**— ये भट्टारक सकलकीर्ति की शिष्य परम्परा में होने वाले भट्टारक प्रद्युम्नान्दि के शिष्य थे । इन्होंने सूरत निवासी संघपति श्री क्षेमजी के अनुरोध से महेश्वरनगर में प्रद्युम्नप्रबन्ध को संवत् १७२२ में समाप्त किया था । प्रबन्ध की भाषा साधारण है ।

७७—**दिलाराम**— इनके पूर्वज खडेले के रहने वाले थे । वहां से वूंदी नरेश के अनुरोध से वूंदी आकर रहने लगे थे । इनका गोत्र पाटणी था । कवि ने वूंदी नगर तथा वहां के राजवंश की खूब प्रशंसा लिखी है । इसके अतिरिक्त अपने वंश का भी अच्छा परिचय लिखा है । इन्होंने दिलारामविलास और आत्म-द्वादशी ये दो रचनायें लिखी हैं । कवि ने दिलारामविलास को संवत् १७६८ में समाप्त किया था । इनकी वर्णन शैली अच्छी है ।

७८—**धर्मदास**— कवि बारहसैनी ( द्वादशश्रेणी ) जाति में उत्पन्न हुये थे । इनके पूर्वज अपने प्रान्त में बहुत ही प्रतिष्ठित थे । इनके पिता का नाम राम और माता का नाम शिषी था । कवि ने धर्मोपदेशश्रावकाचार को १५७८ में समाप्त किया था । रचना की भाषा बड़ी सुन्दर है । इसमें जैन धर्म के मुख्य २ सिद्धान्तों को बड़ी ही अच्छी तरह से समझाया गया है ।

७८. **नथमल विलाला**— ये मूल निवासी आगरे के थे किन्तु बाद में भरतपुर में और अन्त में हीरापुर आकर रहने लगे थे । इनके पिता के नाम शोभाचन्द्र था । इनने सिद्धान्तसारदीपक की रचना भरतपुर में सुखराम की सहायता से की थी और मल्लामर की भाषा हीरापुर में पं० लालचन्द्र जी की सहायता से की थी । इनके अतिरिक्त जिनगुणविलास, नागकुमारचरित्र, जीवंधरचरित्र, जम्बूस्वामीचरित्र आदि भी आपकी ही कृतियां हैं ।

७९. **नरेन्द्रकीर्ति**— भट्टारक शुभचन्द्र के प्रशिष्य एवं सुमतिकीर्ति के शिष्य थे । इन्होंने नेमीश्वर चन्द्रायण लिखा है जो एक साधारण कृति है ।

८०. **नेमिचन्द्र**— ये भट्टारक जगत्कीर्ति के शिष्य थे । आमेर इनका निवास स्थान था । संवत् १७९३ में इन्होंने हरिवंशपुराण की रचना की थी । कवि ने आमेर का बहुत सुन्दर वर्णन किया है । कवि के छोटे भाई का नाम भगदू था । इनका गोत्र सेठी था । कवि के रूपचन्द्र, झंगरसी, लक्ष्मीदास, दोदराज आदि शिष्य थे ।

८१. **प्रभाचन्द्र मुनि**— इन्होंने अपने को मुनि धर्मचन्द्र का शिष्य लिखा है । प्रभाचन्द्र ने तत्त्वार्थसूत्र की हिन्दी टीका लिखी है । इनके समय के सन्बन्ध में विशेष ज्ञात नहीं हो सका है । तत्त्वार्थसूत्र भाषा की एक प्रति संवत् १८०३ की लिखी हुई शास्त्र भण्डार में है ।

८२. पांडे जिनदास— ब्रह्म शांतिदास के पास इन्होंने शिक्षा प्राप्त की थी। ये मथुरा के रहने वाले थे। यहीं रहते हुए संवत् १६४२ में जम्बूस्वामी चरित्र को समाप्त किया था। आपकी एक अन्य रचना जोग.रासो भी है जिसकी भाषा एवं शैली उत्तम है।

८४. पांडे रूपचंद— इन्होंने सोनगिरि में संवत् १७२१ में महाकवि बनारसीदास कृत समयसार की गद्य टीका लिखी थी। सोनगिरि में श्री जगन्नाथ श्रावक रहते थे और उन्हीं के अध्ययन के लिये कवि को पद्य से गद्य में अनुवाद करना पड़ा। ग्रन्थ की भाषा सुन्दर एवं प्रौढ़ है।

८५. परिमल्ल— इनके पितामह का नाम रामदास एवं पिता का नाम अस्तिमल्ल था। ये विरहिया जाति के थे। इनके पूर्वज ग्वालियर के रहने वाले थे। स्वयं परिमल्ल आगरे में रहते थे। इन्होंने अकबर के शासन काल में श्रीपालचरित्र की रचना की थी।

८६—बनारसीदास— जैन हिन्दी साहित्य के सूर्य महाकवि बनारसीदास १७वीं शताब्दी के विद्वान् थे। ये आगरे के निवासी थे। माता पिता की एक मात्र सन्तान होने के कारण इनका विवाह वचपन में ही हो गया था। ये प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। प्रारम्भ से ही इनको कविता करने का शौक था। यौवनावस्था में ये संसारिक भगडों में फंसे रहे। इसी अवस्था में इन्होंने नवरस पद्मावली नामक पुस्तक की रचना की लेकिन जब उसकी असत्यता मालूम हुई तो इन्होंने उसे गोमती नदी में बहा दिया। इसके पश्चात् इनका मुकाव आध्यात्मिकता की ओर हुआ और फिर नाममाला, नाटक समयसार, बनारसीविलास, एवं अर्द्धकथानक का निर्माण किया। कवि की सभी कृतियां उच्च कोटि की हैं।

८७—भैरवा भगवतीदास— ये आगरे के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम लालजी था। ये ओसवाल जैन थे तथा कटारिया इनका गोत्र था। महाकवि बनारसीदास के समान ये भी प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। कवि हिन्दी, संस्कृत, फारसी, गुजराती आदि सभी भाषाओं के विद्वान् थे। हिन्दी के अनैरिक्त अन्य भाषाओं में भी इनकी कवितायें मिलती हैं। आपकी कविता अलंकार एवं प्रसाद गुण से ओत प्रोत रहती है।

८८. धूधरदास— ये आगरे के रहने वाले थे। खण्डेलवाल जाति में इनका जन्म हुआ था। इनकी ३ रचनायें उपलब्ध हैं—पार्श्वपुराण, जैनशतक तथा पद संग्रह। ये कवि ही नहीं थे, किन्तु जैन सिद्धान्त के अच्छे विद्वान् भी थे। पार्श्वनाथपुराण इनका बहुत ही सुन्दर काव्य ग्रन्थ है। इनके बनाये हुये पद जैन समाज के अत्यधिक प्रिय हैं।

८९. मनोहरदास— ये धामपुर के निवासी थे। आसू साह के यहां इनका आश्रय था। सेठ के सम्बन्ध में इन्होंने बड़ी मनोरंजक घटना लिखी है। सेठ की दरिद्रता आने के कारण वह बनारस से अयोध्या चले गये किन्तु वहां के सेठ ने उन्हें खूब सम्मान तथा अतुल सम्पत्ति देकर वापिस ही विदा कर दिया।

कवि ने हीरामणि के उपदेश से धर्मपरीक्षा की रचना की थी। आगरा निवासी सालिवाहण, हिसार के जगदत्तमिश्र तथा उसी नगर में रहने वाले गंगराज के अनुरोध से धर्म परीक्षा की रचना की गयी थी।

९०. राजमल्ल — उपलब्ध हिन्दी जैन गद्य के सबसे प्राचीन लेखक हैं। इन्होंने संवत् १६०० के आस पास समयसार की हिन्दी टीका लिखी थी। समयसार के पठन पाठन को इन्होंने ही टीका लिख कर सुगम बनाया था। महाकवि बनारसीदास ने भी इन्हीं की टीका के आधार पर समयसार नाटक की रचना की थी।

९१. रूपचंद — कविवर रूपचंद पांडे रूपचन्दजी से भिन्न हैं। इनको महाकवि बनारसीदास ने गुरु के समान माना है। आप एक उच्च कोटि के कवि थे। कविता की भाषा और शैली बहुत ही उत्कृष्ट है। कवि की अभी तक परमार्थ दोहा शतक, परमार्थगीत, पदसंग्रह, गीतपरमार्थी, पंचमंगल एवं नेमिनाथरासो आदि रचनायें उपलब्ध हुई हैं। आप भी आगरे के ही रहने वाले थे।

९२. लब्धरुचि — ये विद्यारुचि के शिष्य थे। इन्होंने चन्दनूपरास नामक एक रचना लिखी है जिसको इन्होंने संवत् १७१३ में समाप्त की थी। इनकी भाषा पर गुजराती का अत्यधिक प्रभाव है। इन्होंने प्रशस्ति में भट्टारक परम्परा एवं अपनी गुरु परम्परा का अच्छा उल्लेख किया है।

९३. लोहट — इनका जन्म बघेरवाल वंश में हुआ था। इनके पिता का नाम धर्मा था। ये तीन भाई थे। हींग और सुन्दर दोनों इनसे बड़े थे। पहिले ये सांभर रहते थे और फिर बूंदी आकर रहने लगे थे। कवि ने बूंदी का सुन्दर वर्णन किया है। बूंदी के राजवंश का भी वर्णन पठनीय है। कवि के समय में राव भावसिंहजी का राज्य था। संस्कृत भाषा में श्री पद्मनाभ द्वारा रचित यशोधरचरित का हिन्दी पद्य अनुवाद इन्होंने संवत् १७२१ में समाप्त किया था।

९४. लक्ष्मीदास — पंडित लक्ष्मीदास भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। ये सांगानेर के रहने वाले थे। इस समय महाराजा जयसिंह जी राज्य करते थे। पंडितजी ने यशोधरचरित्र की रचना भट्टारक सकलकीर्ति और पद्मनाभ की रचना के आधार पर की है। यशोधरचरित्र संवत् १७८१ की रचना है। कविता साधारण है।

९५. ब्रह्म रायमल्ल — ये जयपुर राज्य के निवासी थे इन्होंने अपनी रचनाओं को भिन्न २ स्थानों पर लिखी थी। इनमें हरसोर गढ, रणथम्भोर एवं सांगानेर प्रसिद्ध हैं। रायमल्ल अन्त में आकर सांगानेर ही रहने लगे थे। ये मुनि अनन्तकीर्ति के शिष्य थे। इन्होंने हिन्दी में अनेक रचनायें लिखी हैं इनमें नेमीश्वर रास, हनुमंतकथा, प्रद्युम्नचरित्र, सुदर्शनरास, श्रीपालरास, भविष्यदत्त कथा आदि उल्लेखनीय हैं। प्रचार की ओर प्रमुख ध्यान होने से इन्होंने सरल एवं साधारण भाषा में साहित्य लिखा है।

९६. ब्रह्म गुलाल — ये ग्वालियर के रहने वाले थे। भट्टारक जगभूषण के शिष्य थे। इन्हीं की अधीनता में रह कर कविता किया करते थे। त्रेपनक्रिया को इन्होंने संवत् १६९५ में समाप्त की थी। ग्वालियर पर उस समय सलीम (जहांगीर) का राज्य था।

६७ सुरचंद— ये इन्द्रभूषण के प्रशिष्य एवं ब्रह्म श्रीपति के शिष्य थे । कवि ने गृहस्थावस्था में रह कर रत्नपाल रासो की रचना की थी । कविता साधारण है । कविता पर गुजराती का प्रभाव है । रासो की रचना संवत् १७३२ में हुई थी ।

६८ समयसुन्दरगणि— सकलचन्द्र इनके गुरु थे । ये खरतरगच्छ के मुनि थे । संवत् १६९८ में इन्होंने सृगावति चरित्र को समाप्त किया था ।

अन्त में मैं श्री महावीर अतिशय क्षेत्रज्ञकमेटी के सभी सदस्यों तथा विशेषतः श्रीमान् मन्त्री महोदय को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने राजस्थान के जैन साहित्य के प्रकाशन का दृढ़ संकल्प किया है । श्रद्धेय गुरुवर्य पं० चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ को धन्यवाद देना छोटे मुँह बड़ी बात करना है क्योंकि यह सब उनकी कृपा का फल है । भा० भंवरलाल जी न्यायतीर्थ प्रो० वीरप्रेस भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने प्रशस्ति संग्रह को सुन्दर बनाने में बहुत योग दिया है । इसके अतिरिक्त सम्माननीय पं० जुगलकिशोर जी मुख्तार तथा प्रो० रामसिंह जी तोमर एम. ए. भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने समय समय पर अपनी बहुमूल्य सम्मति देकर मुझे उत्साहित किया है ।

प्रशस्ति संग्रह को सुन्दर बनाने का काफी प्रयत्न किया गया है किन्तु फिर कुछ खटकने योग्य कमियाँ रह सकती हैं । आशा है विद्वानगण इस ओर उदारता से ध्यान देंगे ।

जयपुर  
१—५—५०

कस्तूरचन्द कासलीवाल

## शुद्धाशुद्धिपत्र

| अशुद्ध              | शुद्ध                 | प्रति तथा पंक्ति |
|---------------------|-----------------------|------------------|
| ससारभीमुखे          | संसारभीमुखे           | १ x ८            |
| भयेंदु              | भयेंदु                | २ x ८            |
| प्राकृत             | अपभ्रंश               | २ x १३           |
| प्रार्थना ते        | प्रार्थनातो           | ३ x ३०           |
| प्रणित              | प्रीणित               | ३ x ५            |
| चंचद्रूचः           | चंचद्रूचः             | ५ x १५           |
| पठ्याधिक :          | पठ्यधिकः              | ८ x ७            |
| वह्नयग्नि           | वह्नयग्नि             | ८ x २५           |
| राद्रस्यो तत्पुराणं | रास्त्रस्यै तत्पुराणं | १३ x ६           |
| र्मद                | मेंद                  | १३ x ६           |
| त्रिभंगसार          | त्रिभगीसार            | १८ x ३           |
| सयौरजनः             | सपौरजनः               | २१ x २           |
| वर्णतां             | वर्णनां               | २६ x २           |
| सर्वकर्मरिसंतान     | सर्वकर्मरिसंतान       | ४१ x ६           |
| प्रख्यातननपां       | प्रख्यातमनीपां        | ४२ x २०          |
| धीरनार्थ            | धीरनाथ                | ४६ x २१          |
| अकञ्चरपुर           | अकञ्जरपुर             | ४६ x २१          |
| भव्यौघनिस्तारकः     | भव्यौघनिस्तारकः       | ६० x ६           |
| घातद्रामा           | घा तद्रामा            | ६१ x २           |
| जैसवालान्ये         | जैसवालान्ये           | ६५ x १७          |
| अभपद                | अभपद                  | ६७ x १           |
| वृक्षजित            | वृक्ष अजित            | ६९ x २०          |
| तदीय                | तदीय                  | ७० x ४           |
| भमिणि               | भानिणि                | ८१ x ३           |
| घघते                | मघघते                 | ११ x ३           |
| मुण दाण इट्ट        | मुणिदाणुट्ट           | १३ x ७           |
| गरवण                | गरवण                  | १०३ x ३३         |
| पावमु               | परवमु                 | ११० x ३३         |



सतावहारि  
सिरिकमरमसोहु  
भाहवसेणु  
राकइत्तु  
छंदु  
नथू  
१६०४  
काल वमा  
वि...  
पहन  
कवही  
ले  
सत्तर  
आल  
मुं दिगयाल  
वधाहोई  
किनसिंह  
असह  
निरगंध  
सहर  
जसइत्तु  
पिगलु

संतावहारि  
सिरिकमसीहु  
साहवसेणु  
कइत्तु  
छंदु  
णथू  
१६२४  
कालख माहि  
विबुध  
पहन  
कहीं  
लेस  
सत्तरह  
आलि  
मुं गिदयाल  
वधावा होई  
किशनसिंह  
रिसह  
निरगथ  
सेहरु  
जसइंधु  
पिगलु

११४ × ७  
११७ × १८  
१२८ × १  
१२८ × ५  
१५५ × १३  
१५७ × २३  
१८७ × ६  
२०८ × २८  
२२० × १६  
२२३ × १२  
२३३ × २३  
२३३ × १३  
३३६ × २३  
२४४ × १३  
२५१ × ४  
२५१ × २०  
२५४ × २३  
२६३ × ४  
२६३ × ४  
२८७ × ५  
२८८ × १६  
२८७ × १६

# विषय—अनुक्रम

नाम  
प्रकाशकीय वक्तव्य  
प्रस्तावना  
शुद्धाशुद्धिपत्र

पृष्ठ संख्या

## संस्कृत

|                            |                     |    |
|----------------------------|---------------------|----|
| आदिपुराण                   | (जिनसेनाचार्य)      | १  |
| आदिनाथपुराण                | (सकलकीर्ति)         | २  |
| उत्तरपुराण सटीक            | (प्रभाचन्द्राचार्य) | ३  |
| उपदेशरत्नमाला              | (सकलभूषण)           | ४  |
| करकण्डु चरित्र             | (शुभचन्द्र)         | ५  |
| कर्मकाण्ड सटीक             | (ज्ञानभूषण)         | ६  |
| चन्द्रप्रभचरित्र           | (शुभचन्द्र)         | ७  |
| जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसंग्रह | (सुरेन्द्रकीर्ति)   | ८  |
| जम्बूस्वामीचरित्र          | (जिनदास)            | ९  |
| जयकुमारपुराण               | (कामराज)            | १० |
| जिनसहस्रनामसटीक            | (श्रुतसागर)         | १३ |
| जीवंधर चरित्र              | (शुभचन्द्र)         | १४ |
| ज्ञानसूर्योदय नाटक         | (वादिचन्द्रसूरि)    | १६ |
| तत्त्वज्ञानतरंगिनी         | (ज्ञानभूषण)         | १६ |
| त्रिभंगीसार टीका           | (विवेकनन्दि)        | १७ |
| दुर्गपदप्रबोध              | (वल्लभगणि)          | १८ |
| धन्यकुमारचरित्र            | (सकलकीर्ति)         | १९ |
| धर्मपरीक्षा                | (अमितिगति)          | १९ |
| धर्मसंग्रह श्रावकाचार      | (मेधावी)            | २१ |
| नेमिनाथपुराण               | (नेमिदत्त)          | २६ |
| पद्मपुराण                  | (सोमसेन)            | २७ |
| "                          | (चन्द्रकीर्ति)      | ३० |
| "                          | (धर्मकीर्ति)        | ३१ |
| प्रतिष्ठापाठ               | (आशाधर)             | ३३ |
| प्रद्युम्नचरित्र           | (सोमकीर्ति)         | ३४ |

| नाम                                           | पृष्ठ संख्या |
|-----------------------------------------------|--------------|
| प्रवचनम्भार प्राप्त वृत्ति ( ब्रह्मरत्नदेव )  | ३६           |
| पाण्डवपुराण ( शुभचन्द्र )                     | ३७           |
| पुण्याश्रवकथाकोश ( रामचन्द्र )                | ३९           |
| पुराणसारसंग्रह ( सकलकीर्ति )                  | ४१           |
| भक्तमरस्तोत्रवृत्ति ( गुणसुन्दर )             | ४२           |
| " ( रायमल्ल )                                 | ४३           |
| " ( अमरप्रभसूरि )                             | ४३           |
| भोजप्रबन्ध ( रत्नमन्दिरगणि )                  | ४४           |
| महावीर पुराण ( आशाधर )                        | ४४           |
| महीपाल चरित्र ( चारित्रसुन्दरगणि )            | ४५           |
| मुनिसुव्रत पुराण ( कृष्णदास )                 | ४७           |
| मेघदूतावचूरि ( सुमतिविजय )                    | ४८           |
| मेघदूत टीका ( मेघराज )                        | ४९           |
| यशोधर चरित्र ( ज्ञानकीर्ति )                  | ४९           |
| " पद्मनाभ                                     | ५१           |
| यशोधर चरित्र ( सकलकीर्ति )                    | ५३           |
| योगचिन्तामणि ( हर्षकीर्ति )                   | ५३           |
| राजवास्तिक ( अकलंकदेव )                       | ५४           |
| वरांगचरित्र ( वर्द्धमान देव )                 | ५४           |
| वर्द्धमानपुराण ( सकलकीर्ति )                  | ५६           |
| श्रावकाचारसार ( पद्मनन्दि मुनि )              | ५७           |
| श्रीपालचरित्र ( नेमिदत्त )                    | ५९           |
| श्रेणिकचरित्र ( शुभचन्द्र )                   | ६१           |
| सम्यक्त्व कौमुदी                              | ६३           |
| " गुणाकरसूरि                                  | ६४           |
| सारस्वत चन्द्रिका सटीक ( चन्द्रकीर्ति )       | ६४           |
| सिद्धान्तसार संग्रह ( नरेन्द्रसेन )           | ६६           |
| सिन्दूर प्रकरण ( सोमप्रभसूरि )                | ६७           |
| सुदर्शन चरित्र ( नेमिदत्त )                   | ६७           |
| स्वामीकीर्तिकेयानुप्रेक्षा सटीक ( शुभचन्द्र ) | ६८           |

| नाम                          | पृष्ठ संख्या |
|------------------------------|--------------|
| अन्यक्त्यकौमुदी ( खेता )     | ६६           |
| अनुमच्चरित्र ( ब्रह्म अजित ) | ६६           |
| हरिवंशपुराण ( जिनदास )       | ७०           |
| हरिवंशपुराण ( जिनसेन )       | ७३           |

### प्राकृत—अपभ्रंश

|                                   |     |
|-----------------------------------|-----|
| अमरसेनचरित्र ( नाणिकराज )         | ७६  |
| आचारांग सटीक ( शीलाकाचार्य )      | ८५  |
| आत्मसंशोध काव्य ( रङ्गधू )        | ८५  |
| आदिपुराण ( पुष्पदंत )             | ८६  |
| उत्तरपुराण ( पुष्पदंत )           | ९०  |
| उपदेशमाला ( धर्मदासगणि )          | ९३  |
| उपासकाध्ययन ( वसुनन्दि )          | ९३  |
| करकण्डुचरित्र ( कनकामर )          | ९४  |
| कर्मप्रकृति ( नेमिचन्द्र )        | ९६  |
| कर्मकांडसटीक                      | ९७  |
| क्रियाकलाप                        | ९७  |
| क्रियाकलापस्तुति ( समन्तभद्र )    | ९७  |
| चन्द्रप्रभचरित्र ( यशःकीर्ति )    | ९८  |
| जम्बूखामीचरित्र ( वीर )           | १०० |
| जिनदत्तचरित्र ( पं० लाखू )        | १०१ |
| धनकुमारचरित्र ( रङ्गधू )          | १०४ |
| धर्मपरीक्षा ( हरिपेण )            | १०८ |
| नागकुमारचरित्र ( पुष्पदंत )       | ११० |
| नागकुमारचरित्र ( माणिकराज )       | ११३ |
| पञ्चमचरित्र ( स्वयम्भू )          | २८२ |
| पद्मपुराण ( रङ्गधू )              | ११६ |
| परमेश्वरप्रसाशसार ( श्रुतकीर्ति ) | १२० |
| पाण्डवपुराण ( यशः कीर्ति )        | १२२ |
| पद्मचरित्र ( श्रीधर )             | १२७ |
| पद्मचरित्र ( श्रीधर )             | १२७ |

| नाम                                      | पृष्ठ संख्या |
|------------------------------------------|--------------|
| पंचास्तिकाय प्राभृत ( कुन्दकुन्दाचार्य ) | १३२          |
| प्रद्युम्नचरित्र ( महाकवि सिंह )         | १३२          |
| वाहुवलिचरित्र ( धनपाल )                  | १३८          |
| भविष्यदत्तचरित्र                         | १४७          |
| भविष्यदत्तचरित्र ( श्रीधर )              | १५०          |
| मदनप्रराजय ( हरिदेव )                    | १५३          |
| मृगांकिलेखाचरित्र ( भगवतीदास )           | १५४          |
| मेघेश्वरचरित्र ( रङ्गधू )                | १५६          |
| यशोधरचरित्र ( पुष्पदंत )                 | १५६          |
| रत्नकरण्ड शास्त्र ( श्रीचन्द्र )         | १६४          |
| वर्द्धमान चरित्र ( जयमित्रहल )           | १६७          |
| वर्द्धमानकथा ( नरसेन )                   | १७०          |
| षट्कर्मोपदेशरत्नमाला ( अमरकीर्ति )       | १७१          |
| षट्पाहुड सटीक ( कुन्दकुन्दाचार्य )       | १७४          |
| श्रावकाचार ( लक्ष्मीचन्द्र )             | १७५          |
| श्रीपालचरित्र ( नरसेन )                  | १७६          |
| श्रीपालचरित्र ( रङ्गधू )                 | १७८          |
| सकलविधिनिधानकाव्य ( नयनन्दि )            | १८१, १८५     |
| सन्मतिजिनचरित्र ( रङ्गधू )               | १८१          |
| सुदर्शनचरित्र ( नयनन्दि )                | १८७          |
| सुलोचनाचरित्र ( गणिदेवसेन )              | १९०          |
| सुकमाल चरित्र ( पूर्णभद्र )              | १९२          |
| सुकमालचरित्र ( श्रीधर )                  | १९३          |
| हरिवंशपुराण ( श्रुतकीर्ति )              | १९५          |
| हरिपेण चरित्र ( अज्ञात )                 | १९६          |

### हिन्दी

|                                |     |
|--------------------------------|-----|
| अनित्यपंचाशत ( त्रिभुवनचंद )   | २०१ |
| अनेकार्थध्वनिमंजरी ( नन्ददास ) | २०१ |
| अष्टाहिका कथा ( जीवणरामगोधा )  | २०२ |
| अष्टाहिका कथा ( खुशालचन्द )    | २०२ |

| नाम                 | पृष्ठ संख्या            | नाम                    | पृष्ठ संख्या             |
|---------------------|-------------------------|------------------------|--------------------------|
| आदिनाथस्तुति        | ( कमलकीर्ति ) २०३       | धर्मरासो               | ( अचलकीर्ति ) २२७        |
| आदिपुराण            | ( ब्रह्मजिनदास ) २०३    | धर्मोपदेशश्रावकाचार    | ( धर्मदास ) २२८          |
| आदित्यवारकथा        | २०५                     | नयचक्रभाषा             | ( हेमराज ) २३०           |
| आदीश्वरफाग          | ( ज्ञानभूषण ) २०५       | नेमीश्वर गीत           | ( चतुर्भुज ) २३१         |
| आराधना प्रतिबोध     | ( सकलकीर्ति ) २०६       | नेमीश्वरचंद्रायण       | ( नरेन्द्रकीर्ति ) २३२   |
| ऋषभविवाहलो          | ( कुमुदचन्द्र ) २०६     | पद्मनन्दिपंचविंशिका    | ( जगतराय ) २३३           |
| कर्णवृत्तपुराण      | ( विजयकीर्ति ) २०७      | पंचेन्द्रियबोल         | ( ठक्कुरसी ) २३४         |
| कल्याणमन्दिरस्तोत्र | ( बनारसीदास ) २०७       | पंचास्तिकायभाषा        | ( हेमराज ) २३५           |
| कथाकोश संग्रह       | ( ब्र० जिनदास ) २०८     | परमार्थदोहा            | ( रूपचन्द ) २३५          |
| चतुर्दशी चौपई       | ( टीकम ) २०८            | प्रद्यम्नप्रबंध        | ( देवेन्द्रकीर्ति ) २३६  |
| चरचासमाधान          | ( भूधरदास ) २०९         | प्रवचनसार              | २३८                      |
| चन्द्रनृपरास        | ( लक्ष्मणरुचि ) २०९     | प्रद्युम्नरासो         | ( रायमल्ल ) २३९          |
| चिद्विलास           | ( दीपचंद काशलीवाल ) २११ | पार्श्वनाथ चौपई        | ( महेंद्रकीर्ति ) २३९    |
| चेतन कर्म चरित्र    | ( भगवतीदास ) २१२        | पार्श्वनाथपुराण        | ( भूधरदास ) २४०          |
| चौदह गुणस्थानचर्चा  | ( अखयराज ) २१२          | पोसहरास                | ( ज्ञान भूषण ) २४०       |
| छंदशिरोमणि          | ( शोभानाथ ) २१२         | बनारसी विलास           | ( बनारसीदास ) २४१        |
| जन्मस्वामी चरित्र   | ( जिनदास ) २१३          | वाशिष्ठिया बोलरो स्तवन | ( कान्तिसागर ) २४२       |
| जैन शतक             | ( भूधरदास ) २१४         | भरतबाहुबलि छंद         | ( कुमुदचन्द्र ) २४३      |
| तत्त्वार्थसूत्रभाषा | ( प्रभाचन्द्र ) २१५     | भविष्यदत्तकथा          | ( रायमल्ल ) २४३          |
| त्रिभुवननी विनती    | ( गंगादास ) २१६         | भक्तामरस्तोत्रभाषा     | ( नथमलविलाल ) २४४        |
| त्रिलोकदर्पण        | ( खड्गसेन ) २१६         | मृगावती चरित्र         | ( समयसुन्दरगण ) २४७      |
| त्रेपनक्रिया        | ( ब्रह्म गुलाल ) २१६    | माधवानल चौपई           | ( कुसललाभगण ) २४७        |
| त्रेपनक्रियाकोश     | ( किशनसिंह ) २२०        | मिथ्यादुकड             | ( जिनदास ) २४८           |
| त्रेपनक्रिया विनती  | ( कुमुदचन्द्र ) २२१     | यशोधर चरित्र           | ” २४८                    |
| दशलक्षणव्रतकथा      | ( ज्ञानसागर ) २२२       | यशोधर चरित्र           | ( लक्ष्मीदास ) २४९       |
| दिलाराम विलास और    |                         | यशोधर चौपई             | ( लोहट ) २५०             |
| आत्मद्वादशी         | ( दिलाराम ) २२२         | योगीरासो               | ( पंडे जिनदास ) २५२      |
| धनपालरास            | ( ब्रह्म जिनदास ) २२४   | रत्नपालरासो            | ( सुरचंद ) २५३           |
| धर्मपरीक्षा         | ( मनोहरदास ) २२३        | राजुल पञ्चीसी          | ( लालचंद विनोदीलाल ) २५४ |
| धर्मस्वरूप          | ( ब्रह्म गुलाल ) २२७    | रात्रिभोजनकथा          | ( किशनसिंह ) २५४         |

| नाम                | पृष्ठ संख्या           | नाम                                        | पृष्ठ संख्या        |
|--------------------|------------------------|--------------------------------------------|---------------------|
| वसुनन्दिश्रावकाचार | ( दौलतराम ) २५५        | सीताहरण                                    | ( जयसार ) २६७       |
| व्रतकथाकोश         | ( खुशाल बंद ) २५६      | सुदर्शनरासो                                | ( रायमल्ल ) २६९     |
| वचननेत्सव          | ( केशवदास नयनमुख ) २५७ | श्रावकाचाररासो                             | ( जिनसेवक ) २६६     |
| सनयसार कलशा भाषा   | ( राजमल्ल ) २५७        | श्रीपाल चरित्र                             | ( परिमल्ल ) २७१     |
| सनयसार नाटक        | ( बनारसीदास ) २५८      | श्रीपालरास                                 | ( रायमल ) २७२       |
| सनयसार नाटक भाषा   | ( रूपचन्द ) २६०        | हरिवंशपुराण                                | ( नेनीचंद ) २७८     |
| सन्यक्तवकौतुकीकथा  | ( जोधराज ) २६१         | होली की कथा                                | ( छीतर ठोलिया ) २८१ |
| सन्यक्तवरास        | ( त्रिजनदास ) २६३      | शताब्दी के अनुसार ग्रन्थों की प्रतिलिपियों |                     |
| सिद्धान्तसार दीपक  | ( नथनल विलास ) २६४     | की सूची                                    | २८८                 |
| सिन्दूरप्रकरण      | ( बनारसीदास ) २६६      | ग्राम नगर व शासकों की समयानुसार सूची       | २६६                 |
| सीताचरित्र         | ( रायचंद ) २६६         | यति भट्टारक आदि की अनुक्रमणिका             | ३०१                 |



# आमेर शास्त्र भंडार, जयपुर के

ग्रन्थों का

## प्रशस्ति-संग्रह

### १. आदिपुराण ।

रचयिता श्री जिनसेनाचार्य तथा गुणभद्राचार्य । भाषा संस्कृत । साइज १२x४। इञ्च । पत्र संख्या ३६६ । लिपि संवत् १८०३ माघ सुदी १५ । प्रति में ४२वें सगे तक आचार्य जिनसेन का नाम दे रखा है तथा अन्तिम पांच सगों में आचार्य गुणभद्र का नाम दे रखा है । प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट है ।

मंगलाचरण—

श्रीमते सकलज्ञानसाम्राज्यपदमीयुषे ।

धर्मचक्रभूते भर्त्रे नमः संसारभीमुखे ॥१॥ ।

### २. अद्वैतम पाठ—

यो नाभेस्तनयोपि विश्वविदुषां पूज्यः स्वयंभूरिति,

यत्काशेपपरिग्रहोपि सुधियां स्वामीति यः शब्दं

मध्यस्थोऽपि विनेयसत्त्वसमितेरेवोपकारीमतो,

निर्दोषोऽपि बुधैरुपास्यचरणो यः सोऽस्तुवः शान्तये ॥

इत्यादि भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते त्रिपटिलक्षणमहापुराणसंग्रहे प्रथमतीथेकरचक्रधरपुराण-परिसमाप्तं सप्तचत्वारिंशत्तमपर्वं समाप्तः ।

संवत् १८०३ वर्षे माघ सुदी १५ गुरौ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यो-न्वये भट्टारकश्रीविश्वभूषण तच्छिष्य ब्रह्मश्रीविनयसारजी तच्छिष्य ब्रह्म श्रीहर्षसागरजी तद्गुरुभ्राता संदित हरिकृष्णजी तच्छिष्य पं० जीवनरामजी तदनुचर पं० हेमराजस्येवं पुस्तकं पठनार्थं पंडित हरिकृष्णेन दत्तं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४३७. साइज ११।x५ इञ्च ।

संवत् १५८७ वर्षे मार्ग शुदि २ सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नंदनाथे कुंद-कुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पुत्रे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पुत्रे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा

स्तत्पट्टे भट्टारकप्रभाचन्द्रदेवास्तन् शिष्यमंडलचार्य धर्मचन्द्रदेवाः इदं आर्षं महापुराणं श्रीरत्नकीर्ति-  
शिष्येन ब्र० रत्नेन लिखापितं ।

## २. आदिनाथपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६६. साइज १५×५ इञ्च ।  
प्रति पृष्ठ १० पंक्त तथा अक्षर प्रति पंक्ति ४२-४६. संवत् १८०० में यह प्रति जयपुर के दीवान  
बालचन्द्रजी छावड़ा के पढ़ने के लिपिबद्ध हुई थी ।

इति श्री वृषभनाथचरित्रे श्रीसकलकीर्तिविरचिते निवाणगमनवर्णनो नाम त्रिंशत्तिसर्गाः ।

संवत्सरे मुनिवाणभयेंडमते आश्विनमासे कृष्णपक्षे पंचम्यां तिथौ बुधवासरे श्रीढाकानगरमध्ये  
श्री धनराज साह सास्त्रकीयपुस्तकं । लेखकः श्रीकालीचरणचक्रवर्त्तिनः ढाकासहर अंते पूर्वदिगे श्रीराजनाग्राम  
निवासिनः ।

संवत् १८३३ भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे सवाईजयपुरे भट्टारक श्री १०८ श्रीसुरेंद्रकीर्त्तये दीवानजी  
श्री बालचन्द्रजी छावड़ा गोत्रस्तद्विधः दशलक्षणप्रतोद्यापनार्थं इदं पुस्तकं घटापि ।

## ३. उत्तरपुराण सटीक ।

टीकाकार श्री प्रभाचन्द्राचार्य । भाषा <sup>अमर्या</sup> संस्कृत । पत्र संख्या ५६. साइज १०×४। इञ्च । टीका  
संवत् १८८०. टीका ३८ वें अध्याय से प्रारम्भ होती है । प्रति के बीच के पत्रों की स्याही उड़ गयी है ।

श्री विक्रमादित्यसंवत्सरे वर्षाणामशीत्यधिकसहस्रे महापुराणविषयविवरणं सागरसेनसैद्धांतान्  
परिज्ञाय मूलटिप्पणकं चावलोक्य कृतमिदं समुच्चयटिप्पणं । अज्ञातपातभीतेन श्री संघाचर्यसत्कविशिष्येण  
श्रीचन्द्रमुनिना निजदोढं भाभूतरिपुराव्यविजयिनः श्रीभोजदेवस्य । इति उत्तरपुराणटिप्पणकं प्रभाचन्द्रा-  
चार्यविरचितं समाप्तं ।

संवत् १५७७ वर्षे अषाढ वृद्धी २ रविवारे श्री मूक्तसंघे नंद्यम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे  
श्री कुंदकुंदाचार्यान्त्रये भट्टारक श्रीपद्मानन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकः श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिन-  
चन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीप्रभाचन्द्रदेवाः तत् शिष्यमुनिधर्मचन्द्रस्तदात्मनाये खंडेलवालान्वये पाटणी  
शोधे नामपुरवास्तव्ये संघभारधुरंधरसाह लूणा तद्भार्या लूणाश्री तयोः पुत्र चतुर्विधदानवितरणकल्पवृक्षः  
संधु अर्हदास तद्भार्या अल्हसिरि तत्पुत्र संधु पहराज द्वितीय धनराज पहराज भार्या पटमदे एतैरेवं शास्त्रं  
लिखाप्य मुनि श्री धर्मचन्द्राय दत्तं ।

## ४. उपदेशरत्नमाला ।

रचयिता आचार्य श्री सकलभूषण । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १३७. साइज ११।५ इञ्च ।

पंक्ति प्रति पृष्ठ १० तथा अक्षर प्रति पंक्ति ३६-४२. अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थ षट्कर्मोपदेशरत्नमाला के आधार पर उक्त ग्रन्थ की रचना हुई है। प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है। रचना संवत् १६२७, लिपि संवत् १८२६.

मंगलाचरण—

वेदं श्रीवृषभं देवं दिव्यलक्षणैर्लक्षितं ।  
प्रणितप्राणिसंवरं युगादिपुरुषोत्तमं ॥१॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

श्रीमूलसंघतिलके वरनन्दिगच्छे  
गच्छे संरस्वतिसुनामि जगत्प्रसिद्धे ।  
श्रीकुन्दकुन्दगुरुपट्टपरंपरयां  
श्रीपद्मनन्दिमुनियः समभूजिताक्षः ॥१॥

तत्पट्टधारी जनचित्तहारी पुराणमुख्योत्तमशास्त्रकारी ।  
भट्टारकः श्रीसंकलादिकीर्तिः प्रसिद्धनामाजनिपुण्यभूतिः ॥२॥  
भुवनकीर्तिगुरुस्ततर्जितो, भुवनभासनशासनमंडनः ।  
अर्जनि तीव्रतपश्चरणक्षमो, विविधधर्मसंमृद्धिसुदेशकः ॥३॥  
श्रीज्ञानभूषापरिभूषितांगः, प्रसिद्धभंडित्यंकलानिधानः ।  
श्रीज्ञानभूषाख्यगुरुस्तदीयपट्टोदयाद्वाविव भानुरासीत् ॥४॥  
भट्टारकश्रीविजयादिकीर्तिस्तदीयपट्टे वरलब्धकीर्तिः ।  
महामना मोक्षसुखाभिलाषी बभूव जैनावनियार्च्यपादः ॥५॥  
भट्टारकश्रीशुभचंद्रसूरिस्तत्पट्टपंकेरुहातिगमरश्मिः ।  
त्रैविद्यब्रह्मः सकलप्रसिद्धो वादीभसिहो जयतांद्धरिद्र्यां ॥६॥  
पट्टे तस्य प्रणितप्राणिवरः  
शांतीदातः शीलशालीसुधीमान् ।  
जीयात्सूरिः श्री सुमत्यादिकीर्तिः  
गच्छाधीशः कर्मकांतिकलावान् ॥७॥

तत्संभूच्चं गुरुभ्राता नमिना संकलभूषणः ।  
सूरिर्जिनमते लीनमनाः संतोषपौषकः ॥८॥  
तेनोपदेशसद्रत्नमालासंज्ञो मनोहरः ।  
कृतः कृतिजनार्दननिमित्तं ग्रंथ एषकः ॥९॥  
श्रीनेमिचंद्राचार्यादियतीनामाग्रहत्कृतः ।  
सद्वेद्धमानांभेलादि प्रार्थना ते मयैषकः ॥१०॥



सप्ताद्विंशत्यधिके षोडशशतवत्सरे सुविक्रमंतः । ...  
 श्रावणमासे शुक्ले पक्षे पृष्ठायां कृतोऽयं ग्रंथः ॥ ११ ॥  
 न मया ख्यातिनिमित्ति न चाभिमानेन विरचितो ग्रंथः ।  
 वर्मरत्नानां गृहिणां हिताय च स्वस्य पुण्याय ॥ १२ ॥  
 यावत्सिद्धाः सिद्धधामप्रपन्नामेर्वाद्या वै भूधराः भूरि संख्याः ।  
 चंद्रादित्याद्याश्च खे सख्यसंख्याः संतिष्ठन्ते तावदास्तां ममायं ॥ १३ ॥  
 श्रीवीरगौतमाद्येश्व श्रेणिकस्य पुरः पुरा ।  
 यदुक्तं तच्च संचिप्य मयापीह विरूपितं ॥ १४ ॥  
 सिद्धांतशब्दयुक्त्यादिविरुद्धं यन्मयोदितं ।  
 क्षमितव्यं मुनीशैस्तत्सर्वशास्त्राधिपारगैः ॥ १५ ॥  
 न्यूनमक्षरमात्रघोरज्ञानान्मयकात्रयत् ।  
 प्रोक्तं क्षमस्व तद्देवि सारदे श्रीजिनास्यजे ॥ १६ ॥  
 जिनसिद्धसृष्टिपाठकसाधुमुनीन्द्राश्चतुर्विधस्य संघस्य ।  
 विदधतु-मंगलमतुलं भुक्तिं मुक्तिं च यच्छंतु ॥ १७ ॥  
 सहस्रं त्रितयं चैव त्रिशतत्रयशीतिसंयुतं ।  
 ३३८३ अनुष्टुपछंदंसा चास्य प्रमाणं निश्चितं बुधैः ॥ १८ ॥

इति भट्टारक श्रीशुभचन्द्रशिष्याचार्य श्रीसकलभूषणविरचितायां उपदेशरत्नमालायां पुण्यषट्कर्म-  
 प्रकाशिकायां तपोदानमाहात्म्यवर्णनो नमः अष्टादशपरिच्छेदः ।

संवत् १८२६ मिति मार्गशिर सुदी २ बृहस्पतिवारं सर्वाईजयपुरनगरे चंद्रप्रभचैद्यालये पंडितो-  
 त्स्पंडितजी श्री रायचंदजी तत् शिष्य सेवक सर्वाई रामेण इदं पुस्तकं लिपिकृतं ॥

प्रति नं० २. पत्र संख्या १३६. साइज ११।।×४।। इच्छ । लिपि संवत् १७४५. प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है ।

सवत्सरे वाणान्धि मुनीन्दुमिते १७४५ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे चतुर्दशीतिथौ गुरुवारं शनिभिषा  
 नक्षत्रे शुभनामयोगे श्रीमद्वृणापणे श्रीमच्चन्द्रप्रभचैत्यागारे पातिसाह श्री अवरंगसाहि तरलामंत महाराजा  
 श्री राजसिंहजी राज्ये श्रीमूलसंघे नंदाम्राये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुदाहत्यान्त्रये भट्टारक श्री देवेन्द्र  
 कीर्ति स्तरेभट्टे भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्तिदेवा स्तरेभट्टे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्तिदेवास्तरेभट्टोदयाद्रिदिनमणिनिभा  
 गांभीयं वैद्यैर्दार्ढ्यपांडित्यसौजन्यप्रमुखगुणगणमणि रोहणोक्षितिभृतः भट्टारकश्रीजगत्कीर्तितदाम्नाये  
 खडेलवालान्त्रये छावडा गोत्रे साह श्री गंगाराम; वज्रगोत्रे साह श्री अनंदराम, साह श्री खेतसी साह श्री  
 मार्धा; पहाड्या गोत्रे साह श्री वनमालोद्गास तट्टुत्र जंदराम; साह श्री तेजसिंह, सेठी गोत्रे साह श्री मनराम  
 साह श्री पूरा, साह मेघा तिलोकचंद; पांड्या गोत्रे साह श्री वेणा, साह श्री ढोला, साह घडसीजी, पाटणी

गोत्रे साह श्री माधो, साह श्री टोडर. सोनी गोत्रे साह श्री जमा, अजमेरा गोत्रे साह श्री पूरा एते सर्वाः भट्टारक श्री जगत्कीर्तिदेवातच्छात्र ब्रह्मचारि नाथूराम संज्ञाय तद्भ्रातानुज सुधी मगडू संज्ञाय एताभ्यामिदं पुस्तकं नामषट्कर्मोपदेशस्तमालाप्रार्थ सर्वे श्रावकाः लिखाण्य ब्रह्म श्री नाथूरामाय घटापितं ।

### ५. करकण्डुचरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री शुभचन्द्र तथा मुनि श्री सकल भूषण । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०६ । साइज १० १/४ x ५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३-३६ अक्षर । रचना संवत् १६११, लिपि संवत् १८६१. प्रारम्भ के ४ पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघे जनि पद्मनदी तत्पट्टधारा सकलादिकीर्तिः  
कीर्ति कृता येन च समर्थलोके शास्त्रार्थवक्त्री सकला पवित्र ॥ १ ॥  
भुवनकीर्तिरभूद्भवनाविपो भवनभासनभूरिमतिस्त्रुतः ।  
द्वरतपश्चरणोद्यतमानसो भवनयाहि खगेट् क्षितिभूक्षमः ॥ २ ॥  
x x x x x x x x x

पट्टे तस्य गुणांशुविप्र तचरो धीमान् गरीयान्वरः  
श्रीमच्छ्री शुभचन्द्रएव विदितो वादीभसिंहो महान् ।  
तेनेदं चरितं विचारुचिरं चाकारि चंचद्रूतः  
श्रीमच्छ्री करकण्डुनामद्वयः नीत्यानरस्तद्विषं ॥ ३ ॥

चन्द्रनाथचरितं चरितार्थे प्रक्षणाभ चरितं शुभचन्द्रः ।  
रुग्मथस्य चरितं च सुचारं जीवकस्य चरितं चकार ॥ ४ ॥  
वन्दनायाः कथा येन दृष्ट्वा नांदीश्वरी तथा ।  
आशाधरकृताच्चाया श्रुतिः सद्वृत्तशालिनी ॥ ५ ॥  
त्रिंशच्चतुर्विंशतिपूजनयः वृद्धं च सिद्धार्चन माविषत्तं ।  
सारस्वतीयार्चनमत्रचित्रं चिंतामणीयार्चनमुच्चरिणुः ॥ ६ ॥  
श्रीकर्मदाह विधिबधुरसिद्धसेवां

नानागुणौघगणनाथसगर्व्वर्म्म च ।

श्रीपार्श्वनाथव काव्यमुपजिगां च

यः सचकार शुभचन्द्रयतीचन्द्रः ॥ ७ ॥

ब्रह्मापनमदीपिष्टा पत्न्योपमविविधं यः ।

चारित्रशुद्धि तपसश्च जुस्त्रिद्विदशात्मनः ॥ ८ ॥

शंसयिवदनविदारण मपशब्दसुखंढनं परं ।  
 तत्कर्क स तत्त्रनिर्णयवरस्वरूपसंत्रोविनीवृत्ति ॥ ९ ॥  
 अध्यात्मपद्यवृत्तिर्सैवाथापूर्वतोभद्रं ।  
 यो कृत् सद्ग्याकरणं चित्तमणिर्नामधेयं च ॥ १० ॥  
 युग्मं कृत्वा चेनांगप्रकृतिः सर्वार्थं गार्थं प्ररूपिका ।  
 स्तोत्राणि च पावित्र्याणि पटपदाः श्रीजिनेशिनः ॥ ११

x x x x x x x x

करकडुनरेन्द्रस्य चरितं तेन निर्मम ।  
 जिनेशपूजनेप्रीत्येत्यैदं समुद्रस्य शास्त्रतः ॥ १२ ॥  
 शिष्यस्तस्य समृद्धिबुद्धिविशदो यस्तर्कवादीवरो  
 वैराग्यादिबिशुद्धिबुद्धिजनकः सर्वार्थसुहोमहान् ।  
 संप्रीत्यासकलादिभूषणमुनिः संशोध्य वेदं शुभं,  
 तेनालेखिसुपुस्तकं नरपतेराद्यसुचयेशिनः ॥ १३ ॥

x x x x x x x x

ध्वष्टो विक्रमतः शातसमुद्रातचेकादशाब्दविका  
 भाद्रेमासिसमुद्रालयुगतिबोखङ्गेजावादेपुरे ।  
 श्रीमच्छ्रीवृषभेश्वरस्य सदाने चक्रो चरित्रं त्विदं,  
 राज्ञः श्रीशुभचन्द्रसूरि यतियश्चपाधिपस्याद्भवं ॥ १४ ॥

इति श्री शुभचन्द्रविरचितमुनीश्रीसकलभूषणसहाय्यसापेक्षे भव्यजनजेगीयमानयशोराशि श्री  
 करकडुमशाराजचरिते करकडु दीक्षाग्रहणसर्वार्थसिद्धिगमनौ नाम पंचदश सर्गः ।

६. कर्मकांडसटीक ।

टीकाकार श्री ज्ञानभूषण तथा श्री सुमतिकीर्तिः । आषा संस्कृत । पत्र संख्या ५४ । साइज १२x५॥  
 इष्ट । टीका काल १६ वीं शताब्दी । लिपि संवत् १७७७ । प्रतिपूर्ण तथा सुन्दर है ।

संगलाचरण—

महावीरं प्रणम्यादौ विश्वतत्त्वप्रक शकं ।  
 आप्यं हि कर्मकांडस्य वेद्ये भव्यहितंकरं ॥  
 विद्यानंदिसमल्लयादि भूपलक्ष्मीदु सद्गुरुन् ।  
 वीरेंदुज्ञानभूषं हि वंदे सुमतिकीर्तिकं ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघमहासाधुर्लक्ष्मीचन्द्रोद्यतीश्वरः ।  
तस्य पट्टे च वीरेन्दुर्विवुवो विश्ववन्दितः ॥ १ ॥  
तदन्वये दयाभोगिज्ञानभूषणगुणाकरः ।  
टीकां हि कर्मकाण्डस्य चक्रे सुमतिकीर्तियुक् ॥ २ ॥

इति भट्टारक श्री ज्ञानभूषणनामांकिता सूरी श्रीसुमतिकीर्ति विचिता कर्मकाण्डस्य टीका समाप्तः ।

संवत् १७७७ वर्षे द्वितीय अपाढ सुदी ६ भौमदिने श्रीमद्भट्टारक श्री १०८ देवेंद्रकीर्ति तच्छिष्य  
पण्डितकिशनद्रासस्य ब्राचनार्थे लिखितं महात्मा धनराजेन श्री अंबावतीमध्ये श्री सवाईजयसिंहजी विजयराज्ये ।

७. चन्द्रप्रभचरित्र ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७२ । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा  
प्रति पंक्ति में, ३८-४२ अक्षर । विषय—आठवें तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभु का जीवने चरित्र । प्रति पूर्ण तथा  
नवीन है ।

मंगलाचरण—

श्रीवृषं वप्रभं वंदे वृषं वृषभांकिनं ।  
वपभादिसभाश्रित पादद्वितयप्रक्रजं ॥ १ ॥  
चन्द्रप्रभं जिनं स्तौमि चन्द्रकांत सुचंद्रकं ।  
चंद्रांकं चेदितं चंद्रैश्चंद्रिकाहततामसं ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

त्रैलोक्यसारादिसुलोकग्रंथान्, सद्गोष्मटादीन् वरदीवहेतून् ।  
सत्तर्कशास्त्राष्टसहस्रधीशान्नो वेद्यहं भोहवशी कृतांतः ॥ १ ॥  
तथाविधोपि प्रगुणैर्जिनेश, स्तुवश्च सद्भिः सकलैः परैश्च ।  
क्षाम्यः सदा कोपगणं विहाय, बाल्ये जने को हि शुभं न दद्यात् ॥ २ ॥  
श्रीमूलसंघे जनि पद्मनन्दी, तत्पट्टधारी सकलादिकीर्तिः ।  
तत्पट्टधारी भुवनादिकीर्ति, जीयाच्चिरं धर्मधुरीणदत्तः ॥ ३ ॥  
तत्पट्टे जनिवोधवुद्धनिखलन्यायादिशास्त्रार्थ—  
कश्चिद्रूपामृतपानलालसमतिः श्रीज्ञानभूषोजयी ।  
जीयात् पंचमकालकल्पशिखरी तत्पट्टधारी चिरं,  
श्रीमच्छ्री विजयादिकीर्तिमुनियो भूयाच्चशास्त्रार्थवित् ॥ ४ ॥

सोम प्रभः सोमसमानतेजाः श्रीसोमसल्लाङ्घनइद्वर्कातिः ।

सोमः सुसूर्तिश्च करोतु साम्यं श्री शौभचद्रस्य सुयोगिनः सः ॥ ५ ॥

यः संश्रणोति भजते निखिलं चरित्रं,

यः कायतिप्रथयतीदुनिभस्यभावात् ।

यः पाठयन् पठयति जिनभक्तिरागात्,

स सिद्धिभीरुमुखपंकजमश्रुतेहि ॥ ६ ॥

पञ्चधिकाः सर्व्वे शतपंचदशामलाः

प्रमाणमस्य विज्ञेयं लेखकैः पाठकैः सदा ॥ ७ ॥

इति श्रीचन्द्रप्रभचरिते भट्टारक श्रीशुभचन्द्रविरचिते भगवतो निर्वाणगमनो नाम दशमः सर्गः ।

संवत्सरे मदनविक्रमवसुरूपमिते मासोत्तममासे श्री चन्द्रप्रभुतीर्थकरजन्मनि पवित्रते चैत्रमासे कृष्णपक्षे तालसोटशुभस्थानमव्ये वनोपवननदीर्थिकाकासारसमाकुले महाराजाधिराज श्री सवाई प्रतापसिंहराज्य-प्रवर्त्तमाने श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये पंडित श्री परसराम जी तत् शिष्य अणंदराम चि० तदन्तेवासी भगवानदास पठनार्थं लिखापितं ॥

८. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति संग्रह ।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८२, साइज १३x५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४० अक्षर रचना संवत् १८३३.

मंगलाचरण—

श्री वीरं प्रणिपत्योचै विघ्नसंदोहनाशकं ।

प्रारब्ध कार्यकर्तारं वक्ष्ये द्वीपप्रज्ञप्तिकं ॥ १ ॥

धन्तिस पाठ तथा प्रशस्ति—

एवं श्रीपद्मनन्दिगुणगणकलितो मानसे मे पदं स्वं,

कृत्वाप्यस्थाः सुकृतकृतं श्रीसुरैन्द्रादिकीर्त्तः ।

श्रीमत्तेमेन्द्रकीर्त्तिप्रवरमुनिवरप्रेष्ठशिष्यस्य नित्यं,

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिप्रवररचनाटिप्पणीवद्विधातुः ॥ १ ॥

अद्वै बहियग्निवस्विंदुमित अमले पौष शुक्लस्य षष्ठ्यां,

श्रीमन्नाभेयगेहे वितनुमतिना प्राकृतात्संस्कृतेन ।

श्रीमूलाख्ये सुसंघे तनुमतिविदां बोधनायार्थमेषा,

बंधो नोच्चैः प्रकल्पता सकलजनशुभामंगलं मे करोतु ॥ २ ॥

श्रीमद्वलात्कारगणे सुरभ्ये सरस्वतीगच्छमुनीद्रपूज्ये ।  
श्रीकुन्दकुन्दान्वयके सरोजे देवेंद्रकीर्तिः प्रबभूवभानुः ॥ ३ ॥  
भट्टारकानां च शिरोमणिर्यस्तत्पट्टके भूत्यमहीन्द्रकीर्तिः ।  
देवेंद्रकीर्तिर्ममैव गुरुया भूम्या ततोऽभूत्तत्ता सुधीरः ॥ ४ ॥

x x x x x x x x x x

इति जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिप्रसंगे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्तिविरचिते प्रमाणपरिच्छेदो नाम त्रयोदशपरिच्छेदः समाप्तः ।

दूरतः ६. जम्बूस्वामिचरित्र ।

वैक्रमसंस्कृतं २ चयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा-संस्कृत । पत्र-संख्या १०५. साइज १०।४ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ प्रतापसिंहपर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्तिः २८-३१ अक्षरः । विषय-अन्तिम-केवली श्री जम्बूस्वामि का जीवनचरित्र । शिव अणालिपि संवत् १६६३.

मंगलाचरण—

श्रीवर्द्धमानतीर्थेशं वन्दे मुक्तिवधूवरं ।  
कारुण्यजलधिं देवं देवाधिपनमस्कृतं ॥ १ ॥

४४ इच्छ । प्रति ६

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्रीकुन्दकुन्दान्वयमौलिरत्नं, श्रीपद्मनन्दिविदितः प्रथिव्यां ।  
सरस्वतीगच्छविभूषणं च, बभूव अव्यालिसरोजहंसः ॥ १ ॥  
ततोऽभवत्तस्य जगत्प्रसिद्धेः, पट्टे मनोज्ञे-सकलादिकीर्तिः ।  
महाकविः शुद्धचरित्रधारी, निर्णयराजा जगति-प्रतापीः ॥ २ ॥  
जयति सकलकीर्तिः पट्टपङ्केजभानुः,  
जयति भुवनकीर्तिः विश्वविख्यातकीर्तिः ।  
बहुयतिजज्ञयुक्तो मुक्तिमागमयेता,  
कुमुदशत्रुजिता भव्यसन्मर्गनेता ॥ ३ ॥  
विबुधजननिपेक्ष्यः संस्कृतानेककाव्यः,  
परमगुणनिवासः सद्गुणालीविलासः ।  
विजितकरणमारः प्राप्तसंसारपारः,  
स भद्रतु गतदोषः शम्भवे चः सतोषः ॥ ४ ॥  
पट्टपङ्केजदेवस्तपसो विधाता,  
क्षमाभिधः श्रीनिलयं धरित्र्यां ।

जीवाञ्जितानेकरूपहारिः

संबोधयन् भव्यगणं चिरं सः ॥ ५ ॥

भ्रातास्ति तस्य प्रथितः पृथिव्यां सद्ब्रह्मचारी जिनदासनामा ।

ननोति तेन चा तं पवित्रं, जंबूदिनाम्नो मुनिसत्तमस्य ॥ ६ ॥

देशे विदेशे सततं विहारं, वितन्वता येन कृताः सुलोकाः ।

विशुद्धसर्वज्ञमतप्रवीणाः परोपकारजनतत्परेण ॥ ७ ॥

सद्ब्रह्मचारी किल धर्मदासस्तस्यास्ति शिष्यः कविबद्धसख्यः ।

सौजन्यवल्ली जलदः कृतोयं, तद्योगतो व्याकरणप्रवीणः ॥ ८ ॥

कविमेहादेव इति प्रसिद्धस्तन्मित्रमास्ते द्विजवंशरत्नं ।

महीवले नूनमसौ कृतश्च, साहाय्यतस्तस्य सुधर्मे हेतोः ॥ ९ ॥

ग्रन्थः कृतोऽयं जिननाथभक्त्या, गुणानुरागाच्चमहामुनीनां ।

पूजाभिमानाद्बहिर्तेन नूनं मया प्रशस्तः परमार्थे बुद्ध्या ॥ १० ॥

ये श्रवन्ति चरित्रमुत्तमनिदं श्री जंबुनाम्नो मुने,

नानाचित्रकथाविभूषितमतिप्रवीण्यसंबोधनं ।

तेषां स्वाद्विपुण्यक्रमेतिपुणा बुद्धिः शुभं भूरिव,

त्यक्तशेषभद्रप्रसूतसुखसार्थग्यामुधर्मास्वदं ॥ ११ ॥

पठनीयपठनीयशास्त्रमेतन्मुनीश्वरैः ।

जंबूस्वामिचरित्राद्यं रोमांचजननं नृणां ॥ १२ ॥

ज्ञतव्यं शारदे देवि यदत्रस्त्वांलतं मया ।

मोहप्रमादं वशतः श्रुताब्धौ को न मुह्यति ॥ १३ ॥

जंबूवामिजिनाश्रीशो भूयान्मांगल्यासिद्धये ।

भवतां भुवि भो भव्याः श्री वीरांतिम केवली ॥ १४ ॥

एकत्रिंशतिसंख्यानि शतान्यत्र चरित्रके ।

त्रिंशद्युतानि श्लोकानां, शुभानां संति निश्चितं ॥ १५ ॥

इति श्री जंबूवामिचरित्रे भट्टारक श्रीसकलकीर्तिशिष्य ब्रह्मचारी श्रीजिनदास विरचिते विद्युच्च  
महामुनिसंबोधमिद्धि गननं नामैकादशः सर्गः ।

१०. जयकुमार पुराण ।

रचयिता ब्रह्म कामराज । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७६ । साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४४ अक्षर । प्रतिपूरा है तथा प्राचीन है । लिपि सवत् १७१६ ।

मंगलाचरण—

श्रीमंतं त्रिजगन्नाथं वृषभं नृसुरार्चिवतं ।  
भवभीतिनिहंतारं वंदे नित्यं शिवाप्तये ॥ १ ॥  
नमः श्री शान्तिनाथाय शान्तिकर्मारये निशं ।  
पंचभ्यस्सद्गुरुभ्योस्तु प्रणामोभीष्टसाधकः ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

इति पूर्णं जयाख्यस्य पुराणं योगिनो वरं ।  
पठनपाठनश्रोतृशीलानां जयपुण्यदं ॥ १ ॥  
प्राप्तशिरो जयीदेयाज्जयोस्माभिः स्तुतः श्रुतः ।  
युस्माभिर्नः पुराणस्य व्याजाद्वत्तत्रयं वचः ॥ २ ॥  
प्रकथ्यतेऽन्नयोऽथात्र ग्रन्थकृद्ग्रन्थभक्तजः ।  
मूलसंघे वरे वीरपारंपर्याच्चतुर्गणे ॥ ३ ॥  
अभूद्वर्णो बलात्कारः पद्मनंघ्रिं पंचसु ।  
नामास्मिन्श्च मुनिग्रीव शारदा बलवाचकः ॥ ४ ॥  
आचार्या कुदकुंदाख्यात्तस्मादनुक्रमादभूत् ।  
सकलकीर्तियोगीशो ज्ञानी भट्टारकेश्वरः ॥ ५ ॥  
येनाधृतो गतो धर्मो गुर्जरे वाग्वरादिके ।  
निग्रन्थे न कवित्वादिगुणे न वाहता पुरा ॥ ६ ॥  
तस्माद् भुवनकीर्तिं श्रीज्ञानभूषणयोगीशम् ।  
विजयकीर्तयोऽभवन् भट्टारकपदेशिनः ॥ ७ ॥  
तेभ्यः श्री शुभचंद्रश्री सुमतिकीर्त्ति संयमि ।  
गुणकीर्त्याह्वया आसन् बलात्कारगणेश्वरः ॥ ८ ॥  
ततः श्री गुणकीर्त्तीयपदव्योमदिवाकरः ।  
वादिनां भूषणो भट्टारकोऽभूत् त्रादिभूषणः ॥ ९ ॥  
तत्पदाधीश्वरो विश्वव्यापिनी श्वेतकीर्त्तिधृत् ।  
रामकीर्तिरभूदस्य रामो वा सुखदो गुणैः ॥ १० ॥  
तस्मात् स्वगच्छतिरस्ति स पद्मनन्दी ।  
निष्णातकोकसुखकारकपद्मनन्दी ।  
भट्टारको जिनमतांबरपद्मनन्दी  
श्रीरामकीर्त्तिपदभूषणपद्मनन्दी ॥ ११ ॥



यः शब्दतर्कपरमागत विद्विरागी

रागां शिवे विहितसर्वतपः समूहः ।

भक्तद्वयं वस्त्रपरिवर्जनजाततपः,

कालकलां परिक्रतां खलवस्तुतोभिः ॥ १२ ॥

वस्त्राणां त्यजनकण्डोऽयं दन्तिनां वशादिबालस्यैव

धृत्वाप्रेसनरादिसिंहनृगतिः खड्गं पुररूपेति सः ।

ग्राहं सि प्रविर्त्तय नो मुनेर्वरत्वं चावराणि भ्रमो

राजन्यं कुत संगृह्य सतदां स्यांगीकृताग्र चलत ॥ १३ ॥

गिरिपुर धिपतिनृं पशुं गवस्तनमिवीदयं सुदौर्लसते भ्रमुः ।

गिरिधरादिमेहांससमूहयः जलधिरवु च येन विधुः यथा ॥ १४ ॥

तदुपदेशत्रयेन तदोच्यसत्प्रवरपुण्यभराकृतसाहसं ।

अयपुराणमिदं तनुं बुद्धिना शिवतमंगजनायसुवेरिनिः ॥ १५ ॥

नामप्रवृत्तभवयं वतजोवराजनेयोदलात्सकलसौख्यकरः कृतोऽयं ।

लैनालयः स्थपतिदुर्द्धभरादपूर्वो ग्रंथो नु वा जयश्रुतो जिनदशनोन्वया ॥ १६ ॥

भट्टारकस्य गुरुवंधुरभूत्संसिद्धो,

मेधावतः सुनेतिकीर्तिसुनेर्गुणार्चयः ।

आवायेमुख्यसकलादिर्मूर्खेणालिङ्ग-

स्तोत्रेणैव सूरिभैवत् स नरेन्द्रकीर्तिना ॥ १७ ॥

पूर्णस्य वक्तृकविनादिगुणैरदंभोः

शिर्यो वंभूव नृपमान्यनरेन्द्रकीर्तिः ।

वर्णीत्सरा भवयुषः संहिताल्लिख्यकाख्यः,

शिर्योऽर्थितं तस्य जयसेवककामराजः ॥ १८ ॥

मात्रासंविचिभक्तिलिगवचनांतीकाररीत्यादिभिः,

प्रोक्तं यद्रहितं सरप्रतिमया ग्रंथेऽत्र सूरेश्वरोः ।

निर्वाण विदुर्भावतः जंगमयिन्वैतद्विहिते चालके,

कालेवास्फुटवाप्रते शिवकरा तादृश्यकोलाद्रुते ॥ १९ ॥

हुःसंध्यादिमलं विनाश्यं गुणिनः संवीक्ष्य यूयं बुधाः,

हर्षन्तः कविषु हव कुहेत मो प्रयद्रहः स्वात्मनि ।

शुद्धं सज्जनता गुणाद्दृढमिवा कृतादिनैर्मल्यदं,

गंभीरं पृथुलं त्रिवर्गसालिलं पंक्तारव्यासराः ॥ २० ॥

भूयात्पुराणरचना भवपुण्यतो मे,  
सम्यक्पदेन सहितो भवसौख्यवर्गात् ।  
अन्योत्थकर्मजनकाष्टिमुखस्य काचि-  
चारित्ररत्ननिचयो न हितस्ततोऽन्यः ॥ २१ ॥

अमृतवाद्धि ख भूमि सुदर्शनो विजयनामनगाचलमंदिरचपलरुक् ।  
समूहोः साहिताः इमे जयतु यावदिदं भुवनत्रये ॥ २२ ॥  
शिल्पिरुत्पादयत्येव जिनविंशं तथा कविः ।  
शास्त्रं तन्मान्यतामेति मान्यं तन्मानितं जनोः ॥ २३ ॥  
राद्रस्यो तत्पुराणं शकमनुजयतेमेदपाटस्यमुख्ये ।

पश्चात् संवत्सरस्य प्ररचितमदतः पंच पंचाशतोद्दि ।  
अभ्राभ्राक्षो संवत्सरनिकरयुजः फागुणे मासि पूर्णे ।  
द्रुमेवोचोदयाख्ये सुकविनिनयिनो लालजिष्टोश्च वाक्यात् ॥ २४ ॥  
सकलकीर्तिकृतं पुरुदेवजं समवलोक्य पुराणमियंकृतिः ।  
जयमुनेर्गुणपालसुतस्य च बृहदलं जिनसेनकृतंकृता ॥ २५ ॥

इति श्री जयांके जयनाम्निपुराणे भट्टारक श्री पद्मनन्दिगुरुपदेश ब्रह्मकामराजविरचिते पं० जीवराज-  
सहाय्यात् त्रयोदशमः सर्गः ॥

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८५. साइज ११×४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति  
में ३७-४२ अक्षर । प्रति पूर्ण है ।

संवत् १६६१ वर्षे भाद्रवा बुदी ३ शुके श्रीमूजसंघे सरस्वतिगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदा-  
चायान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेवास्तद्वये भट्टारक श्री वादिभूषणदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री रामकीर्तिदेवा  
स्तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनन्दीस्तदाम्नाये श्री गुर्जरदेशे श्री सूरतविदार श्री वासपूज्यचैत्यालये हुंवडजात य  
साह श्री संतोपी भ्राता साह जीवराज तयोः जननी आर्यिका वाई करमा तथा स्थविराचार्य श्री नरेंद्रकीर्ति-  
स्तच्छिष्य ब्रह्म श्री लाड्यका तत्च्छिष्यब्रह्म श्री कामराजाय जयपुराणं लिखाप्य दत्तं ॥

संवत् १७३० वर्षे त्र० कामराजेन स्वामिष्ट शिष्य त्र० वाघजीष्टवे जयपुराणमिदं दत्तं ॥

२१. जिनसहस्रनाम सटीक ।

मूलकर्त्ता आचार्य जिनसेन । टीकाकार आचार्य श्री श्रुतसागर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६१ ।  
साइज १२×५॥ इच्छ । प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है ।

प्रशस्ति—

अर्हतः सिद्धनाथस्त्रिघमुनिजनभारती चार्हतीऽङ्ग्या  
 सद्यो कुंदकुंदो विबुधजनहृदानंदनः पूज्यपादः  
 विद्यानंदो कलंकः कलिमलहरणः श्रीसमंतादिभद्रो  
 भूयान्मे भद्रबाहुर्भवभयमथनो मंगलं गौतमादि ॥ १ ॥  
 श्रीपद्मनन्दिपरमात्मपरः पवित्रो  
 देवेन्द्रकीर्तिरथसाधुजनाभिवंधः ।  
 विद्यादिनन्दिवरसूरिरनल्पबोधः,  
 श्रीमल्लिभूषण इतोस्तव च मंगलं मे ॥ २ ॥  
 × × × × × ×  
 श्रीश्रुतसागरकृतिवरवचनामृतपानमत्र यैर्विद्धि न  
 जन्मजरासरणहरं निरंतरं तैः शिवं लब्ध्वः ॥ ३ ॥  
 अस्ति स्वस्ति समस्तसंघतिलकः श्रीमूलसंघं,  
 वृत्तं यत्र मुमुक्षुवर्गशिवदं संसेवितं साधुभिः ।  
 विद्यादिगुरुस्त्रिहास्तिगुणवद्गच्छेगिरः सांप्रतं,  
 तच्छिष्यश्रुतसागरेण रचिता टीका चिरं नंदतु ॥ ४ ॥  
 इत्याचार्यश्रीश्रुतसागरविरचितायां जिननामसहस्रटीकायामंतकृच्छ्रतविवरणे नाम दशमोऽध्यायः ।

१२. जीवंधर चरित्र ।

रचयिता श्री शुभचन्द्राचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६५. साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-३६ अक्षर । प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट है । रचना संवत् १५६६. लिखित संवत् १६३६. जीवंधर चरित्र अभी तक अप्रकाशित है ।

मंगलाचरण—

श्रीसन्मतिः सतां कुर्यात्समीहितं फलं परं ।  
 येनाप्तेत महायुक्तराजस्य वरवैभवः ॥ १ ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

श्री मूलसंघो यतिमुख्यसेव्यः, श्रीभारतीगच्छविशेषशोभः ।  
 मिथ्यामतंध्वान्तविनाशदहो, जीयाच्चिरं श्रीशुभचन्द्रभासी ॥ १ ॥  
 श्रीमद्विक्रमभूषतेर्वसुहन्तव्रैतेशतेसप्तह,  
 वेदैर्न्यूनतरे समे शुभतरे पिमासे वरे च शुचौ ।

चारे गीष्पतिके त्रयोदशतिथौ सन्तूतने पत्तये,

श्री चन्द्रप्रभाम्नि वै विरचितं चेदं मया तोषतः ॥ २ ॥

इति श्री जीवंधरस्वामिचरिते जीवंधरस्वामिमोक्षगमनवर्णननामत्रयोदशो भर्तः ।

संवत् १६३६ वर्ष अषाढ सुदी १३ सोमवारे सांषणाग्रामे राय श्री सुरजनजी प्रवृत्तमाने श्री मूलसंवे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मानन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य-मंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिदेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्री चन्द्र-कीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खडेलवालान्वये साहगोत्रे साह श्री कमा तद्भार्या द्वे प्रथम भार्या करणादे द्वितीया लहुडी । तयोः पुत्राः पंच । प्रथम पुत्र साह ऊदा, द्वि० सा. माधु. वृ. सा० माधु चतुर्थ सा. चांदु पंचम सा. कालु । सा. ऊदा तद्भार्या उत्पदे तयोः पुत्रौ द्वौ । प्रथम पुत्र जिनपूजापुरंदरान्, दानगुणे श्रेयांस, कीर्त्ति-गुणे रामचन्द्र, शीलगुणे सुदर्शन, प्रभावनांगे वज्रकुमार, इत्याद्यनेकगुणालंकृतगात्रान् साह श्री भीखा तद्भार्या दानशीलतपभावना भावलदे तयोः पुत्राः चत्वारिः । प्रथम पुत्र साह जेसा भार्या जसमादे, द्वि० पुत्र मोटा, तृतीय चि० वेणा चतुर्थ चि० हरीदास । द्वितीय पुत्र साह सेखा तद्भार्यातिस्रः प्र० भा० शृंगारदे तयोः पुत्र चि० तेजा । द्वितीया भार्या सक्तादे । तृतीया भार्या संकरदे । सा. माधु भार्या मुक्तादे तयोः पुत्राः पंच । प्रथम पुत्र सा. श्रीतु भार्या बीतादे तयोः पुत्रास्त्रयः प्रथम पुत्र खीवा द्वितीय पुत्र सांगा । तृतीय पुत्र माल्हा । द्वितीय पुत्र धर्मा भार्या धारादे तत्पुत्र ताल्ह । तृतीय पुत्र लाखा भार्या लखमादे । चतुर्थ पुत्र परवत भार्या पाटमदे । पंचम पुत्र नानू भार्या नारंगदे । सा. साधु भार्या पदमपती । साह चांदू भार्या दानशीलतप-भावना सुहाणीचांदणदे तयोः पुत्रा चत्वारः । प्रथम पुत्र कुलमंडन सा. श्रिया तद्भार्या प्रथम सुहागदे द्वि० भार्या लाहुडी । द्वितीय पुत्र हीरा भार्या हीरादे तृ० पुत्र बोद्धि भार्या बहुरंगदे चतुर्थ पुत्र होला भार्या हरषमदे । साह कालू भार्या द्वे प्रथम केलवदे, द्वितीया भार्या कौतिगदे तयोः पुत्राः चत्वारः । प्रथम पुत्र सा० आखा भार्या अहंकारदे द्वि० पुत्र चि० देवा तृतीय पुत्र गढमज चतुर्थ पुत्र जालप एतेषां मध्ये जिनपूजा-पुरंदरान्, राजसभाशृंगारहारोपमान्, सौम्यगुणचद्रमा प्रतापगुणसूर्यसम, गंभीरगुणसमुद्रतुल्यान् इत्याद्यनेक गुणगुणालंकृतगात्रान् साह श्री ऊदा तत्पुत्र कुलमंडन साह सेखा तेनेदं कर्मक्षयार्थं जीवंधरचरित्रं लिखाय पं० श्री पदारथपठनाय दत्तं ।

१३. ज्ञानसूर्योदय नाट ।

रचयिता श्री वादिचंद्रसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३१. साइज १०।४। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४४ अक्षर । रचना संवत् १६४८. लिपि संवत् १८३५. श्री वादिचन्द्र सरस्वतिगच्छ के आचार्य थे तथा पं० प्रभाचन्द्र के शिष्य थे । नाटक अभी तक अप्रकाशित है ।



ये च विक्रमातीताः शतपंचदशाधिकाः ।  
पष्टिसंवत्सराः जातास्तदेयं निर्मिताकृतिः ॥ ३ ॥  
ग्रन्थसंख्यात्रविज्ञेयाः लेखकैः पाठकैः किल ।  
पट्विंशदधिका पंचशती श्रोतृजनैरपि ॥ ४ ॥

इति सुमुखभट्टारकश्रीज्ञानभूषणविरचितायां तत्त्वज्ञानतरंगिण्यां शुद्धचिद्रूपप्राप्तिक्रमप्रतिपादकोऽष्टादशोऽध्यायः ।

संवत् १८२५ लिखतं माणि६ चंदमहात्मना सवाईजं पुरमध्ये ।

१५. त्रिभंगीसार टीका ।

टीकाकार श्री विवेकनन्दि । भाषा प्राकृत संस्कृत । पत्र संख्या ३७, साइज ११×४॥ इच्छ ।

मंगलाचरण—

सर्वज्ञं कुरु एवं त्रिभुवनाधीशार्च्यपादं विभुं ।  
यं जीवादिपदार्थसायबलने लब्धप्रशंसं सदा ॥ १ ॥  
कर्मद्रुमोन्मूलनदिवकरीद्रं सिद्धांतपाथो नचिदृष्टपारं ।  
पट्विंशदाचार्यगुणैः प्रयुक्तं नमाम्यहं श्रीगुणभद्रसूरिं ॥  
या पूर्व्वे श्रुतमुनिना टीका कर्णाटकभाषया विहिता ।  
लाटीयभाषया सा विख्याते सोमदेवेन ।

X X X X X  
! णिपत्यं नामचंद्र धृपभाष्यान् विपश्चिमान् जिनान् स्वान् ।  
६६ये स्वभाषयाहं विशदां टीकां त्रिभंग्यायां ॥

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

यथा नरेन्द्रस्य पुत्तोमपुत्रा प्रयानारायणस्याव्विसुता बभूव ।  
तथा तदेवस्य विजोणिनाम्नी प्रिया सुधर्मा सुगुणा सुशीला ॥ १ ॥  
तयोः सुतः सद्गुणवान् सुवृत्तः सोमोभिधः कोमुदवृद्धिकारी ।  
व्याघ्रेखालावुनिधिः सुरत्नं जीयाच्चिरं सर्वजननवृत्तः ॥ २ ॥  
श्रीमल्लिनोक्तानि समंजसानि शास्त्राणि लेभे स यथात्मशक्त्या ।  
श्रीमूलसंचाव्वि विवर्द्धनैदोः श्रीपूज्यपादं प्रसुसत्तसादात् ॥ ३ ॥

X X X X X  
श्रीपद्माद्रियुगे जिनस्य नितरां लीनः शिवाशाधरः  
सोमः सद्गुणभाजनं सत्रिनयः सत्तावदाने रतः ।

सद्रत्नत्रयं तु सदा बुधमनोहलादी चिरं भूतमे,  
नद्यादिना विवेकिना विरचिता टीका सुबोधाविधा ॥ ४ ॥  
इति त्रिसंगोसारटीका समाप्ता ।

१६. दुर्गपदप्रबोध ।

दत्तायता चाचकाचार्य श्री बल्लभ गणेश । भाषा संस्कृते । पत्र संख्या ३० । साईज १०x४॥ इअ ।  
प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ७३-७६ अक्षर हैं । प्रति जीर्ण है, अनेक स्थानों पर अक्षर मिटे  
गये हैं ।

संगलाचरण—

स्वस्ति श्री दायकं देवं नायकं शांतिनायकं ।  
सद्बुद्धिदयकं शास्त्रकारिणं प्रणम्यतः ॥

प्रशस्ति—

श्री अक्षरराजाधिप.....प्राप्तभाष्यह्रीर्त्तिनां तेषां गुरुराजानां धर्मे राज्ये सुविख्याते । भूमि-  
पम् १६८१ संख्ये वर्षे सुखाधिके मासे कार्तिके सप्तमी दिने..... ।

पुत्रीत्वेन सुग्री न ह्यी शरण्यं ब्रह्मणः श्रिया ।  
त्रिधाधिक्यं पराभूना येषां ते ऽसीयं जयतिह ॥ १ ॥  
ज्ञानविमलनामानः उपाध्यायाः गुणश्रयः  
तर्कसाहित्यसिद्धांतप्रमुखग्रंथसमृद्धिः ॥ २ ॥  
तेषां शिष्यत्रयैश्चक्रे श्री श्रीवल्लभयाचकैः ।  
दुर्गपदप्रबोधोऽयं प्रकटज्ञानहेतवे ॥ ३ ॥  
श्री हेमचंद्रमुरीन्द्रः कृते लिगानुशासने ।  
विद्यते या शुभा वृत्तिः तस्या दुर्गार्थबोधदः ॥ ४ ॥

X X X X X  
इति श्री दुर्गपदप्रबोधः समाप्तः ।

संवत् १८१२ का मिति पोष सुदी १० आदित्यदिने श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती-  
गच्छे कुंदकुदाचार्यान्वये मंडलाचार्य श्रीनिधानदिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री महेंद्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मंडला-  
चार्य श्री अनंतकीर्ति स्तदाम्नाये रुडेलशालान्वये बडजात्या गोत्रे साह श्री ठाकुरसी तत्पुत्राश्चत्वारः  
प्रथम पुत्र साह श्री गोरधनदास तत्पुत्र साह श्री मयाराम, द्वितीय पुत्र साह श्री सूर्यमल तत्पुत्र साह श्री नव-  
निधिराम, तृतीय पुत्र साह श्री योधराज तत्पुत्र साह श्री साहिवराम, चतुर्थ पुत्र साह श्री परमानंद तत्पुत्रौ  
चि० राजाराम हरिचंद्रौ एतेषां मध्ये साह श्री नवनिधिरामेन इदं ग्रंथं मंडलाचार्य श्री १०८ श्री अननन्त  
कीर्ति जी तच्छिष्य पंडित उदयरामाय चोपितः ।

### १७. धन्यकुमार चरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री संकलकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३४ । साइज ११×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४४ अक्षर । प्रति प्राचीन है । उक्त चरित्र हिन्दी अनुवाद सहित बनारस से प्रकाशित हो चुका है ।

मंगलाचरण—

नमः श्री वद्धमानाय पंचकल्याणभागिने ।

जिनाय विश्वनाथाय मुक्तिभर्त्रे गुणानुरये ॥ १ ॥

अन्तिमपाठ—

सर्वे तीर्थंकर जगन्नरहिताः सिद्धाः अनन्तविन्दः

पंचाचारपरायणाश्चगणिनः सत्पाठकाः साधवः ।

स्वमुक्त्यादिसु साधनावरतपो युक्ताश्च वंशा सुता

भग्यैश्च मया दिशंतु शिवदं संस्तंगलं मेभवः ॥ १ ॥

भवेयुः श्रीमतोधन्यकुमारख्यसुयोगिनः ।

चरित्रस्याखिलाः श्लोकाः सार्द्धाष्टशतसंख्यकाः ॥ २ ॥

इति धन्यकुमार चरित्रे भट्टारक श्री पद्मानन्दिदेवस्तस्य शिष्यमुनिसकलकीर्ति विरचिते धन्यकुमारतपः सत्रोत्थसिद्धि गमनो नाम सप्तमो सर्गः ।

संवत् १५३३ वर्षे पौष सुदी ३-शुक्रौ श्रवण नक्षत्रे श्री नयनपुरे सुरत्राण गयासुहेन राज्ये प्रवर्तमाने श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतिगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्येण्वये भट्टारक श्रद्धानन्दिदेवास्तस्यै भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तस्यै भट्टारक श्री सिद्धकीर्तिदेवाः तच्छिष्य मुनि रत्नभूषण तन्निमित्ते खंडेलवालान्वये सह नार्थूतद्वार्या नैरासिरी तयोः पुत्राः पंचायण भार्यापुंसरी । साह तेजा भार्या तेजसिरी । तत्पुत्र साह हं गर । साह गोल्हा भार्या नील्हंसिरी तयोः पुत्रौ साह दोसा तयोः निजज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थमिदं धन्यकुमारचरित्रं स्वहस्तेन प्रदत्तं ।

### १८. धर्मपरीक्षा ।

रचयिता श्री अमितभक्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६० । साइज १२×४ १/४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर । रचना संवत् १०७० लिपि संवत् १७३३ प्रति साधारण प्रवस्था में है । ग्रंथ प्रकाशित हो चुका है ।

मंगलाचरण—

श्रीमन्नमस्वस्त्रयतुंगशालं जगद्गृहं बोधमयः प्रदीपः ।

समंततो द्योतयते यदीयो भवतु ते तीर्थंकराः श्रिये नः ॥ १ ॥



प्रशस्ति—

सिद्धांतपाधोनिधिपरगासी श्रीवीरसेनोऽजनिस्सूरिवयः ।  
 श्रीमाथुरानां यमिनां वरिष्ठः कपायविध्वंसविधौ यतिष्ठः ॥ १ ॥  
 भासिताखिलपदार्थसमूहो निम्नलोमितगतिर्गणनाथः ।  
 वासरो दिनसरोखि तस्माज्जायतेस्म कमलाकरबोधी ॥ २ ॥  
 नेमिदेणगणनायकाततः

पावनं दृषमधिष्ठितोविभुः ।

पावन्तीतिरिवास्तमन्मथो

योगगोपनपरोगणार्चितः ॥ ३ ॥

कोपनिवारी शमदम्धारो माधवसेनः प्रणतरसेनः ।

सोऽभवदस्माद्धलिमदस्मा यो यतिसारः प्रशमितसारः ॥ ४ ॥

धर्मपरीक्षाकृतवरेण्या

धर्मपरीक्षामखिलशरण्या

शिष्यवरिष्ठोमितगतिनामा

तस्य पट्टो नद्यमग्निधामा ॥ ५ ॥

x x x x x x x x

संवत्सराणां विगते सहस्रे संसप्ततौविक्रमपार्थिवस्य ।

इदं निषेद्धान्यमतं समाप्तं जिनेन्द्रधर्म्मामितियुक्तशास्त्र ॥

इति धर्मपरीक्षायाममित गतिकृतायां समाप्तः परिच्छेदः ।

संवत् १७३३ कार्तिक सुदी २ दिने शुक्रवारे श्रीपातसाह मुलकगीर राज्ये सहादरामध्ये सा० पर-  
 सदास तन् पुत्र बनारसीदास तत्पुत्र निर्मलदास लिखावितं । लेखक श्वेतांबररामचंदेनलिख्यतं ।

प्रति नं० २ । पत्र संख्या १४५ । साइज १०x५ इञ्च । लिपि संवत् १६६६ ।

अथ संवत्सरे श्री नृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६६६ वर्षे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे तिथी ३ । कवारेः  
 श्री मूलसंघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री पद्मानन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र-  
 देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवाः द्वितीयः शिष्यमंडलाचार्य श्रीभुवन-  
 कीर्तिदेवास्तत्पट्टे मं. श्रीधर्मकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मं. श्रीविसालकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री लक्ष्मीचन्द्र देवा-  
 स्तत्पट्टे मं. श्री नेमचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री यशःकीर्तिस्तदाम्नाये गंगवाल गोत्रे जोबनेरवास्तव्ये राजि-  
 मनोहरदासत्रिजयराज्ये सा० कालू तस्य भार्या कवलादे तस्य पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्र सा० तेजा तस्य भार्या तिल-  
 कादे तस्य पुत्राः षट् । प्रथम पुत्र सा तिलोका तस्यप्रायो तिहुसिरी तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र चि० श्रवण

द्वितीय पुत्र चि० करमचंद । सा० तेजा द्वितीय पुत्र सा० वेगा तस्य भार्या वेगमदे तस्य पुत्र चि० गोबीदास ।  
सा० तेजा तृतीय पुत्र चि० सीहा चतुर्थ पुत्र चि० हीरा पंचम पुत्र चि० नराइण षष्ठ पुत्र चि० सिरीपाल  
..... एतेषां मध्ये सा० रूप तस्य पुत्र चि० हूंगरसी इदं धर्मपरोक्षानामशास्त्रं मुनिगुणचंद्राय  
प्रदत्तं

प्रति नं० ३. १३ संख्या ११५५ इच्छ । लिपि संवत् १५६६.

संवत् १५६६ पौष वृदि ६ शुक्ले दूर्ष्टकापथदुर्गे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदा-  
चायान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्ददेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचंद्रदेवास्तदा-  
म्नाये मिथ्यातमध्वान्तसूर्याः परमसंद्धान्तिकर्मललाचार्यः श्रीसहजानन्ददेवास्तच्छिष्य दादिगणकेशरिचरित्रपात्र-  
परमतपस्वीमंडलाचार्यः श्री धर्मकीर्तिदेवाः । तस्याम्नाये सकलगुणसमान्वितपंडित चार्यः अरु भार्या साध्वी  
लाडो पुत्र ६ प्रथम पुत्र पं० दीन भार्या द्वितीयः पुत्रः पं० घाघो तृतीयपुत्रः पं० धीरु भार्या साध्वी सुलखा ।  
चतुर्थपुत्र वीरु पंचमपुत्र पं० दासे षष्ठ पुत्र खरगु एतेषां मध्ये साध्वी सुलखा एतत् शास्त्रं लिखापितं ।

### १६. धर्मसंग्रह श्रावकाचार ।

रचयिता पंडित श्री मेधावी । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ७१ । साइज ११×५ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर  
६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४३ अक्षर । रचना संवत् १५४१. लिपि संवत् १५४२ । कवि ने बादशाह  
फिरोजखां के शासन का उल्लेख किया है तथा लिपिकर्त्ता ने बहलोल, साह के राज्य का उल्लेख किया है ।  
ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है ।

श्रियं दद्यात् स वो देवो नित्यानंदपदप्रदां ।

यस्त्यानंतानिदृग्ज्ञानवीर्यसौख्यानानंतवत् ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

॥

मेधाविनो गणधरात् स निशम्य धर्मं

श्रीगौतमादिति सयौरजनः प्रशस्तं ।

भूयो निजं दृढतरां प्रविधाय दृष्टिं,

नत्वा जिनं मुनिवरांश्च गृहं जगाम ॥ १ ॥

१. अनादिकालं भ्रमतां मया या नाराधिता क्वापिबिराधितैव ।

आराधनां मंगलकारणीं, तामाराधयामीह जिनेन्द्रभक्तः ॥ २ ॥

इति सूरि श्री जिनचंद्रांतेर्वासना पंडितमेधाविना श्रीधर्मसंग्रहे सल्लेखनास्वरूपकथनं श्रेणिकराजस्य

प्रवेशनं च दशमोधिकारः

शरित—

स्वस्ति स्वतिलकायमानमुकुटधृष्टां हि पाथोरुहे,

स्वस्त्यानंदचिदात्मने भगवन्ते पूजार्हं ते चार्हते ।

स्मृति प्राणिहितकराः त्रिभवे सिद्धाय बुद्धायतेः

नरकमुत्ततिकरादिनाशर हतस्वस्थाय शुद्धायते ॥ १ ॥

व्यापननमसदास्तनपुष्पद्वयी

पिष्टीकृ मयस्सुदंकरवैणलदराः ।

ये ऽप्राप्तनोवृत्तदृष्टानवीर्ययुक्ताः

स्ते सन्तु नोजिनवराः शिवसौख्यदा वै ॥ २ ॥

नृपयस्सुदंकरवैणलदराः, संभूय लोकशरसि स्थितमादवानाः

सिद्धाः लक्ष्मिपूमागतमूर्तिवंधा, भूयान्सुराशु मम ते भवदुःखहान्यैव ॥ ३ ॥

कुलोत्तरादिगुणराजिविराजिमानाः

क्रोधादिदूषणमहीधृतद्विस्तमानाः ।

ये पञ्चाक्षरणाचारणलब्धमानाः

नंदतु ते मुनिवराः बुधवंशमानाः ॥ ४ ॥

ये ऽध्यापयन्ति विनयोपनेतान्विनेयोन्

सद्गद्गद्शांगमखिलं रहसि प्रवृत्तान् ।

अर्थं दिशन्ति च विंध्या विधिवद्विद-

स्ते ऽध्यापकाः हृदि मम प्रवसंतु संतः ॥ ५ ॥

रत्नत्रयं विविधमभ्यसृताय नूनं,

ये ध्यानमौननिरतारतपसि प्रधानाः ।

संसाधयन्ति सततं परभावमुक्ता

२

स्ते साधवो ददंतु मेऽग्रियमात्मलानां ॥ ६ ॥

३

लोकोत्तनाः शरणार्थगलसंग्रभाजामहंविमुक्तस्मृतयो जिनधर्मकाश्च ।

ये ताज्जमसि च ददामि हृदबुद्धेर्हं, संसारवारिधिसमुत्तरणैकसेतून् ॥ ७ ॥

स्याद्वाचिर्न स्तु जैनशासनं, जीयस्त्रिजोकीजनशर्मसाधनं ।

चक्षुः सतां वंशमनिद्यवोचनं, जन्मक्ययधौन्यपदार्थशासनं ॥ ८ ॥

रत्नानिदिसंधसुक्तेर्मदिवाकरोभू-

च्छ्रीकुंदकुंद इति नाम मुनिश्वरोऽसौ ।

जीयात्स यद्विहितशास्त्रमुधारसेन

मिथ्याभुजंगगरत्नं जगतः प्रणष्टं ॥ ६ ॥

आम्नाये तस्य जातो गुणगणसहितो निम्मेष्टब्रह्मपूतः

संविद्या पारयातो जगति सुविदितो मौहरागव्यतीतः ।

सूरिपद्मानन्दी भवेविद्वितिनदी नाविको भव्यनदी

स्यन्नित्यानित्यवादी परमतविलसन्निर्मदी भूतवादी ॥ १० ॥

तत्पट्टे शुभचंद्रकोऽजनि जनिधौव्यांतरुपार्थवि-

द्वेषा स तपसां विधानकरणाः सद्धर्म्मरक्षाचणः ।

येनोद्योति जिनैर्द्रदर्शननभो नक्तं कलौ व्योत्सना,

सद्बुत्त्यामृतगर्व्या गुरुबुधा नंदात्मना स्वात्मना ॥ ११ ॥

तस्मान्जीरनिधेरिवेदुरभवच्छ्रीमज्जिनैर्द्रगणी,

स्याद्वादावरमंडलैकृतगतिर्दिग्वाससां मंडनः ।

यो व्याख्यानमरीचिभिः कुवलये प्रल्हादनं चकित्रान्,

सद्बुत्तः सकलः कलंकविकलः षट्कर्कनिष्णातधीः ॥ १२ ॥

श्रीमत्पुस्तकगच्छसागरानंशानाथः श्रुतादिमुनि-

जातोर्हन्मततर्ककर्कशतया न्यायवादिनो योऽभिनत् ।

यस्मादष्टसहस्रिकां प्रठतिवान् विद्वन्भिरन्यैरहं,

सोऽयं सूरमत्तल्लिको विजयते चारित्रपात्रं भुवि ॥ १३ ॥

सूरि श्री जिनचंद्रस्य समभूद्रत्नादिकीर्त्तिमुनिः,

शिष्यस्तत्त्वविचारसारमतिमानसद्ब्रह्मचर्यान्वितः ।

योनेकैर्मुनिभिस्त्वगुणाव्रतिभिराभातीहमौड्यौर्गणे,

चन्द्रो व्योम्नि यथा गृहैः परिवृत्तो यैश्चोलसत्कांतिमान् ॥ १४ ॥

तच्छिष्यो विमलादिकीर्त्तिरभवन्निग्रन्थचूडामणि-

यौ नाना तपसा जितेंद्रियगणः क्रोधेभकुंभे शृणिः ।

भव्यांभोजविरोचनोदरशशांकाभस्वकीर्च्यधिलो,

नित्यानंदचिदात्मलीनममसे तस्मै नमो भिक्षवे ॥ १५ ॥

यः कक्षापटमात्रवस्त्रमलं धत्ते च पिच्छं लघु,

लोचं कारयते सकृत् करपुटे भुक्ते चतुर्यादिभिः ।

दीक्षां श्रौतमुनीं वभार नितरां सत्कुलकः सावकः,

आर्यो दीपक आख्यात्र भुवने सौदीप्यतां दीपवत् ॥ १६ ॥

ह्यश्रोऽभूज्जैनचंद्रो दिननतरमतिः श्रावकाचारभृच्च-

स्वप्रोतान्कजातोद्वरणतनुरुहो भीषुहीमावृसूतः ।

सीहाव्यः पंडितो वै जिनमतनयनः श्रीहिमारे पुरेस्मिन्,

ग्रंथः प्रार्थितेन श्रिमहति वसता नूनमेव प्रसिद्धेः ॥ १७ ॥

सपात्रकृच्छ्रे विनयेति सुन्दरे, श्रिया पुरे नागपुरं समस्ति तत् ।

धेरोज्ज्वलना नृरतिः प्रयाति न्यायेन शौर्येण रिपून् निहन्ति च ॥ १८ ॥

ददंति चस्मिन् धनधान्यसंपदा लोकाः स्वसंतानगणेन धर्म्मतः ।

जेताधनाश्चैत्यगृहेषु पूजनं सत्पात्रदानं विधत्वनारतं ॥ १९ ॥

येषां नामा निवसन्नहं बुधः, पूर्णं व्यधां ग्रंथमिमं तु कार्तिके ।

चंद्राच्च वाणैक १५४१ मितेव्रवत्सरे, कृष्णे त्रयोदश्यं इतिश्चशक्तितः ॥ २० ॥

चंद्रप्रभसद्धानि तत्र संहिते कूटस्थसकुंभसुकेतनादिभिः ।

नहाभिपेकादिसहोत्सवैर्लसत्, प्रवृद्धसंगीतंरसेन चातिशं ॥ २१ ॥

मेधाविनाम्नः कविता कृतोयं, श्रीनन्दनोर्हृदयद्वयभृंगः ।

यो नन्दनो भूजिनदाससंज्ञो, तु मोदको स्यास्तु सुदृष्टिरेव ॥ २२ ॥

समंतभद्रवसुनन्दिकृतं समीक्ष्य

सच्छ्रावकाचरणसारविचारहृद्यं ।

आशाधरस्य च बुधस्य विशुद्धवृत्तेः

श्रीधर्म्मसंग्रहमिमं कृतवानहं भो ॥ २३ ॥

यद्यर्थदोषः क्वाचिदर्थजातः शब्देषु वा छन्दसि कोथवा स्यात् ।

युक्त्वां विरुद्धं गदितं मया यत्, संशोध्य तत् साधुधियः पठंतु ॥ २४ ॥

शास्त्रं प्राच्यमतीवगंभीरं पृथतुरमर्थैर्ज्ञातुमलकः ।

तस्मादल्पं पिच्छलममलं कृतमिदमन्योपकृतौ नूनं ॥ २५ ॥

गर्वान्न मया कारि न कीर्त्ता न च धनमाननिमित्तं त्वेतत् ।

हितबुद्ध्याकेवलमयरेषां स्वस्य च बोधविशुद्धिविवृद्धयै ॥ २६ ॥

सदृशनं निरतिचारमव्रतुभव्याः

प्रद्धा दिशंतु हितपात्रजनायदानं

एवंतु पूजनमहो जिनपुंगवानां,

पांतु व्रतानि सततं सह शीलकेन ॥ २७ ॥

गाढं तपन्तु जिनमार्गरतामुनीन्द्राः संभावयंतु निजतत्त्वमनघमुक्तं ।

धर्म्मा भवेद्विजयवान्मृगतिः पृथिव्यां, दुर्मिहमत्र भवतान्न कदाचनपि ॥ २८ ॥

राज्यं न वांछामि न भोग्यसंपदो, न स्वर्गवासनं न च रूपयौवनं ।  
सर्व्वे हि संसारनिमित्तमंगिनां, तदान्वमृष्टं क्षणिकं च दुःखदं ॥ २६ ॥  
यद्दुर्लभं भवभृतां भवकाननेऽस्मिन्  
दंभ्र यतां विविधदुःखमृगारिभोमे ।

रत्नत्रयं ॥ सौख्यावधायि तन्मे,  
ब्रूयास्तु देव तव पादयुगप्रसादात् ॥ ३० ॥  
इ ज्ञानभावात् यदि किञ्चिन्नूनं, प्ररूपितं क्वाप्यधिकं वभाषे ।  
सर्वज्ञवक्रोद्भविके हि तन्मे, क्षात्रा हृदब्जेधिवसे सदात्वं ॥ ३१ ॥  
यावत्तिष्ठति भूतले जिनपतेः स्नानस्य पीठंगिरि—  
स्त्वाकाशे शशिभानुर्विबमधरे कूर्मस्य पृष्ठे मही ।  
व्याख्यानेनच पाठनेन पठनेनेदं सदा वर्त्तातां,  
तादृचच श्रवणेन चित्तनिलये संतिष्ठतां धीमतां ॥ ३२ ॥  
भूयासुःचरणजिनस्य शरणं तद्दर्शने मे रतिः

भूराब्जन्मनि प्रियतमासंगादिमुक्ते गिरौ ।  
सद्भक्तिस्तपसश्च शक्तिरतुला ब्रूयापि मुक्तिप्रदा,  
प्रथस्यास्य फले न किञ्चिदपरं या चेत्तयोगैस्त्रिभिः ॥ ३३ ॥

व्याख्याति वाचयति शास्त्रमिदं शृणोति  
विद्वांश्च यः पठति पाठयतेऽनुरागात् ।

अन्येन लेखयति वा लिखति प्रदत्ते,  
स स्याल्लघुश्रुतघश्च सहस्र कीर्त्तिः ॥ ३४ ॥

शान्तिः स्याज्जिनशासनस्य सुखदा शान्तिर्नृपाणां सदा,  
शान्तिः सुप्रजशां तयोभरभृतां शान्तिर्मुनीनां सदा  
श्रोतृणां कविताकृतां प्रवचनव्याख्यातृकाणां पुनः,  
शान्तिः शान्ति रथाग्नि जीवनमुचः श्री सज्जनस्यापि च ॥ ३५ ॥

यः वरयाणपरंपरा प्रकुरुते यं सेवते सत्तमा,  
येन स्यात् सुखकीर्त्ति जीवितं मुरु स्वस्त्यत्रयस्मै सदा ।

यस्मान्नास्त्यपरः सुदृत्तनुमतां यस्य प्रसादाच्छ्रिय—  
स्तं धर्मादिकसंग्रहं श्रयत भो यस्मिन् जनो बल्लभः ॥ ३६ ॥  
कूपान्निःकाशय पातुं भवति हि सलिलं दुक्कणं यस्य यस्य  
केनाप्यन्येन नूतोत्कुटनिहतमहोऽन्यथा वा तदेव ।

तद्वत्पूर्वप्रणीतात्कठिनविवरणात् ज्ञातुऽर्थोऽत्र शक्यः

कैश्चिज्जातप्रबोधैस्तदितरसुगमो ग्रंथ एव व्यधायि ॥ ३७ ॥

धर्मसंग्रहमिमं निशम्य यो, धर्ममार्गमवगम्य चेतनः ।

धर्मसंग्रहमलं करोत्यसौ, सिद्धिसौख्यमुपयाति शाश्वतः ॥ ३८ ॥

धमतः सकलमंगलावली, रौदसीपतिविभूतिमान्वली ।

स्यादनंतगुणभाक्केवली, धर्मसंग्रहमतः क्रियासुधीः ॥ ३९ ॥

सुधीः क्रियाद्यलममुष्य, रक्षणे

तैः लाभः परहस्तयोगतः ।

ज्ञानत्कविश्रान्ति मथप्रवर्त्तने

भूयात्समुक्तश्च परपोक्यतः ॥ ४० ॥

चतुर्दशशतान्यस्य चत्वारिंशोत्तराणि वै ।

सर्वं प्रमाणमावेद्यं लेखकेत्वेन संशयं ॥ ४१ ॥

इत्येतद्ग्रंथकविसर्वसंसूचिकाचूलिकः समाप्ता ।

श्रीविक्रमादित्यराज्यात् संवत् १५४२ वर्षे कार्तिक सुदी ५ गुरुदिने श्री वद्धमान चैत्यालये  
विराजमाने श्री हिसारपेराजापत्तने सुलतान श्री वहलोलसाहिराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंदाग्नाये  
सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवाः..... ।

२०. नेमिनाथपुराण ।

रचयिता श्री ब्रह्म नेमिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १५०, साइज १०×४। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ  
पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४३-४७ अक्षर । प्रति पूर्ण है । अक्षर अस्पष्ट तथा बहुत छोटे हैं । विषय-  
भगवान् नेमिनाथ का जीवन चरित्र । लिपि संवत् १६४३.

मंगलाचरण—

श्रीमन्नेमिजिनं नत्वां लोकालोकप्रकाशकं ।

तत्पुराणमहं वक्ष्ये भव्यानां सौख्यदायकं ॥ १ ॥

\*

नमस्ते वेन्द्रमौलीनां लसत्कांतिसरोवरे ।

यस्य पादद्वयं प्राप्य प्रोल्लसत्कमलश्रियं ॥ २ ॥

सर्वसौभाग्यसंदोहः सर्वशक्तसमर्चितः ।

यो भवत्सर्वसौख्यानां कारणां भव्यदेहिनां ॥ ३ ॥

\* एरोलले इत्यपि पाठः

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

गच्छे श्रीमत्मूलसंघतिलके सारस्वतीये शुभे,  
विद्यानन्दिगुरुपपट्टकमलोल्लासप्रदो भास्करः ।  
ज्ञानध्यानरतः प्रसिद्धिमहिमा चारित्रचूडामणिः  
श्रीभट्टारकमल्लिभूषणगुरु र्जीयात्सतां भूतले ॥ १ ॥  
प्रोद्यत्सम्यक्त्वरत्नो जिनकथितमहासप्तभंगीतरंगैः  
निद्धूतैर्कांतमिथ्यामतमलनिकरक्रोधनकादिदूरः ।

\*

श्रीमज्जेनेन्द्रवाक्यामृतविशदरसः श्रीजैनेन्द्रप्रवृद्धि  
जीयान्मे सूरिवर्योव्रतनिचयलसत्पुण्यपण्यः श्रुताब्धिः । २ ॥  
मिथ्यावादांधकाराक्षयकरणरविः श्रीजिनेन्द्राहिपद्म,  
द्वन्द्वे निद्धूतमिथ्यामत्तमलनिकरक्रोधनकादिदूरः ।  
चारित्र्योत्कृष्टभारो भवभयहरणो भव्यलौकिकबन्धुः,  
जीयादाचार्यवर्यो विशदगुणनिधिः सिंहनन्दिमुनीन्द्रः ॥ ३ ॥  
यस्योपदेशवशतो जिनपुंगवस्य—  
नेमिपुराणमतुलं शिवसौख्यकारी ,  
चक्रं मयापि मतिमुच्छ्रितयात्र भक्त्या,  
कुर्याददं शुभमतं मम मंगलानि ॥ ४ ॥  
शांतिं कान्तिं सुकीर्तिसकलसुखयुतां संपदामायुरुच्चैः  
सौभाग्यं साधुसंगं सुरपतिमहितं सारजैनेन्द्रधम्मं ।  
विद्यां गोत्रं पवित्रं सुजनजनशतं पुत्रपौत्रादिजात्यं,  
श्रीनेमेः सत्पुराणं दिशतु शिवपदं वात्र भव्याः पवित्रं ॥ ५ ॥

इति श्री विभुवनैकचूडामणिश्रीनेमिजिनपुराणो भट्टारक श्री मल्लिभूषणशिष्याचार्यः श्रीसिंहनन्दि-  
नामांकिते ब्रह्म नेमिदत्त विरचिते श्रीनेमिनाथनिर्वाणं पंचमकल्याणवर्णनो नाम षोडशमोधिकारः ।

संवत् १६४३ शाके १५०८ समये फागुणबुदि ८ सोमवासरे मघा नक्षत्रे शोमननामयोगे श्रीमत्का-  
ष्ठासंघे नन्दीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री विजयकीर्ति तत्पट्टे आचार्य श्री पद्मकीर्ति तच्छिष्य ब्रह्म श्री  
धर्मसागर तच्छिष्य पं० केश वद्धेन इदं पुराणं लिखितं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २१६. साइज १२×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति  
में २५-३० अक्षर । प्रति प्राचीन है, कागजों का रंग सीम लगने से बदल गया है ।

\* जिनेन्द्र इत्यपि पाठः



संवत् १६७४ वर्षे फागुणमासे कृष्णपक्षे सप्तम्यां तिथौ शुक्रवासरे श्री नेमिनाथचैत्यालये वीजवाढ-  
मध्ये श्री जहांगीर राज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंधे नंचाम्नाये वलात्कांगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये  
भट्टारक श्रीपद्मनान्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक  
श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तदाम्नाये खंडेलवाला-  
न्वये अजमेरागोत्रे साह वीवा तस्य भार्या बहरंगदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र साह मल्हा तस्य भार्या  
मैहलादे तस्य पुत्राः त्रयः । प्रथम पुत्र साह नेना तस्य भार्या नैलादे तस्य पुत्र खीवा तस्य भार्या खेमलदे ।  
साह मल्हा द्वितीय पुत्र साह केसौ तस्य भार्या कसुभदे । साह मल्हा तृतीय पुत्र साह लीला तस्य भार्या  
ललतादे । तस्य पुत्र साह भोजा चौरंजीव साह वीवा द्वितीय पुत्र साह धाना तस्य प्रथम  
भार्या धारादे द्वितीया लाडमदे तस्य पुत्रा त्रयः । प्रथम पुत्र साह पेमा । द्वितीय पुत्र साह आसा तस्य भार्या  
आसलदे । साह पेमा तृतीय पुत्र साह कुंभा तस्य भार्या प्रथम कुंभलदे द्वितीया केरादे । साह पेमा चतुर्थ पुत्र  
साह सैसा तस्य भार्या प्रथमा सुहागदे द्वितीया रुजागदे तस्य पुत्र साह सुद्रचिरंणजी । साह पेमा पंचम  
पुत्र साह पंचायण ..... ।

## २१. पद्मपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सोमसेन । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २६७ । साइज ६।।४।।  
इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६-२६ अक्षर । लिपि संवत् १७५१ ।

मंगलाचरण—

वंदेऽहं सुवर्तं देवं पंचकल्याणनयकं ।  
देवदेवादिभिः सेव्यं भव्यवृंदसुखप्रदं ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

× × × × × ×  
शके षोडशशतवर्षके षट्पंचासत्सुक्ते मासेश्रावणिके तथा ॥ १ ॥  
शुक्लपक्षत्रयोदश्यां बुधवारे शुभे दिने ।  
निष्पन्नं चरितं रम्यं रामस्य पावनं ॥ २ ॥  
महेन्द्रकीर्तियोगोन्द्रप्रसादाच्च कृतं मया ।  
सोमसेनेन रामस्य पुराणं पुण्यहेतवे ॥ ३ ॥  
यदुक्तं रविपेणेन पुराणं विस्तराद्वरं ।  
तदेवात्र च संकुच्य किंचिद्विकथितं मया ॥ ४ ॥  
गर्वेण न कृतं शास्त्रं नापि कीर्तिफलाप्तये ।  
केवलं पुण्यहेत्वर्थं श्रुताः रामगुणाः मया ॥ ५ ॥

× × × × × ×  
 रविपेणकृते ग्रंथे कथा यावत्प्रवर्त्तते ।  
 तावच्च सकलान्नापि वर्त्तते वर्णनां विना ॥ ६ ॥  
 वैराट विषये रम्ये जितुरनगरे वरे मंदिरे ।  
 पार्श्वनाथस्य सिद्धो ग्रंथः शुभे दिने ॥ ७ ॥  
 सेणगणोति विख्याते गुणमद्रो भवन्मुनिः ।  
 पट्टे तस्यैव संजातः सोमसेन यतीश्वरः ॥ ८ ॥  
 तेनेदं निर्मितं शास्त्रं रामदेवस्य भक्तितः ।  
 स्वस्यनिर्वाणहेत्वयं संक्षेपेण महात्मनः ॥ ९ ॥  
 यस्मिन्निदं पुरे शास्त्रं अण्वन्ति च पठन्ति वा ।  
 तत्र सव सुखं क्षेमं परं भव निर्मगलं ॥ १० ॥  
 सेणगणे यतिपरमपवित्रे वृषभसेनगणधर शुभवंशे ।  
 पंडितवर्गसुखकरं जातः सोमसुसेनयतिवरमुख्यः ॥ ११ ॥  
 श्रीमूलसंधे वरपुष्कराख्ये गच्छे सुजातो गुणभद्रसुरिः  
 पट्टे च तस्यैव सुसोमसेनो भट्टारके भूविदुषां शिरोमणिः ॥ १२ ॥

इति श्री रामपुराणे भट्टारक्यो सोमसेनविरचिते रामस्वामिनो निर्वाणवर्णनो नाम त्रयत्रिंशत्तमो-  
 ऽधिकारः ॥

संवत् १७५१ वर्षे-शाके १६१६ मिति भादवा सुदी १४ वृहस्पतिवारे श्रीमूलसंधे नंद्याम्नाये बला-  
 स्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्ति-  
 देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जगत्कीर्ति तच्छिष्याचार्यवर्य आचार्य श्री  
 शुभचंद्र तच्छिष्य पंडित श्री ताराचंद पंडित श्रीनगराज पंडित श्रीजीवराज पंडित श्री देवकरण पंडित  
 श्रीमेधराज पंडित मयाचन्द इत्यादि पंडित ७ तदाम्नाये पंचवारा देशे लिवाणनगरे खंडेल-  
 वालवंशे भौसा गोत्रे साह श्री विलालभायां बहुरंगदे तयोः पुत्र साह श्री नेहंद भायां नमोनेमादे तयोः  
 पुत्रः साह श्री गुणराज भार्या सुगणादे तयोः पुत्र साह श्री पासो भायां पाटमदे तयोः पुत्रः साह श्री टोडरमल  
 भार्या लाढी तयोः पुत्र साह श्री दयालदास भार्या दाडिमदे तयोः साह श्री हरराम भार्या हीरादे तयोः पुत्र  
 साह श्री जीवराज भार्या जौणोव तयोः पुत्र साह श्री आणंदराम भार्या अणदादे द्वितीय पुत्र साह श्री चि०  
 बखतराम भार्या बखतावरदे एतेषां मध्ये साह श्री हरराम भार्या हीरादे तयो पुत्र साह श्री जीवराज पितृभ्यां  
 भक्तिकार्ये श्री सोलहकारणदशलक्षणकौ प्रतो कौ उद्यापन बहोत चछाह से भंडार कियो ज्ञानदानार्थ श्री  
 रामपुराणाजी शास्त्र घटायो आचार्य श्री शुभचंद्रजी ने ।

२२. पद्मपुराण ।

रचयिता श्रीमच्चन्द्रकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र-संख्या ४१२, प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर । साइज ११x४ १/२ इंच ।

संगलाचरण—

सिद्धं जिनं सद्व्यपेक्षया सार्धनाद्यथ ।  
सद्व्यसाधनं ध्रौव्यव्ययोन्यंकितं मतं ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

सत्काष्ठसंघभवनं दितटाल्यगच्छे  
जातो मुनिः सकलसद्गुणमंडितात्मा ।  
श्रीरामसेन इति यस्य जगत्प्रकाशः,  
वादीभकेसरपतेरभिधानमासीत् ॥ १ ॥  
तस्यान्वये समभवत् किल सूरिवर्यः  
श्रीधर्मसेन इति नाम दधन् मनोहं,  
यस्येह्वादिकरिकेसरिणो विशाला  
कीर्तिजगद्र चिरमंडपमा वभूव ॥ २ ॥  
तस्याभवद् विमलसेन इति प्रसिद्धः  
सूरिपदां वुजविकासनसप्तसप्तिः ।  
प्राप्तानवद्यशुभविद्युद्धारकीर्तिः  
विद्वज्जनप्रकरपूजितपादपीठः ॥ ३ ॥  
तस्याभ्यभूदखिलपंडितपूजितांध्रि  
सत्पट्टपंकजराविः सुचरित्रपात्र ।  
नान्यार्थमत्रधिगात् न विशालकीर्तिः  
यस्मात्प्रबोधमधिगम्य दुष्मा ननंदुः ॥ ४ ॥  
तत्पट्टसागरनिशाकर आचिराप्नीत्  
श्रीविश्वसेन इति नाम दधन् मुनीन्द्रः ।  
यादृशानां समधिगम्य जगत्प्रबोधम्  
लब्ध्वा समस्तवृजिनार्णवपारमापत् ॥ ५ ॥  
तत्पट्टेऽप्यभवत् समस्तजनताव्यामोहवन्द्यादवो  
विद्वत्पंकजभास्काराः मुनिजनोः सेव्यांध्रिपाथोरुहः ।

विद्याभूषण इत्यर्थोपविदुषां भोत्रप्रकाशेन योः

॥ ११ ॥ निम्नाख्येन बुधानां दहोकांस्कांस्मुनीन्द्रिधिरं ॥ ६ ॥

श्रीभूषण इत्यर्थो भवदस्यपट्टे भट्टारको लब्धसमस्तविप्रः

यो धादिगर्वाकुलशैलवज्रो नावोधयत्काचिद् भोवचोभिः ॥ १० ॥

लब्धा गुरुत्वं खलु धात्र्यतित्वं कलानिधित्वं च महामतिर्यः

प्रकाशतां देवसभे यासीत् किं तस्य ब्राह्म्यं तपसो महत्त्वं ॥ ८ ॥

तस्यास्त्येको नामतश्च द्रुकीर्तिः

॥ १२ ॥ शिष्यं स्वाम्यं प्र यवुजेदिदिसोयः

पात्रे जाड्यापि यस्मिन्नज्ञः

॥ १३ ॥ जाता दृष्टिः सदगुरोः स्नेहपूर्णा ॥ ९ ॥

तेन व्यधायि मुनिनाखिलदोषहारी लोकत्रयप्रथितसारमुदारभावे ।

सीतारघूत्तमचरित्रपयोधिरत्नं क्लृप्तेष्टदानविधिपद्मपुराणमेतत् ॥ १० ॥

रघुपतितरुस्मान्पातुसम्यक्बीजः

॥ १४ ॥ शुभभवति शास्त्रो योगिसंसत्पलाशः

सुरसंघपुत्रुतश्रीपञ्चकल्याणयुक्तो

॥ १५ ॥ असदमृतफलोऽयं सत्तपः पीठबंधः ॥ ११ ॥

यावद्भारमेष्टुमेरुशोभो विभक्तिं सूर्यश्चतुर्त्यजस्रं

तावन्मुदिपद्मपुराणमेतद् भूयो जनानां निखिजाग्रहारि ॥ १२ ॥

इति श्रीमच्चन्द्रकीर्तिमुनीन्द्रविरचितं पद्मपुराणं समाप्तमयमत्

॥ १६ ॥

२३. पद्मपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री धर्मकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २५१, साइज १०x४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ

पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर । प्रति प्राचीन है । रचना संवत् १६६६ लिपि संवत् १६७०.

संगलाचरण—

शकालामौजिरत्नांशुवारिधौतपदोबुजं ।

ज्ञानादिमहिमाव्याप्तं विष्टपं विष्टपोषिपं ॥ १ ॥

मुनिसुव्रतनामानं सुव्रताराधितकर्म ।

वन्दे भक्तिभरानम्रः श्रेयसे श्रेयसि स्थितं ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

एतद्वक्त्राश्रवादभव्यः श्रद्धावान् सक्रियायुतः ।

संसाराब्धिं समुत्तीर्य प्राप्नुयात् शिवसुल्लवणं ॥ १ ॥

अथाभवन्मूलसुसंघएव गच्छे सरस्वत्यभिषेगणे च ।  
 वज्राकृतौ श्री मुनिपद्मनन्दिः श्रीकुन्दकुन्दान्वयलब्धसूतिः ॥ २ ॥  
 देवेंद्रकीर्त्तिश्च वभूव तस्य पट्टे महिष्ठेसु महानुभावः ।  
 त्रिलोककीर्त्तिस्ततःप्राप्तदीप्तो भट्टारकस्तत्पदलब्धनिष्ठः ॥ ३ ॥  
 सहस्रकीर्त्तिमुनिवृन्दसेव्यो यशःसुकीर्त्तिः शुभकीर्त्तिसिधुः ।  
 वभूव भट्टारकस्तत्पदस्थो मुनिः स्मरारेर्हने प्रबोणः ॥ ४ ॥  
 तत्पट्टपङ्केजविकाशने यः साम्यं विभर्त्तहि सहस्रभानोः ।  
 हतस्मरारिर्जितदुःकपायो विनष्टदुर्भाव च यो महात्मा ॥ ५ ॥  
 यं वीक्ष्य लोकव्रतभासुरांगतपस्विनं शास्त्रविदं मुनीशं ।  
 भजन्ति मिथ्यात्वं च यं न ज्ञातु क्रियापरं शीलनिधिं सुशान्तं ॥ ६ ॥  
 यं सेव्यमानाः व्रततं सुशिष्याः विशातत्त्वाव्रतभासुरांगाः ।  
 भविन्त नूनं जगति प्रकाशस्तपःकृशा गौरविणो गुणौघैः ॥ ७ ॥  
 यं सेवमानः समकुक्षिजातं मुनीशमासीद्बुधत्नपालः ।  
 पटुत्ववाग्मिन्त्वक्वित्त्वन्निस्त्रविनीततासद्गुणरत्नपात्रं ॥ ८ ॥  
 एवं विधोऽसौ मुनिसंघसेव्यो भट्टारको भासितद्विक् समूहः ।  
 संघस्य कल्याणतर्ति प्रदेयाः नाम्नागुरुः भीलक्षितादिकीर्त्तिः ॥ ९ ॥  
 तच्छिष्यस्तत्पदस्थो व्रतनिचययुतो जैनपादाब्जभृगो,  
 नाम्नाधर्मादिकीर्त्तिमुनिरमलमनास्तेन चैतत्पुराणं ।  
 स्वरूपप्रज्ञेन दृष्टं निजदुरितचयप्रक्षयाय हिताय,  
 भव्यानां च परेषां अवणसुपवने प्रोद्यतानामजस्रं ॥ १० ॥  
 मूलकर्त्तापुराणस्य श्री जिनश्चोत्तरस्तथा ।  
 गणीशो यतयोन्ये च उत्तरोत्तरकर्त्ताः ॥ ११ ॥  
 इदं श्री रविप्रेणस्य पुराणं वीक्ष्य निर्मितं ।  
 चिरस्थेयाः क्षितौ भव्यैः श्रुतं चाधीतमन्त्रहं ॥ १२ ॥  
 संवत्सरे द्वयष्टशते मनोज्ञे चैकोन सप्तत्यधिके सुमासे ।  
 श्रीश्रावनेसूर्येदिने तृतीया तिथौ देशेषु हि मालवेषु ॥ १३ ॥  
 सरोजपुण्यामिवधर्मपूर्या सहायतः श्री ललितादिकीर्त्तिः ।  
 पारंगतश्चास्य पुराणचार्द्धे रहं प्रहीणोपि मतिप्रपञ्चैः ॥ १४ ॥  
 तत्कर्कव्याकरणछन्दोलंकारादिन् प्रपञ्चतः ।  
 न वेद्यहं ततस्तेषां च्युतौ कायाक्षमासतां ॥ १५ ॥

ग्रथः विस्तारणीयोर्यं सद्भिः परहिते रतैः ।  
यतः पद्मानि सूतेभस्तद्ग्रथं नयतेनिलः ॥ १६ ॥  
अथ धर्मोजिनैरुक्तो बद्धतामात्र शास्वतः ।  
संघस्य तुष्टिपुष्टी च भूयास्तां सर्वकर्मसु ॥ १७ ॥  
क्षेमं च सवलोकानां भूयाच्च विजयी नृपः ।  
काले काले प्रवर्षतां मेघासौभख्यकारिणः ॥ १८ ॥  
व्याधयो यान्तु नाशं च दुर्मितं चौरमारयः ।  
प्रलयं यांतु पृथ्वीस्तु फलिनी धर्मशक्तिततः ॥ १९ ॥  
श्रोतृणां पाठकानां च लेखकानां तथैव च  
भूयात्कल्याणसत्प्रार्थनार्थमचक्रप्रसादतः ॥ २० ॥  
धर्मकार्येषु सर्वेषु सत्रोश्च जिनदेवताः ।  
सहार्थिन्योह भूय सुः प्रसादपरिमुच्य च ॥ २१ ॥

इति श्री पद्मपुराणे भट्टारक श्रीधर्मकीर्तिविरचिते पद्मदेवनिबोणगमनवर्णनो नाम चतुश्चत्वारिंश

पञ्चः ॥

संवत्सरे १६७० मिते मासे चंद्रकारावदाते पक्षो मंगलास्य दीपां मंगल..... तिरस्कृतां  
विघ्नप्रसारे रविचारे प्रशस्तगुणाश्रेष्ठायां ज्येष्ठायां च धनो-पवनादिशोभाभरित.....सेखमंलासे महानगरे  
विद्वज्जनपूरिताकारे चंद्रप्रभजिनागारे श्रीमति नष्टाघे मूलसंघेह शारदागच्छे बद्धितसुकृतवने बलात्कारगणे च  
स्वयशसा व्याप्ताखिलमूर्ति भट्टारको यशःकीर्ति नामासीत् । तत्पट्टे ललितवाक्यामृत न्यक्कृताखिलमूर्ति भट्टारको  
ललितकीर्तिर्वर्त्तते । तत्पट्टोदयाद्राधिनमूर्तिभट्टारको धर्मकीर्तिः वर्त्तते सुनीद्रः । तेनेदमुपासिकार्पितद्रव्येण  
लेखयित्वा निजांते वासिने गांगानाम्ने प्रदत्तअधीत्यो-

## २४. प्रतिष्ठापाठ ।

रचयिता महापंडित श्री आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६४. साइज १०।।x४ इञ्च । प्रत्येक  
पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २५-२८ अक्षर । रचना संवत् १२८५. इसका दूसरा नाम जिनयज्ञ कल्प  
भी है । ग्रंथ में ६ अधिकार हैं तथा सम्पूर्ण पद्य संख्या ६५४ हैं । ग्रन्थ छप चुका है ।

प्रशस्ति—

श्रीमानस्ति सपादलक्षविपयः शाकंभरीभूषणः

तत्र श्री रतिधाममंडलकरं नामास्ति दुर्गं महत् ।

श्री र ल्यामुदपादि तत्र विमलव्याघ्रे रवालान्वयात्,

श्री सल्लक्षणतो जिनैद्रसमयश्रद्धालुराशाधरः ॥ १ ॥

व्याघ्रे रत्नालिवरवंशं सरोजहंसः -

काव्यामृतोद्यमपानसुवृत्तपात्रः ।

सल्लक्षस्य तनयो नृयविश्वचक्षुः

राशाधरो विजयतां कविकालिदासः ॥

× × - × × × ×  
आशाधरत्वं मयि विद्धि सिद्धं निसर्गसौख्यमजर्यं ।

सरस्वती पुत्रतया देतदर्थं परं वाच्यं मयं प्रपंचः ॥

× × - × × × ×  
श्रीमदब्जुन्नभूपालराज्यभावकसंकुले ।

जिनघमादय धर्मो नलकच्छपुरे वसत् ॥

× × - × × × ×  
विक्रमवर्षं सप्तचांशीतिं द्वादशशतेष्टतीतेषु ।

आश्विनि सितान्त्यद्विषसे साहसमल्लापराख्यस्य ॥

× × - × - × - × ×

प्रति नं० २, पत्र संख्या १२३, साइज १०।।×५।। इच्छ । प्रति जीर्ण शोण अवस्था में है ।

संवत् १५६० वैशाखमासे शुक्लपक्षे पूर्णिमायां तिथौ शनिवारे अदेहद्वारपल्लीनगरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनन्ददेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री विद्यानंदिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री मल्लिभूषणदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री लक्ष्मीचन्द्रदेवा स्तेषां शिष्य ब्र० श्रीवृषभदासस्य उपदेशात् श्री शांतिदास लिखायितः ॥

प्रति नं० ३, पत्र संख्या १५५, साइज १३×५।। इच्छ ।

संवत् १७२२ वर्षे भाद्रमासे प्रतिपदातिथौ गुरुवासरे श्री मूलसंघे नद्यन्नाये बलात्कारगणे ..... कुन्दकुंदाचार्यान्वये भट्टारकवृन्दशोभित श्रीमन्नेन्द्रकीर्तिं तत् शिष्य पंडितराज श्री तेजपालजी तत् शिष्य आचार्य श्री चंद्रकीर्तिजी तत् शिष्य पं० वासीराम पं० भीवसी चिरंजीवी मयाचंद पठनार्थं लिखायितं ।

२५. प्रद्युम्नचरित्र ।

रचयिता श्री सोमकीर्ति । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १०५, साइज १०×४।। प्रत्येक पृष्ठ पर १५-१८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४-४८ अक्षर । रचना संवत् १५३० लिपि संवत् १७२४, सोलह सर्ग हैं । चरित्र अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है ।

मंगलाचरण -

श्रीमंतं सन्मतिं नत्वा नेमिनार्थं जिनेश्वरं ।

विश्वजेतापिमदनो बाधितुं न शशाक यं ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

नंदीतटाख्ये विमले सुगच्छे श्री रामसेनो गुणवारिराशिः ।

वभूव तस्यान्वयशोभकारो श्री रत्नकीर्त्तिः दुरितापहारी ॥ १ ॥

श्रीलक्ष्मीसेनोऽत्र ततो वभूव शीलालयः सर्वगुणैरुपेतः ।

तस्यैव पट्टोद्वरणैकधीरः श्री भीमसेनः प्रगुणः प्रवीरः ॥ २ ॥

श्री भीमसेनस्यपदप्रसादान् सोमादिकीर्त्तिद्युतेन भूमौ ।

रम्यं चरित्रं विनतं स्वभक्त्वा संसोध्य भव्याः पठनीयमेतत् ॥ ३ ॥

संवत्सरे सन्निधि संज्ञकेषु वर्षत्रि-विंशैक्युतेषु वित्रे ।

विनिर्मितं पौपसुदेवतस्थां त्रयोदश या वुधवारयुक्ता ॥ ४ ॥

यावन्मेरु महीतलेति विदितो यावद्रविमडले

यावद्भूवल्लयः परमहगणे यावत्सतां चेष्टितं ।

तावन्नदतु शास्त्रमेतदमलं श्री शांतितेज्यालये,

भक्त्या येन विनिर्मितं सुखकरं तस्यास्तुवे सर्वदा ॥ ५ ॥

यावन्मेरु मही यावच्चंद्रार्कं तारकाः ।

त वन्नदात्वदं नूनं चित्रं पापनाशनं ॥ ६ ॥

इति श्री प्रद्युम्नचरित्रे श्री सोमकीर्त्याचार्यविरचिते श्री नेमिनाथप्रद्युम्नशंभुकुमरश्चरुद्धादि  
निवाणगमन नाम षोडशः सर्गः ॥

संवत् १७२४ वर्षे कार्तिक वृदी १३ दिने श्री मालवदेशमध्ये श्री सुलतानपुर मध्ये लिखितं शुभं ॥

संवत्सरे रसैककर्मकांकयुक्तेः मासि भाद्रपदे सितेतिरे प्रथमयां तिथौ सजीवायां कृष्णगढपुरे श्रीमन्महा-  
भूपवद्वाटुगसिंहजिद्राध्ये श्री मूलसंघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये  
भट्टारक जिह्वा रत्नकीर्त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक जिह्वा विद्यानन्दि जी तत्पट्टे भट्टारक जिह्वा महेन्द्रकीर्त्ति जी तत्पट्टे  
भट्टारक श्री अनंतकीर्त्तिजी तत्पट्टे भट्टारक श्री भवनभूषणजी तत्पट्टे सकलविमलकलकलकलानिधिः करवि  
मलतरयशो वरसावरीकृतदिकप्रमादनिकरभव्यः भव्यनिशराज्ञानासारांधकारक्षयैककारणप्रभाकरः सवृचोः  
विराजमानमहामानजनार्थभवातः महावलपंचानसमानः क्रोधमानमायालोभमद्वेषराघवजोपमान सकलेतर-  
यतिगणनक्षत्रेशविराजमानतरवरजनविहितः प्रशंसवरगुणगणरंगगणरत्नाकरः भट्टारकप्रवर भट्टारक-  
जिह्वा १००८ श्री विजयकीर्त्तित्तिव्रिनयतत्परविनेयाचार्यजिह्वा देवेन्द्रभूषणजीतत्सतःर्थं वुधास्त्रिलोक  
चंद्रः सदारामस्तिव्रनेया वुधा दयाचंद्र वद्धमान विमलदास दौलतिराम ऋपभदास गुलाबचंद भगवानदास  
वीरदास मोती जगजीवणव्यभि धानधरा एतेषां पठनार्थं आचार्य श्री देवेन्द्र भूषणेन स्वपठनार्थं इदं  
चरित्रं लिखितं ।



## २६. प्रवचनसार प्राभृत वृत्ति ।

श्री ब्रह्मरत्नदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १८०. साइज १०×४॥ इच्छ । प्रति पूर्ण तथा प्राचीन है । लिपि संवत् १५४३.

मंगलाचरण—

नमः परमचैतन्यस्वात्मोत्थसुखसंपदे ।

परमागमसाराय, सिद्धाय परमेष्ठिने ॥

समाप्त—

एवं पूर्वोक्तक्रमेण एषु सुरासुर इत्याद्येकोत्तरशतगाथापर्यन्तं सम्यक्ज्ञानाधिकारस्तदनन्तरं तन्मा-  
तस्सण माइ इत्यादि दशोत्तरशतगाथापर्यन्तं ज्ञेयाधिकारोऽपरनामदर्शनाधिकारस्तदनन्तरं एवं पणमियसिद्धे  
इत्यादि.....महाधिकार त्रयेणैकादशाधिकत्रिंशत गाथाभिः प्रवचनसारप्राभृतवृत्तिः समाप्ता । संवत् १५४३  
वर्षे भाद्रपद सुदी ६ तिथौ ।

प्रशस्ति—

श्रीजिनसूरस्य वाक्योत्तरकरोत्तराः ।

अज्ञानध्वान्तनाशाय भवन्तु जगतः परं ॥ १ ॥

श्रीदे श्रीमूलसंघे च नंद्याम्नाये लसद्गणे ।

वलात्कारि जगद्बंधे गच्छे सारस्वत्याभिधाः ॥ २ ॥

श्रीमत्कुंदादि कुंदाख्यसूरेरन्वयके भवत् ।

पद्मनंदी शिवानंदी भट्टारकपदस्थितः ॥ ३ ॥

तत्पट्टांभोजमार्तंडः शुभचन्द्रोगणाग्रणी ।

तत्पट्टे चाभवच्छ्रीमान् जिनचंद्राभिषोग्रणी ॥ ४ ॥

तच्छिष्यस्तद्गुणैः प्राप्ताचायपदवीं मुनिः ।

रत्नकीर्त्तिरितख्य तस्तदाम्नाये बभूव च ॥ ५ ॥

मंगही गोरा तद्भार्या गुणसिरि तयोः पुत्राः सं० सागा, सं० गोगा सं० देवा रत्नपाल तयोः मध्ये सं०  
गोगा तद्भार्या केल्ल इदं ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं श्रीमन्मंडलाचार्य रत्नकीर्त्ति तत् शिष्यमुनिविमलकीर्त्तिप्रदत्तमिदं  
पुस्तकं । लिखितं पं० गोगा ।

प्रति नं० २, पत्र संख्या ७७, साइज १०×४॥ इच्छ । प्रति पूर्ण है लिखावट मुन्दर है ।

संवत् १५७७ वर्षे आषाढसुदी ३ श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे नंद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दा-  
चार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्-  
शिष्यमंडलाचार्यः धर्मचन्द्रस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये भौसागोत्रे साह पौराज भार्या पिसिरि तत्पुत्र सा.

तिहुणा द्वितीय वीरदाम तिहुणा भार्या श्रीमति तत्पुत्र सा, लोहट भार्या ललितादे तत्पुत्रमेघा नेमाभार्या नमणसिरी तत्पुत्र दुलहणी भार्या जैणादे असू तत्पुत्र आसू इदं शास्त्रं नागपुरमध्ये लिखाप्य श्री मुनिधर्म-चन्द्रायदत्तं ।

### २७. पाण्डवपुराण ।

रचयिता आचार्य श्री शुभवम्भ । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३४७, प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर । रचना संवत् १६०८, लिपि संवत् १८३१, ग्रन्थ में २५ अधिकार हैं । प्रशस्ति में शुभवम्भ ने, अपनी १० रचनाओं का तथा कितने ही स्तोत्रों का उल्लेख किया है । पाण्डवपुराण की रचना में शुभवम्भ को अपने शिष्य श्रीपाल वर्णी से सहायता प्राप्त हुई है । ग्रन्थ अभी तक अप्रकाशित ही है । प्रति नवीन है लेकिन दीमक ने खा लिया है । अन्तिम पाठ नहीं है ।

### भंगलाचर—

सिद्धं सिद्धार्थसर्वस्वं सद्धिदं सिद्धसत्पदं ।  
प्रमाणनयसंसिद्धं सर्वज्ञं नौमि सिद्धये ॥ १ ॥  
वृषभं वृषभं भातं वृषभाकं वृषोन्नतं ।  
जगत्सृष्टिविधातारं वंदे ब्रह्माणमादिमं ॥ २ ॥  
चन्द्राभं चंद्रशोभाद्यं चंद्रार्च्यं चन्द्रसंस्तुतं ।  
चन्द्रप्रभं सदा चन्द्रमीडे सच्चन्द्रलाञ्छनं ॥ ३ ॥

### प्रन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

तादृग्विधोऽहं प्रगुणैर्जिनेशं, स्तुवंश्चसद्भिः सकलैः परैश्च ।  
क्षाम्यः सदा कोपगणं विहाय, बाल्ये जने को हि हितं न कुर्यात् ॥ १ ॥  
श्रीमूलसंघे जनि पद्मनन्दी, तत्पट्टधारी सकलादिकीर्त्तिः ।  
कीर्त्तिः कृता येन च मर्त्यलोके शास्त्रार्थकर्त्री सकला पवित्रा ॥ २ ॥  
भुवनकीर्त्तिरभूद् भुवनाधिपैः ।

भुवनभास्करचारुमतिस्ततः ।

वरतपश्चरणोद्यतमानसो

भवमयाहि खगेट् क्षितिवत्समी ॥ ३ ॥

चिद्रूपवेत्ता चतुरश्रिरंतनं

चिद्रूपश्चाधितपादपद्मकः ।

सूरिश्चचंद्रादिचयैश्चिनोतु वै

चारित्रशुद्धिखलु नः प्रसिद्धिर्दा ॥ ४ ॥

विजयकीर्तियंतिमुदितात्मको,

ह्यजिततान्त्रमतः सुगतैः स्तुतः ।

अवतु जैनमतः सुमतो भवतो

नृपतिभिर्भवतो भवतो .....॥ ५ ॥

पट्टे तस्य गुणांबुधिर्व्रतधरो धीमान् गरीयान्वरः

श्रीमच्छ्री शुभचन्द्र एव विदितो वादीभसिहोमहान् ।

तेनेदं चरितं विचार सुकरं चाकारि चचन्द्रां,

पांद्रो श्रीशुभसिद्धि सात जनकं सिद्धयै सुतानां सदा ॥ ६ ॥

चन्द्रनाथचरितं चरितार्थं पद्मनाभचरितं शुभचन्द्रः ।

मन्मथस्य महिमानमतन्द्रो जीवकस्य चरितं च चकार ॥ ७ ॥

चंदनायाः कथा येन बद्धवा नांदीश्वरी तथा ।

आशोधरकृताचार्या वृत्तः सद्बृत्तिशालिनी ॥ ८ ॥

त्रिंशच्चतुर्विंशतिपूजनं यः सख्यसिद्धाचने माव्यधत्ता ।

सारस्वतीयार्चनमत्रशुद्धं चित मणीयार्चनमुच्चरिष्युः ॥ ९ ॥

श्री कमदाहविचिवंधुरसिद्धसेवां

नानागुणौघगणनाथसमर्चनं च ।

श्रीपार्श्वनाथवरकाव्यसुपंजिकां च यः,

स चकार शुभचन्द्रचंद्रतर्थाचद्रः ॥ १० ॥

उद्यापनमदीपिष्ठ पल्योपमविधेश्चयः ।

चारित्रशुद्धितपसश्चतुर्विंशदशात्मनः ॥ ११ ॥

संशयवदनविदारणमशब्दसुखं न परं तत्कर्म ।

स तत्त्वानिर्णयं वरस्वरूपसंबोधनीं वृत्तिं ॥ १२ ॥

अध्यात्मपद्यवृत्तिं सर्वाथैर्पूर्वसर्वतोभद्रं ।

यो कृतसद्व्याकरणं चिंतामणिर्नामधेयं च ॥ १३ ॥

कृता येनांगप्रज्ञप्तिः सर्वा गार्थं प्ररूपिका ।

स्तोत्राणि च पवित्राणि षट्पादः श्री जिनेशानां ॥ १४ ॥

तेन श्री शुभचन्द्रदेवविदुः-सत्पांडवानां परं,

दीप्यद्वयशशविभूषणं शुभभरभ्राजिष्णुशोभकरं ।

शुभद्भारतीनाम निमलैर्गुणं सच्छब्दचिंतामणि,

पुष्पपुण्यपुराणमन्त्रसुकरं चाकारि प्रीत्यामहत् ॥ १५ ॥

शिष्यस्तस्य समृद्धद्विविशादो यस्तके वेदीवरो,  
 वैराग्यादिविशुद्धिवृद्धजनकः श्रीपालवर्णिमहान् ।  
 संशोध्यखिल पुस्तकं वरगुणं सत्पांडवानामिदं  
 तेनालेखि पुराणमर्थनिकरं पूर्वं वरे पुरतके ॥ १६ ॥  
 श्रीपालवर्णिनाकारि शास्त्रार्थ संग्रहे ।  
 साहायं सचिरं जीयात् वरविद्याविभूषणः ॥ १७ ॥  
 ये भवन्ति पठन्ति पांडवगुणं संलेखयंत्यादरात्—  
 जह्मीराज्यनराधिपस्यच मुता चक्रित्वशक्रेशिनां ।  
 भुक्ताभोगमिदं पुराणमखिलं संबोभुवत्पुत्रता,  
 मुक्तो ते भवभीमनिम्नजलधि संतीयं शांतं गताः ॥ १८ ॥  
 अर्हन्तो ये जिनेन्द्रावरवचनचयैः प्रीणयंतः सुभक्त्यान्,  
 सिद्धाः सिद्धिं समृद्धिं ददत् इह शिवं साधवः.....

x x x x x x

संवत् १८३१ वर्षे वैशाखसुदि ६ रविदिने श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री  
 सुरेंद्रकीर्तिः आन्नाये आचार्य श्री विजयकीर्ति शिष्य रूपचंद-उपदेशात् आदौ वासी शेरपुर अधुना बांसी  
 कोटा नगरे रामपुरा मध्ये जाति वैद साहजी श्री कवलापति जी तत्पुत्र साहजी श्री धर्ममूर्ति जैतरामजी  
 भार्या बाई अनोपमातत्पुत्र साहजी श्री धर्ममूर्ति तुलारामजी साहजी श्री चर्द्धमानजी साहजी श्री ताराचंदजी  
 तुलारामस्य भार्या बाई जगां वर्धमानजी भार्या वरधादे ताराचंदस्य भार्या तारमदे बाई कुंदना वर्धमानस्य  
 पुत्र उमेदराम । ताराचंदस्य पुत्र मणिकचंदजी आत्मकल्याणार्थं ज्ञानावरणीकमंज्याथं साहजी श्री धर्ममूर्ति  
 श्री तुलारामजी घटापितं शास्त्रं पाण्डवपुराणं ।

२८. पुण्याश्रव कथाकोश ।

रचयिता श्री मुनि केशवनन्दि के शिष्य रामचन्द्र मुमुक्षु । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १५६. साइज  
 १०×४।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४३-४६ अक्षर । कोश में ५२ कथायें हैं ।  
 ग्रन्थ के अन्त सूची दे रखी है ।

संगलाचरण—

श्रीवीरं जिनमानस्य वस्तुत्प्रकाशकं ।

वक्ष्ये कथामयं ग्रंथं पुण्याश्रवाभिधानकं ॥ १ ॥

ग्रन्थ समाप्ति—

इति पुण्याश्रवाभिधाने ग्रंथे, केशवनन्दिदिग्यमुनिशिष्यरामचंद्रमुमुक्षु विरचिते दानफलाख्य-  
 वर्णनो षोडशवृत्ताः समाप्ताः ।

प्रशस्ति—

यो भव्याब्जदिवाकरो यमकरो मारेभपंचाननो,  
 नानादुःखविधायिकर्मकुश्रुतो वज्रापते दिव्यधीः ।  
 यो योगीन्द्रनरैर्द्वन्दितपदो विद्यार्णवोत्तीर्णवान्,  
 ख्यातः केशवनन्दिदेवयति यः श्री कुन्दकुन्दान्वयः ॥ १ ॥  
 शिष्योऽभूत्तस्य भव्यः सकलजनहितो रामचन्द्रो मुमुक्षुः,  
 ज्ञात्वा शब्दापशब्दान् सुविशदयशसः पद्मनन्दाह्वयाह्वं  
 वंद्या वादीभसिंहात्परमयतिपने सो व्यघाद् भव्यहेतो  
 प्रथं पुण्याश्रावख्यं गिरिसमितिमितैर् दिव्यपद्यैः कथार्थैः ॥ २ ॥  
 कुन्दकुन्दान्वये ख्याते ख्यातो देशे प्रणामणी ।  
 अभूत् संघाधिपः श्रीमान् पद्मनन्दी त्रिरात्रिकः ॥ ३ ॥  
 वृषभाधिरूढो गणयोगणोद्यतो  
 विनायकानन्दितचित्तवृत्तिकः ।  
 उमासमान्निगित ईश्वरोपम  
 स्ततोप्यभूत् माधवनन्दिपण्डितः ॥ ४ ॥  
 सिद्धांतशास्त्रार्णवपारदश्चा  
 मासोपवासो गुणरत्नभूषः ।  
 शब्दादिवार्थो विबुधप्रधानो,  
 जातस्ततः श्रीवसुनन्दिसूरिः ॥ ५ ॥  
 दिनपतिरिर्वानत्यं भव्यपद्माधिबोधी  
 सुरगिरिरिवदेवैः सर्वदा सेव्यपादः ।  
 जलनिधिरिव शश्वत् सवसत्त्रानुकंपी,  
 गणभृदजनिशिष्यो मौलिनामातदीयः ॥ ६ ॥  
 कलाविलासः परिपूर्णवृत्तो  
 दिगंबरालंकृति हेतुभूतः ।  
 श्री नन्दिसूरिमुनिवृद्धवंद्यः  
 तस्मादभूच्चंद्रमानकीर्तिः ॥ ७ ॥  
 चार्वाकबौद्धजिनसांख्याशिवद्विजानां,  
 वात्मित्ववादिगमकत्वकवित्ववित्तः ।  
 साहित्यतर्कपरमागमभेदभिन्नः  
 श्री नन्दिसूरिगगनांगनपूर्णचंद्रः ॥ ८ ॥  
 समाप्तोऽयं पुण्याश्रवाभिधानकं.....

## २६. पुराणसार संग्रह ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति । भाषा संस्कृत ( गद्य ) । पत्र संख्या १२६. साइज १३×२१। इष्ट प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४७-५१ अक्षर । विषय-आदिपुराण उत्तर पुराण पाण्डवपुराण आदि के सार का वर्णन । लिपि संवत् १८२२. संग्रह अभी तक अप्रकाशित है ।

मंगलाचरण—

सर्वकर्मो रस्तानं हत्वा येन तपस्विना ।  
मोक्षश्रीसाधितः तस्मै नमोऽजितजितात्मने ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

धर्मोऽङ्गं धर्ममूलं गुणगणसदनं तीर्थराजस्य जातं  
विश्वाचर्यं विश्वबंधं गणधररचितं कीर्तितं कीर्तिमद्भिः ।  
भग्याराध्यं शरण्यं भवभयसकृता धर्मिणां मुक्ति हेतोः,  
दुः कर्मघ्नं हि जीयान्नरसुरमुनिभिः ज्ञानतीर्थ धरित्र्यो ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

संवत् १८२२ वर्षे शके १६८७ प्रवर्त्तमाने कार्तिकमासे कृष्णपक्षे तिथौ ८ सोमवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे शिवयोगे श्री मूलसंघे नंदाभ्याये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे द्वितीयशिष्यमंडलाचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्यः श्रीविशालकीर्ति देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्यः श्री लक्ष्मीचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सहस्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मं० श्रीनेमचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री यशः कीर्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री भानुकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री भूषणजी देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्यः श्रीअमरेंद्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्तिजी तदाभ्याये त्रयोदशप्रकारचारित्रप्रतिपालक आचार्य श्री १०८ लक्ष्मीचन्द्रजी तत्पट्टे आचार्य १०८ नरेंद्रकीर्तिस्तत्पट्टे पूरमपूज्य सकलगुणगणालंकृताचार्य १०८ श्री सकलकीर्तिजी तत्पट्टे पंचमहाव्रतधारकः पंचसमितिधारकः त्रयगुप्तिसाधकः अष्टाविंशमूलगुणयुक्तः द्वाविंशपरिषद्सहस्रधरः सप्तदशसंयमभेदनित्याचरन् आचार्यवर्ष्यधैर्यः सकलशिरोमणि आचार्य जी श्री १०८ श्री क्षेमकीर्ति जी तच्छिष्य लिखितं पंडित जोधराज द्वितीय शिष्य पं० ईसर स्वहस्तेन ।

अथ संवत्सरेऽस्मिन् विक्रमादित्यराज्यात् संवत् १८२४ वर्षे मार्गेशिरमासे शुक्लपक्षे अष्टम्यां तिथौ शनिवासरे श्री मूलसंघे नंदाभ्याये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक जी श्री चन्दकीर्ति जी तदाभ्याये खंडेबालान्वये नागपुरवास्तव्ये महाराजाधिराज राजराजेश्वर महाराजा श्री विजयसिंह जी राज्यप्रवर्त्तमाने पाटली गोत्रे साहजी श्री हीरानंदजी तस्य भार्या हीरादे तत्पुत्र सा० ट कुंदास भार्या तिलकादे । तत्पुत्र सा० जीवराज तस्य भार्या जिणादे तयो पुत्राः त्रयः । प्रथम पुत्रा सा० ईसरदास

द्वितीय सा० कपूरचंद तस्य भार्या कपुरादे तस्य पुत्राश्चत्वारः । प्रथम पुत्र सा० वधूराम भार्या वोहरंगदे  
द्वितीय पुत्र सा० जीवणुराम तस्य भार्या जिणादे तृतीय पुत्र सा० कचरदास तस्य भार्या कचरादे चतुर्थ पुत्र  
सा० गुलाबचंद तस्य भार्या गुलाबदे । तृतीय पुत्र सा० डालुराम तस्य भार्या डालमदे तयोः पुत्रौ द्वौ । प्रथम  
पुत्र सा० चूडह तस्य भार्या चूडहदे द्वितीय पुत्र सा० फतेचंद तस्य भार्या फतेमलदे । सा० मनुजी तस्य  
भार्या मानादे तयोः पुत्रा सा० भावुजी तस्य भार्या भावलदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र रूपचन्द तस्य भार्या  
रूपलदे द्वितीय पुत्र रामचंद । सा० कचरदास जी तस्य भार्या कचरादे तयोः पुत्राः साह रिषभदास भार्या  
रिषभादे । साह गुलाबचंद तत्पुत्र सा० भिलाजी भार्या भिलादे तयोः पुत्राश्चत्वारः । प्रथम पुत्र मोतीराम  
द्वितीय पुत्र माणिकचंद तृतीय पुत्र नैणचंद चतुर्थपुत्र दोलतराम । साह फतेहचंद तत्पुत्र-मयाराम-एतेषां  
मध्ये जिनपूजापुरंदरान् संवभार धुरंधुरान् जिनचैत्यालंययात्राप्रतिष्ठाकरणसमर्थान् द्वादशत्रतप्रतिपालकान्  
सद्गुरुपदेशनिर्वाहकान् साहजी श्री रिषभदासजी इदं शास्त्रं सकलपुगाणाख्यं लिखाप्य स्वज्ञनावरणीकर्मक्षय  
निमित्तं मत्पात्रा आचार्यवर्य श्री १०८ श्री क्षेमकीर्तये प्रदर्त्त ॥

### ३०. भक्तामरस्तोत्र वृत्ति ।

वृत्तिकार श्री गुणसुंदर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २८. साइज १०॥४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर  
१७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २३-२५ अक्षर । लिपि संवत् १४२६. लिपि संवत् १६५४. श्री गुणसुंदर  
आचार्य गुणचन्द्रसूरि के प्रमुख शिष्य थे । इनका दूसरा नाम गुणाकरसूरि भी है ।

वृत्तिकार की प्रशस्ति—

श्रीचंद्रगच्छेऽभयसूरिवंशे श्रीरुद्रपल्लीयगुणविचंद्राः ।  
श्रीचंद्रसूरिप्रवरावभुस्ते येभ्रातरः श्रीविमलेंदुसंज्ञाः ॥ १ ॥  
तत्पट्टे जिनभद्रसूरिगुरवः संलब्धलब्धप्रभाः ।  
सिद्धांताम्बुचिकुंभसंभवनिताः प्रख्यातमन पां शुभाः ॥ २ ॥  
जातः श्रीगुणशेखराभिधगुरुस्तस्मात्तपोनिर्मलः ।  
शूलः श्रीतिलकोजगत्तिलक इत्य.....प्रणोः ॥ ३ ॥  
सद्व्यसकविः कवित्वध्याता चारत्रचारुकरुणाः करुणास्तकामः ।  
तत्पट्टभूषणमणिगैतदूपणोऽभूत श्रीमान् मुनीन्द्र गुणचंद्र गुर्गुरिष्टा ॥ ४ ॥  
संप्रत्य.....निर्देशाभयदेव सूरिणां ।  
गुणचंद्रसूरिशिष्यागुणसुंदरवाचकोल्पे मतिः ॥ ५ ॥  
चर्पे पड्विंशाधिकचतुर्दशशती मितेवपेत्तौ ।  
आश्विनमासे रचितामरस्वपत्तनिवृत्तिः ॥ ६ ॥  
x . . . x . . . x . . . x . . . x . . . x  
इति श्री भक्तामरवृहत् वृत्ति समाप्ता ।

संवत् १६५४ वर्षे कार्तिक शुक्लचतुर्दश्यां लिखितं साँरुडानगर मध्ये ।

### ३१. भक्तामरस्तोत्र वृत्ति ।

वृत्तिकार ब्रह्म श्रीरायमल्ल । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३५. साइज ११।।×६।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-३८ अक्षर । टीका लाल संवत् १८६७ लिपि संवत् १६६८, वृत्तिकार की प्रशस्ति—

भीमद् द्विवडवंशमण्डणमणिर्महीयेति नामा वणिक्,

सद्भार्या गुणमण्डिता व्रतयुता चांपामितीताभिधा ।

तत्पुत्रो जिनपादपंकजमधुपो रायादिमल्लो व्रती

चक्रे वृत्तिमित्रो स्तवस्य नितरं नत्वा श्रोयादीदुर्क ॥ १ ॥

सप्तपष्ठ्यधिके वर्षे षोडशाब्दे (१६६७) हि संवति ।

अपादश्वेतपक्षस्य पंचम्यां बुधवारिके ॥ २ ॥

श्रीवापुरे महीसिंधौ स्तवभार्गसमाश्रिते ।

प्रोक्तं गदुर्गसंयुक्ते श्रीचन्द्रप्रभसद्धानि ॥ ४ ॥

वणिनः कर्मसीनाम्नः वचनात् मयकारचि ।

भक्तामरस्य सद्बुद्धः रायमल्लेन वणिना ॥ ४ ॥

इति श्री ब्रह्मरामल्लेन विरचिता भक्तामरस्तोत्र वृत्तिः समाप्ता ।

संवत् १६६८ वर्षे कार्तिक शुद्धी १३ शनिवारि श्री काष्ठासधे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भट्टारक श्री विद्याभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री भूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री चंद्रकीर्ति तत्पट्टाभरण श्री भट्टारक श्री राजकीर्ति तत्पट्टाभरण भट्टारक श्री लक्ष्मीसेन विजयराव्ये भट्टारक श्री राजकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म श्री कल्याणसागरस्य पठनार्थे ।

### ३२. भक्तामरस्तोत्र वृत्ति ।

वृत्तिकार श्री अमरप्रभसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १८. साइज १०।।×४।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर ।

मंगलाचरण—

अन्यानतिमराधानां ह्य नां ज्ञानाजनशलाकर्या ।

नेत्रोन्मुनिमीलतेजेन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

प्रशस्ति—

श्रीअमरप्रभसूरिणां वैदुष्यगुणभूषिताः ।

भक्तामरस्तवीवृत्ति प्रकापुः सुखबोधिकां ॥ १ ॥



संवत् १६३६ माघ सुदी २ सोमवासरे लिखायितं पंडित शिरोमणि केसोदास आपजोग्यपठनार्थं  
लिख्यते कायस्थ पूरनमल माथुरान्वये ।

संवत् १६६५ पौष बुदी ११ बृहस्पतिवासरे शेरपुर वास्तव्ये श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये महाराजा  
श्रीजगन्नाथराज्ये श्रीमूलसंघे नंदाम्नाये ..... भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवा स्तपट्टे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्तिस्तदाम्नाये  
खंडेलवालान्वये सौगणी गोत्रे सा० सांगा तद्भार्ये प्र० सिंगारदे द्वि० लाडमदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्र० सा० नांदा  
तद्भार्ये द्वे प्र० नारंगदे द्वि० व्हौडी तयोः पुत्राः चत्वारः प्रथम सा० टीला तद्भार्या त्रिभुवनदे । द्वि० सा० मोहन  
चि० गूजर एतेषां मध्ये सा० नांदा तद्भार्या नारंगदे इदं शास्त्रं देवशास्त्रगुरुभक्तितया भट्टारक श्री  
देवेन्द्रकीर्तये प्रदत्तं ।

३३. भोजप्रबन्ध ।

रचयिता श्री रत्नमन्दिर गणि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७२. साइज १२x५॥ इञ्च । ग्रन्थ पृष्ठ  
संख्या ३३३१. रचना संवत् १५१७. लिपि संवत् १८०५. ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है ।

मंगलाचर—

ॐकारः कल्पकारस्करनिकरतिरस्कारिदानातिरेकः,

शब्दब्रह्मैकरत्नाकरहिमकिरणः कारणं मंगलानां ।

देयावः शुद्धबुद्धिं निरवधिमहिमामभोनिधिः,

सर्वसिद्धाचार्योपाध्यायसाधूनभिदधदधर्क धीमदाराधनीयः ॥१॥

प्रशस्ति —

भोजे प्रबन्धराजेऽस्मिन् रत्नमन्दिरलेखिते ।

कवीरश्वरकृतानंदोऽधिकारः सप्तमोऽभवत् ॥ १ ॥

ज्ञातः श्री गुरुसोमसुन्दरगुरुश्रीमत्तपागच्छप,

स्तत्पादांबुजपटपदो विजयते श्रीमन्दिरस्तगणः ।

तत् शिष्योस्ति च रत्नमन्दिरगणी भोजप्रबन्धोऽद्भुत,

स्तेनासौ मुनिभूमिभूतशशिभृत् १५१७ संवत्सरे निर्मितः ॥ २ ॥

संवत् १८०५ वर्षे मित्ती चैत सुदी ११ तिथौ लिखितं जती प्रयागदासेन ।

३४. महावीर पुराण ।

रचयिता महापंडित श्री आशावर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३६. साइज १०॥५४ इञ्च । प्रत्येक  
पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३० अक्षर ।

मंगलाचर—

वीरं नत्वेन्द्रभूतिं च त्रिपष्टिश्रेष्ठपुञ्जितं ।  
इति वृत्तं ब्रूवे स्मृत्यै समासेन यथागमं ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

सोहमाशाधरः कंठमलं कर्तुं सधर्मणां ।  
पञ्जिकालं कृतं ग्रन्थमिमं पुण्यमरीरचं ॥ १ ॥  
× × × × × × ×  
संक्षिप्यतां पुराणान् नित्यस्वाध्यायसिद्धये ।  
इति पंडितजाजाद्विज्ञप्तिं प्रेरिकात्र ये ॥  
× × × × × × ×  
प्रमारवशावादीदु देवपालनृपात्मजे ।  
श्रीम ..... देव सिस्थाम्नावंतीमवत्पलं ॥  
नलकछपुरे श्रीमान्नेमिचैत्यालयेसिधत् ।  
ग्रन्थो संक्षिप्तबन्धेक विक्रमार्क समात्यये ॥  
खडितां वंशे महनकमलश्रीसुतः सुहृक् ।  
घोनाको वर्द्धतां येन लिखिता स्वाद्य पुंरितिका ॥

३५. महीपालचरित्र ।

रचयिता श्री चारित्रसुन्दरगणि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३३. साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४५-५० अक्षर । रचना संवत् १५२५ के आप पास । लिपि संवत् १८२५. ग्रन्थ जामनगर से प्रकाशित हो चुका है ।

प्रारम्भिक पाठ—

यस्यांशदेशे शतकुंतलाली, दूर्वाकुंरालीव विभाति नीला ।  
कल्याणलक्ष्मी वसतिः संदिश्यादादीश्वरो मंगलेमालिकां वः ॥  
यस्यांक्रमोपास्तितवशाज्जडोपि, विना श्रमं वाङ्मयपारमेति ।  
सदा चिदानन्दमयस्वरूपा सा सारदा पातु रतिपरां मे ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

महीपालस्यैवं चरितमिदमुद्यत्समयं,  
मया प्रोचे पुण्यातिशयविशदं शश्वदधिया ।  
प्रसादेन श्रीमज्जनवरपतेश्चापि सुगुरोश्च,  
नन्दादे तद् भुवि कविजनानन्दजनकं ॥ १ ॥

नित्यं संच्छुल्कपक्षस्थितिरिति विशदो नाशितो स्यामपक्षो,  
 विध्वस्ताशेषदोषो बहुमुनिसहितो भूरिशोभाभिरामः ।  
 विश्वाल्हादं ददानो हतनिखिलतमाः शश्वदाप्तोदयोत्र,  
 श्रीमच्छोपरविधुवदयं राजते शुद्धवृत्तः ॥  
 कल्याणवलिशालिनोत्रेसुमनः श्रेणीश्रितो विश्रुतः,  
 श्रीमान् वृद्धतपोगणो विजयतेऽयमेरुवलिश्रलः ।  
 विश्वात्मकराण्यस्य वित्तुतजुषः सन्नन्दनस्यान्वहं,  
 भां विस्फांति युतस्य यस्य पुरतः पादा इवान्ये गणाः ॥ ३ ॥  
 तस्मिन् विस्मयकारि चारुचरितं चारित्रचूडामणिः,  
 श्रीमान् श्रीविजयेन्द्रसूरिरभवद्भव्यांगचिंतामणिः ।  
 तत्पट्टे समभून्महीन्द्रमहितः श्रीक्षेमकीर्त्तिगुरुः,  
 कारकान्नोविबुधान् धिनोति नितरां यत्कालवृत्तिस्तथा ॥ ४ ॥  
 श्री रत्नाकरसूरय समभवन् ज्ञानांबुस्तनाकराः,  
 कीर्त्तिस्फीतिमनोहराशुभगुणाश्रेणीलताभोधर ।  
 यन्नाम्नात्र तयो गणो यममजद्रत्नाकराख्यांपरां,  
 ख्यातेन क्षिति मंडलेऽपिसकले सत्यां तमो हारिणाः ॥ ५ ॥  
 तस्यानुक्रमपूर्वशैलतरणिः कामद्विपोधत्तृणिः,  
 सूरिशोभयसिंह इत्यंजनिसेद्योगीन्द्रचूडामणिः ।  
 तत्पट्टे प्रकटप्रभाव विदितो विध्वस्तवादिघृणिः,  
 जज्ञे श्री जयपुंढ्रसूरिरसमो भव्यात्मचिंतामणिः ॥ ६ ॥  
 कीर्त्तियस्य निरस्तापनिवहासच्छ्रीलदंस्थिता,  
 चंचच्चंद्रकलोज्जलादंशदिशां श्वेतात्पत्रापते ।  
 तत्पट्टे स्फुटवादिकुंजरघटा सिंहो हृदंहोज्जजः,  
 सूरिद्रो जयताच्चिरं गणधरः श्री रत्नसिंहाभिधः ॥ ७ ॥  
 तस्यानेकविनेयसेवतपदांभोजभव्यावली,  
 चंचन्नेत्रचकोरचंद्रसदृशस्यान्नप्रभूमीपतेः ।  
 शिख्याणूरचयांचकार चतुरश्चारित्रस्याभिधो,  
 विश्वाश्वर्यकरं महीपचरितं नानाविचारोद्धरं ॥ ८ ॥  
 श्री रत्नसिंहगुरुपादशिरोरुहालि-  
 श्चारित्रसुंदरकवि यदिदं ततान ।

तस्मिन् महीपचरिते भववर्णनाख्य,

सर्गः समाप्तिमगमत् किल पंचमोयं ॥ ६ ॥

इति भट्टारक श्री रत्नसिंहसूरि शिष्यमहोपाध्याय श्री चारित्रसुंदरगणिविरचिते श्री महीपालचरिते वा काव्ये पंचमः सर्गः । संवत् १८२५ तपसि मासे कृष्णपक्षे कर्मवादां जयादे मध्ये पूर्णो कृतम् । टोंकनगर-मध्ये लिखिता जती पूरणचन्द्रेण लिखापिता विद्वत् सुखरामजी पठनार्थे ।

३६. मुनिसुव्रतपुराण ।

रचयिता ब्रह्म श्रीकृष्णदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११६. साइज १२×५॥ इक्ष्व । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४३-४७ अक्षर । रचना संवत् १६८१. लिपि संवत् १८५०. पुराण अभी तक अप्रकाशित है ।

मंगलाचरण—

देवेन्द्राश्रितसत्पादपंकजं प्रणमाम्यहं ।

आदीश्वरजगन्नाथं सृष्टिधम्मकरं भुवि ॥ १ ॥

अन्तिमपाठ प्रशस्ति—

काष्ठासन्धि वरिष्ठे ऽजनिमुनिपनुतो रामसेनोभदंत,

स्तत्पादांभोजसेवाकृतविमलमतिः श्रीभीमसेनः क्रमेण ।

तत्पट्टे सोमकीर्तिर्यवनपतिकरांभोजसंपूजितांहि,

रेतत्पट्टोदयाद्रौ जिनचरणलयीश्रीयशः कीर्त्तिरेनः ॥ १ ॥

कमलपतिरिवाभूच्छ्रयुदयाद्यतंसेन,

उदितविशदपट्टे सूर्यशैलेन तुल्ये ।

त्रिभुवनपतिनाथांहिद्वयाशक्तचेत,

स्त्रिभुवनजनकीर्त्तिनमितत्पट्टधारी ॥ २ ॥

रत्नभूषणभदंत.....न्यायनाटकपुराणसुविधः ।

वादिकुंजरघटाकटसिंहस्तत्पट्टे ऽजनिरंजनभक्तः ॥ ३ ॥

देवतानिकरसेवितपाद श्रीवृषेशविभुपादप्रसात् ।

कोमलेन मनसा कृत एष ग्रंथ एव विदुषां हृदिहारः ॥ ४ ॥

सोधयंतु विबुधाविविरोधामत्पुराणमदएवमनोज्ञं ।

संभवति सुजनाः खलु भूमौ ते सदा हितकराहतपापाः ॥ ५ ॥

.....ऽथ वर्षे १६८१ श्री कीर्त्तिकारव्ये ।

धनले च पक्षे जीवे त्रयोदश्यपराहयामे कृष्णन सौख्याय विनिर्मितोऽयं ॥ ६ ॥

लोहपत्तननिवासमहेभ्यो हर्ष एव वाणिज्यामिव हर्षः ।  
तत्सुतः कवित्रिवः कमनीयो भातिमंगलसहोदरकृष्णः ॥ ७ ॥  
श्रीकल्पवल्लीनगरे गरिष्ठे श्रीब्रह्मचारीश्वर एव कृष्णः ।  
कंठावलं व्यूज्जितपूरसद्वः प्रवर्द्धमानोदितमाततान ॥ ८ ॥  
पंचविंशतिसंयुक्तं सहस्रत्रयमुत्तमं ।  
श्लोकसंख्येतिनिर्दिष्टकृष्णेन कविवेधसा ॥ ९ ॥

इति श्रीपुण्यचंद्रोदयमुनिसुव्रतपुरे श्रीपूरमहलंके हर्षवीरिकादेहज ब्रह्मश्री मंगलदासामज ब्रह्म-  
रकृष्णदासविरचिते रामदेवशिवगमनं त्रयोविंशतितमः सर्गः समाप्तः । संवत् १८५० का पोषमासे  
क्षेत्रे तिथौ १ गुरुवासरे लिखित महात्मा संभूराम ॥

संवत्सरे शून्यशराष्ट्रे दु १८५० मिते पोषमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ चन्द्रवासरे द्वादहहृददेशे  
नयपुरनगरे श्री वृषभदेवचैत्यालये श्री मूलसंघे नंदाम्नाये बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये अंबावती-  
द्वारकशिरोरत्न श्रीमहेन्द्रकीर्ति देवास्तत्यष्टे भट्टारक पट्टोदयाद्रिदिनमणिनभश्रीमत्क्षेमेन्द्रकीर्तिदेवस्त-  
जमार्त्तण्डचण्डोद्योतितपरवादिभयं चानभट्टारकश्रीसुरेन्द्रकीर्तिस्तदाम्नायेखंडेलवालान्वये पाटणीगोत्रे-  
कशिरोमणि साहश्रीसंतोषरामः तद्भार्या संतोपसुखदे तत्पुत्रचिरंजीव श्रीधर्मधुरंधर वधूगंमजी  
र्या वधूदे तत्पुत्र चिरजीविश्रीमोहनलाल एतेषां मध्ये दानपूजाव्रतशीलप्रभावक श्रावकधर्मक्रियापरायण-  
विश्वीवधूराभेणेदं मुनिसुव्रत पुराणं लिखाप्य निजज्ञानवरणीकर्मक्षयार्थं भट्टारक श्रीसुरेन्द्रकीर्तये घटापितं ।

मेघदूतावचूरि ।

टीकाकार श्री सुमतिविजय । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३०. साइज ६।।४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर  
ऊपं तथा प्रति पंक्ति में ४६-४८ अक्षर । लिपि संवत् १८५१.

१२ का मंगलाचरण—

शारदां च गुरुं नत्वा मेघदूतावचूरिका ।  
सुमतिविजयनेयं क्रियते सुगमत्वया ॥ १ ॥

राजरंजनदत्ताश्च पाठकाः मुनिमंडले ।  
लीयाः सुधीः घनाः शाश्वत् भीमविजयमे रवः ॥ १ ॥  
सुमतिविजयेनेयं विहता सुगमत्वया—  
वचूरिः शिशुबोधार्थं तेषां शिष्येण धीमतां ॥ २ ॥  
विक्रमाख्ये पुरे रम्येऽभीष्ट देव प्रसादतः ।  
मेघावृताभिधानस्य पूर्णकाव्यस्य सौख्यदा ॥ ३ ॥

### ३८. मेघदूत टीका ।

टीकाकार श्रीमेघराज । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४४. साइज १०×४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४४ अक्षर ।

टीकाकार का मंगलाचरण—

नत्वाहं परमात्मानं सवोतिशयसंयुतं ।

मेघदूतस्य काव्यस्य कुर्वे टीकां सुबोधिकां ॥ १ ॥

अन्तिम समाप्ति—

इति श्री कालिदासकृतं मेघदूतकाव्यं तस्य सुबोधोघिका न मनी टीका वृत्तिः समाप्ता ।

संवत् १८८६ हिमसुमुनीदुवत्सरे वैशाखवहुलनवम्यां तिथौ कविवासरे श्रीपार्श्वचंद्रसूरिगच्छे महोपाध्याय श्री १०८ श्री होरानंद चंद्रास्तेपां शिष्यामहोपाध्यायाः श्रीरामचंद्रास्तच्छिष्य श्रीअलयरानजी तच्छिष्य श्रीलालचंद्रजी तच्छिष्य मुनिरत्नचंद्रेण्यं लिखिताः ॥

### ३९. यशोधर चरित्र ।

रचयिता श्री ज्ञानकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६८. साइज १२×५ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३-३७ अक्षर । प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है ।

मंगलाचरण—

श्रीमन्नाभिसुतो जीयाज्जिनो विजितदुर्नयः ।

मंगलार्थं न तो वस्तु सर्वदा मंगलप्रदः ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

चंपादिपुर्याः सविधे सुदेशे बंगाभिधा सुन्दरतां दधाने ।

ख्य ते पुरेऽकच्छरनासके च चैत्यालये श्री पुरुतीर्थे यस्य ।

श्री मूलसंधे च संरस्वतीति गच्छे बलात्कारगणे प्रसिद्धे ।

श्री कुन्दकुन्दान्वयके यतीशः श्री वादिभूपो जयतीह लोके ॥ २ ॥

तद्गुरुर्वधुभुवनसमर्थः पंकयकीर्ति परमरत्नः ।

सूरिपदाप्तो मदनविमुक्तः सद्गुणराशिर्जयतु चिरं सः ॥ ३ ॥

शिष्यस्तयोर्ज्ञानिसुकीर्तिनामा श्री सूरिरत्राल्पसुशास्त्रवेत्ता ।

चरित्रमेतद्रचितं च तेनाचंद्राकर्कता रंजयताद्धरित्र्या ॥ ४ ॥

शते प्रोडशकोन पट्टिवत्सरके शुभे ।

माघे शुक्लेऽपि पंचम्यां रचितं भृगुवासरे ॥ ५ ॥

राजाधिराजोऽत्र तदा विभाति श्री मानसिंहोजित वैरिवर्गः ।

अनेकराजेन्द्रविनम्यपादः स्वदानसंतर्पितत्रिश्वलोकः ॥ ६ ॥  
 प्रतापसूर्यस्तपतीह यस्य द्विषां शिरस्सु प्रविधायपादं ।  
 अन्याय दुर्ध्वान्त मपास्यदूरं पद्माकरं यः प्रविकाशयेच्च ॥ ७ ॥  
 तस्यैव राज्ञोऽस्ति महानमात्यो नानू सुनामा विदितो चरित्र्यां ।  
 समेदशृंगे च जिनेन्द्रगेहमष्टापदेवादिमचक्रवारी ॥ ८ ॥  
 योकारयच्चत्र च तीर्थनाथाः सिद्धिगता विंशतिमानयुताः ।  
 यः कारयेन्नित्यमनेक संध्यायात्रांधनाद्यैः परमां च तस्या ॥ ९ ॥  
 तत्प्राथना च संप्राप्य जयवर्तबुधस्य च ।  
 आग्रहाद्रुचितं चैतच्चरित्रं जयतां चिरं ॥ १० ॥  
 श्री व रदेचोस्तु शिवायते हि श्री पद्मकीर्त्तिष्ट विधायको यः ।  
 श्री ज्ञानकीर्त्ति प्रविबन्ध पादो नानू स्ववर्मेण्युतस्य नित्यं ॥ ११ ॥

इति श्री यशोधरमहाराज चरिते भट्टारक श्री वादिभूषण शिष्याचार्य श्री ज्ञानकीर्त्ति विरचिते  
 राजाधिराज महाराजमानसिंह प्रधान साह श्री नानूनामांकिते भट्टारक श्री अभयरुच्यादि दीक्षाग्रहण  
 स्वर्गदिप्राप्तिवर्णनो नाम नवमः सर्गः ॥

संवत् १६६१ श्रावणमासे कृष्णमासे द्वितीयातिथौ ऋजुवासरे वंगदेशे अक्कवरनगरे राजाधिराज  
 श्री मानसिंह राज्यप्रवर्त्तमाने श्री पार्श्वनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे  
 श्री कुदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिन-  
 चन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गोधा  
 शोत्रे साह श्री याचकजनसंदोह कल्पवृक्ष श्रावकाचरचगणनिरतचित्तः साह श्री चाचा तस्य भार्या चौसरदे  
 तया पुत्रस्त्रयः प्रथमपुत्र साह नेमा तस्य भार्या निमलदे तस्य पुत्र साह बल्लू तस्य भार्या बालहदे द्वितीय  
 पुत्र साह जेमा तस्य भार्या जेमलदे तस्य पुत्र चि० कलू तस्य भार्या कौतूकदे तस्य पुत्र चि० दुर्गा तस्य भार्या  
 दुर्गादे तृतीय पुत्र साह श्री पंचाईण तस्य भार्या द्वे प्रथमभार्या पाटमदे द्वितीय भार्या भावलदे । प्रथम  
 भार्या स्वपतिर्छिदानुगामिनी शीलालंकृतगात्राः सध्वी पाटमदे तयो पुत्र प्रथम दानगुणश्रेयांस सकल-  
 जन नन्दकारकस्त्रवचनप्रतिपालन समर्थसर्वोत्कारक साह श्री नाथू तद्भार्या नारंगदे तयो पुत्र चत्वार प्रथम  
 पुत्र चि० डूंगरसी तस्य भार्या कोडमदे द्वि० पुत्र चि० मोहनदास तृतीय पुत्र चि० नारायणदास चतुर्थ पुत्र  
 चि० ऋषभद.स । साह श्री पंचाईण तस्य भार्या द्वितीय भावलदे तयो पुत्राश्चत्वारः देवशास्त्रगुरुभक्ततत्परान्  
 नयविनयविवेकविचारचातुरीचमत्कृतनरनिकरान् श्री जिनपूजापुरंदरान् राजासभाशृंगारहारन् प्रथमपुत्रसाप  
 श्री हरपा तद्भार्ये द्वे प्रथमभार्या हरषमदे तस्य पुत्र चि० प्रयागदास तद्भार्या दाडिमदे साह श्री हरपा  
 तस्य द्वितीय भार्या प्रतापदे साह श्री पंचाईण तस्य तृतीय पुत्र साह श्री हीरा तस्य भार्या हमीरदे । साह

श्री पंचाङ्ग तस्य चतुर्थपुत्र मानू तस्य भार्या महिमादे । तस्य पंचम पुत्र वि० केसोदास तस्य भार्या कस्मोरदे  
एतेषां मध्ये भवकुलाकाशप्रकाशनचंद्र सज्जनजनचक्रोचक्षु चंद्रमंडल श्रीभवगन् मुखोद्गत प्रवचन श्रद्धामृत  
पानसंछर्दितानादिकालानामिध्यात्वमहागरल साह श्री नाथू तेनेदं यशोवरचरित्रं लिखाय्य भट्टारक श्री  
चंद्रकीर्ति तस्य शिष्य आचार्य श्री शुभचंद्राय दत्तं कर्मक्षयनिमित्तं ।

४०. यशोधर चरित्र ।

रचयिता कायस्थ श्री पद्मनाभ । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८६. साइज ६x४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ  
पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर । लिपि संवत् १७६६. यशोचर चरित्र अभी तक प्रकाशित  
नहीं हुआ है ।

मंगलाचरण—

परमानंद जननीं भवसागर तारिणीं ।  
सतां वितनुतां ज्ञानलक्ष्मीचन्द्रमभप्रभुः ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

उपदेशेन ग्रन्थोऽयं गुणकीर्तिमहामुनेः ।  
कायस्थ पद्मनाभेन रचितः पूर्वं सूत्रतः ।  
संतोष जैसवालेन संतुष्टेन प्रमोदिता ।  
अतिश्लाघितो ग्रन्थो यमर्थं संग्रहकारिणा ॥ २ ॥  
साधोर्विजयसिंहस्य जैसवालान्वयस्य च ।  
सुनेन पृथ्वोराजेन ग्रन्थोऽयमनुमोदितः ॥ ३ ॥

इति श्री यशोधरचरित्रे दयासुंदराभिधाने महाकाव्ये साधु श्री कुशराजकारापिते कायस्थ श्री पद्मनाभ-  
भविर्चिते अभयकृच्चप्रभृत सर्वेषां स्वर्गगमनो नाम नवमः सर्गः ॥

प्रशस्ति—

जातः श्री वीरसिंहः सकलरिपुकुलव्रातनिर्घातपातो,  
वंशे श्री तोमराणां निजविमलयशो व्याप्तदिक्चक्रवालः ।  
दानैर्मनैर्विवेकै न भवति समता येन साकं नृपाणां ।  
केषामेषा करीणां प्रभवति विपणां वर्णने तद्गुणानां ॥ १ ॥  
ईश्वरचूडारत्नं विनिहत करघातवृत्तसंहातः ।  
चंद्र इव दुग्ध सिंधोस्तस्मादुद्धरणभूपशुचीयते तिमिरं ॥ २ ॥  
यस्य हि नृपते यशसा सहसाशुभ्रीकृत त्रिभुवनेऽस्मिन् ।



कैलाशे 'ति' गिरि निःकरः क्षीरति नं रं शुचीयते ति नरं ॥ ३ ॥

तत्पुत्रो वीरसेन्द्रः सकलवसुमती पाल चूडामणिर्यः । . .

... प्रख्यातः सर्वलोके सकलवसुक्मानन्दकारीविशेषान् ॥

तस्मिन् भूपाल रत्ने निखलनिधिगृहे गोपदुर्गेप्रसिद्धं .

मुञ्जानेः प्राच्यराज्यं विगतविपुत्रयं सुप्रजः सेव्यमानः ॥ ४ ॥

वंशेऽभूजैसवाने विमलगुणनिधिः भूल्लणः साधुः स्तं.

साधु श्री जैनपालो भवदुदियास्तत्पुत्रोदानशीलो ।

जैनैरागधनेषु प्रमुदितहृदयः सेवकः सद्गुरुणां.

लोणाख्या सत्यशीला जनिविमलमतिजैणपालस्य भायां ॥ ५ ॥

जाता यद् तनया स्तयोः मुकुतिनो श्री हंपराजोऽभव-

तेषामद्यतमस्तदनुजः सैराजनामाजनि ।

सैराजो भव राजकः समजनि प्रत्योत्कीर्त्तिमहान्,

साधु श्री कुशराजकस्तदनुजं श्री हेमराजोक्तवु ॥ ६ ॥

ज्ञात श्रीः कुशराज एव सकल दमापाल चूडामणिः ,

श्रं सत्तोन्नवीरमस्य विदितो विश्वासपात्रं मङ्गलम् ।

मंत्रो मंत्रविचक्षणः क्षणमयः क्षीणरिपक्षः क्षणान् . . .

क्षीणरिपक्षरक्षणक्षणमति जैनैद्रूपजारतः ॥ ७ ॥

स्वर्गस्यष्टि संमुद्धि कोनि विमलश्चैत्यात्तयः कैरितो,

लोकाणां हृदयंगमो बहुवैश्वर्यप्रसन्नप्रसोः ।

येनैतत्प्रसन्नमेव कश्चिदं मय्यं च काव्यं तया . . .

... साधु श्री-कुशराजकेन सुप्रिया कीर्त्तिश्चिरमथापकं ॥ ८ ॥

निष्कृतस्यैव भार्या गुणचरितयुषस्तासु गृहोभिधानां . . .

पत्नी धन्या चरित्रा व्रतनियमयुता शीलशोचनयुक्ता ।

दात्री देवार्चनाख्या गृहकृतिकुशला तत्पुत्रः कामरूपो,

दाता कल्याणसिंह जितगुरुचरणारवनेतारोभून् ॥ ९ ॥

लक्षणा श्रीद्विबीचाम्भून् सुशीला च परितत्रता ।

क्षौशीरा च तृतीयेयमभूद्रुणावती मती ॥ १० ॥

शांतिहेतुभूयात्तदनु नरपते सुप्रजानां जनानां ।

वक्त्रुणां वाचकानां प्रतिदिनर्वाचकं कृते कारापितानां ।

श्रोत्राणां लेखकानां बहुविमलधियां द्रव्यलिख्यापकानां ।  
तद्वत्श्रद्धापराणां विविधबहुमतैर्भाषकानां तथैव ॥ ११ ॥  
कायस्थपद्मनाभेन बुधपादाब्जरेणुना ।  
कृतिरेषा त्रिजयतां स्थेय दाचन्द्रतारकं ॥ १२ ॥

### ४१. यशोधर चरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७४. साइज १२×६॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर । ग्रन्थ पूर्ण है । लेकिन दीमक लग जाने से फट गया है । उक्त चरित्र प्रकाशित नहीं हुआ है ।

प्रशस्ति—

संवत् १६३० वर्षे आपाढ सुदी २ सोमवासरे श्री मूलसंधे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री कुन्दकुन्दाचार्यः । तदन्वये भट्टारक श्री जिनचन्द्रः । तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रः । तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री चमचन्द्रः । तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री ललितकीर्ति । तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री चन्द्रकीर्तिः । तदाम्नाये खंडेलवल पाटणी गोत्रे संगही दूलहा भार्या दूलहदे । तयो पुत्र सं० हारा द्वितय पुत्र सं० ठकुरसी तत् भाषा लखणा । तयो पुत्र सं० ईसर भार्या ईसरदे तयोः पुत्र सं० रूपसी देवसी सं० सेवा भार्या साहिबदे तयोः पुत्र मनसिंह सं० गुणदत्त भार्या गौवादे तयोः पुत्र सं० गेगा सं० प्रमत् सं० रेखा सं० ठकुरसी भार्या लखणा शा.त्र यशोधर चरित्र ब्रह्मरायमल्ल जोग्य दद्यात् ।

### ४२. योगचिंतामणि ।

रचयिता श्री हर्षकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६०. साइज १०×४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४८-५४ अक्षर । विषय-वैद्यक । ग्रन्थ का दूसरा नाम वैद्यक सार संग्रह भी है ।

मंगलाचरण—

यत्र वित्रासमयांति तेजांसि च तमांसि च ।  
महीयस्तर्हं वंदे चिदानंदमयं महं ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

न रोगाणां क्रमः कोऽपि निदाननिरूपणं ।  
केवलं बालबोधाय योगाः केऽपि निरूपिताः ॥  
स्तरीश्वरप्रवत्सवशिरावतंस,  
श्री चन्द्रकीर्तिगुरुपादयुगप्रसादात् ।  
गंभीरचारुतरुवैद्यकशास्त्रसरं,  
श्री हर्षकीर्तिवरपाठक उद्धारः ॥ २ ॥

चिचार्यपूर्वशास्त्राणि हर्षकीर्त्यादिसुरभिः ।

किं विदुः क्रिया तस्मै तद्रस्यं विद्यकाणवात् ॥ ३ ॥

× × × × ×

यथा ज ननामिह वाङ्मिताथान् चित्तामणि पूरयंतु समर्थः ।

तथैव सप्तपञ्चभूरियोगान् श्री योगचित्तामणि रापिपत्ति ॥ ४ ॥

श्रीमन्नागपुरीय तपोगच्छीय श्री हर्षकीर्तिसूरि संकलित श्री योगचित्तामणौ वैद्यकसारसंग्रहे  
सप्तमको मिश्रकाध्यायः ।

### ४३. राजवार्त्तिक ।

रचयिता श्री भट्टकलंकदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५५४. साइज १२×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर  
११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४३ अक्षर । प्रति सुन्दर है ।

संवत् १५८२ वर्षे आषाढवृदि १३ श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्तीगच्छे श्री कुंदकुंदा-  
चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे  
भट्टारक श्री प्रभाचंद्रदेवास्तदांम्नाये खंडेलवालान्वये वाकलीवालगोत्रे चंपावतीवास्तव्ये रावश्रीराचन्द्रराज्ये  
संघभारधुरंधर संघपति सं० तीकौ तद्भार्या पूनी तयोः पुत्रौ सा० चाया द्वितीय ताल्ह । सा० चाया भार्या  
गूजरि तत्पुत्र रामा द्वितीय होला । सं० ताल्ह भार्या नौलादे तयोः पुत्र सदगुरुपदेशनिर्वाहकौ चतुर्विध-  
दानवितरणकृत्पवृक्षौ जिनपूजापुरंदरौ सं० ताल्ह द्वितीय सं० वाल् भार्या ललतादे । सं० वाल् भार्या वहुंसिदि  
एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं कर्मचार्यान्मत्तं लिखाप्य भक्त्या ब्रह्मलालाय दत्तं ।

### ४४. वरांगचरित्र ।

रचयिता परवादिदंतिपंचानन भट्टारक श्री वर्द्धमानदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७२. साइज  
११×५ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या १३८३. लिपि संवत् १५६५.

संगलाचरण—

जिनस्य सज्ज्ञानमयैकदर्पणे जगत्समस्तं प्रतिविवतां गतं ।

स यस्य संसारविमोहितात्मनं पुनातु चेतांसि सतां निरंतरं ॥ १ ॥

अन्तिम पद्य तथा प्रशस्ति—

स्वस्ति श्री मूलसंघे सुविनिदितगणे श्री वलात्कारसङ्घे,

श्रीभारत्यादिगच्छे सकलगुणनिधिर्वर्द्धमानाभिधानः ।

आसीद्भट्टारकोऽसौ सुचरितमकरोद्धीवरांगस्थराज्ञो,

भव्यश्रेयांसि तेन्द्रसुवि चरितमिदं वत्ततामाकतारं ॥ १ ॥

प्रमाणमस्य काव्यस्य श्लोका ज्ञेया विशारदैः ।

अनुष्टुप् संख्यया सर्वे गुणो भाग्नीदुसम्मिताः ॥ २ ॥

संवत् १५६५ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे पट्टी दिवसे शनैश्चरवारे उत्तरानक्षत्रे रावश्री मालदे राज्य-  
प्रवर्त्तमाने रावत श्री खेतसीप्रतापे सांख्यौणानामनगरे श्री शांतिनाथजिनचैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये  
बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र-  
देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाढार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा  
स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे सा० चोखा तद्भार्या वीरणि तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम सा जेला  
द्वितीया सा० जेमा । सा० जेला भार्ये द्वे प्रथम हररवू द्वितीय नाल्ही तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा श्रीपाल द्वितीय  
सा० पोल्हण तृतीय सा० मांकू । सा० श्रीपाल भार्या सूवट तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम सा जिनदास द्वितीय सा०  
कपभदास । सा० पोल्हण तद्भार्या होली । सा० मांकू भार्या टोमा तयोः पुत्र चिरंजी नान्निग । सा० जेमा  
भार्या रोहिणी तयोः पुत्र सा० डालू तद्भार्या डलूसिर एतेषां मध्ये जिनपूजापुरंदर चतुर्विध दानवितरण  
कल्पवृक्ष संदंशुपदेशनिर्वाहक सा० श्रीपालेन इदं शास्त्रं लिखाप्य उत्तमशान्नाय दत्त ।

प्रति नं० २, पत्र संख्या ६०, साइज १२×५ इञ्च । प्रति प्राचीन है । लिपि संवत् १६६०.

प्रशस्ति—

संवत् १६६० वर्षे ज्येष्ठ सुदी १४ तिथौ भृगुवासरे श्री राजमहलनगरे महाराजाधिराजराजा श्री  
मानसिंहजी राज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुंदाचार्यान्वये  
भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक  
श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये कासलीवालगोत्रे याचकजनसंदोह-  
कल्पवृक्ष आवकाचारचरणनिरतचित्तसाह सोढा तद्भार्या सीलतोयतरंगिणी विनयवागेश्वरी सोहिलादे तयो  
पुत्राश्चत्वार । प्रथम पुत्र धर्मधुराधरणधीर साह श्री छाजू तद्भार्या दानशीलगुणभूषणा भूपितगात्रा न स्ना  
छायलदे तयो पुत्रौ द्वौ । राजसभाशृंगारहार स्वप्रतापदिनकर मुकुलिकृत शत्रुमुख कुमुदाकर स्वजसनिशाकर  
आल्हादित कुत्रलयदानगुण अल्पांकृतकल्पपादपश्री पंचपरमेष्ठिचित्तनुपवित्रितचित्तसकलगुणीजन-  
विश्रामस्थान प्रथम साह जेहा तद्भार्या जेहलदे तयोः पुत्राश्चत्वारः । प्रथम पुत्र देवा तद्भार्या देवलदे  
द्वितीय पुत्र साह ईसर तृतीया पुत्र कुंता चतुर्थ पुत्र भगवान् । द्वितीय पुत्र करमसी तद्भार्या करणादे तयोः  
पुत्र साह नेमा तद्भार्या नेमलदे तयोः पुत्रास्त्रयः । प्रथमपुत्र दानगुणश्रेयांस सकलजनानंद कारक स्वयचन  
प्रतिपालनसमर्थ सर्वोपकारक साह हरपा तद्भार्या स्वपतिवृंदानुगामिनी शीलालंकृतगात्रा साध्वी हरपदे  
द्वितीय पुत्र साह वेणा तद्भार्या बहुरंगदे तृतीय पुत्र फलह । पुत्र साह खेम तद्भार्या खेमलदे तयोः पुत्राः  
द्वे प्रथमपुत्र साह जेसा द्वितीय हय तृतीय पुत्र साह धर्मा तद्भार्या धारादे तयोः पुत्र बोरु द्वितीय पुत्र  
राइमल तस्य भार्या रयणादे च० पुत्र दुर्गा तस्य भार्या दुर्गमदे चतुर्थ पुत्र साह टीला तस्य भार्या टीलमदे

तपो पुत्र साह जगलाम तस्य भार्या हमीरदे तयो पुत्र साह जगमाल तस्य भार्या जौणादे द्वितीय पुत्र साह  
मल्लू द्वितीय पुत्र कल्याण तस्य भार्या कल्यादे एतेषां मध्ये साह हरपा तस्य भार्या हरपमदे लिख्य  
शास्त्रवरांगचरित्रं जेठजिणवरत्रत प्रद्योतनार्थं भार्या श्री शुभचंद्राय दत्त ।

प्रति सं० ३, पत्र संख्या ७३, साइज १३x५ इञ्च । लिपि संवत् १८७३.

संवत् १८७३ वर्षे आश्विन कृष्णपक्षे ५ बुधवासरे श्रीमत् ग्वाल्लेरमुत्सलसकर भगवान्  
दौलतराजसिन्ध्या राज्यप्रवर्त्तमाने श्री आदिनाथचैत्यालये धर्मोत्सन्मानसचतुसंघ युक्ते वाद्यगीत मंगल  
प्रदोद्धत नित्योत्सवे श्रीमूलसंघे नंद्यान्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंचार्यान्वये श्रीवावती सुपट्टे  
सकलभट्टारक शिरोमणि भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्ति जिष्णुना पट्टोदयाद्रि सइत्तरश्मिसन्निभ भट्टारक श्री श्री  
महेन्द्रकीर्तिजित्स्वामिमानां पट्टलंकारललापमान भट्टारक श्रीसुरेन्द्रकीर्ति तदन्नाये खंडेलवालान्वये  
दोग्या गोत्रे धर्मशिरोमणि साहजी श्री जिणदासजी तस्य पत्नीकुक्षौ पुत्रान्वयः ज्येष्ठ पुत्र रतनचंदजी  
मध्यपुत्रः फतेचंदजी तस्य पुत्रौ द्वौ ज्येष्ठ पुत्र गमलालजी लघु पुत्र केवलरामजी तस्य पितृव्य वंशांशौ  
सहत्तरश्मि सहश धर्मभारधुरंधर सेठजी श्री मनीरामजी तस्य पति कुक्षौ पुत्र लक्ष्मीचंद्र रतेषां मध्ये  
ज्ञानवरणीयकर्मक्षयार्थं वरांगचरित्र ग्रंथं घटापित ।

४५. बद्धमानपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति । म.पा संस्कृत । पत्र संख्या ८०, साइज ११x५ इञ्च । प्रत्येक  
पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २२-२६ अक्षर । प्रति नवीन तथा सुन्दर है । लिपि संवत् १८०४.

मंगलाचारण—

जिनेशे विश्वनाथाय ह्यनंतगुणसिद्धये ।

वर्मचक्रभृते मूर्ध्ना श्री वीरन्वामिने नमः ॥ १ ॥

अन्तिम पद्य—

जल्पितेन बहुना किमाश्रयेद्वीरनार्थं इह यो मया स्तुतः ।

ने ददातु कृपया श्रुसोद्भुतान्, सुकथे निजगुणान् स्वशर्मणे ॥ १ ॥

त्रिसहस्राविकापञ्चत्रिंशत्श्लोकाः भवन्ति वै ।

यत्नेन गुणिताः सर्वे चरित्रास्त्य सन्मतेः ॥ २ ॥

इति श्री भट्टारक श्री सकलकीर्तिविरचिते श्री बद्धमानपुराणे श्रेणिकाभयकुमारमवावली भगवन्नि-  
र्वाणानैकोनविंशतिमोऽधिकारः ।

संवत् १८०४ वर्षे साहमासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां तिथौ बृहस्पतिवासरे श्री सवाईजयपुरनगरे  
नदाराजाधिराज राजा श्री प्रतापसिंहराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्यान्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री

इति श्रावकाचारसारोद्धारे श्री पद्मानन्दमुनि विरचिते द्वादशव्रतवर्णनं नाम तृतीयः परिच्छेदः ।

प्रशस्ति—

यस्य तीर्थंकरस्येव महिमाभुवनातिगः ।

रत्नकीर्तिर्यतिस्तुत्यः स नेकषामशेषवित् ॥ १ ॥

अहंकारस्फारी भवदामतवेदांतविबुधो,

लसद्भ्वांतश्रेणी क्षपणनिपुणोतिद्युतिभरः ।

अधीती जैनेन्द्रे जनि रजनिनाथप्रतिनिधिः,

प्रभाचद्र सांद्रोदयशमिततापव्यतिकरः ॥ २ ॥

महाव्रतिपुरंदरः प्रशमदग्धरागांकुरः स्फुरत्परमपौरुषः स्थितिरशेषशस्त्रार्थवित् ।

यशोभरमनोहारी कृतसमस्तविश्वंभरः परोपकृतितत्परो जयति पद्मनंदीश्वरः ॥

श्रीमत्प्रमैन्दु प्रभुपादसेवा हे वाकिचेताऽप्रसरत्प्रभावः ।

सच्छ्रवकाचारमुदारमेनं श्रीपद्मनन्दी रचयांचकार ॥

श्रालंबकचुककुले विततांतरिक्षे, कुर्वन्स्वाधवसरोजविकाशलदमीः ॥

लुपन् विपक्षकुमुदन्नजभूरिकांतिं, गोकर्णहैलिरुदियापलसत्प्रभावः ॥ ४ ॥

भुवि सूपकारसारं पुण्यवता येन निर्म्ममे कर्म ।

भीम इव सोमदेवो गोकर्णात्सोभवत् पुत्रः ।

सती मतल्लिका तस्य यशकुसुमवल्लिका पत्नी,

श्री सोमदेवस्य प्रेमाप्रेमपरायणा ॥ ५ ॥

विशुद्धयोः स्वभावेन ज्ञानलदमीजिनेन्द्रयोः ।

नया इवा भवन् सप्तगंभीरास्तनयास्तयोः ॥ ६ ॥

वासाधरहरिगजौ प्रह्लादः शुद्धधीश्चमहाराजः ।

भवराजो रत्नख्यः स तनयाख्यश्चेत्यमीसप्त ॥ ७ ॥

वासाधरस्याद्भुतभाग्यराशेर्मिश्रितयोर्वैश्मान कल्पवृक्षः ।

अगण्यपुण्योदयतोऽवतीर्णो वितीर्णचेतोऽभिमतार्थसाधः ॥ ८ ॥

वासाधरेण सुधिया गांभीर्याद्यदि तृणीकृतोनाभिः ।

कथमन्यथा स बडवावृलनसूत्रस्थितोवृलति ॥ १० ॥

x x x x x

द्वितीयोप्यद्वितीयो भूद्वैर्यौदायोदिभिर्गुणैः ।

पुत्र श्री सोमदेवस्य हरिराजाभिधः सुघोः ॥ १० ॥

गुणैः सदास्मप्रतिपक्षभूतैः संगीकरोत्येष विवेकचक्षुः ।

इतीव शिष्यैः हरिराजसाधु दीपैरवालोकितं न शीलसिधुः ॥ ११ ॥

संप्राप्य रत्नवृत्तीयैकपात्रं रत्नं सुतं मंडनमुर्वरायाः ।  
 श्री सोमदेवः स्वकुटुंबभारनिर्वाहचितारहितो बभूव ॥ १२ ॥  
 दृष्टं शिष्टजनैः सपत्नकमलैः कुत्रापिलीनं जवा-  
 दर्थिप्रोद्धतनीलकण्ठनिवहै रत्नं प्रमोदोद्गमान् ।  
 वृष्णाधूलिकणोरधैर्विगलितं स्थाने मुनीन्द्रः स्थितं,  
 वृष्टि दानमयीं वितन्वति त्रां रत्नाकरांभोधरे ॥ १३ ॥  
 सांतो नाम्न्यां पत्न्यां जिनराजध्यानकृतसहरिराजः ।  
 पुत्रं मनः सुरवाख्यं घर्मादुत्पादयाम स ॥ १४ ॥  
 × × × × ×  
 संघभारधरोधीरः साधुर्वासाधरः सुधीः ।  
 सिद्धये श्रावकाचारमचीकरदमुमुदा ॥ १५ ॥  
 यावत्सागरमेखला वसुमती यावत्सुवर्णाचलः,  
 स्त्रणरी कुल संकु ..... गमितं ..... ।  
 वितास्क ..... दपितो लोकप्रकाशोद्यतौ,  
 तावन्नन्दु पुत्रपौत्रसहिता वासाधारः श्रावकः ॥

संवत् १५६४ वर्षे वैशाख बुदी ७ तिथौ सोमवासरे श्रीमेवातदेशे बहादुरपुर नगरे श्री हुमायूँ  
 पातिसाहि मुगलराज्य प्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे ..... ।

४७ श्रीपालचरित्र ।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११३. साइज ६×३ इञ्च । रचना संवत्  
 १५८५. लिपि संवत् १७१४. प्रति पूर्ण है लिखावट सुन्दर है ।

मंगलाचरण—

नत्वा श्रीमज्जिनाधीशं सुराधीशार्चितकर्म ।  
 श्रीपालचरितं वक्ष्य सिद्धचक्रार्चनोत्तमं ॥ १ ॥

अन्तिमपद्य तथा प्रशस्ति—

गच्छे श्रीमति मूलसंघतिलके सारस्वतीये शुभे,  
 श्रीभट्टारकपद्मानन्दमुनयो देवेन्द्रकीर्त्तिमतः ।  
 विद्यानन्दिगुरुस्ततो गुणनिधिः पट्टे तदीये सुधीः,  
 श्री भट्टारकमहिभूषणगुरु सद्बोधसिधुर्महान् ॥ १ ॥



तत् शिष्यो गुणरत्नराजितमतिः श्रीसिंहनन्दीगुरुः,  
 सद्वत्तत्रयमंडितोतिनितरां भव्यौयधनिस्तारकः ।  
 तेषां पादपयो न मुग्धमधुपः श्री नेमिदत्तायते,  
 चक्रो चारुचरित्रमेतदुचितं श्रीपालजं सक्रियात् ॥ २ ॥  
 अग्रोत्तोत्तमवंशशण्डनमणिः स ब्रह्मचारीशुभः  
 श्री भट्टारकमल्लिभूषणगुरोः पादाब्जसेवारतः ।  
 जीय दत्त महेंद्रदत्त सुयती, संज्ञानवान्निर्मलः  
 सूरि श्री श्रुतसागरादियतिनं सेवा परः संनमतिः ॥ ३ ॥  
 ख्याते मालवदेशस्थे पूर्णाशानगरे वरे  
 श्री मदादिजिनागरे सिद्धं शास्त्रमिदं शुभं ॥ ४ ॥  
 संवत् सौम्य सहस्रे च पंचाशीति समुत्तरे ।  
 आषाढशुक्ला पंचम्यां संपूर्णं रविवासरे ॥ ५ ॥

इति श्री सिद्धचक्रपूजातिशयं प्राप्ते श्रीपालमहाराजचरिते भट्टारक श्री मल्लिभूषणशिष्याचार्य श्री सिंहनन्दि ब्रह्म श्री शांतिदासानुमोदिते ब्रह्म नेमिदत्तविरचिते श्रीपालमहासुनींद्र निर्व्राणगमनोनाम नवमोधिकारः समाप्तः ।

श्रीमदग्रोतान्वये यो गोत्रेणोयलमंडितः ।  
 स श्री रामादास ख्यो तत्तनूजो गुणामणी ॥ १ ॥  
 सुरपगादितार्थेषु स्नानेषु यः सदारतः ।  
 सः श्रीमान् क्षेमदासोभूत क्षमादिगुणसागरः ॥ २ ॥  
 हरेरर्चा गुरोर्भक्तिः दान्नतत्परमानसः ।  
 नृनानां हृदयिद्राप्ती सौधीयंया सुखावह ॥ ३ ॥  
 महागुणवतीरम्या सुचरित्रापतिव्रता ।  
 क्षेमश्री नाम तस्यांसीद्भार्या लावन्यसुन्दरी ॥ ४ ॥  
 तयोः पुत्राः समुत्पन्ना त्रयः रत्नत्रयोपमा ।  
 निजवृत्तेषु ये लीनाः भूपैः सन्मानिताः सदा ॥ ५ ॥  
 व्येष्टोति च गुणश्रेष्ठो धर्मज्ञो धर्मवत्सलः ।  
 निजाचारेषु यो लीनो सः श्रीकेशवनामभाक् ॥ ६ ॥  
 मृद्रांगी कोमल पीमानसे करुणान्विता ।

दानेन कल्पवाल्ली घातद्रामाराजमत्यपि ॥ ७ ॥  
 तयोः पुत्रव्यसुदेवः गुणज्ञो गुणसागरः ।  
 तद्भार्या गुणग्रामा नाम्ना परिमलदेसती ॥ ८ ॥  
 शीलवर्तिः तपः स्नेहद्वौकुलेद्योतिदीपिका ।  
 विल्लुदासः द्वितीयः स्यात् ..... भक्तिवत्परः ॥ ९ ॥  
 तत् भामात् रमात्याख्यः शीला दिगुणमंडिताः ।  
 तयोः पुत्रो बभूवासौ श्रीमच्च हूरनामभाक् ॥ १० ॥  
 कुलांगणी महागीर्णैः पयः पाणैश्च वर्द्धितं ।  
 तृतीयस्तु महाविज्ञो गुणज्ञो गुणभूषणः ॥ ११ ॥  
 श्रीमनमोहनदासाख्यो विनयाद्रिगुणलंकृतः ।  
 तद्रामा गुणाधामश्च सुंदरो शुभलक्षणः ॥ १२ ॥  
 तयोः सूनुः बभूवासौ देवीदास गुणाधिकः ।  
 तद् भार्या च भवेत्सोऽध्वी नाम्ना भोगमती मता ॥ १३ ॥  
 तयोः पुत्रौ समुत्पन्नौ चाललीलाविराजितौ ॥  
 प्रथमः सुत आनंदी द्वितीयः हेमराज भाक् ।  
 शुभपुण्यफलंपुत्राः पुण्यात् किं किं न जायते ॥  
 चक्रो महोत्सवं रम्यं जगज्जननः प्रियं ।  
 सत्यं सत्पुत्रसंप्राप्तौ किञ्च कुर्वन्ति साधवः ॥

एतेषां मध्ये शीलतोयतरंगिनी दानगुणचेलना कल्पवाल्ली वनूरमृती इदं पुस्तकं श्रीपालनाम चरितं  
 संपूर्णं ॥ संवत् १७१४ वर्षे आषाढमासे शुक्ल पक्षे पार्वणी द्वितियादि वसे भृगुवासरे श्रीमत्काष्ठासंघे माथुर  
 गच्छे आचार्य श्री श्री श्री १०८ केसवसेनजी तत्पट्टे महात्म्य श्री देवेन्द्रकीर्तिजी आचार्य श्री १०८ यशकीर्ति जी  
 ब्रह्म पं श्री पद्मसागरजी ब्र. श्री दयासागरजी ब्र. कल्याणसागरमिदं पुस्तकं लिखितं ।

## ४८. श्रेणिकचरित्र ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । मापा संस्कृत । पत्र संख्या १०८, साइज ६।४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर  
 १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर । लिपि संवत् १७६६.

५ मंगलाचरण—

श्री बद्धमानमानंद नौमि जाना गुणाकरं ।  
 विशुद्धध्यानदीप्त विहितकर्मसमुच्चयं ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

जयतु जित विपक्षो मूलसंघः सुगक्षो  
हरतु तिमिर भारंभारती गच्छ वारः  
नयतु सुगतिमार्गां शासनं शुद्धवर्गं  
जयतु च शुभचन्द्रः कुन्दकुन्दोमुनीन्द्रः ॥ १ ॥

पुराणकाव्यार्थं विदांवरत्वं विकासयन् मुक्तिविदांवरत्वं ।  
विभातु वीरः सकलाद्यकीर्तिः कृताय केनोतो सकलाद्यकीर्तिः ॥ २ ॥  
भुवन कीर्त्तियति जयतादमी, भुवनपूरित कीर्त्तिचयः सदा ।  
भवनविंश जिनागमकारणो, भवन वांमुदवातभरः परः ॥ ३ ॥  
तत्पट्टोदय पर्वते रविरभूद् भव्यांवुजं भासयन्,  
सन्नेत्रास्रहरं तमो विघटयन्नानाकरैर्भासुरः ।

भव्यान्तगतश्च विग्रहमतः श्री ज्ञानभूषः सदा,  
चित्रं चंद्रक संगतः शुभकरं श्री वद्धमानोदयः ॥ ४ ॥

जयति विजयकीर्तिः पुण्यमूर्तिः सुकीर्तिः—  
जयतु च यतिराजो भूमिपैः स्पृष्टवादः ।  
नयनलिनहिमांशु ज्ञानभूषस्यपट्टे,  
विविध पर विवादिह्माधरे वज्रपात्तः ॥ ५ ॥  
तत्क्षिप्र्येण शुभेदुना शुभमनः श्री ज्ञान भावेन वै,  
पूतं पुण्यपुराण मानुषभवं संसारविध्वंसकं ।  
नो कीर्त्या व्यरचि प्रमोहवशतो जैनेमते केवलं,  
नाहंकारवशात्कवित्वमदतः श्री पद्मानाभेहितं ॥ ६ ॥

इदं चरित्रं पठतः शिवं वै श्रोतुश्चपद्मेश्वरवत्पवित्रं ।  
अविष्णुसंसारसुखं नृ देवं संभुज्य सम्यक्त्वफलप्रदीपं ॥ ७ ॥  
चंद्राकंहेमगिरिसागरमूर्विमानं,  
गंगानदीगगनसिद्धशिलाश्च लोके ।  
तिष्ठन्ति यावदभितो वरमर्त्यसेवा,  
तिष्ठंतु कोविद मनोवुंजमध्यभूताः ॥ ८ ॥

संवत् १७६६ वर्षे कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा शशिवासरे लिपिकृतं विदरावति नगरे प० विहादारीसेन ।  
प्रति नं० २. पत्र संख्या ६६. साइज १०×४॥ इच्छ । लिपि संवत् १७३०.

संवत् १७३० माघ सुदी ४ वृहस्पति वासरे श्री मूलसंधे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मुनि जयकीर्ति स्तच्छिष्य माघनदेन वर्णिना लिखितं ।

४६. सम्यक्त्व कौमुदी ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत ( गद्य ) पत्र संख्या ८०. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १५८२.

मंगलाचरण—

श्रीवद्धमानमानम्य जिनदेवं जगत्प्रभुं ।

चक्ष्येऽहं कौमुदी नृणां सम्यक्त्वगुणहेतवे ॥ १ ॥

समाप्ति—

इति कौमुदी कथा समप्ता ।

प्रशस्ति—

संवत् १५८२ वर्षे फाल्गुन सुदी १४ शुभदिने श्रीमूलसंधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नंद्याम्नाये श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकप्रभाचन्द्रदेवास्तदांम्नाये चपावतीनामनगरे महारावश्रीरामचन्द्रराज्ये खंडेलवालांन्वये साहगोत्रे संघभारधुरंधर सा० काधिल भाय्या कावलदे । तस्य पुत्र जिनपूजापुरंदर सा० गूजर भाय्या प्रथम लाछि दुतीया सरो । प्रथमपुत्रनिजकुलगगनद्योतनदिवाकरान् व्रतनीमरत्नत्रयरनाकरान् कल्लाजली प्रसरतं-मूलखंडणान् देवगुरुशास्त्रभगतउज्जयतं गरित्तीर्थाद्योपज्जितागण्यपुण्यान्, जिनचरणकमलप्रधूतप्रभरित-गद्योदकपवित्रतांगान् जिननाथकथितआगमध्यातमरमकरंदचंचरीकान् पंथिकसुजनजनकलापकल्पनापूरणकल्प-वृत्तान् सम्यक्त्वादिगुणरत्नमालाविभूषितवित्तकंठस्थलान् एतान् साह नेमा भाय्या द्वौ प्रथमभाय्या नारंगदे द्वितीय लाही तस्य पुत्र चिरंजीवि सा० रत्नपाल संघभारधुरंधर सा० गूजर तस्य द्वितीय पुत्र सा० लाळ तस्य भाय्या दमयंती तृतीय पुत्र सा० कमा तस्य भाय्या करणादे तस्य पुत्र चारि प्रथम उदा सा० माघड, सा० साधव, चन्द्रसन एतान् इदं श स्त्रं कौमुदीं लिखाप्य कर्मक्षयनिमित्तं ब्रह्मवृचाय दत्तं ॥

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५१. साइज १०×४ इञ्च । प्रति पूर्ण है लिखावट सुन्दर है ।

संवत् १५६० वर्षे माहबुदी १३ सोमे श्री पद्युरदुर्गे हाडान्वये रावश्री अपयराजदेव कंवरनरवद राज्य प्रवर्त्तमाने श्रीमत् अचलगच्छे पंडित मिश्र, पं० लाममेर गणीनां श्रीकौमुदी ग्रंथं । श्री घोसवंशे साह-श्रीवंतं विष्णयशस्वी गोइद तत्पुत्रकुलमध्ये श्रेष्ठयशस्वी राज्यमान्य साहश्रीवंतं साह सीहा । साह श्रीवंत-कील्हा तत्पुत्र विरंजीवि साह पारस चिरंजीवि साह चंपा सकुटम्बेन इदं पुस्तकं कौमुदीग्रंथ लिखाप्य कर्मक्षयनिमित्तं दत्तं ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ३३. साइज १३×४॥ इच्छ । प्रारम्भ के १२ पृष्ठ नहीं है । लिपि संवत् १६२५.

संवत् १६२५ वर्षे शाके १४६० प्रवर्त्तमाने दक्षिणायेन मार्गशीर्षशुक्लपक्षे अष्टम्यां दिवसे श्री कुंभमेखदुर्गे श्री उदयसिंहराज्ये श्रीखरतरगच्छे श्री गुणलामहोपाध्यायैः स्ववाचार्थं लिखापितासौ वाच्यमाना चिरं नंदतात् ।

५०. सम्यक्त्व कौमुदी ।

रचयिता श्री गुणाकर सूरि भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३५. साइज ११॥×४॥ इच्छ । रचना संवत् १५०४. लिपि संवत् १६११.

मंगलाचरण—

तस्मै नित्यं चिदानंद स्वरूपायार्हते नमः ।  
यदागमरसास्वद तत्त्वं विज्ञायते नरः ॥ १ ॥  
दुगादौ जगदे येन श्रेयः श्रेयस्करानृणां ।  
स भूयाद्भवितां भूत्यैनामिजन्मा जिनेश्वरः ॥ २ ॥

अन्तिम—

पूर्वपिमि र्या रचिता कथेयमग्रेऽपि काव्ये सुभाषितेऽथ ।  
श्लोकै र्मया सा ग्रथिता प्रमोदाद्वोदभ्रवाणेदुमितेनवर्षे ॥ १ ॥  
इति चैत्रगच्छोयैः श्री गुणाकरसूरभिः ।  
चक्रे श्लोकै नवारम्या कथा सम्यक्त्वकौमुदी ॥ २ ॥  
पुष्पदंतौ स्थिरौ यावद्यावच्च ध्रुव मंडलं ।  
वाच्यमाना वुधै स्तावज्जीयात्सम्यक्त्व कौमुदी ॥ ३ ॥

इति सम्यक्त्व कौमुदी समाप्ता ।

संवत् १६११ वर्षे भाद्रवा सुदी ४ दिने मेड़ता मध्ये उपाध्याय श्री कर्मतिलक तंतु शिष्य वा० श्री ज्ञानतिलक लिखावत् सम्यक्त्व कौमुदी आत्मर्थे ।

५१. सारस्वत चन्द्रिका सटीक ।

टीकाकार श्री चन्द्रकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६६. साइज ६॥×४ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४२ अक्षर । लिपि संवत् १७४६.

मंगलाचरण—

नमोस्तु सर्वकल्याणपद्मकाननभास्वते ।  
जगश्रितमनाधाय पराय परमात्मने ।

प्रशस्ति—

तीर्थे वीरजिनेश्वरस्य विदिते श्रीकौटिकाख्ये गणो,  
 श्रीमच्छांद्रकुजे चटोद्भववृद्धदृग्च्छे गरीमान्विते ।  
 श्रीमन्नागपुरीयकाह्वयत् या प्राप्तवदांते धूना,  
 स्फूजद्भूरि गुणान्विता गणधरश्रेणि सदा राजते ॥ १ ॥  
 वर्षे वेदमुनीन्द्रशीकरः ११७४ मते श्रीदेवसूरिप्रभुः,  
 जज्ञोऽभूत्तदनु प्रसिद्धमहिमा पद्मप्रभः सूरिरात्रे ।  
 तत्पट्टे प्रथितप्रसन्न शशभृत् सूरिसनादिनः सूरिद्रा-  
 स्तदलन्तरं गुणसमुद्राह्वयभूवु बुधाः ॥ २ ॥  
 तत्पट्टे जयशेखराख्यसुगुरुः श्री वज्रसेनस्ततः,  
 तत्पट्टे गुरुहेमपूर्वतिलकः शुद्धः क्रि प्रद्योतकः ।  
 तत्पट्टे प्रभूरत्नशेखरगुरुः सूरेश्वराणां वरः,  
 तत्पट्टे धिपूर्णचन्द्रसदृशः श्रीपूर्णचन्द्रप्रभुः ॥ ३ ॥  
 तत्पट्टे जनि हेमदंस सुगुरुः सर्वत्रजोप्रदशः,  
 आचार्या अपिरत्नसागरवरास्तत्पट्टेऽप्ययमा ।  
 श्रीमान् हेमसमुद्रसूरिरभवद्धी हेमरत्नस्ततः,  
 तत्पट्टे प्रभूसोमरत्नगुरुवः सूरेश्वराः सद्गुणाः ॥ ४ ॥  
 तत्पट्टेऽप्य-शैलहेलिरमल श्री जैसवालान्ययेऽ-  
 लंकारः कलिकालदपंदमनः श्री राजरत्नप्रभुः ।  
 तत्पट्टे जितविश्ववादिनिवहागच्छाधिपः संप्रतिः,  
 -सूरी श्री प्रभुचन्द्रकीर्ति-गुरवो गांभीर्यधैर्याश्रयाः ॥ ५ ॥  
 तैरियं पद्मचन्द्राहोपाध्य याभ्यर्थनाकृता ।  
 शुभा सुबोधिकानान्ती श्रीसारस्वतदीपिका ॥ ६ ॥  
 श्रीचन्द्रकीर्तिसूरीद्रपादांभोजमधुप्रतः ।  
 हर्षकीर्तिसूरिरिमाम दशकेऽलिखत् ॥ ७ ॥  
 अज्ञानत्वांतविष्वंसंविधानेदीपिकानिका ।  
 दीपिकेयं विजयतां वाच्यमाना बुधैश्चिरं ॥ ८ ॥  
 स्वल्पस्य सिद्धस्य सुबोधकस्य स रस्वतव्याकरणस्य टीका ।  
 सुबोधिकाख्यां रचयांचकार सूरेश्वर श्री प्रभु चन्द्रकीर्तिः ॥ ९ ॥

इति श्रीमन्नागपुरीयतपोगच्छाधिराज-महारक श्री चन्द्रकीर्तिसूरि विरचिता श्री सारस्वत व्याकर-  
 णस्य दीपिका संपूर्णाः ॥

## ५२. सिद्धान्तसार संग्रह ।

रचयिता आचार्य श्री नरेन्द्रसेन । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६३. साइज १२x५ इञ्च । लिपि संवत् १८०३. लिपि स्थान जयपुर । प्रति बीणे शौणो हो चुकी है ।

प्रारम्भ—

भूर्भुवः स्वस्त्रयीनाथं त्रिगुणात्मत्रयात्मकं ।  
त्रिमिः प्राप्तपरं धाम वन्दे विध्वंस्तकल्मषं ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

श्रीवीरसेनस्य गुणादिमेनो जातः सुशिष्यो गुणिनां विशेष्यः ।  
शिष्यस्तदीयोऽजनि चारुचित्तः सदृष्टिचित्तोऽत्र नरेन्द्रसेनः ॥ १ ॥  
गुणसेनोदयमेनाऽजयसेना संवभूवुरतिवर्याः ।  
तेषां श्री गुणसेनः सुरिर्जातः कलाभूरिः ॥ २ ॥  
अतिदुःखमानिकटवर्त्तिनिकालयोगे,  
नष्टे जितेन्द्र शिव वर्त्मनि यो बभूव ।  
आचार्यं नाम विरंतोऽत्र नरेन्द्रसेन-  
स्तेनेदमागमवचो विशदं निवद्धं ॥ ३ ॥

इति सिद्धान्तसारसंग्रहे आचार्यश्रीनरेन्द्रसेने विरचिते द्वे दशमः परिच्छेदः समाप्तः ।

## ५३. सिन्दूर प्रकरण ।

रचयिता श्री सोमप्रभसूर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११. साइज १२x५ इञ्च । पत्र संख्या ६६. लिपि संवत् १८८६.

प्रारम्भ—

सिदूरप्रमकरगतपकरशिरः क्रोडे कपोयाटवी,  
दावार्चिर्निचयः प्रबोध दिवस प्रारंभसूर्यादयः ।  
मुक्तिखीकुचकुम्भकुङ्कुमरसः श्रेयस्तरोपह्वः,  
प्रोद्धासः क्रमयोर्नखधुतिभरः पार्श्वप्रभोः पातुवः ॥

प्रशस्ति—

सोमप्रभाचार्यमर्मसिञ्जपुंसां तमः पंकमपाकरोति ।  
तदप्यमुष्मिन् मुपदेशलेशे निशम्य माने निशमेतिनाशं ॥ १ ॥

अभपदजितदेवाचार्यपट्टोदयाद्रि,  
 धूमणिविजयसिंहाचार्यपादारविदे ।  
 मधुकरसंमतां य सतां यस्तेन सोमप्रभेण,  
 व्यरचि मुनिपरक सूक्तमुक्तावलीय ॥ २ ॥

इति सोमप्रभसूरि विरचितं सिंदूरप्रकराख्यं सुभाषित शास्त्रं शतकं

संवत् १८८६ भाद्रपद सुदी २ वृद्धस्पातिवासरे मालपुरानगरे भट्टारकजी श्री १०८ देवद्वकीत्तजी तस्य  
 शिष्य पं० मेहरचंद्र स्वहस्तेन लिखितं ।

१४. सुदर्शनचरित्र ।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७५. साईज ११x५ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर  
 ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर । प्रति नवोन है ।

मंगलाचरण—

नेत्वा पंचगुरुन् भवत्या पंचमी गुरुनायकान् ।  
 सुदर्शनमुनेश्चार्क चरित्रं रचयाम्यहं ॥ १ ॥  
 येषां स्मरमात्रेण सर्वं विज्ञा घना यथा ।  
 वायुना प्रणयं यान्ति तान् स्तुवं परमेश्वरिनः ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्री शारदासार जिनेन्द्रकान् समुद्भवोसारजनैक चक्षुः ।  
 कृत्वा क्षमासत्रं कवित्वलेशो मांतिव बालस्य सुखं करोतु ॥ १ ॥  
 श्री मूजसंघेवरभारतीये गच्छे बलात्कारगणैतिरम्ये ।  
 श्री कुन्दकुंदाख्य मुनेन्द्रवंशे जातेः प्रभाचन्द्रमहामुनीन्द्रः ॥ २ ॥  
 पट्टे तदीये मुनि पद्मनन्दी भट्टारको भव्य सरोजभातुः ।  
 जातो जगत्रयहितो गुणरत्नसिंधुः, कुर्यात् सतां सारसुखं यतीशः ॥ ३ ॥  
 तत्पट्टेऽद्याकर भास्करोऽत्र देवद्वकीत्तिमुनिचक्रवर्त्ति ।  
 तत्पादपङ्केज सुभक्तिशुक्ती विद्यादिनन्दी चरितं चकार ॥ ४ ॥  
 तत्पट्टे जनि मल्लिभूषणगुरु चारित्रचूडामणिः,  
 संसारोबुधि तारणैकचतुरश्चित्तमणिः प्राणिनां ।  
 सूरौ श्री श्रुतसागरो गुणैर्निधिः श्रीसिंहनन्दीगुरुः,  
 सर्वे ते यतिसत्तमाः शुभतरां कुर्वन्तु वो मंगलं ॥ ५ ॥



गुरुणामुपदेशेन सच्चरित्रमिदं शुभं ।

नेमिदत्तो व्रती भक्त्या भावयामाश-शर्म्मदं ॥ ६ ॥

इति श्री सुदर्शनचरित्रे पंचनभस्कारमहात्म्यप्रदर्शके ब्रह्म श्रीनेमिदत्तविरचिते सुदर्शनमहामुनि  
सोत्तलक्ष्मी संप्राप्ति व्यावर्णनो नाम द्वादशमोऽधिकारः ॥ इति सुदर्शनचरित्रं संपूर्णं ॥

५५. स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा संटीक ।

मूलकर्त्ता स्वामी कार्तिकेय । टीकाकार आचार्यः शुभचन्द्र । भाषा प्राकृत संस्कृत । टीका संवत्  
१६०१. लिपि सवत् १७२१. प्रारम्भ के ७३ पृष्ठ नहीं है । ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है ।

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघेऽजनिर्जन्दि संघः, बरावलात्कारगणः प्रसिद्धः ।  
श्री कुन्दकुन्दोवरसूरिवर्यः, विभातिभामूषणभूषितांगः ॥ १ ॥  
तदन्वये श्रीमुनिपद्मनंदी, ततोऽभवच्छ्रीसकलादिकीर्त्तिः ।  
तदन्वये श्री भुवनादिकीर्त्तिः, श्रीज्ञानभूषोवरवित्तिभूषः ॥ २ ॥  
तदन्वये श्री विजयादिकीर्त्तिः, तत्पट्टधारी शुभचंद्रदेवः ।  
तेनेयमाकारि विशुद्धटीका श्रीमत्सुमत्यादि सुकीर्त्तिकीर्त्तेः ॥ ३ ॥  
सूरिश्रीशुभचन्द्रेण चादिपर्वतवज्रिणा ।  
त्रिविद्येनाऽनुप्रेक्षायावृत्ति विरचितावरा ॥ ४ ॥  
श्रीमत विक्रमभूषतेः परमिते वर्षे शते षोडशे,  
माघे मासि दशमवह्निमहिते ख्याते दशम्यां तिथौ ।  
श्रीमच्छ्रीमहीसारः सारनगरे चैत्यालये श्रीपुरोः,  
श्रीमच्छ्रीशुभचन्द्रदेवविहिता टीकाः सदा चन्द्रस्तु ॥ ५ ॥  
वर्णी श्रीक्षीमचन्द्रेण विनेयेन कृतप्रार्थना ।  
शुभचंद्रगुरोः स्वामिनः कुरु टीकां मनोहरां ॥ ६ ॥  
तेन श्रीशुभचन्द्रेण त्रैवेद्येन गणेशिना ।  
कार्तिकेयानुप्रेक्षाया वृत्तिविरचितावरा ॥ ७ ॥  
तथा साधु सुमत्यादिना कृतप्रार्थना ।  
सार्थीकृती सार्थेन शुभचन्द्रेण सूरिणा ॥ ८ ॥  
लक्ष्मीचन्द्रगुरुः स्वामीशिष्यभक्तस्य सुधीयशा ।  
वृत्तिर्विस्तरितातेन श्री शुभेन्द्रप्रसादतः ॥ ९ ॥

### ५६. सम्यक्त्व कौमुदी ।

रचयिता श्री खेता । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६६. साइज ६॥४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७६३.  
प्रारम्भ—

श्री वर्द्धमानमानम्य त्रैलोक्यनभो मणिं ।

बुवेऽहं कौमुदीं नृणां सम्यक्त्वस्थितिहेतवे ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

खेताराधिपतिप्रकाशविमलस्वातप्रकाशात्मनां,

ब्रह्मज्ञानविदां महोपशमिनां दिग्वाससां योगिनां ।

चारित्र्येण जिनोदिते नहि पुनर्विभ्राजितानां भुवि,

शिष्येणात्मविशुद्धये विरचिता पुण्या कथा कौमुदी ।

गणभृन्मुखशीतांशु प्रभवातत्त्वकौमुदी ।

भूयादुपासकानां हि कथा संवोधलब्धये ॥ २ ॥

वेदुष्यदृष्टये नैव कवित्वयशसे न च ।

श्लोकै व्येरचि किंत्वेपा धर्मार्थं कौमुदी परं ॥ ३ ॥

इति श्री कौमुदी कथायां पंडिता खेता विरचितायां अष्टमी कथा समाप्ता । इति कौमुदी ग्रन्थ संपूर्ण ।

संवत् १७६३ वर्षे कार्तिक मासे शुक्लपक्षे ८ शनौ दिने लिपिकृतं परमपूज्यजी श्री ५ उत्तम  
जी तच्छिष्यस्थविरजी श्री राघव जी तच्छिष्यस्थविरजी श्री सोहाजी तत् शिष्यगणधरजी श्री चेतारामजी  
तत्पट्टधारी पूज्य श्री लच्छीरामजी तद्वैवासी शिष्य केसर ऋषिणा लिपी कृतं फलकनगरे ।

### ५७. हनुमच्चरित्र ।

रचयिता श्री ब्रह्मजित । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२२. साइज ११॥४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ८  
पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-४० अक्षर । लिपि संवत् १६८०.

मंगलाचरण—

सबोधसिधुचन्द्राय सुव्रताय जिनेशने ।

सुव्रताय नमो नित्यं धर्मशम्भार्थसिद्धये ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

जैनैर्द्रशासनसुधारसपानपुष्टो देवेन्द्र कीर्तियतिनायकनैष्टिकात्मा ।

तत्तच्छिष्यसंयमधरेण चरित्रमेतत्, सृष्टं समीरण सुतस्य महर्द्धिकस्य ॥ १ ॥

यः पठेच्चरितमेतदुत्तमं पाठयत्यपि परान् शिष्यान् ।

यः श्रणेति खलु भावयेच्चयः सोऽभू ते सुखमनुत्तरं दिवि ॥

विशदशीलस्वर्धु नीसिलातलैकराजहंसोत्सवायक्रीडनः प्रियः,  
 स्वमतसिधुवद्धेनप्रकृष्ययामिनी न पीनतेजसोद्भूत प्रभामितः ।  
 सुरेंद्रकीर्त्तिशिष्य विद्यादिनन्दनंगमदनैकपण्डितः कलाधर  
 स्तदीप देशनामवाप्यशुद्धबोधमाश्रितो जितेंद्रियस्य भक्तितः ॥  
 गोलशृंगारवंशे नभसि दिनमणि वीरसिंहोविपश्चिन्त,  
 भार्या पीथा प्रीतीता तनुरुहविदितो ब्रह्मदीक्षाश्रितोऽभूत् ।  
 तेनोच्चैरेष ग्रन्थ कृत इति सुतरां शैलराजस्य सूरैः,  
 श्री विद्यानन्दिदेशात्सुकृतविधिवशात्सर्वसिद्धिप्रसिद्धयै ॥  
 इदं श्री शैलराजस्य चरितं दुरितापहं ।  
 रचितं भृगु कच्छे च श्री नेमिजिनमन्दिरं ॥  
 धम्मार्थो लभते भृषं धनुयुतो वृद्धिं च निःस्वाधनं,  
 पुत्रार्थो सुकुलोचितं च तनयं कामांश्च कामी लभेत् ।  
 मोक्षार्थो वरमोक्षमश्नलभते प्राक्तेन सांद्रेण किं,  
 ह्येतत् शैलमुनीन्द्रराजचरितं सर्वार्थसिद्धिप्रदं ॥  
 पठकः पाठकश्चैव चक्का श्रोता च भावकः ।  
 त्विरं नन्दादयं ग्रन्थस्तेन साद्धं युगाविधिं ॥  
 प्रमाणमस्य ग्रन्थस्य द्विसहस्रमितं बुधैः ।  
 श्लोकानामिह मंतव्यं हनूमक्चरिते शुभे ॥

इति श्री हनूचरिते ब्रह्मजितविरचिते द्वादशः सर्गः ॥

संवत् १६८० वर्षे मार्गसिर सुदी पंचमी दीतवार पुस्तक लिखापितं जैसी श्रीपति ।

## ५८. हरिवंशपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति के शिष्य ब्रह्मचारि श्री जिनदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या  
 २२३. साइज १२।।५। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४६-५० अक्षर । प्रति लिपि  
 संवत् १८०३. प्रति शुद्ध तथा सुन्दर है ।

मंगलाचरण—

सिद्धं संपूर्णमव्याथं सिद्धेः कारणमुत्तमं ।

प्रशस्तदर्शनज्ञानचारित्रप्रतिपादनं ॥ १ ॥

सुरेन्द्रमुकटाश्लिष्टपादपद्मांशुकेशरं ।

प्रणमामि महावीरं लोकत्रितयमंगलं ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्री वर्द्धमानेन जिनेश्वरेण त्रैलोक्य वन्देन यदुक्तमादौ ।  
 ततः परं गौतमसंज्ञकेन गणेश्वरेण प्रथितं जनानां ॥ १ ॥  
 ततः क्रमाद्धी जिनसेनाम्नाचार्येण जैनागमकोविदेन ।  
 सत्काव्यकेनिसदने पृथिव्यां नीतं प्रसिद्धं चरितं हरेश्च ॥ २ ॥  
 श्री कुन्दकुन्दान्त्रय भूषणोऽथ बभूव विद्वान् किल पद्मानन्दी ।  
 मुनीश्वरो वादि गजेन्द्रसिंहः प्रतापवान् भूवलये प्रसिद्धः ॥ ३ ॥  
 तत्पट्टपङ्केजविकासभास्वान् बभूव निर्मथवरः प्रतापी ।  
 महाकवित्वादि कलाप्रवीणः तपोनिधिः श्री सकलादिकीर्त्तिः ॥ ४ ॥  
 पट्टे तदीये गुणवान् मनीषी क्षुमानिधानो भुवनादिकीर्त्तिः ।  
 जीयाच्चिरं भव्यसमूहवन्द्यो नाना यतिव्रातनिपेवणीवः ॥ ५ ॥  
 जगति भुवनकीर्त्तिभूतले ख्यातकीर्त्तिः,

श्रुतजलनिधिवेत्तानंगमानप्रभेत्ता ।

विमलगुणनिवासच्छिन्नसंसारपाशः,

स जयति जिनराजः साधुराजी समाजः ॥ ६ ॥

सद्ब्रह्मचारी गुरुपूर्वकोऽस्य भ्राता गुणज्ञोऽस्ति विशुद्धचित्तः ।

जिनस्य दासो जिनदासनामा कामारिजेता विदितो धरित्र्यां ॥ ७ ॥

श्री नेमिनाथस्य चरित्रमेतद्,

अनेन नीत्वा रविपेणसूरेः ।

समुद्धृतं स्वान्यसुखप्रबोध-

हेतोश्चिरं नन्दतु भूमिपीठे ॥ ८ ॥

श्रीमज्जिनेश्वरपदाब्जचंचरीक-

स्तच्छात्रसद्गुरुषु भक्तिविधानदक्षः ।

सार्थामिधोऽसौ जिनदासनामा,

दयानिवासौ भुवि राजतेऽत्र ॥ ९ ॥

न ख्याति पूजाद्यभिमानलोभाद्ग्रन्थः कृतोऽयं प्रतिबोधहेतौ ।

निजान्ययोः किंतु हिताय चापि परोपकाराय जिनागमोक्तः ॥ १० ॥

जिनप्रसादादिदमेवयाचे,

दुःखक्षयं शाश्वतसौख्यहेतोः ।

कर्मक्षयं बोधिचरित्रलाभं,

शुभां गतिं चेह न चान्यदेवः ॥ ११ ॥

यद्विचिदत्र स्वरसंघजातं,

पदादिविचिदस्त्विति प्रमादान् ।

क्षमस्व तद्भारतितुल्यबुद्धे,

ममाशुनो मुह्यति कः श्रुताब्धौ ॥ १२ ॥

तथा च धीमद्विरिदं विशोध्यं,

मुनीश्वरैर्निर्मलचित्तयुक्तैः ।

कृत्वानुकेपां मेयि जैन शास्त्र-

विशारदैः सर्वकपायमुक्तैः ॥ १३ ॥

यावन्महीमेरु नगः पृथिव्यां शशी च सूर्यः परमाणवश्च ।

श्रीमज्जिनैस्त्रय गिरश्च तावन्नन्दं त्विदं नेमिचरित्र मार्य ॥ १४ ॥

रक्षां संघस्य कुर्वेत्तु जिनशासनदेवताः ।

पालयन्तोऽखिलं लोकं भव्यसज्जनवत्सलः ॥ १५ ॥

इति श्री हरिवंशे भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिशिष्य ब्रह्मचारि श्री जिनदास विरचिते श्री नेमिनाथ-  
निर्वाण वर्णनो नामैकोनचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ३६ ॥

संवत् १८२७ वर्षे मितो ज्येष्ठ बुदि ५ चंद्रवासरे सवाई जयपुरमध्ये चंद्रप्रभुचैत्यलये पंडितो-  
त्संपंडित श्री चोखचंदजी तत् शिष्य पंडितोत्संपंडित श्री रायचंदजी तत् शिष्येण सेवक सवाई रामेण इदं  
व्रटितं ग्रंथ पूर्णं कृतं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३५५. साइज १२x५ इञ्च : प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में  
३६-४० अक्षर । प्रति में दो तरह की लिखावट है । प्रति सुन्दर तथा शुद्ध है ।

शुभ संवत् १६६१ वर्षे ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे चतुर्थी दिने राजमहलनगरे श्री पार्श्वनाथचैत्यालये  
महाराजाधिराज श्री मानसिंहजी राज्य प्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नद्याम्नाये वल्लात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री  
कुम्दकुन्दाचार्यान्त्रये भट्टारक श्री पद्मानन्ददेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्र-  
देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्ति तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गाधा गोत्रे  
याचकजनसंदोहकल्पवृक्ष श्रावकाचारचरणनिरतचित्त साह श्री धनराज तद्भार्या शीलातोयतरंगिणी विनय-  
वागेश्वरी घनसिरि तयो पुत्रः त्रयः प्रथम पुत्र धर्मधुरा धरणधीर साह श्री रुपा तद्भार्या दानशीलगुण-  
भूषणभूपितगात्रा नाम्ना गूजरि तयो- पुत्र राजसभाशृंगारहार स्वप्रतापदिनकर मुकुलिकृत शत्रुमुखकुमुदाकर  
स्वसनिसाकारआह्लादित कुवलय दान गुण .....

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २६७. साइज १२।।५।। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४४ अक्षर । प्रति प्राचीन है ।

श्री मूलसंधे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण स्वगुरुभगिनी वाङ् गौतमश्रिया लेखयित्वा ब्र० नरसिंहस्य पठनार्थं इदं शास्त्रं दत्तं ।

संवत् १५५५ वर्षे मार्गसिर वदि १३ रवौ मुनि श्री संचनदिना ग्रंथोऽयं ब्रह्म गुणसागराय दत्तः ।

संवत् १६४५ वर्षे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे पंचमी तिथौ सोमवासरे श्रीमालपुरे राजाधिराज श्री भगवंतदास जुगराज्य श्री म.नसिंह राज्य प्रवर्तमाने श्री आदिनाथ चत्यालये श्री मूलसंधे नंदमनाये वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मानन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धमचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवा स्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री चन्द्रकीर्तिदेवास्तदाम्नाये खडेलवालान्वये कासलीवालगोत्रं सा० सोढा तद्भार्या कल्ही तत्पुत्रा चत्वार प्र० सा० छाजू द्वि० सा० करमसी तृतीय धर्मसी चतुर्थ सा० ठीला । प्रथम सा० छाजू भार्या नापु तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० जेणा भार्या जेणादे तत्पुत्र चत्वारः । प्रथम देवा द्वि० इसर तृतीय कुंता चतुर्थ भगवान् । द्वितीय कर्मसी भार्या करमाइ तत्पुत्र चत्वार प्रथम सा० सांगा भार्या सिंगारदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम कला द्वि० माला । द्वि० सा० गंगा तद्भार्या गौरादे तृ० सा० नेमा तद्भार्या नायकदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० हरिषा तद्भार्या हरपमदे द्वि० सा० वेणा तद्भार्या वहुरंगदे । चतुर्थ सा० खेमा तद्भार्या खेमलदे तत्पुत्र चि० सावलदास । तृतीय सा० धर्मसी तद्भार्या नाल्ही तत्पुत्र सा० वीर तद्भार्या विरादे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० राइमल द्वि० चि० डूंगर । चतुर्थ सा० टीला तद्भार्या दासु तत्पुत्र सा० हेमा तद्भार्या हेमलेद तत्पुत्र चि० जगमाल एतेषां मध्ये सा० हेमा आचार्य सिद्धनन्दये घटापितं ।

### ५६. हरिवंशपुराण ।

रचयिता आचार्य जिन्दसेन । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४२०. साइज ११×५ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर । ग्रन्थ पूर्ण है । रचना काल-शक संवत् ७०५. लिपि संवत् १६४०.

प्रारम्भिक पाठ —

सिद्धं ध्रौव्यव्ययोत्पादलक्षणं द्रव्यसाधनं ।

जैनं द्रव्याद्यपेक्षातः साधनाद्यथ शासनं ॥ १ ॥

शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकमानवे ।

नमः श्री वद्धमानाय वद्ध मानाजनशिने ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति-

ततस्त्रिलोकः प्रतिवर्षमादरात् प्रसिद्धदीपालिककयात्र भारते ।  
 समुद्यतः पूजयितुं जितेश्वरं जिनेन्द्रनिर्वाणत्रिभूतिभक्तिभाक् ॥ १ ॥  
 त्रयः क्रमात्केवलिनो जिज्ञासुरे द्विषष्टिवर्षान्तरभाविनोऽभवन् ।  
 ततः परे पंचसमस्तपूर्वैश्चस्तपोधना वपशतान्तरे गुताः ॥ २ ॥  
 त्र्यशीतिके वर्षशते तु रुयुक् दशैव गीता दशपूर्वैश्च शते ।  
 द्वये च विशेषभृतोपि पंच ते शते च साष्टदशके चतुर्मुनिः ॥ ३ ॥  
 गुरु सुभद्रो जय भद्रनामा परो यशो बाहुरनंततरस्ततः ।  
 महार्हलोहार्यं गुरुं ये दधुः प्रसिद्धमाच रमहोगमत्र ते ॥ ४ ॥  
 महावरो धृष्टनयंधरश्रतामृषिश्रुतिगुप्तं दधि मंदधत् ।  
 मुनीश्वरोनयः शिवगुप्तं संज्ञको गुणैः स्वमहद्वलिरप्यधात्मदः ॥ ५ ॥  
 समंदराजोऽपि च मित्रवीरविगुरुतथान्यौ वलदेवमंत्रकौ ।  
 विवर्द्धमानाय त्रिरत्न संयुतः श्रियान्वितः सिंहवलश्चवीरवित् ॥ ६ ॥  
 सपद्मसेनो गुणपद्मखड्गभृत् गुणाग्रणीव्यग्रपदादिहस्तकः ।  
 स न गहस्तोजितदण्डनामभृत्सन्दिपेणः प्रभुदायसेनकः ॥ ७ ॥  
 तपोधनश्रीधरसेननामकः सुधर्मसेनोऽपि च सिंहसेनकः ।  
 सुनन्दिप्रेयोश्वरसेनकौप्रभु सुनन्दिपेणाभयसेननामकौ ॥ ८ ॥  
 स सतसेनोऽभयभीमसेनकौ गुरुपदौतौ जिनशान्तिपेणकौ ।  
 अखंड षट्खंड मखंडितस्थितिः समस्तसिद्धांतमधुत्तयोर्युतः ॥ ९ ॥  
 दक्षारः कर्मप्रकृतिश्रुतिज्ञ यो जिताज्ञवृत्तिजयं सेनसद्गुरुः ।  
 प्रसिद्धवैयाकरणप्रभाववानशेपराद्धांतसमुद्रपारगः ॥ १० ॥  
 तदीयशिष्यो मितसेनसद्गुरुः पवित्रपुत्रादगणाग्रणो गुणी ।  
 जिनेन्द्रसच्छाशनवत्सलात्मना तरोभृता वर्षशताधिजविना ॥ ११ ॥  
 सुशास्त्रदानेन वदान्यतमुजा वदान्यमुख्येन भुविप्रकाशिता ।  
 तद्गुप्तजो धर्मसहोदरः समी सप्तप्रधोद्धर्म इत्यान्तिविग्रहः ॥ १२ ॥  
 तपोमयी कांति भशेपदिक्षु यः क्षिपन्वभौ कीर्तितकीर्तिपेणमाः ।  
 तदग्रशिष्येण शिवाग्रसौख्यभागरष्ट नेमीश्वर भक्तिभारिणा ॥ १३ ॥  
 स्वशक्तिभाजा जिनसेन सूरिणा प्रिय लप्योक्ता हरिवंशपद्धतिः ।  
 यदत्र किंचद्वचित् प्रमादतः परस्परव्याहृतिद्वोपदूषितं ॥ १४ ॥  
 तदप्रमादास्तु पुराणकोविदाः सृजंतु जंतुं स्थिति शक्तिवेदिनः ।  
 प्रशस्तवंशो हरिवंशपर्वतः क्व मे मति क्वाल्पतराल्पशक्तिका ॥ १५ ॥

अनेन पुण्यप्रभवस्तु केवलं जिनैन्द्रवंशस्तवनेन-वाञ्छितः ।  
न काव्यवर्षव्यसनानुवधतो न कीर्त्तिसंतानमहामनीषया ॥ १६ ॥  
न काव्यगव्येण नचान्यत्रीक्षया जिनस्य भवत्यैव कृतकृतिर्मया ।  
जिनाश्चतुर्विंशतिरत्रकीर्त्तिताः सुकीर्त्तयो द्वादश चक्रवर्त्तिनः ॥ १७ ॥  
नवत्रिधासीरहरिप्रतिवृषिपक्षिपष्टिरित्यं पुरुषाः पुराणगाः ।  
अवातरन्नेक शतानि पाथिवा महीचराः ज्योमचराश्च भूरिशः ॥ १८ ॥  
क्षितौ चतुर्वर्गफलोपभोगिभूः पुराण मुख्येत्रयशश्चिन्तुताः ।  
अगण्यपुण्यं हरिवंशकीर्त्तनां यदत्र गण्यं गुणसंचितं मया ॥ १९ ॥  
फलादमुष्यात्त मनुष्यलोकजा भवतु भव्या जिनशासनस्थिताः ।  
जिनस्य नेमेश्वरितं चराचरं प्रसिद्धजीवादि पदार्थभासनं ॥ २० ॥  
प्रवाच्यतां वाचकमुख्य प्रज्जनैः समागतैः श्रोत्रपुटैः प्रपीयतां ।  
जिनैर्द्रवमग्रहणं भवत्यलं महादिपीडा पगमस्यकारणं ॥ २१ ॥  
प्रवाच्यमानं दुरितस्य दारुणं सतां समस्तं चरितं किमुच्यते ।  
कुर्वन्तु व्याख्यानमनन्यचेतसः परोपकारार्थं स्वमुक्तिहेतवे ॥ २२ ॥  
सुभंगल मंगलकारिणामिदं निमित्तमप्युत्तममर्थिनां सतां ।  
महोपसर्गं शरणं सुशांतिकृत् सुशाकुनं शास्त्रमिदं जिनाश्रयं ॥ २३ ॥  
प्रशंसनाशासनदेवताश्चया जिनाश्चतुर्विंशतिर्माश्रिताः सदा ।  
हिताः सतामप्रतिचक्रयान्निताः प्रयाचिताः सन्निहिता भवन्तुताः ॥ २४ ॥  
गृहितचक्राप्रतिचक्रदेवता तथोज्जयंतालथसिंहबाहिनी ।  
शिवाय यस्मिन्निह सन्निधीयते क्व तत्र विघ्नाः प्रभवन्ति शासने ॥ २५ ॥  
अहोरागाभूतपिशाचराक्षसा हितप्रवृत्तौ जिनविघ्नकारिणः ।  
जिनेशनां शासनदेवतागणा प्रभाव शक्त्याथ समंशयति ते ॥ २६ ॥  
प्रकाममाकांक्षते कामसिद्धयः प्रसिद्ध धर्मार्थं विमोक्षलब्धयः ।  
भवन्ति तेषां गृष्ट मल्प यत्नतः पठन्ति भक्त्या हरिवंश मत्र ये ॥ २७ ॥  
निर्वाय मात्सयमवार्थं वीर्ययोधियासुधैर्योजितया जिनादराः ।  
अनायवया सहितां सपर्याया पुराणमार्याः प्रथयन्तु विष्टपे ॥ २८ ॥  
किमर्थवा प्रार्थनयायतस्ततः स्वभावतो विश्वभरत्तमाविदः ।  
पर्योधरोन्मुक्त मिवाश्रमभूधरा विधाय मूर्ध्नि प्रथयन्ति भूतले ॥ २९ ॥  
सुष्टुमुत्सृष्ट मुद्रांशान्द्रुके नवं पुराणं च पुराण वारिसच ।  
महाभ्रकूल जनितां शरत्कुलैः श्रुतुःसमुद्रान्तं मिदं प्रतन्यते ॥ ३० ॥



जयन्ति देवासुर संधसेविताः प्रजातिशांतिप्रदशांतिशासनाः ।  
 विशुद्धकैवल्यविनिद्रदृष्टयः सुदृष्टतन्वा भुवनेज्जिनेश्वराः ॥ ३१ ॥  
 जयन्त्वज्यपाजिनधर्मसंततिः प्रजास्वह क्षेममुभित्तमस्वतः ।  
 सुखाय भूयात्प्रतिवपवर्षणैः सुजात सस्या वसुधा सुधारिणां ॥ ३२ ॥  
 शाके ऋद्धशतेषुभ्रमसुदिशं पंचोत्तरेषूत्तरां,  
 पार्तीद्रायुध नाग्नि कृष्णनृपजे श्री बलभेदक्षिणां ।  
 पूर्वो श्रीमद्वन्ति भूभृतिनृपे वत्सादि राज्ये परां,  
 सूर्याणामधि मंडलं जययुते वीरे वराहेवनि ॥ ३३ ॥  
 कल्याणैः परिवर्द्धमानविपुल श्री वर्द्धमाने पुरे,  
 श्री पार्श्वालयनन्नराजवशतौपर्याप्तशेषः पुरा ।  
 पश्चाच्छौस्तटिका प्रजाप्रजनित प्राज्यार्चना चचने,  
 शांतेः शांतिगृहे जिनेसुरचिते वंशोदरीणामयं ॥ ३४ ॥  
 व्युत्सृष्टापरसंधसंततवृहत्पुत्राटसंधान्वये,  
 प्राप्तं श्री जिनसेनसूरिकविना लाभाय बोधे पुनः ।  
 दृष्टोऽयं हरिवंशपुण्यचरितः श्री पर्वतो सर्व्वतो,  
 व्याप्ताशा मुलमंडलस्थिरतरस्थेयात् पृथिव्यां चिरं ॥ ३५ ॥

इत्यरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्य कृतौ गुरुपर्व्वकमल वर्णनो नाम षष्ठः पद्यितमः सर्गः ।

इति श्री हरिवंशपुराणसमाप्तमिदं ।

संवत् १६६२ वर्षे पौष सितपंचम्यां तिथौ संग्रामपुरवास्तव्ये महाराजाश्रीमानसिंह राज्यप्रव्रतमाने  
 श्रीधर्मेनाथचर्यालये श्रीमूलसंधे नंद्याम्न ये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदंकुदार्चयान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि  
 देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक जिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे  
 भट्टारक श्रीचन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्तिदेवास्तदात्मनाये खंडेलवालान्वये चांदवाडगोत्रे सा०  
 श्री जादू तद् भार्या जौणादे स्तयोः पुत्राश्चत्वारः प्रथम सा० लालू तद् भार्या ललतादे स्तयोः पुत्राः सप्त ।  
 प्रथम सा० गढमल तद् भार्या गौरादे द्वि० चि० भरथा तृतीय चि० वेणा भार्या बहुरंगदे, चतुर्थ चि० मनोहर,  
 पञ्च चि० दयाल सप्तम धीनड । प्रथम देवदत्त, द्वि० सा० कुंभा तद् भार्या कोडमदे स्तयो पुत्र चि० दासा  
 तृतीय सा० मानू तद् भार्या लाडमदे स्तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० वीठल द्वि० चि० गोइंद । चतुर्थ सा० कल्याण  
 तद् भार्या कल्याणदे एतेषां मध्ये चतुर्विधदानवितरणसमर्थः सा० कल्याण तद् भार्या कल्याणदे तथा इदं  
 हारिवंश पुराणख्यं शास्त्रं पल्यन्नतउद्योतनार्थं भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्तये घटापितं ।

संवत् १३१६ वर्षे आश्विनमासे शुक्लपक्षे अतिपाक्षौ शुक्रवासरे शतभिखानक्षत्रे धृतिनामयोगे  
आवैरिन्द्रादुर्गे अनेमिनाथचैत्य तये ओराजाधिगमभारमलराव्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये वला-  
त्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनाब्दिदेवार्ततद्दे भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवां .....  
..... मुनी ललितकीर्त्तिस्तदम्नाये खंडेलवालान्वये सौगाणी गोत्रे सा० लाहुडे तद्भार्या हेमी तत्पुत्रौ  
द्वौ प्रथम सा० सोढा द्वि० सा० जसपाल । सा० सोढा भार्या खेमी तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० पीथा द्वि० सा०  
परवत । सा० पीथा भार्या पिसिर तत्पुत्रौ द्वौ प्र० सा० योगा तद्भार्या युगसिरी द्वितीये सा० बौहिव  
तद्भार्या बहुरंगदे तत्पुत्र चि० धीनड । सा० परवत भार्या पौसिरी । सा० जसपाल भार्या द्वे प्रथम जसमादे  
द्वितीय लक्ष्मी तत्पुत्र सा० धरमा तद्भार्या धारादे एतेषां मध्ये सा० सोढा भार्या खेमी पौडशकारण-  
प्रतोद्यापनार्थ इदं शास्त्रं मंडलाचार्यश्रीललितकीर्त्तये धडापितं ।

संवत्सरे वाणवसुमुनीदुमिते १७२५ पौषमासे शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां तिथौ सोमवासरे क्लियायनगरे  
श्रीभार्शनाथचैत्यालये गीतवादिप्रवर्द्धितनित्योत्सवे चतुःसंघशोभिते कर्त्तव्यवशोद्भवप्रतीपाग्निविध्यापिते  
शत्रुमंडलशरणागतवज्रपंजरकल्पनिजदानसंतर्पिताधनीपकलोकराजपिमहाराजि श्री कुशलसिंहजी राज्ञे प्रवर्त्त-  
त्तमाने श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीसुरेंद्रकीर्त्तिदेवा  
स्तत्पुत्रे भट्टारक श्रीजगत्कीर्त्तिदेवास्तत्पुत्रोदया द्वादिनमांश निबन्धसद्योगद्यपद्यविद्यावरीपरीरुभसंतर्जितं मूर्खि-  
प्रतापवतः निजक्षमासलितानिद्रुतपापपंकः भट्टारकभट्टारकश्रीदेवेंद्रकीर्त्तिस्तदम्नाये खंडेलवालान्वये सौगाणी  
गोत्रे साहजी श्रीरेखराज तत्पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्र साह गिरधरदास तत्पुत्रौ द्वौ । साह विदारीदासे तत्पुत्र सा०  
सुखराम तत्पुत्रौ द्वौ सा० बालचंद सा० जादुदास । तत्पुत्र चि० चैनराम गिरधरदास द्वितीयपुत्र सा० कृष्ण-  
दास तत्पुत्र सा० धनराज तत्पुत्रौ द्वौ चि० भूधरदास चि० मनीरामरेषराज । द्वितीय पुत्र सा० नरहरदास  
तत्पुत्राः चत्वारः प्रथम पुत्र सा० पंताम्बरदास तत्पुत्र विसनदास तत्पुत्र सा० सदाराम तत्पुत्रौ द्वौ सा०  
नाथूराम .... । नरहरदास द्वितीय पुत्र सा० कल्याणदास तत्पुत्र रूपचंद तत्पुत्राः पंच । सा० किशोरदास  
सा० श्रीचंद सा० सोनपाल सा० कंबरपाल सा० कुसलराम । सा० नरहरदासस्य तृतीयां पुत्र गंगारामः  
तत्पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्र सा० गोस्धनदास तत्पुत्रास्त्रयः चि० मोजीराम चि० मयाराम । सा० गंगाराम द्वितीय  
पुत्र साह भेलीदास तत्पुत्र चि० टेकचंद तत्पुत्रौ द्वौ चि० नान्हराम चि० जयचंद सा० गंगाराम तृतीयपुत्र  
सा० चतुर्भुज । नरहरदास चतुर्थपुत्र श्रीमज्जनराजचरणकमलसमवलोकनपत्परः साहजी श्री हरीकेशजी  
तद्भार्या हीरादे तत्पुत्राः चत्वारः प्रथम पुत्र साह दयाराम द्वितीयपुत्र सा० उदैराम तद्भार्या उत्तमेदे द्वि०  
लाडी तृतीय गुजरि तत्पुत्रौ द्वौ साह रत्नचंद तद्भार्या रतसुखदे तत्पुत्र चि० सेवाराम । सा० उदैराम  
द्वितीय पुत्र अनूपचंद तद्भार्या अनोमदे । साह हरीकेश तृतीय पुत्र साह रामजीदास तद्भार्या रायवदे  
तत्पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र चिरंजीव अजवराम तद्भार्या अजायवदे । साह रामजीदास द्वितीय पुत्र चि० मनसाराम  
तद्भार्या मनसुखदे । सा० हरीकेश चतुर्थपुत्र सा० दीपचंद तद्भार्या दाडिमदे एतेषां मध्ये चि० श्री  
मनसारामेन स्वहस्तेन लिपिकृतः ।



# अपभ्रंश और प्राकृत भाषा के ग्रन्थों की प्रशस्तियां



## १. अमरसेन चरित्र ।

रचयिता श्री माणिक्यकराज । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ६६. साइज १०॥ x ४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में लगभग ३२-३५ अक्षर । लिपि संवत् १५७७. प्रथम पृष्ठ नहीं है ।

कृति के प्रारंभ में कवि ने आश्रयदाता का परिचय इस प्रकार दिया है:—

### धत्तां

ए सयलवितित्थंकर कुवहोसहिधरं, ते संहपणविवि पुहमिवर ।  
पुणु अरुहहवाणी तिजयपहाणी, वियमणिधारिविकुगइहर ॥ १ ॥  
पुणु गोंयसु गणहर गमउगाणि, जे अखिउ सम्मइ जिगहवाणि ।  
पुणु जेणपयतंइ भासियइ, तवउवहितरणपोयगासुहाइ ।  
पुणु तासु अणुक्कमिसुणिपहाणु, गियचेयणत्थतम्मउ सुजाणु ।  
हुयवहुसइत्थइ सुइणिहाणु, जिइदुंद्वार गिज्जिउ पंचवाणु ।  
वियणाणकळांजयपारुपंत ; उद्धरियभउजसमविसत्त ।  
संतइयताह मुणिगच्छणाहु, गयंरायदोससंजइयंसाहु ।  
जे ईरियगंत्यहकहपवीणु, गियज्जोणो परमप्पयहलीणु ।  
तवतेयणियत्तणु कियउरवीणु ; सिरिहेमकिंत्ति पट्टिहिपवीणु ।  
सिरिहेमकिंत्ति जिहयउंधामु, तहु पट्टिचिकुम रविसेणुणामु ।  
गिगंथु दयालउ जइ वरिवरिट्ठुं, जि कहिउ जिगांगममेउ सुट्ठु ।  
तहु पट्टिणिविट्ठउ तुहपहाणु ; सिरिहेमचंदुमयतिमिरभाणु ।  
तं पट्टिधुरंधरु वयपवीणु ; चरपोमणंदि जोतवहंरवीणु ।  
तं पणविवि गियगुरंसीलखाणि, गिगंथु दयालउ अमियवाणि ।  
पुणु पतणमिकंइ सवणांहिराम ; आयणाहु जासइत्थराम ।

### धत्तां

गोंयमण्वेजांकहिण, सेणियस्ससुह दांयणि ।

जाउहयणांत्तितामणिय, धम्मरसहुतरंणिणि ॥ २ ॥

महिर्वादिपदायुः गुणवर्गिदुः सुरद्विभर्गाविभजगाइसुदुः ।  
 वरविष्णुसाजसंदिबवितु गां इइ पंदिउ सुरपारपत्त ।  
 रुहियासुचिगामे चगिदइदुः अरियणजगाइ दियसल्लुदुदुः ।  
 जहिं सहहिंणिंनर जणगिकेय ; पंडुरमुवणाययसुहसमे..... ।  
 सदाजसनोरणजत्यहम्म ; मणसुहसंदायण गां सुकम्म ।  
 चउइइयचच्चदामजत्य ; चगिवर ववहरदिविजहिं पयत्य ।  
 मणायणणकेलाइजसमत्य ; जहिलणगिवसहिं संपुण्णा कत्य ।  
 जहिं आवणम्मिययिविहमंड ; कसवहिं किमियहिं मम्मसंढ ।  
 जहिं तिसहिं मदायणमुदवोइ ; गिणचंचियययादाणासोइ ।  
 जहिं वियरहिंवरचउ वंगणलोय ; पुण्णेणपयासियदिव्वसोय ।  
 ववद्वारवार संपुण्णासञ्च ; जहिंसत्तवसगामग्रहणीमञ्च ।  
 सोहणायिलयजियावम्मसीज ; जहिं मागिगिणामागा महयर्हण ।  
 जहिं चोरचाइहुसुमाजदुइ दुज्जगामल्लुदुदुदुपिसुगविदु ।  
 गविहीमहिंदिमहिंदुहियहीणा ; पेम्मागुरनमञ्चजिपवीणा ।  
 जहिं रेहहिंयपयवृत्तिमन्नु ; ते वोज्जंगरगियवरन्नु ।

वृत्ति-

सुहजच्छिजसायन गां रयगायन, दुइयणल्लुगंइदुदु ।  
 मत्तरयहिंसोइउ जणमणसोहिउ, गां वरणावरद्वगद्वगु ।  
 जहिं साहिंनिन्दुदुमामिसादु ; गिययइयाजइ अरियणमयाल्लु ।  
 ते रज्जिवसइ वगिवन्धइणु ; दुत्थियजणयोसण गुणगिद्वारा ।  
 जो अइरवाल्लु इल्लुदुममण ; मिक्खइवजयदुविसेयसणु ।  
 निच्छजवसणवामणविरत्तु ; जिणसामणिगंयइयायमत्तु ।  
 चउवरियणामचीमासतोसु ; जो वंसदमंडण सुयणयोसु ।  
 ते भानिगि गुणगणसंत्तखाणि ; मण्णहाराणामे महुवणि ।  
 ते गणदुगुगिणवमणुगुगिवासु ; चउवरिय करुचंदु अण्णदासु ।  
 जिणवम्मोवरिजवद्वगाइ ; यिवदियइइहु पुण्यणइगाइ ।  
 जिणचरणोदुण्यविजोपवित्तु ; आयसरसरज्जजानुचित्तु ।  
 उद्वरिउ चउज्जिहसंयमाइ ; आयरिउविमावयचरिउचारु ।  
 चउद्वारवन्तु गां गंवइत्थि ; वियरेइगिच्चजोवम्मयंथि ।

सम्भतयल्लंक्रियसरीरु कण्ठायलुञ्जशिकपुधीरु ।  
 सुहृपरियणकइव विण्हिहंसु जिण्णवरसहंमज्जे-लद्धसंसु ।  
 न भ मणि दिउचंदहीमियाच्छि जिण्णसुयगुरुभत्तिय सीलसुच्छि ।  
 न जायउ रादणु सीलखाणि चउमहणाणामे अमियचाणि ।  
 यणकण कंचणसंपुण्णसंतु पंडियहं विपंडियगुणमहंतु ।

धत्ता

दुहिगणदुहणास दुहकुलसासणु जिण्णसासणारहंधुरधवल्लु ।  
 विज्जालच्छीधरु स्वर्णायरु अहणिसुक्कियविहउद्धरणु ॥४॥  
 न पणइणा पणइणि चद्धदेह गामे खेमाही पियसणेह ।  
 सुरसिंधुरगइसइ चइविज्जाल पोरिवारहु पोसणसुद्धसील ।  
 गारयणदण्डाउप्पत्तिखाणि ओ वीणा इव कल्यंठिवाणि ।  
 सोहगरुवचेणणियदिदु सिरि रामहुसीयाजिहवरिदु ।  
 तहिउ वीरउ वरणारयणाचारि गां गांत चउवक्कसुरुवधारि ।  
 तं मज्झिमपटमुक्कियसियसुवत्तु लक्खणा लक्खे किउव सणचत्तु ।  
 अतुरियसाइसु महंसकगेहु चाणकणणु संपइहिगेहु ।  
 धीरे निरिगंभारे स्थायरु गां धरणीवरु गां रविससिसुरु ।  
 गां सुरतंरु पइपोसणसुद्धरु गां जिण्णधम्मपयडुथिउवसुवरु ।  
 जि णियजसिपूरियदाणिमहिं जोणिवसुहपालउ सुयणासुहि ।  
 दिउराजुणामु चउधरिय सुहि जिण्णधम्मधुरंधरुधम्मणिहि ।  
 विण्णणाणकुल्लु वीथउसंपुत्तु जो मुण्णइजिण्णसरधम्मसुत्तु ।  
 सुपवीणायवाचारकज्जि गंभीरुजसायरु बहुगुणज्जि ।  
 म्मासू चउधरिय विसुद्धभाइ जे शिवमण्णरंजइविचिहभाइ ।  
 अण्णवि तीयउ रिसिदेवभत्तु जिहमारधुरंधरु कमलवत्तु ।  
 चुगनाणामे चउधरियउत्तु जो करइ णिच्चउवयारुत्तु ।  
 पुण्ण चउयउ रादणु कुलपयासु अचंगमिय संयल्लविज्जाविज्जासु ।  
 जिण्णसमयामयरसत्तित्तचिनु बुद्धाणामे चउधरिय उत्तु ।

धत्ता

ए चउभाइय जिण्णमइराइय दिउराजुणामु गारुवउसुमइ ।  
 गाणासुहविलसइ कइयणापोसइ णियकुलकर्मलज्जुपुइइ ॥

अन्तिम पाठ तथा ग्रन्थकार की प्रशस्ति—

गांदउ जिगावरसासगासारउ जिगावाणीविकुमगावियारउ ।  
 गांदउ वुहयगासमयपरिद्विय गांदउ सज्जगाजेविसविद्विय ।  
 गांदउ गारवइपयरखंतउ गायमगुनोयहं दरिस्तउ ।  
 संतिवियंभउ पुट्टिवियंभउ तुट्टिवियंभउ दुरिउगिसुंभउ ।  
 सेगिरगिगगउ गारयगिवासहु जिगाधम्मुविपयउउ भववासहु ।  
 जि मच्छरु मोहविपरिहरियउ सुहयज्मगिजें गाय मगुधरियउ ।  
 हेमचंदु आयरिउ वरिदुउ तहु सीसु वितवतेयगरिदुउ ।  
 पोमंगांधर गांदउ मुगिावरु देवगांदि तहु मीसु महीवरु ।  
 एयारह पडिमउ धारंतउ गायरोसमयमोहहगांतउ ।  
 सुहज्माणें उवसमुभावंतउ गांदउ वंभलोलु समंतउ ।  
 तहं पासजिणेंदहगिहर वराणा वेपंडियगिवससिइकगायवंगगा ।  
 गरुवउ जसमलु गुणागारिणहारु वीयउ लहु वंधउ भवजाणु ।  
 सिरि संतिदास गंथत्यजाणु चव्वइ सिरि पारसुविगयमाणु ।  
 गांदउ पुणु दिवराउ जसाहिउ पुत्तकलत्तपउ विसाहिउ ।

धता

रोहियासिपुरिवासि सयलुलोउसहगांदउ ।  
 पासजिगाहुपयसरय गाणाथोत्तहिंविदु ।  
 पुणु गामावलि भणाउ विसारी दायहु केरी वराणाविसारी  
 अइरवालु सुपसिद्ध विभासिउ सिघल गोत्तिउ सुपणासमासिउ ।  
 वृह्णागिावि अहिहाणें भणिउ जं गायतेणं कुलु संतागिाउ ।  
 करमचन्दु चउधरिय गुणावरु दिवचंदही भज्जहि वेमणेहरु ।  
 तस्स तण्णरुह तिगिणविजाया गां पंडवइगा तिगिणसमाया ।  
 पढमउ सत्यअत्थरसमायणु महगाचंदुगांडइयउधरइणु ।  
 तहवणियापेमाहीसारी पुत्तचवउकिंजुवमगादारी ।  
 अगिमुचारणेंसेयंसिउ उज्जलजसचरिआं विजयंसिउ ।  
 असुवरुपहरतियहिवित्तउ जं असवुकइयाणाउ उत्तउ ।  
 दिउराजुजिगासहहिमहउ गौणाहीतियरमाणुविमहउ ।  
 तहुकुखिप्रिधिमुत्ताहलाहलाइं इप्पगाइंवसुपरिउसलाइं ।  
 पहिलारउणियकुलहंविदीउ हरिवसुणामु गुणागशाविदीउ ।

घत्ता

तहुभज्जा गुणहिमणुज्ज्जा मेल्हाहीपभशिज्जए ।  
 गडरिंगगणउवहिसुया तहुकसउप्पमदिज्जइं ॥ १२ ॥  
 पुण्वहि अभयदाणु असुदिगिणउं तह सुअभयचंदु सुणिसगिणउं ।  
 अवरु विगुणारयणहि रयणायरु देवराजसुउ सयलदिवायरु ।  
 रतयापालु गामेपभशिज्जइ तहुभूराहीलज्जवि गिज्जइ ।  
 देवराय पुणु वीयउभायउ भाभूणामे जगविक्खायउ ।  
 तहचोवाहीभज्जकहिज्जइं तोतेयहुणेहेजोइज्जइ ।  
 पढमउ गायराउ तहु कामिणी सूचटहीणामे जगाराविणी ।  
 चीयउगेल्हवि अवरुपयासिउ भाभू तीयउ पुत्त पयाभिउ ।  
 चाओणामे जगविक्खायउ मइणामुउ चुगणपियभासउ ।  
 जूंगरही तहु भामिणिसारी खेतसिध गंदणजुयहारी ।  
 सिरियपालु पुणु रायमल्लु पुणु कुवरपालु भासिउ जडिल्लु ।  
 मइणअवरु चउत्थउ गंदणु हुटमल्लुवि जोधमु संदणु ।  
 फेराही अणामणहाराउ दरगहमल्लुवि गंदणु गदसारउ ।

घत्ता

करमचंद पुणु पत्तु वीयउजोउविभणिउं ।  
 साहाहियपियउत्त गुरपयरत्त विणाणिउं ॥ १३ ॥  
 तहो अंतदोअंगो भवतिगिण जाय विसुसुयपवणंजउअज्जुणोय ।  
 पहिलारउ रावण तस्सणारि रामाहीजाया अहि विचारि ।  
 तहुसरीरिसुवचारिउवणणा पुहईमल्लुविपढमुसुवणणा ।  
 तस्स भज्जवहुणेहालंकिय कुलिचंदही जायावहुवसंकिय ।  
 कित्तिसिधु तहुकुक्खिउपगणउ गगिर गिरुणवकंचयावणणउ ।  
 पुणु जसचंदुव चंदु भणिज्जइ लूणाहीपिययमअणुरंजइ ।  
 तह वितथांउलक्खणालंकिय मइणसिध जो पावहसंकिय ।  
 अवरुवि वीणकंठुवीणावरु पोमाही तहु कामिणीमणहरु ।  
 गारसिधुवि तउ सुउविगरिट्टउ कच्छिपिल्लुणपियगइइट्टउ ।  
 पुणु लाडणु रुवेमयरद्धउ तहुवीवोकंताविजसद्धउ ।  
 पुणु जोजावीयउ पुत्तसारु गियरुवेजित्तउ जेणमारु ।



दोदाहीकामिणी अणुरंजइ ज सुद्धिमरगो सगिगमिजइ ।  
 जोजाअवरु वि गंदणुसारउ जखमणुयामें पंडिय हारउ ।  
 मल्लाहीकामिणी तहु गंदणु हीरुयामें जयामणुगंदणु ।

### वृत्ता

अवरु वि गंदणुतीयउ, ताल्दुयामें भसिउ ।  
 वाल्हाही मणुहारु वेसुयताहंसमासिउ ।  
 पढमउ पोमकंतिदामसुहो इच्छाही भामिणी दिगणउसुहो ।  
 महदासुवि तहु पुत्तपियाउ पुणु दिवदासु वीरमणहारउ ।  
 साधारणही भज्जमणोदरु घणमलु गंदणु तहुपुणुसुहयंरु ।  
 जगमलही कामिणी तहुसारी चायमल्लु सुयपोसणायारी ।  
 इय दिवराजहं वंसुपयासिउ काराविउ सत्तुजि रससारउ ।  
 कोहमोहमय माणवियाउ जं अक्खरुणो किंपि विण्णसिउ ।  
 सुपसाएं विविरुद्ध उभासिउ त सरसइ महु खमउभडारी ।  
 वीरजिणहो मुह गिणायमारी .... ।  
 हेम पोमआयरियवसंमि वंभज्जुणुगुणुगणुगणुहीसैं ।  
 मइकसवट्टियवणुधरंणिणु कव्वसुवणाहु जीहविदेण्णिणु ।  
 मत्त अत्थ सोहगुखिनेविणु अत्थविरुद्धकिट्ठिकट्ठेविणु ।  
 सोडिउ एहु विमणुणाएविणु होउ चिराउ सुकट्टुरसायणु ।  
 विक्कमरायहु चवगयकालइ लेसुमुणीविसरअकालइ ।  
 धरणि अकसहुचइभविमासैं सणिवारैं सुयपेचांमिदिवसैं ।  
 कित्तिणारकत्तसुहजोय हुउ पुणुणउसुविसुत्तहजोय ।

### वृत्ता

हो वीरजिणैसर जगपरमेसर एत्तिउ लहुंमहुदिज्जिउ ।  
 जहिं कोकुयामाणु आवणुजोणु सासयपेउमहुदिज्जिइ ।

इस महाराय सिरि अमरसेण चरिए चउवगां सुकहकंहामयरंसेणसंभरिए सिरि पंडिय मणि माणि-  
 ककविरइण साधु महणासु चउवरी देवगज यामंकिए सिरि अमरसेण..... गमणवणुण गाम  
 मत्तमंइमंपरिच्छेयं सम्मत्ता ।

प्रतिलिपि कार की प्रशस्तिअथ 'सवत्तरंऽस्मिन् श्री नृपतिः विक्रमादित्यगताब्दः संवत् १५७७

कार्तिक वदि ४ गवि दिने कुरु जंगलदेशे श्री सुवर्णपथसुमस्थाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री मलयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणभद्रसूरिदेवास्तदाग्राये अपोनकान्वये गोडभगोत्रे सुवर्णपथिवास्तव्यं जिनपूजापुरंदर कृतवान् साधु छल्हू तस्य भार्या सीलतोयतरंगिणी साध्वी करमचंदही तयोः चतुप्रकारदान दाइक साधु वाड्ड तेन इदं अमरसेन शास्त्रं लिखापितं ज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थं ।

## २. आचारंग सटीक

टीकाकार श्री शीलांकाचायं । भाषा प्राकृत संस्कृत । पत्र संख्या १४३. साइज १२×४३ इच्च । प्रत्येक पृष्ठ पर २२ पंक्तियां तथा प्रति में ८०-८४ अक्षर । विषय आचार धर्म का वर्णन ।  
लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १६०४ वर्षे मागशीर्षे वदि ३ सृगसोमामृतसिद्धियोगे श्री कुंभमेरुमहादुर्गाविराजशिरौमणौ श्री वृहद्धोखरतरगच्छे श्री श्री श्री जिनकुशलसूरिपट्टानुक्रमे श्री जिनराजसूरिपट्टपूर्वावलमार्त्तएहमंडलावतारहार श्री पूज्यगज्य श्री जिनवर्द्धनसूरिपट्टे श्री जिनचंद्रसूरिपट्टे श्रीजिनसागरसूरिपट्टे श्रीजिनसुंदरसूरिपट्टे श्रीजिन-हर्षसूरिपट्टमौलिमंडनश्री जिनशासनशृंगार कालिकाल श्री गौतमावतार श्री जिनचंद्रसूरिपट्टवत्तंशं सामंत-विजयमान श्री पूज्य श्री श्री जिन शीलसूरिविजयराज्ये आ० श्रीविवेकरत्नसूरिपुंगवानां शिष्य श्री जयकीर्त्ति-महोपाध्यानां शिष्य श्री हर्षकुल्लगेपाध्याय पं० रत्नशेखरगणि वा ज्ञानकुल्लरगणि पं० हरिकुल्लरगणि पं० सत्य-सुंदरगयादय स्तेपां शिष्याः पं० परमपूज्य श्री नयसमुद्रगणीनां शिष्येण वा गुणलाभगणिना निजपुस्तके स्वशिष्यचरणोदय मुनिसाहाय्याल्लिखितेयं वृत्ति ।

## ३. आत्मसंदाध काव्य ।

रचयिता कवि रङ्गू । भाषा अपभ्रंश । पृष्ठ संख्या ३२. साइज ६३×४ इच्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति में २८-३६ अक्षर । विषय—अध्यात्म ।

मंगलाचरण—

जयमंगलगारउ वीरुभहारउ भुवणसरणु केवलणयणु ।

लोगोत्तमु गोत्तमु संजयसोत्तमु आराहमि तहं जिणवयणु ॥

अन्तिम पाठ

सम्भत्तु वलेणाणु गुलहे विचरेविचरणु ।

साहिज्जइ मोक्खु भविहि भव्वहु दुहहरणु ॥

लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १५३४ वर्षे श्रावण सुदी ५ भौमवासरे श्री मूलसंघे कुंदकुंदाचार्याग्राये भट्टारक श्री सिद्धकीर्त्ति

तस्य शिष्य श्री प्रचण्डकीर्ति देवाभूतस्य शिष्यमण्डलाचार्य श्री सिंहनन्दि इदं आत्मसंवोधग्रन्थं लिख्यतं कर्म-  
शायनिमित्तं । प्रति नं० २ । पत्र संख्या ४०. साइज ६३×४३ इञ्च । लिपि संवत् १६०७ ।

लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १६०७ वर्षे अपाढ बुद्धि ८ शनिवारे रेवती नक्षत्रे श्री सलीमसाहगज्ये रावणशाश्वनाथ  
चेत्यालये श्री मूलसंघे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री घर्मकीर्तिदेवास्तत् शिष्य निवाइसपूर  
श्रावकः, गोधा गोत्रे संगही भीष अर्जुन । सजनपुत्र सोनपाल पुत्र ३ वस्तु, पूरु, राउ । भतिजा बहुडु  
जिण्णदास श्रावकाः ..... वाइसपूर निमित्त्यर्थं घटापितः ।

४. आदि पुराण ।

रचयिता महाकवि पुष्पदन्त । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या २१८ । साइज १२×३ इञ्च । प्रत्येक  
पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४६ अक्षर । लिपि संवत् १६६२ । लिपय—पुराण ।

मंगलाचरण—

सिद्धि बहुमण्यंरंजण परमणिरंजण भुवणकमलसरणेश्वर ।  
पर्याववि विग्नविण्णासण गिरुवमसासण रिसहणाहु परमेसर ।

अन्तिम पाठ—

गडभरहु वि मोक्खवि शुद्धमइ विविहकम्मबंधेहि चुओ ।  
फणिलेयरकिस्तरपवरत्तर पुप्फदत्तं गणसंथओ ॥

इय महापुराणेति सट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फदत्त त्रिरइए महाभव्यभरहाणुमुणिए  
महाकव्वे सगणहररिसहनाहभरह णिठ्ठाणगमणं नाम सत्ततीसमोपरिछेउ सम्मत्तो ।

लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १६६२ वर्षे विक्रमादित्य राज्ये..... सा नरसिंह तद्भाया  
षाउ द्वितीया भाउ । नरसिंह प्रथम पुत्र सा० गुणिया भार्या विल्हो तत्पुत्राश्रत्वारः । प्रथम पुत्र देवगुरुशास्त्र-  
भक्त सा० नर गति भार्या ठकुरी तत्पुत्र सा० ज्ञानचन्द्र । गुणिया द्वितीय पुत्र सा० मोल्ह भार्या चंदणी ।  
तृतीय पुत्र सा० दिउचन्द्र । चतुर्थ पुत्र सा० दुल्ल । सा० नरसिंह द्वितीय पुत्र सा० ताल्ल भार्या जिणो । तत्पुत्रौ  
द्वौ प्रथम पुत्र सा० रावण तद्भाया वीधो तत्पुत्र सा० विमल्ल । तील्हा द्वितीय पुत्र सा० भोला तद्भाया  
दीपो तत्पुत्र सा० दोचा । सा नरसिंह तृतीय पुत्र सा० हेमा तद्भाया उलो । सा० नरसिंह चतुर्थ पुत्र सा०  
तिहुण तद्भाया जीवो तत्पुत्र सा० उदा सा० नरसिंह पंचमपुत्र तेजू भार्या सोभी । सा० नरसिंह षष्ठम  
पुत्र सा० वस्तू भार्या कुसूरी । सा० सीधर द्वितीय पुत्र सा० देवीदास भार्या गल्हा तत्पुत्र सा० छाजू  
पल्हो । सा० सीधर तृतीय पुत्र सा० लोल्ल तद्भाया जल्पही तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सा० दूँडा द्वितीय गूजर

भार्या दोदाही । एतेषां मध्ये साह गुण्यां पंचसीउद्धरणधीर दीवानदोषक परोपकारकः । साह गुण्या तत्पुत्र नरपति केन इदमादिपुराणग्रंथं आत्मकर्मक्षयनिमित्तं लिखापितं ।

उक्त प्रशस्ति को काटकर निम्न प्रशस्ति फिर से जोड़ी गयी है ।

प्रशस्ति—

श्रीमंतं जितं नत्वा केवलज्ञानतोचनं ।

लिखामि प्रशस्तिकेय वंशसिद्धिप्रेदायकं ॥ १ ॥

त्रिनवत्यधिके वर्षे मासे श्रावणपौर्णिमे ।

संवत्तेपोडशाख्याते पंचम्यां भौमवासरे । २ ॥

संवत् १६६३ वर्षे श्रावण सुद ५ भौमवासरे नगरे चोमदुर्गाख्ये

साहिजिहा दिलीपतेः राज्यं मेवकोप्र सिंहे धम्मपूर्व कुर्वति ॥ ३ ॥

कुन्दकुन्दान्वये श्रीमान् बलात्कारगणे शुभे ।

श्रीमूलसंघे भूद्धीमान् मुनिगजप्रभेदुकः ॥ ४ ॥

तत्पट्टे मुनियोः धोरः चंद्रकोट्याभिधोयतिः ।

तत्पट्टे शक्कीर्त्याख्यो भूपसेवितपंकजः ॥ ५ ॥

तत्पट्टे राजते आशो नरेशो मुनियोः वशी ।

रुपानर्जितदेवेशो भट्टारक गणधिपः ॥ ६ ॥

तदाप्ताये च विख्याते श्री खंडेलवालान्वये ।

लुहाड्यागोत्रे बुद्धिमान् संघेशो विष्णुनामकः ॥ ७ ॥

तद्वंशो रत्नसो नामा प्रियत्रिर्धलवान्वभौ ।

तत्पुत्राः षट् च विज्ञेयाः हृदाद्याः संवधारकाः ॥ ८ ॥

इष्ट च गढमल्लश्च पद्मसी च जटुस्तथा ।

पंचमः साहिमल्लश्च वल्ल नामा च षष्ठमः ॥ ९ ॥

हृदः प्रतापदे भार्या द्वितीया च सुजाणदे ।

तेषां पुत्रा च विख्याता पदार्था वा नवाश्रिताः ॥ १० ॥

पेमराजो गूजरश्च हेमराजेंद्रराजकौ ।

दयाजयाषैकल्याणमनो राजांतका मुर्व ॥ ११ ॥

पेमराजः धारमदेपु धारदे प्रभुपरः ।

रेजे सुमतिदासस्य सुमतादे प्रभोः पिता ॥ १२ ॥

गौतदे गूजरौ जज्ञे चंद्रमाणतयोः सुतः ।

तृतीयो हेमराजाख्यो लाडी हमोरदेभवः ॥ १३ ॥

तत्पुत्रौ मुविजज्ञाते नाथू कालू च धीवनौ ।  
 लाडी धर्वेद्र राज्याख्यो धणराजपितात्रभौ ॥ १४ ॥  
 पंचमोऽभयराजाह्वो भाया दुरगादे पतिः ।  
 चूहड कुसलाभिख्यो तत्पुत्रौ च वभुवतुः ॥ १५ ॥  
 अजौ राजो राइसिर्हापिताऽजाइवदेप्रभुः ।  
 धीनड पिता अखेराजः प्रियाऽहीकारदेधवः ॥ १६ ॥  
 छीतर धीनड तात प्रिया कल्याणदे प्रियः ।  
 कल्याणाहवोऽष्टमो रेजे नवमो मनराजकः ॥ १७ ॥  
 तभ्य प्रिये द्वे ज्ञाते लाडी च मन सौख्यदे ।  
 जिनवेश्म कृतं येन सूमदुर्गे मनोरम ॥ १८ ॥  
 द्वितीयो गढमल्लाख्य स्त्रिभार्यस्त्रिपुत्रकः ।  
 दयालच्छषभाहू सुंदरैश्च विराजते ॥ १९ ॥  
 तृतीय पद्मसी नामा ड्यागदे पारदे पतिः ।  
 टोडरस्यपतिरिजे जगरुपपितामहः ॥ २० ॥  
 तुर्यो जटमल्लाख्योऽभूतजौणादे भर्तृकः परः ।  
 पंचम साहिमल्लश्च दुरगादे रमणः सुधीः ॥ २१ ॥  
 बल्हू विराजते षष्ठः भर्ता बहुरंगदे स्त्रियः ।  
 मंत्रीशः पेमराजख्यः उग्रसिंहमहीपतेः ॥ २२ ॥  
 संघेश पेमराजस्य चोग्रसिंह महीपतेः ।  
 मंत्रीशस्य वभौ कांता सुधारदे च नामतः ॥ २३ ॥  
 सीतेव रामराजस्य पांडोः कुंतोव सुंदारो ।  
 दानतः कल्याणवल्लोव रेजे भीव सुता शुभा ॥ २४ ॥  
 तेनेदं शास्त्रं लिखाप्य नरेशाय मुनये च दत्तं ।  
 कर्मक्षयार्थं वे चिरं नंदतुः भूतले ॥ २५ ॥

प्रति नं० २, पत्र संख्या २७१, साइज ११×५ इञ्च । प्रति में तीन प्रतियों के पत्र मिलाये गये हैं ।  
 लिपि संवत् १५६४ ।

लिपिकार की प्रशस्ति —

संवत् १५६४ वर्षे श्रावण सुदी ३ मंगलवारै राणापुर नाम नगरे रायश्री हेमकरणराज्ये श्री मूलसंघे  
 वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्र-  
 देवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये टोंग्या गोत्रे ..... ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २१७. साइज १०×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । प्रति प्राचीन है । पृष्ठों के बीच २ में खाली जगह छूटी हुई है ।

संवत् १४६१ वर्षे भाद्रपद बुदी ६ बुधवासरे अथैह श्री महयोगिनीपुरे समसूराजावली विगजमानां सुरत्राणा श्री महम्मूद साह राज्यप्रवर्त्तमाने श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये बलात्कारगणे श्री सरस्वतीगच्छे मूलमंघे भट्टारक श्री रत्नकंतिदेवास्तत्पट्टे श्री गयराजगुरु भंडजाचार्य वादीन्द्र त्रैविद्यापरमपूजार्चनीय भट्टारक श्री प्रभा-  
चन्द्रदेवाः तत्पट्टे तपोधन श्री अभयकीर्तिदेवाः । अजिका बाई जैमसिरी तस्याः अजिका अध्यात्मशास्त्ररसिरमिका मेदामेदरत्नत्रयआराधकचारित्रपवित्रा भव्यजनप्रवांशका दीनदुःखमतापनिघटिका चतुरासीजीवदयापर आत्म-  
हम्यपरिवृणा अजिका धर्मसिरि ... .. सहिलवालान्वये परमगुणसंपूर्णा जीवदयातत्पर कुलमंडलीपा-  
कारक धर्मकार्यविषयतत्पर सा० जोल्हा तस्य भ्राता भार्या महोदगन् । सा० सहा तस्य भ्राता गुणोपकारक सा  
मालहा सा० थिरदेवा । सां जोल्हा तस्य भार्या अनेकदानविपर्यान्तरा गुणसंपूर्णा जैनधर्मविषयतत्परान  
गुणप्रियंवदा हरो तस्य प्रथम पुत्र जिनपूजापुंग्वर सा० मतना भ्राता परोपकारको सा० वालिराज तस्य भ्राता  
जीवदयापरी सा पदम भ्राता अनेकगुणसंपूर्णा विद्याविषय तत्परान् सा नल्हा एतैः जैनधर्मो . .... ।

प्रति नं० ४ । पत्र संख्या २१८. साइज ११×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर । प्रति प्राचीन है प्रतिलिपि संवत् नहीं देखा है ।

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा  
स्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीमद्भिनवप्रभाचन्द्रदेवः तैर्निज-  
निजमताखर्वगवर्षवैतारुढसर्वचार्याकादिपरवादि मर्दाधसिधुरसिंहायमानै विहिताचार्यपदस्थापनाय सकल भव्य-  
चेतश्चमत्कारि सर्वजीवोपकारिचरित्रचारि यथोक्तनगनमुद्राधारी समस्तचिद्वज्जनमनोहारि श्रीमन्निप्रथ्याचार्यवर्षे  
निःशेषमिथ्यात्वतमस्कौढ खडनोच्चंडचंडिमप्रकांडमार्त्तडमंडलायमान खंडेलवालविशदवंशे श्रीमन्नायकगोधे  
सं० भोजा भार्या भीमणि तत्पुत्रा सं० लोहट द्वितीय पुत्र सं० गोरा । लोहट भार्या धर्मिणी । तत्पुत्रा खमा,  
द्वितीय पुत्र दूदा तृतीय पुत्र सेवा । गोरा भार्या बेलू एतेषां मध्ये संघपति लोहटाख्येन निजज्ञानावगणाय धर्म-  
कार्य इदं पुष्पदंतकविकृतं आदिपुर्गगा शास्त्रं दत्तम् ।

संवत् १६६४ वर्षे कार्तिक सुदी ६ शुक्रवारे पूर्वाषाढतन्त्रे तत्कालांस्तके श्री आदिनाथ चत्यालये  
महाराजा श्री जगन्नाथजी राज्ये श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक  
पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति-  
नाये खंडेलवालान्वये काला गोत्रे साहं नान् तद्भार्या नाइकेद तयो पुत्रास्त्रयः प्रथम साह चेला तद्भार्या  
दे तत्पुत्र चिरंजीव कल्याण द्वितीय चिरंजीव मनरूप तृतीय साह मोहन तद्भार्या महिमादे एतेषां मध्ये  
श्री नान् तद्भार्या नाथकदे इदं शास्त्रं अप्पाहिका त्रतोद्यापनार्थं भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्तयेदत्तं ।

## ५. उत्तरपुराण

उत्तरपुराण । रचयिता महाकवि पुष्पदत्त । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ३६८ । साइज १४×४ । इन्द्र प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४० । ४८ अक्षर । प्रति बहुत प्राचीन है । उक्त ग्रन्थ अपभ्रंश भाषा का सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ माना जाता है । इसमें ६३ शालाश्रों के महापुरुषों का जीवन चरित्र वर्णित है । ग्रन्थ के अन्त में महाकवि ने अपना विस्तृत परिचय लिखा है ।

भंगलाचरण—

गंभहो गंभालयसामियहो, ईसहो ईसरचंदहो ।

अजियहो जियकामहो कामयहो, पशावेनि पमजिणिदहो ॥

प्रशस्ति तथा ग्रंथ का अन्तिम भाग—

कयतिजोएसुगिरोहु अशिदिठउ । किरियाहिराई भाणि परिदिठउ ।  
 शिहिंय अघाइचउक्कु अदेहउ । वसुसमगुणसरीरुगिराणहउ ।  
 रिसिसहसेण समउ अरिद्धिदण । सिद्धउ जिणुसिद्धत्थहो रांदण ।  
 अरिंदगहि अचिउ सिहिजालहि । अमरिंदहि गावकुवलयमालहि ।  
 शिण्वुए चोरेगलियमयगायउ । इंदभूइ गणि केवलि जायउ ।  
 सो विउलइरिहे गउ शिण्वाणहो । कम्मविमुक्कउ मासयठाणहो ।  
 तहि वासरे उप्पगणउ केवलु । मुणिहे सुधम्महो पक्खालियमलु ।  
 तं शिण्वाणहो जंबूणामहो । पंचमु दिव्वु शाणु हयकामहो ।  
 रांदि सु रांदिमित्तु अवरु वि मुणि । गोवद्धण चउत्थु जजहरभुणि ।  
 ए पच्छए समत्थ सुअपाय । शिरसियमिच्छामनयभय गीरय ।  
 पुणु वि साहुजय पोडिलु ग्वत्तिउ । जउ गाउ वि मिद्धत्थु हयत्तिउ ।  
 दिहिसेणाकु विजउ बुद्धिलजउ । गंगु धम्ममेणु वि गीसल्लजउ ।  
 पुणु राक्खत्ताउ पुणु जसवालउ । पंडु शांमउ धुअमेणु गुणालउ ।

## घत्ता

अणुकंपउ अप्पउ जिणेवि थिउ । पुणु सुहंहु जिणसुअहरु ।  
 जस भहु अखहु ईअमंदमइ । गाणं गावइगाणहरु ॥ १ ॥  
 भउवाहु लोहकु भडारउ । आयारंगधारि जगमारउ ॥  
 एयहिं सव्वु सत्थु मणि गाणिउ । सेसहिं एक्कु देसु परियाणिउ ॥  
 जिणसेणेण वीरसेणेणवि । जिणसासणु सेविउ मयगिरिपवि ॥  
 पुण्वयानि शिसुणिय सुइं भर्हे । राणं वडुरिउ दावियविरहे ॥  
 पुणु सयरेण सव्ववीरके । पुहईसेण सगुत्तससंके ॥

भावमत्तमित्ताइयवीरै । जमदुङ्गणा वि सुदु गंभीरै ॥  
 धम्मदाणा वीरिं धवने । जुम्भवीरणराणां सत्तै ।  
 मीमंघराणा तिविद्धे ॥ अरुहवयणा आपणियाउं इट्ठ ।  
 पुण्ण मयंभु पुरिस्सोत्तिम गामे । पुरिमपुंडरीयं जयकामे ।  
 पुरिसदत्तगामेण कुणाले । गोविंदेण गाद गोवल्ले ।  
 उग्गमेणा महमेणा हियत्थे । शिच्चजमायामेहि पुण्ण पत्थे ।  
 एवं गयपरिवाडिए शासुण्णिउं । धम्मो महामुणिणाहं पिप्पुण्णिउं ।  
 मेणियगाउ धम्मसां आरहं । पच्छिन्नलउ वज्जियभवभारहं ॥  
 ताहं वि पच्छए चहुरमणाडियए । भरहे काराविपु पद्धडियए ।  
 पदेवि सुणेवि आयणियावि शिम्मले । पयडिल मम्मइए इय महियले ॥  
 कम्मक्खयकाणा गणिदिट्ठउ । एवं महापुराण मइ मिट्ठउ ।  
 एत्थु जिणिंदमग्गि ऊणाहिउ । बुद्धिविहूणो जं मइ माहिउ ॥  
 तं महु खमउ तिलोयो मारी । अठ्ठंगय सुअ देवि भडारी ।  
 चउवीस वि महु कलुसुखयेकर । देतु ममाहि वोहि तित्थेकर ॥

### घत्ता

उहुं छिदउ गंदउ मूअणायले शिखरसु करणारसायण । आयगणउ मणउ ताम जणु, जाम चंदु तारायण ॥

विरसउ मेहजालु वसुहाहि । महि पिच्चउ बहुवराणपयाहि ।  
 गंदणु सामणु वीरजिणेमहो । मेणिउ शिग्गउ गायणियासहो ॥  
 लगणउ गहवगरंभहो सुरवइ । गंदउ पयसुहु गंदउ गारवइ ।  
 गंदउ देसु सुद्धिक्खु वियंभउ । जणुमिच्छत्तु दुचित्तु शिसुंभउ ।  
 पडिवरायपरिपालणसूग्गहो । होउ संति भग्गहो गिरिधीरहो ।  
 होउ संति गुणहिंमहल्लहो । तामु जि पुत्तहो सिरिदेवल्लहो ।  
 एउं महापुराण गयणुज्जले । जं पापडियउ सधरधरायले ॥  
 चउ वियदणुज्जयकयचित्त हो । भग्ग परमसंभवसुमित्तहो ।  
 भोगहंभहो जयजसवित्थिरहो । होउ संति शिख शिखरमच्चरियहो ।  
 होउ संति गायणावहो गुणवंतहो । कुल बलवच्छल सामत्थमहंत हो ।  
 शिच्चमेव पालिय जिणाधम्महं । होउ संति सोहण गुण धम्महं ।  
 होउ संति संतहो दगइयहो । होउ संतिसुअणहो संतइयहो ।



जिगापयगाभगाविचलियग्वहं । होउ संनि गोसेसहं भव्वहं ॥

वत्ता

इय दिव्वहो कव्वहो नगाउं फलु, लहुं जिगागाहु पयच्छउ ।

खिगि भरहहो अरुहहो जहि गमगु, पुष्कयंतु तहि गच्छउ ॥

मिद्धिविलामिगिमगाहाद्वयं । मुद्धाएवीतरुणसंभू ॥

गिद्धासथगालोपममचिन्ने । सत्त्वजीवगिस्कारगमित्ते ॥

मद्धमल्लिज परिवाद्धिसांने । कंसवपुत्ते कामवगोत्ते ॥

वसंनयामड जगियवित्तस । सुगगाभत्रगा देवउल्लगिवासे ॥

कांलमल्लपावपडल्लपरिमत्ते । गिग्वरेणा गिधुत्तकल्लत्ते ॥

गायवावीतलायकयगडांण । जगच्चवग्वक्कल्लपरिहाण ॥

धीरे धूमिधूमरियंणे । द्दुक्कमिय दुल्लगासंमगान ॥

महिमयणयल्लकरंणुगण । मगिय पंडियपंडिय मगण ॥

मल्लजंजपुग्वरे निवमने । मण अगहनधम्म मांपने ॥

भरहमगाउं गायगाल्लण । कव्ववंधपयगियजगापुल्लण ॥

कोदगासवच्छरे आमाट्टण । दहमहं दियहे चंद रुडम्भड ।

वत्ता

मिरि गिगहहो भरहहो बहु गुगाहो, कड्कल्लतिज्जणं भासिउं ।

सुपहाणु पुराणु तिमिद्धिहि मि. पुरिमहं चरिउं ममासिउं ॥

इम महापुराणं तिमिद्धिमहापुरिसगुणालंकारं महाकडपुण्ययनं विरुद्धं महाभव्वभरहाणुमगिगाणं महाकव्वं  
वीरगाहं गिद्ववागाभगां भाविनिमिद्धिपुरिसं वगगाणां एणम दिउत्तारुत्तयं संधी समत्तो ।

सर्वद्वारंऽहिमन् श्री विक्रमादित्यगताब्दाः संवत् १३६१ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ६ गुरुवासरे अथैव श्री  
योगिनीपुरं नमस्तु गजावलि शिरोमुकुटमगिकव्यवचित नखरश्मौ सुगत्राण श्री मम्मदसाहि नाम्नि महीं विभ्रति  
मनि अस्मिन् राज्ये योगिनीपुरस्थिना अप्रोतकान्वय नमः शशोक सा० महिपाल पुत्रः जिनचरगाकमलचंचरीके  
सा खंन फेरा साडा मदागजा नृपा एतैः सा० खंन पुत्र गल्हा आजा एतौसा० फेरा पुत्र वीद्या हंमराज एतै  
धर्म कर्मणि सदोद्यमपरैः ज्ञानाचरगायकर्मन्तयाय मव्यजनानां पठनाय उत्तरपुराणां पुस्तकं लिखापितं । लिखितं  
गौगान्वय कायस्य पंडित गंधर्व पुत्र ब्राह्मण राजदेवेन ।

## ६. उपदेशमाला ।

रचयिता श्री धर्मदासगणित । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या १८ । साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४५-५० अक्षर । प्रति प्राचीन है । जीर्ण अवस्था में है ।

मंगलाचरणा—

|                 |                            |
|-----------------|----------------------------|
| नमिऊणा जिणवरिदं | इदनरिदचिणातल्लोय । गुरु ।  |
| उवएसमालमिणामो   | वुच्छामि गुरुवएसेण ॥ १ ॥   |
| जगचूडामणिभूओ    | उसभोवोरातिलोय सिरित्तिलउ । |
| एगोलागाइवोए     | गोचरकू तिहुयणास्स ॥ २ ॥    |

प्रशस्ति—

|                       |                            |
|-----------------------|----------------------------|
| इय धम्मदासगणिणा       | जिणवयणुवएकज्जमालाए ।       |
| मालुव्वविविहकुसुमा    | कहियाउ मुसीसवमास्स ॥ १ ॥   |
| संतिकरी बुद्धिकरी     | कल्लाणाकरी सुमंगलकरीय ।    |
| होउ कहगस्सपरिसाए      | जहय णिव्वाणाफलदाइ ॥ २ ॥    |
| इत्थ समप्पइ णामो माला | उपएस पगरणपगयं ।            |
| गाहारा सुव्वगा        | पंचसयाचेव्वालीसा ॥ ३ ॥     |
| जावइ जव्वयासमुत्थो    | जावइ नरकत्तमंडिउ मेह ।     |
| तावइ रईयामाला         | जयंयिमिद्धरद्यावराहो ॥ ४ ॥ |
| अकखरमात्राहीया        | जंमियपहियं अपाणामाणेण ।    |
| तं खमहु मयसव्वं       | जिणावयणाविणागायावणी ॥ ५ ॥  |

इति उपदेशमाला प्रकरणं समाप्तं ।

## ७. उपासकाध्ययन ।

रचयिता आचार्य श्री वसुनन्दि । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या ३७ । साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर ।

मंगलाचरणा—

सुरवइतिरीडमणिकिरणावारिधाराहिसित्तपयकमले ।  
चरसयलविमलकेवल पयासियासे सतच्चत्थं ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

छव्वसयापणणासुत्ताराणि एयस्स गथं परिमाणा ।  
वसुणादि णाणिवद्धं चत्थरियव्वं वियदेहि ॥ १ ॥

संवत् १६२३ वर्षे पोष वृदी २ शुक्रवासरे श्री पार्श्वनाथचैत्यालये गढचंपावतीमध्ये महाराजाधिराज् श्री भारमलकछवाहा राब्ये श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणचंद्रदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे शिष्यमंडलाचार्य धर्म चन्द्रः तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री ललित कीर्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे साहा चापा तद् भार्या सोना तत् पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र संभारधुरंधर जिनपूजापुरंदर साह जाटा द्वितीय साह दासा । सा० जाटा भार्या जैसिरी तत्पुत्र ३ साह नेता भार्या नारिंगदे तत्पुत्र चि० नाथू सा० खेता भार्या खेतलदे । तत्पुत्र २ चि० वेणा गोपालसाह । चैदथ भार्या चांदणादे तत्पुत्र धर्मदास । साह दासा भार्या दौडदे तत्पुत्र चि० पदारथ भार्या पाटमदे तत्पुत्रौ द्वौ पीथाप्रिया दुतिय पुत्र बरहथ भार्या सरदे एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं लिखापितं शील शालिनी देवगुरुभक्ति बहू श्री जैसिरी । अर्जिका श्री मुक्ति दत्त ।

प्रति नं० २ । पत्र संख्या २६ । साइज १० ३/४ इञ्च ।

संवत् १६१२ वर्षे भाद्रपदमामे शुभशुक्लपक्षे अष्टमीदिवसे प्रीतयोगे तत्तकगढमहादुर्गे महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने श्री आदिनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवाः । तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचंद्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री ललितकीर्ति स्तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे साह लोहट तद्भार्या शीला तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा० गोइंद द्वितीय सा० दामा तृतीय सा० गोकल । सा० गोइंद भार्या सोढी तत्पुत्राश्चत्वारः । प्रथम सा० पासा दु० सा० आसा तृ० सा० आल्हा चतुर्थ सा० पचाइण । सा० पासा भार्या पाटमदे तत्पुत्रास्त्रयः । प्रथम सा० कवग भार्या कवलश्री द्वि० विगेह तृ० चिरंजी हरा । सा० आसा० भार्या आसलदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम श्रीपाल भार्या प्रियादे द्वि० वाळा, तृतीय सा० आल्हा भार्या सुहागदे । तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सोहा भार्या शृंगारदे, द्वि० चि० हेमा । चतुर्थ सा० पचाइण भार्या पोसीर तत्पुत्रौ द्वौ । प्रथम चि० वीरदास द्वि० धनेड । द्वि० सा० भार्या चांदौ तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० बोहिथ, द्वि० सा० वाला, सा० बोहिथ भार्या वालहदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह सुरत्राणा द्वि० साह साधु । सुरत्राणा भार्ये द्वे प्र० सिंगारदे द्वि० सुरत्राणादे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० गोपाल चि० गढमल द्वि० सा० साणु भार्या साहिबदे । द्वि० सा० वाला भार्या बहुरंगदे । तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० सारंग द्वि० माधो । तृतीय सा० गोकल भार्ये द्वे प्रथम उदी द्वि० नोलादे । तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० कुंभा द्वि० सहसा । प्रथम सा० कुंभा भार्या कुंभलदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चित्राणा द्वि० चि० पदमा । द्वि० सा० सहमल भार्या सिंगारदे एतेषां मध्ये साह बोहिथ भार्या वालहदे इदं शास्त्रं कल्याणकव्रतउद्यापनार्थं आर्यनरसिंघाय दत्त ।

८. करकण्डुचरित्र ।

रचयिता श्री मुनि कनकामर । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ६२ । साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४६ अक्षर । प्रति स्पष्ट तथा सुन्दर है विषय—महाराजा करकण्डु का जीवन ।

प्रागम्भिक पाठ—

महाभारविष्णोसहो सिवपुरवासहो  
परमपयलीणहो विलयविहीणहो

पावतिमिगहरदिशायहो ।  
सगमिचरणसिरि जिगवहो ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

घत्ता

|                              |                             |
|------------------------------|-----------------------------|
| शियरूड जहेविणु सो शियइं      | फेडे वि ककमशिवंधराइं ।      |
| सव्वत्थसिद्धिसंपतुरवणे,      | कणायामरमुणिवरवयहणइं ॥       |
| चिरुदियवणंसुप्पणएणा,         | चंदारिसिगोत्ते विमल एणा ।   |
| वइरायइं हुयइं दियंवरेणा,     | सुपसिद्धयामकणायामरेणा ।     |
| बुह मंगल एवहो सीसएणा         | उप्पाइय जणामणत्तोसएणा ।     |
| आसइयणायरि संपत्तएणा,         | जिणचरणसरोरुड भत्तएणा ।      |
| अल्लतइं तहिं मइ चरित एहु,    | धर पयडिउ भवियण विणउणेहु ।   |
| मइं सत्थविहीणइं भणितं किंपि, | सोहेविणु पयडउ विवुहु तंपि । |
| परकज्जकण उज्जुय मणाहं,       | अप्पाणाउं पयडिउ सज्जणाहं ।  |
| करजोडिवि मणित इउ करतु,       | महुदीणहो ते सयलुवि खमंतु ।  |

घत्ता

|                             |                               |
|-----------------------------|-------------------------------|
| जो पढइ सुणाइं मणे चितवइ     | जणवए पवडइ एउ चरित ।           |
| सो गारु भुवणाहो मंडणउं      | जहइ सकित्तण गुणभरित ॥         |
| जो गावजोव्वणादिवसहिं चडियउ  | अमर विमाणाहो गां सुरपडियउ ।   |
| कणाथवणण अइमणारहगत्तउ        | जसुविजवालु गागहिउ रत्तउ ।     |
| धम्ममहात्तरुसिचियअप्पण      | जो विजवालहो गां मुहदप्पण ।    |
| जो अरिणिहणाइं दुस्सहलीलइं   | जसुमणुरंजित कुंजरकीलइं ।      |
| चंधवइट्ठमित्तजणरोहण         | शिवभूवांलहो जो मणामोहण ।      |
| दीणाणाहो जो दुहभंजण         | कणणागरिंदहो आसयरंजण ।         |
| जो वोल्लंतउ शिवसहखोहई       | जो ववहागइं गारवइमोहइ ।        |
| जो गुरु सगरे अइसय धीरउ      | जो जण पयहुण कायर हीरउ ।       |
| जो चामीयरकंकणावरिसण         | जो वंदीयणा सहलउ करिसण ।       |
| जोजिणापाय सरोयहंमहुयक       | जो सव्वंगु विणायणाहं सुंदर, । |
| जो कमिणिहिं मणम्मिणम्मुरुचइ | जोजणा स्त्रीजतरंगिणि तुलइ ।   |

कित्तिममंतियकहवणथकइ , - जसुगुण लित्ती सरसइ संकइ ।  
तहो सुय आहुलगहेराहुल , मुणिकगायामर , पयउव्वाहुल ।

धत्ता

तहु अणुगाण्यउ चरिउ , मइजगावए पयंडिउं मणहणउ ।  
ते वंधवपुत्तकलत्तसहु , चिरु गादउ जार विससिहरउ ॥

इय करकंडुमहरायचरिए मुणिकगायामर विरइए भव्वायण कण्णावयसो पंचकल्लाणविहाणकप्प तरुफलसंपत्तो करकंडु सव्वत्थसिद्धिजाहो णाम दहमो परिच्छेउ समत्तो ।

संवत् ११८१ वर्षे चैत्र वृदि ६ गुरुवासरे घट्याली नाम नगरे राउ श्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाब्दाय खडेलवाला-  
न्वये कासलीवाल गोत्रे चतुर्विधदानवितरणकल्पवृक्ष साह काधिय तद्भार्या कावलदे तयो पुत्रास्त्रयः प्रथम साह गूजर द्वितीय साह राघौ जिनचरणकमलचचरीकान् दानपूजा समुद्यतान् परोपकारनिरतान् प्रस्वस्तिचित्तान् सम्यक्त्वमतिपालकान् श्री सर्वज्ञोक्तधर्मान् रंजितचेतसान् कुटुंबसाधारकान् रत्नत्रयालंकृतदिव्यदेहान् आहारौ-  
पथा भयशाम्रदानसमुन्नितान् त्रयोसह बद्धराज तद्भार्या प्रतिप्रतापदा तस्य पुत्र परमश्रावक साह पचाइया तद्भार्या सीलवती यतापदे तत्पुत्र सा० दूलह एतेषां मध्ये साह वज्जराज इदं शास्त्रं लिखाप्य सत्पात्राय ब्रह्म भोजा जोगी दत्तं ज्ञानावरणाक्षयार्थं ।

## ६. कर्मप्रकृति

मूलकर्त्ता आचार्य नेमिचन्द्र । टीकाकार अज्ञात । भाषा प्राकृत । संस्कृत । लिपि संवत् १७७७ विषय-सिद्धान्त । मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र के शासनकाल में नागपुर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गयी ।

ग्रन्थ समाप्ति

इति प्रायः श्री गोमन्तसारमूलात् टीका च निकाश्य क्रमेण एकीकृत्य लिखिता । श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती चिरञ्चित कर्मप्रकृतिग्रन्थस्य टीका समाप्ता ।

संवत् १५७७ वर्षे आषाढ सुदी ३ श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दा-  
चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे  
भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य धर्मचन्द्रस्तदाब्दाय खडेलवालान्वये डेहवास्तव्ये पहाड्या गोत्रे सा०  
ऊधा तद्भार्या लाडी तत्पुत्र सा० फलहु भार्या गुणसिर तत्पुत्र पचाइया इदं शास्त्रं नागपुर मध्ये लिखाप्य  
सं ।

## १० कर्मकाण्ड मटीक ।

मूलकर्त्ता श्री नेमिचन्द्राचार्य । टीकाकार श्री सुप्तिकीर्तिसूरि । भाषा प्राकृत संस्कृत । पत्र संख्या २४ । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४७-४४ अक्षर । विषय-सिद्धान्त । लिपि संवत् १६२२ । ग्रन्थ समाप्ति—

इति श्री सिद्धांतज्ञानचक्रवर्ति श्री नेमिचन्द्रविरचिते कर्मकाण्डस्य टीका समाप्ता ।

लिपिकार की प्रशस्ति—

अथ संवत्सरेऽभिन् श्रीनृपविक्रमादित्यगज्यात् संवत् १६२२ वर्षे भाद्रपद सुदी १५ दिने आगरा-  
न मनगरं पातिमाह श्री मुद्गल अक्षरजलालदीन राज्ये श्रीमत्काष्ठसंघे माथुरगच्छे पुष्करान्वये भट्टारक श्री  
मन्त्रयकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीवादीभकुंभस्थलविदारगौकसिंह श्रीगुणामद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीसर्व्वगुणगरिष्ट  
भानुकीर्तिदेवास्तदास्नाये अग्रोतकान्वये चांसलगोत्रे साधु श्री गिणा तद्भार्या खिमाई तत्पुत्रश्चत्वारः । प्रथम पुत्र  
चाऊ तथ भार्ये द्वे प्रथम भार्या .....तत्पुत्र चिरंजीव खिबदास । द्वितीय भार्या मांड्यादे । साह  
ग्यानं द्वितीय पुत्र राऊ तृतीय पुत्र पदार्थ चतुर्थ पुत्र देऊ एतेषां मध्ये साधु श्री खिबदासेन पुष्पांजलिब्रतोद्याप-  
नार्थ एतद् ग्रंथं लिखापित ।

## ११ क्रियाकलाप ।

रचयिता अज्ञान भाषा प्राकृत संस्कृत । पत्र संख्या ८६ साइज ६॥४३॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १०  
पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३१-३५ अक्षर । प्रति प्राचीन है । मूल पाठ प्राकृत में है । संस्कृत में उसकी टीका  
है । ग्रन्थ ३६ दंडकों में विभक्त है । विषय-क्रियाकाण्ड ।

लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १३६६ फाल्गुन सुदी ५ शुक्रवासरे श्री योगिनीपुरे सुरत्राण श्रीमन्महंमदसाहिराज्यप्रवर्त्तमाने  
काण्ठासंघे त्रयोदशविधवादित्रभट्टारकनयसेनः तस्य शिष्यः भट्टारक दुर्लभसेनः तस्याध्ययनाय पुरतः मिदं प्रतिक्र ...  
वृत्ते लिखपायित्वा दरबार चैत्यालयसमीपस्थित अग्रोतकान्वय परमश्रावक सागिया इति पूर्वपुरुषसंज्ञकेन पाटणा-  
ग्रामान्वय सा० पाणा भार्या हलो अनयो पुत्रौ दिङ्ग सा० पूना नामानो । सा० पूना भार्या वीसो अनयोः पुत्रेणां  
दरबारचैत्यालये पंचम्युद्यापनाय सकलसंघमाकार्यं देशशास्त्रगुरुग्रामहामहं विधाय संघपूजाचस्त्राहावादिभिः धृता  
शास्त्रदानप्रस्तावे पंचपुस्तकानिदत्तानि सा० छाजू तस्य भार्या साल्हो प्रियंतमेन ..... उपुत्रेण भीमनारना  
पंचम्युद्यापनं कृतं देवगुरुणां प्रसादात् शतायुभूयात् पंडित गंधर्वपुत्रेण चाहडदेवेन लिखितमिति शुभां ।

## १२ क्रियाकलाप स्तुति ।

रचयिता आचार्य समन्त भद्र । भाषा प्राकृत संस्कृत । पत्र संख्या २०७ । साइज १०॥४४॥ इच्छ

प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३-३६ अक्षर । टीकाकार श्री पंडित प्रभाचन्द्र । प्रति में मूलभाग कम है और टीका भाग अधिक है । प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट नहीं है ।

संवत् १५७७ वर्षे वशाख बुदी ४ शुक्रवासरे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र-  
देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खटकाडिपुरे राव श्री राव  
नरवददेवराज्ये वघेरवाल्यान्वये कोटवागोत्रे सा० गणा तद् भार्या वाल्हू तत्पुत्रौ साह भीखू साह माधौ भीखू  
भार्या सीलव्रतसंयमगुणादिसंयुक्ता आल्ही तत्पुत्राः तोलू साह वोहिय साह खेता नामानस्त्रयः । भोलू भार्या मदना  
वोहिय भार्या राजी प्रथमा न्यासंगू तत्पुत्राः साह लाला जीणा चापा लाखा । लाला भार्या कान्हू तत्पुत्र  
वधूरणा । जीणा भार्या देउ तत्पुत्र नरसिंह । खेता भार्या करमैती गतैः शास्त्रं लिखाप्य सत्पात्राय मुनि माघनं  
दिने दत्तं ।

### १३ चन्द्रप्रभचरित्र ।

रचयिता महाकवि यशःकीर्ति । भाषा अपभ्रंश । पत्र मख्या १२० । साइज १०x४॥ इच्छ । प्रत्येक  
पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर । विषय-चरित्र ।

मंगलाचरणा—

नमिऊणा त्रिमलकेवलच्छी सव्वंगदिगाणपरिरंभं ।  
लोयाल्लोयपयांसं चदप्पसामिग्रं सिरसा ॥१॥  
तिक्कालुवक्खसाणां पंचवि परमेठिएं ति सुद्धोहं ।  
तह नमिऊणा भगिस्सं चदप्पह सामिगो चरियं ॥२॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

धत्ता

|                                  |                                  |
|----------------------------------|----------------------------------|
| इयं सयलवि सुरवइ                  | जिणसंथु परभत्तिमैयभरससा ।        |
| पंचमकल्लणहो सुक्खं               | णिहाणहो करिवि ठाणिसपत्ता ॥       |
| जं सुद्धुं असुद्धं गयचारु        | जं सारुं असारुं बहुपयारु ।       |
| तं जिणवाणीं खमउ सव्वु            | महुं कविगहिलहो विलमउ अगेवु ।     |
| जे परमेसरं जाणहि अपारु           | ते सोहिवि सोहिवि कुणहो सारु ।    |
| मुण्णिजणुपंडिय मेल्लिवि कसारु    | मोहतुं मुण्णिं ध इहं मुहंपमारु । |
| गुल्लंदसह उमत्तगासु              | तहिं छदांसुवहुउं दोयाणासु ।      |
| सिद्धउ तहो गादणं भव्वंधु         | जिणधम्मु भारि जं दिरणुं खंधु ।   |
| तहुं सुउं जिद्धउं बहुद्वेषुमव्वु | जिधम्मकज्जि विवकल्लिउं दव्वु ।   |
| तहुं लहु जायउ सिरिकुमरसिहु       | कलिकाल करिंदहो हणणसीहु ।         |

तहो सुव सजायउ सिद्धपालु, जिगापुज्जंदाणु गुणागणारमालु ।  
तहो उवरोहे इह कियउ गंधु, हउंण मुणणि किं पिविसत्थ गंधु ।

### घत्ता

जा चेदः दिवोयः सर्वविंसायः जा कुल-पव्वय भू वलउ ।  
ता एहुः पव्वउ हियइ चहुउ सरसइ देविहिं मुहिं तिल्लउ ।

इय सिरिचंदप्पह महाकइजसकित्तिविरइए महाभव्वसिद्धपालसवणाभूमणं चंदप्पहं सामि शिंवाणा-  
गमणां गाम एयागहमो संधी पण्डिते सम्मत्तो ।

संवत् १६०३ वर्षे शाके १४६८ पव्वव्दयो मध्ये प्रमाथिनामं संवत्सरे दक्षिणायने भासनौ वपरितौ  
महामांगल्य आचणा नाम शुक्लपक्षे दशम्यातिथौ शनिवारे घटी ८ परतमे का ११ दशम्यातिथौ मूलनक्षत्रे घटी ३६  
विकुंभनामयोगे घटी ६ परतप्रीत्यनामयोगे मध्याह्न-वेलायां वेदावतीस्थानात् ह्यडाचौहाणान्वये राव श्री सूयमल  
तत्पुत्र रावश्री सुरभीताणः राज्यप्रवर्तते जव्वीपे सम्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये तद्गच्छे तदाम्नाये  
तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मानन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक  
श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये जीवदयाव्रतपालशा साह श्री  
बोहीथा न्याती गंगवाल साह बोहिथ भार्या डोडी तयोपुत्र प्रथम जिनदास भार्या जेनी द्वितीय भार्या लाडी  
तृतीय भार्या गुजरी । द्वितीय साह भेला भार्या ल्हौकन तयोः पुत्रः प्रथम वदा द्वितीय भोज्या । गंगवाल साह  
बोहिथ तस्य गृहे भार्या गेंडी तयोः पुत्रः साह जिनदास भार्या गुजरी तयोः पुत्रः प्रथम नानीगा भार्या नारंगदे  
द्वितीय जालप कर्मकायां जिखापितं बहु गुजरी ।

प्रति नं० २ । पत्र मंख्या ११७ । साइज १०x४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति  
में ३२-३६ अक्षर । अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

संवत् १४८३ वर्षे आषाढ सुदी ३ बुधवासरे पुष्य नक्षत्रे रागा श्री संग्रामराज्ये चंपावतीनगरे रावश्री  
रामचंद्रप्रतापे श्री मूलमंघे नंदाम्नाये बलात्कारगणे सम्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मानन्दि-  
देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा स्तत्  
शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र स्तदुपदेशात् खंडेलवालान्वये साह गोत्रे सा० काधिल भार्या क बलदे तत्पुत्रा  
सा० गूजर द्वितीय सा० राधा तृतीय सा० बाळा साह राधौ भार्या खणादे तत्पुत्रः चत्वारः प्रथम साह  
रामदास तद्भार्या रावणादे द्वि० साह धू भार्या हरिपमदे तत्पुत्रौ द्वौ सा० पासा भार्या पाटमदे द्वितीय गूजर  
तत्पुत्र हरराज सा० आमा भार्या अहंकारदे तृतीय सा० दासा तद्भार्या जडाडिमदे तत्पुत्रौ प्रथम भीवसी  
तद्भार्या भावलदे तत्पुत्रौ नानू फाडू । द्वितीय धर्ममी तद्भार्या धागदे । चतुर्थ सा० घाटम तद्भार्या घाटमदे  
तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० देवसी तद्भार्या देवलदे..... ।



## १४ जम्बूस्वामि चरित्र ।

रचयिता श्री वीर । भाषा अष्टांश । पत्र संख्या ७६ । साइज ११×४॥ इन्द्र प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-३८ अक्षर । ६२ वां पृष्ठ नहीं है । रचना संवत् १०७६ लिपि संवत् १५१६ । विषय—अन्तिम केवली श्री जम्बू स्वामी के जीवन चरित्र का वर्णन ।

मंगलाचरण—

विजयंतु वीरचरणमि चंपि मंदिरमि श्रृंगहरिण ।

कनसु क्लृप्तनो ए सुनरणि लगंत विदु हंकारा ॥ १ ॥

ग्रन्थ समाप्ति

इय जंबूस्वामिचारिण सिंगारवीर महाकवे महाकण्ठदेवयत्तसुय वीर विरइय वारहअणुपेहाउ भावणाए विज्जुचरस्स सव्वह सिद्धिगमणं नाम एयागसमोसंधी परिछेउ सम्मतो ।

प्रशस्ति—

वीरसाणसयचडक्के

गिन्वारा उववरणे

विक्रमणिक्कालाउ

माहम्मि सुद्धपक्खं

सुणियं आयरियपरं

वहुलत्थपमथपथं

इत्थेवदिणेमेहवणापट्टणे

तेणावि महाकइणा

बहुरायकज्जधम्मत्थ

वीरस्स चरियकरणे

जस्स कयदेवयत्तो

सुहसीलसुद्धवंसो

जस्सय पसरणावयणा

सीहल्ल लखसांका

जाया जस्स मणिट्ठा

लीलावइ तित्ठिया

पढमकजत्तं गरुहो

त्रिणायगुणमणिणिहाणो

सो जयउकयवीरो,

पाहाणमय्य भवणं

सत्तरिजुत्त जिणेंदवीरस्स ।

विक्रमकालस्स उप्पत्ती ॥ १ ॥

छाहत्तरदससए सु वरिसाणं ।

दसस्मी दिवसस्मी संत्तम्मि ॥ २ ॥

पाराए वीरेण वीरणिदिट्ठं ।

पवरमिणां चरिय सुद्धरियं ॥ ३ ॥

वक्खमाणाजिण पडिमा ।

वीरेणा पयट्ठिया पवरा ॥ ४ ॥

कामगोद्वेणीविदत्तसमयस्स ।

इक्को संवत्तमरो जग्गो ॥ ५ ॥

जगाणासच्चरियलद्धमाहण्यो ।

जांणाणी सिरिसंतुआभणिआ ॥ ६ ॥

लंहुणा सुमइससहोयगतिणिण ।

जसइणामेत्तिविखाया ॥ ७ ॥

जिणचइ पोमावइ पुणाचीया ।

पच्छिमभज्जा जयादेवी ॥ ८ ॥

सत्ताण कयत्तविडविपारो हो ।

तणाउ तह णोमिचंदोति ॥ ९ ॥

वीरजिणंदस्स करिय जेणा ।

पियरुहे सेणा मेहवणे ॥ १० ॥

अहं जयच जसशिवासो जसगाउ पंडितति विक्खाउ ।  
वीरजिणालयसरिसं चरियमिं गां कारियं जेण ॥ ११ ॥

लिपिकार की प्रशस्ति—

मन्ये वयं पुण्यपुरीव भाति साङ्गु डुणोति प्रकटी वभूव ।  
प्रोत्तुं गतन्मंडनचैत्यगेहाः सोपानवदृश्यति नाकलोके ॥ १ ॥  
पुरस्सरा रामजलत्रकूपा हर्म्याणि तत्रास्ति अतीवरम्याः ।  
दृश्यति लोकार्धनपुण्यभाजा ददाति दानस्य विशालशाला ॥ २ ॥  
श्रीविक्रमाकर्केन गते शताब्दे षडकपंचक सुमागशीर्षे ।  
त्रयोदशीया तिथि सर्वशुद्धा श्री जम्बु स्वामीति च पुस्तकोऽयं ॥ ३ ॥

१५. जिनदत्त चरित्र ।

रचयिता पंडित लाखू । भाषा अपभ्रंश । पत्र सख्या १५७ । साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर । रचना संवत् १२७५ लिपि संवत् १६११ ।

मंगलाचरणा—

सप्पयसरकज्जहंसहो हियकज्जहंसहो—  
कलहंसहो सेयंसवहा ।  
भणामि भुअणाकज्जहंसहो रयकज्जहंसहो—  
गावेवि जिणहो जिणायत्ताकहा ॥ १ ॥

ग्रन्थ समाप्ति

इयं जिणायत्तचरित्ति धम्मत्थकाममोक्खवग्गण्णु आवसुपवित्ति सग्गुणसिरिसाहुल्लसुवत्तक्खणा विरइए  
भञ्जसिरि सिरिहरस्सणांमिकिए जिणायत्तजइवरस्स सग्गिगमणो णाम एयारहमो परिच्छेत्त सम्मत्तो ।

प्रशस्ति—

इह होतउ आसिविसाज्जबुद्धि—  
पुब्बिजय जिणवरु तिरयणा विसुद्धि ।  
जायसहो वंसउ वयरणासिधु गुणागरुवा मज्जमाणिककसिधु ।  
जायव गारणाहहो कोसवालु जसरसमुद्धिय दिचक्कवालु ।  
जसवालु तासु सुउ मइपगालु जाहड्ड लडहउ जहक्खवालु ।  
जण जाणिय जिणामइ दुवइतासु ताह गय सत्तापमुक्कतासु ।  
पढमउ अल्लहण सुहि सयसूरु, परिवारणारहपरमासपूरु ॥

पचयगाधयं गामय पाणपोद्गु,      अत्रमेयमहामइदलियदुद्गु ।  
 जिगागहवगाच्चगा धयगामयत्तु,      अहिगागियगिहि लविगयायवित्तु ।  
 मेच्छत्ताच्छत्ताछेयगाछइल्लु      गंभीरपरमगिमयमइल्लु ।  
 जिगापरिभावगावच्छल्लमल्लु      सम्भत्तां हरणांमजमइल्लु ॥  
 किहिल्लवेल्लिगिल्लुरगिल्लु,      भायरसुवलक्खगाणेह गिल्लु ।  
 परिवारंभारउद्गगाधीरु,      जिगागन्धवारिपावगासरीरु ॥  
 पविहियतियालवेदगाविसुद्धि,      सुवसत्थभावभावगाअमुद्ध ।  
 वहुसेवयगासिग्घट्टपायं,      वंशीगाहदीगाहदियगाचाय ॥  
 भोयगिहियपोसियसूरिवंदु,      सउलामरवहकयचंदुवंदु ।

### घत्ता

तहो सोहगाहो रंसाजहो भोयपराजहो—

कलकगिहच्छसहोयर ।

च्छहविमहामइ सोहगारिउवज सोहगा—

गुणारोहगाविहियांयर ॥ १ ॥

गाहुल्लु साहुल्लु सोहगामइल्लु,      तह रंयणु गयणु संतणु जिच्छइल्लु ।  
 च्छहमहिभायर अल्लगाहोभत्त,      च्छहमविहो माणासत्तचित्त ।  
 च्छहमवित्तहो पंयपयकहदुरेह,      च्छहमेयगावयवामदेह ।  
 साहु लहु सुपियपिययममणुज्ज,      गामें जयताकयगिअयकज्ज ।  
 ताह जिगादणु लक्खणु सलक्खु,      लक्खगा लक्खल सयदल्लदलक्खु ।  
 विजसियविलासरसगलियगच्च,      ते तिहुअणु गरि गिावसंतिसन्न ।  
 सो तिहुवगागिरिभग्गउ जवेण,      घित्तउ वलेण मिच्छहि वेण ।  
 लक्खणु सन्वाउसमाणुसाउ,      विच्छोयउ विहिया जगियराउ ।  
 सोइत्थ तत्थहिंडंतु पत्त,      पुरे विल्लरामि लक्खणु सुपत्त ।  
 लोक्खगाहो समउ सो करइ पणाउ,      विग्गु गंदणु सम्माणघणाउ ।  
 दिणिं दिणिं तं अइसय वुच्चिजंतु,      तहि जिसणेहु गिअमरुमहंतु ।  
 असंराजवारिपोसियसरीरु,      भइवए पवुद्धए मेहुणोरु ।  
 तइ गाहाउ गिअमरु तुसारु,      जं एयारहमए मासिफारु ।  
 जं जिहइ गिहूरु तवइ सूरु,      खर कर पयंडवंहडपूरु ।  
 चिरु वट्टइ मोकह चित्तं तं जि,      सुवणहो सुवणेसहु णेहुजंजि ।

## धत्ता

जह अहिशावधगादंसणो तावविहंसणो चंद कवरगंहुल्लियइ ।  
 सिरिहरु सिरिसाहागउ रयपरिहारउ लक्खणा गेहगसुल्लियइ ॥२॥  
 गावरेक्क दिगाग्गि महाणुभाउ, आभत्थिविक्कल्लहोधत्थपाउ ।  
 पभण्णउ भो बंधव अइपवित्त, विरइव्वउ जिगायत्तहो चरित्त ।  
 तहो वयणे मइ विरइउ सवोज्ज, वणिगाहो ववसायउ मणोज्ज ।  
 पद्धडिया बंधे पायडत्थु, अइहि जाणिज्जसु सुप्पसत्थु ।  
 सयलइ पद्धेडियइ एइहुंति, सत्तरिगात्रु दसयडुणिगा संति ।  
 एयइ गंधइ सहसइ वयारि, परिमाणु मुणिहु अक्खर वियारि ।  
 हउ मुक्खु गिरक्खरु खल्लियलज्ज, गा वि याणमिहे योहेउकज्ज ।  
 पय बंधणि बंधुणा मुणामिक्किपि, मइ विरइउ संपइ चरिउ तंपि ।  
 परजिणा गाहो भत्तीकएणा, अवियलचलकल्लालाएणा ।  
 इहु जइविच्छंदवइ हीणुतोवि, महु मुक्खहु दोसु मगहउ कोवि ।  
 कग्गउ लिविपयडिवि गेह जोउ, अम्मत्थितुसिमइ गिहिल्लुओउ ।  
 पवयणा गुणागरु अउ गलियपाउ, चउवगणासंधु जगि बुद्धिजाउ ।  
 अहिवंदउ जिगाणाहह पयाइ, सासर सरणि संपय गयाइ ।  
 जिगा समइ अगव्वह भव्वयाह, दुक्खक्खउ होउजि संव्वयाह ।  
 धिय धम्महो कल्लिमलणासणासु, कल्लाणु हं उ जिगा सासणासु ।  
 परिधविय चराचर जियहदेहु, असगल वारि वुट्टउ सुमेहु ।  
 गिम्मेस सेस्स संपत्ति होउ, गिरुवइउ सुहु अणु हवउ लोउ ।  
 परि पसरउ मंगलुमोयपूरु, धरि धरि वज्जउ आणंद तूरु ।  
 गडुल्लिय मणाडुवइणाविहु, गावउ गिहलिय दुहाणकंदु ।  
 चिरु अहिगादउ विरदा तण्णउ, सिरिहरु सिरि विसइणि गव्वभूउ ।  
 कुज्ज गिरि गिरि वइ गहचंदसूर, सुरसरि सिरि सायरवारिपूर ।  
 जिगाधम्म पयट्ठइ धरणिजाम, परिवत्तउ सिरि हरवसुंताव ।  
 इण्हं चरित्तु जो कोवि भव्वु, परिपट्ठइ पढावइ गलिय गव्वु ।  
 जो जिहइ जिहावइ परमु मुणाइ, संभावइ दावइ, कहइ मुणाइ ।  
 जो देइ दिवावइ मुणिवगाह, जह तह सम्मइ पंडियपराह ।  
 सो चक्क वट्ठिपउ आइकरिवि, पालिवि सक्कत्तणि लब्धि धरिवि ।

अणुं जिवि संसारिय सुहाइ, सन्वइ दिव्वइ पयलिय दुहाइ ।  
उव्वहिं गहिंल सुह रस पयासि, पत्थइ गत्थइ गिण्वुइ गिवासि ।

### घत्ता

बारहसय सत्तरय पंचोयत्तरं, विक्रम कानि विद्वत्तः ।  
पढम पाक्खि गवि वारइच्छइ सहारइ, पसमासै सम्मत्तः ॥ ३ ॥  
जो भुवणसरण समसरणसामिणि, सामि सालसुविसाल ।  
सिग्गिरहोतेमहंता अरइतादि तु कुल्लाणं ॥ १ ॥  
जे सुपसिद्ध मुद्धिरिद्धि या बुद्धिबद्धणुद्वारा ।  
वर धीरधम्मघत्ताते सिद्धासिद्धितहोदितु ॥ २ ॥  
जसरसमंडकवडदंडउद्धंडकंडखंडणया ।  
णिच्चइ गुणकरंडातिमूरिदितुस्सुहं ॥ ३ ॥  
णिस्सारसारसंसारसायरेतरणातागंतांरंडा ।  
ते तस्स महियंमोहावोहद्धीदितुउक्काया ॥ ४ ॥  
णद्धदुद्धमयकडभट्टायातिद्धांठिणिद्धवणा ।  
णिद्धाणिद्धियंगा ते साहू दितु मंगलयं ॥ ५ ॥  
डुद्धमिदियकम्महियसम्मसामयमयणिम्महणाहरिणाराडसिवमगादावतु ।  
संसागडइणिविडविडवियडतोडणासपावउ ।  
सम्मद्धसणणाणणिह सम्मच्चरिदविसालु ।  
तरंयणात्तउ सिरिहरहो अहिरक्खउ चिरुकालु ॥ ६ ॥  
इति पंडित जालु विरचित जिनदत्तशास्त्रं समाप्तं ।

संवत् १६११ चैत्र बुद्धि ११ सोमवासरं श्रवणनक्षत्रे सिद्धि नामा योगे आम्रगढमहादुर्गे श्री नेमीश्वर  
चैत्याजये राज श्री भारमल राज्य प्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे नंदान्नाये श्री कुन्दकुन्दा-  
चार्यान्वये.....शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तदन्नाये खंडेजवालांन्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तन्  
शिष्य ब्रह्म वेगो इदं शास्त्रं भीवीजाय पठनार्थं दत्तं ।

### १६. धनकुमारचरित्र ।

रचिता श्री पं० रघु । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ५१. साइज ६॥४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर  
८ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में २८-३२ अक्षर । प्रति अष्टपृष्ठ है । लिपि संवत् १६३६, ग्रन्थ कृता ने प्रारम्भ  
और अन्त दोनों स्थान पर प्रशस्ति लिखी है ।

मंगलाचरण—

पणविवि सिरिवीरहो गणसीररहो कमजुव धणकुमारचरिउ ।  
अक्खमि सुपासधउ गुणगणरिद्धउ धम्मरसायणरसभरिउ ।

ग्रन्थ के प्रारम्भ में कवि ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है—

× × × × ×  
तहं सुधम्मपमुहाइं जईसर, पणविवि भत्तिएवय भारधर ।  
ताहं अणुक्कमि सूरि पहाणउं, सहसर्कित्त तववयगुणट्ठाणउं ।  
नास पट्टिणि रुद्धगुणाभायण, जो भाविउ मणियायारसायण ।  
सिरि गुणकित्ति विवुहत्तितामणि, पणविवि तिरयण सुद्धिए बहुगुण ।

वृत्ता

इय जिणमुणिवरविदु माइविमणवयकाए ।  
पुण पयडमि जिणसथु गुरगुणकित्ति पसाए ॥ १ ॥  
अणहिदिणिजिणगुणसुविसालें, विहसि विजंपिउ बुद्धि विसालें ।  
भोसइत्थ रयणरयणायर, मित्थामयतमणादिवायर ।  
रधू पंडिय सुणिणिम्मत्थर, तुहयण जणमण.रंजण कोत्थर ।  
जहं पइं पास जिणंदइ केरउ, चरिउ रइउ बहुसुखजणेउ ।  
पुण वलहइ पुराण सुहंकर, रोमि जिणंद चरिउ तिरयउ वर ।  
साट्ठजसाहु णिमिनें सुन्दर, जहं पयं वइमाण भासिउ वर ।  
तहिं सिरि धणकुमार पुणएहंफलु, महुवयणेंपयडहिपणुगयमलु ।  
ता गुरु भणियात्तावसु रोप्पिण, रयधू बहु जंपइ पणवेप्पिण ।

वृत्ता

तुहहं आपसें कवु विसेसें करमिण संसउ धरमि मणि ।  
परकारण वट्ठइ चित्तिपवट्ठइ सोयोरुणकुत्रिणियमिजिणि ॥ २ ॥  
तं सुणि विभणइ गुणकित्ति एम, भो पंडिय तुहणउं मुणहिं केम ।  
गोवागिरि णियडपणसि धम्म, पुरुपाल संडुणोमेंणमणु ।  
इक्खाइ वंसि तहिं चिरुवर्येणु, अणणिय जायापणवियजियेणु ।  
जसुवालु जसायक गुणमहंतु, करमू पटवारि जणि महंतु ।  
तहु एंदणु णिरुवमगुणणिवासु, अहणिसु जो अरुचइ जिणवरासु ।  
चउविहसंधविणयाणुरत्तु, सिरि पूनउ साहु सधम्मिवत्तु ।

तहु भज्जा सील गुणस खारिण, सव्वहियणाइं तिथयरवाणि ।  
 तिहुवैणं सिरि मुणियणं पर्यविसीये, सिरि हरसिरिजिमरोहवहु नीय ।  
 एयेंहें सज्जिणं चारिधुत्त, लक्खण लक्खं कये विणं यजुत्त ।  
 शियकुलमयंकु पुणु पढसु ताहं, भुल्लणुजमाहु प्रयद्धउ जणाहं ।  
 वीयउ पुणु कुहयणजणनिव सु, सिरि सूले णामे जसपयासु ।  
 तइयउ णंदणु मयेणावये क, सिरि कामराजु णामेणं साहु ।  
 चउथउ णंदणु आसण्णिवासु, आसल्लुणामें सो कुलं पयासु ।  
 पयहिं जो पढमउ गुणगरिद्ध, सिरि भुल्लणुणामें साहु सिद्धु ।

घत्ता

आरउणपुरवरे सुहल्लेत्थीवरे, तहि पढुवइरिणिकंदणु ।  
 तोमरं कुल्लेमंडेणु अरि सिरिखंडेणु, सिरि गणेंस णवणांदणु ॥ ३ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

णंदउ जिणसासणु दिरियविणासुणु सुहसयसासणु गुणभरिउ ।  
 अरु सत्थसमिधउ वण्णहिसुवउ, णंदउ महियलि इहु चरिउ ॥ ४ ॥  
 णंदउ महिवइ णापपत्रीणु, णंदउ सज्जणयणु भरियदीणु ।  
 णंदउ सुधम्मु सिवसोखयारि, णंदहु जइवरवयभारधारि ।  
 इक्खायवंसमंडेणमयंकु, सिरि पुण्णपालसुउ विगयसैंकु ।  
 णंदउ भुल्लणु णामेणं साहु, णिउरादेवल्लहु दीहवाहु ।  
 महुहोज्जउ विमलसमाहिबोहि, जादुग्गइ गमणहु पाहणिरोहि ।  
 शियकालें वरसउ मेहमाल, गिहगिहि समुहु मंगल वमाल ।  
 वहु अथसमिद्धउ चरिउ एहु, परिपुण्णकरि विसवेयगेहु ।  
 पडिणसमापिउ पावणासु, भुल्लेणहुहाथपयडियपयासु ।  
 तेणु जिणिय सीसिचडाविऊण, पुणु पंडिउ पुब्बिउ पणमिऊण ॥  
 लेहाविबिबहुपुथयजितेण, महिविथारिउ पुणउ सुवेण ।

घत्ता

गुणसुणिहु पसाए पयडियराए सिद्धउ कव्वर सायणु ।  
 सीवाइ जंतउ अथ संयतउ, वट्टउ सुहसयभायणु ॥ ४ ॥

जिणगुणगणराणं वज्जियमाणं, चरित्तराविच एहुवरु ।  
 तहु वंसपसिद्धं सुहजियारिद्धं, पयडामि जणमणसुखकर ॥ ६ ।  
 धणकणजणपुण्णं सुहणियासु, पुण्णालिसिद्धं अरिबिहियतासु ।  
 तहि वणिक्क जियेपयच्चंचरीच, भवममणहु जा मुणि एण्व भोउ  
 करमू पेटवारिच गुणगणरिद्धं, सो येसुणाई मुणे दाण इद्ध ।  
 तहु भज्जकारुणं रुव सार, गोवद्धनाइ मणि मुणियसत्थ ।  
 तहु नंदणोह एवणं एवपयत्थ, साधारणु सावयधम्मिलीणु ।  
 चंदरणु पढमु उद्धरियदीणु, तुरायउ पुण्णउ पुण्णमहतु ।  
 तीयउ खम्हउ खिमगुण महंतु, जो परिण्णोइ अणमुपवित्त ।  
 मेलमुक्कमेलि पंचमउवुत्त, हरिमुत्ति हरु पुणु दीहवाहु ।  
 रयणत्तयं भत्तउ रयणु सोहु, धूवात्त नधमउ चुम्मिय पमाणु ।  
 अट्टमउ धिराजु गुणोहट्टाणु, सिरि पुण्णपालु मुणिमणिय सुत्त  
 पयहं जिमम्मि चउथउ जिवुत्त,

धत्ता

तहु पढमी भामिणि कुत्तगिह सामिणि, तिहुवण सिरि णामे भणिया ।  
 वीई पुणु मणसिरि एं पीयडसिरि, अहपवित्त रुवहु भणिया ॥ २  
 रांदण वयारि तहु विणयवत्त, एण एतचउक्कजिज्जणिसहत्त ।  
 ताहं जिगुरुमनंतणिअभुल्लु, सिरिभुल्लणु णामा णेजि अतुल्लु ।  
 तहु भ आचउ विहपत्त भत्त, णिउर दे न मागइ महंत ।  
 वीयउ रांदणु सुत्तसुवाणि, तहु भज्जमहासिरि णेह खाणि ।  
 तहु तिण्ण पुत्तकुत्त भवणदीव, एणयण इह वणणीय कामदिउ ।  
 अमरदिउ लाडमल्लु, एणयणत्तउ जायउ पयणु ।  
 तीयउ रांदणु पुणु कामराउ, कल्लणा सिरि भज्जासिराउ ।  
 चउत्थउसुउ आसलु विगयपाउ, परिवारु पहु रांदउ सराउ ।

धत्ता

एयहं सव्वहं पुणु पयडिय बहुगुण रांदउ भुल्लणु गुणभरिउ ।  
 धणयत्तकुमारहु सयफलसारहु कारिव उवइहु चरिउ ।

इय सिरिधणकुमारचरिए कयसुअभावण फलेण विप्फुरिए सिरिपंडियरइधू विरइए सिरि पुत्रपाल  
 सुत साधु श्री भुल्लण णामिकिय भव्वजीवाणामणिए धणकुमारिण्णवाणगमणवणणो णाम चउथी संघो  
 परिच्छेउ सम्मत्तो । इति श्री धन्कुमार चरिणं समाप्त । मुनि श्री भारमल्ल लिखितं ।



संवत् १६३६ वर्षे फाल्गुन म से शुक्लपक्षे सतांभ्यां तिथौ अक्कवासरे श्री जिनचैत्यालयादि मूलनायक श्री चन्द्रप्रभस्वामी त्रिराजमाने मारुवाड देशे श्री मेदनीपुरवरे अज्ञानातमरदिनकर विधुरजिन-शरणसज्जनानन्द नृगवर लक्ष्मिवल्लभे राज श्री पातिसाह श्री अक्कववर जलालदीमहंमदराज्ये । पायंदामहं-मदखानराज्ये श्री मूनसघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगळे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये उभयभाषाप्रवीण भट्टारक श्री पद्मनन्ददेवास्तत्पट्टे सिद्धान्तजलसमुद्रविवेककलकमलिनीविकाशनमर्त्ताण्ड भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे विद्याप्रधानचारुचारित्रोदहनभट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे वादीभक्तुंभविदारणैक केशरा भट्टारक श्री प्रभाचन्देवा स्तत् द्वितीय शिष्य दुद्धरपंचमहाव्रतधारणैकप्रचंड श्रीमत् मंडलाचार्य श्री रत्नक र्ति तत् शिष्य पंचाचारचरणचतुगान् भेदाभेदरत्नत्रय आराधकान् स्मरसारंगविदारणैकमृगेंद्रान् श्रीमत् भुवनकीर्त्ति तस्य शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मकार्त्ति भव्यकुमुदविकाशनैक निशाकर द्वितीय शिष्य मंडलाचार्य श्री विशालक र्ति तस्य शिष्य दुद्धरपंचमहाव्रतधारणैक प्रचंड श्रीमत् मंडलाचार्य श्री लक्ष्मीचन्द्र स्तदाम्नाये खंडेलवालवंशे पहाड्योगोत्रे पूजापुरन्दर साह फाल्हा भार्या फूलमदे पुत्र चत्वारि प्रथम पुत्र साह वीहड द्वितीय पुत्र माह जोधा तृतीय पुत्र साह मन्ना चतुर्थ पुत्र साह मेहा तस्य तृतीय पुत्र सीलव्रतावगाढ परिपालान् श्रीमत् सुदशनावतार साह श्री लूणा तस्य भार्या लूणादे तस्य पुत्र साह श्रीवतं भार्या सुहलालदे तस्य पुत्र द्वितीय साह चिं० वीदा द्वितीयपुत्र चिरंजीव धनराजेन साह मन्ना भार्या मयणश्री पुत्र साह श्री लूणाकेन पुण्यार्थेन पुस्तक लिपि कारायित बाई श्री करामाई केन घटापितं ।

### १७. धर्मपरीक्षा ।

रचयिता पं० हरिषेण । भषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ८८. साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३५ अक्षर । विषय-धार्मिक । प्रथम पृष्ठ नहीं है ।

प्रारम्भिक पठ—

सिद्धि पुरधिहिं कंतु, सुद्धे तणु मणवयणें ।  
 भक्तिण जिणु पणवेवि, चित्तिउ वुहहरिसेणें ॥ १ ॥  
 मणुण जम्भि बुद्धिण कि किज्जइ, मणहरजाइ कवुणारइज्जइ ।  
 तं करंत अवियाणिय आरिस, होसुलहहि भडरणि गय पोरिस ।  
 चउमुह कवु विरयणि सयंभुवि, पुप्फयंतु अण्णणु णिसुं भिवि ।  
 तिण्णविजोय जेण तं सीसइ, चउमुह सुहथियतावसरासइ ।  
 ते एवं विहहउ जडमाणु, तह च्छंदांकार विहीणउ ।  
 कवुकरंतुनेमणविलज्जमि, तह विसेस पियजणकिह रंजामि ।  
 तो वि जिणिद धम्मअणुरायइ, वुहसिरिसिद्धसेणसुपसाइ ।  
 करमि सइं जिणलिणिदलश्रिउजलु, अणुहरेइ णिरुवंसु मुत्ताहलु ।

वृत्ता

जा जय रामे आसि, विरइय गाहपबंधि ।  
साहम्मि धम्मपरिक्ख, सापद्धिदिया बंधि ॥ १ ॥

अन्तिम भाग तथा प्रशस्ति —

वृत्ता

मिद्धसेणपयवंदहि दक्खिउणिदहि हरिसेणु पावता ।  
तहिथियतेखगसहयर कयधम्मायर विविद्धसुहई पावता ।  
इय मेवाह्मदेसि जणुसंकुल, सिरिउजपुर निग्गयधक्कडकुलि ।  
गवकरिंदकुंभदारणहरि, जाउ कुजाहि कुसलुणामेहरि ।  
तासु पुत्त परणाहिअहोयर, गुणगणणिहि कुलगायणदिवायर ।  
गोवद्धणुणामे उप्पणउं, जो सम्मत्तरयणसंपुणउं ।  
तहो गोवद्धणामु पियंथणवद्ध, जो जिणवरमुणिवरपियगुणवद्ध ।  
ताहं जणिउं हरिसेणुणामे सुंउ, जो संजोउं विवुद्ध कइ विंसेउ ।  
मिरि चित्तउं डुवएवि अचलउरहो, गउणियकज्जे जिणहर पउरहो ।  
तहि उदालंकारपमाहिय, धम्मपरिक्खएहत्तेसाहिय ।  
जेमज्जमत्तमणुय आयणएहि, ते भिक्खुभाउ अन्नगंणएहि ।  
ते सम्मत्त जेणमलु लिज्जउ, केवलणाणु णाणु उप्पजइ ।

वृत्ता

तहो पुण केवलसाणहो रोयपमाणहो, जीवपएमहिं सुहडिउ ।  
वाहाहिउ अणंतउ अइसयवतउ, मोक्खुसोक्खु फलु पयडिउ ।  
वक्कम शिणप रपत्तियकालउ, ववंगयवरिससइसचउतालइ ।  
इय उप्पणु भवियजण सहयर, डंभरहियधम्मामयसायर ।

१ कुलीहि २ गुणवद्ध ३ तेण ४ बाहारहिउ ५ परिवत्तिए ६ गयएवरिससइसेहिभवालए

|                                          |                               |
|------------------------------------------|-------------------------------|
| ते रांदहु जे भक्तियभावहि, <sup>१</sup>   | तेरांदहुं जे लहहि लहावहि ।    |
| ते राय परदुह दूरि लुटावाहि, <sup>२</sup> | जो पुणु केविहु पढहि पढावहि ।  |
| ताण गिरंतर सोक्खऽ सुढढहि,                | एयहु अत्थुकेविजे पयढहि ।      |
| जे रािसुणेविपरिक्खहि भक्तिए,             | ते हुं जहि रािममल मइ सत्तिए । |
| सयल पाणि वग्गहो दुहुद्विज्जउ,            | सोसमिद्विए महिसोद्विज्जउ ।    |
| परहिय करणि भिहंढिय अहंहो,                | होउ जिणत्तणु चउविह संवहो ।    |
| पयडिय पहुपयावआरिवारि, <sup>४</sup>       | रांदउ भुवइ सहो परिवारि ।      |
| वन्मपवत्तयेणरांदुहहारें,                 | रांदहु पयवहु अइववहारें ।      |

## धत्ता

संखदुसहसुसयाहिउ संदरसयाहिउ, इउकहरयणु अगव्वहं ।  
 जाहरिसेणधराधर चवहि-गयणुधर, तामजणउं सुहु भव्वहं ॥  
 इय वन्मपरिक्खाए चउवन्नाहिद्वियाए बुह हरिसेण कयाए पयारसमो संधि परिच्छेद सम्मतो ।

## १८. नागकुमार चरित्र ।

रचयिता श्री महाकवि पुष्पदंत । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ७०, साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३-३७ अक्षर । लिपि संवत् १६१२.

मंगलाचरण—

परावैष्णु भावै पंचशुरु, कलिमलवज्जिउ गुणभरिउ ।  
 आहासमि सुयपंचमिहि फलु, रायकुमारचारुचरिउ ॥ भ्रुवकं ॥

महाकवि ने पारम्भ में अपना परिचय इस प्रकार लिखा है—

## धत्ता

सिरिकन्हरायकरयलि राहियां, असिजलवाहिणि दुग्गयरे ।  
 वनलहरसिहरहयमैहउले, पविउल भएणखेहणयरे ॥ १ ॥

१ दावहि २ हरे ३ जे हुं ४ आरिवारें ५ संखए दुसहसुसयाहिउ इय कयरयणु अगव्वह । जो हरिसेण-  
 धराधरउ यद्विगयणिवर तामजणहु सुहु सव्वहं ।

|                            |                             |
|----------------------------|-----------------------------|
| मुद्धाई केसवभट्टपुत्तः,    | कासवरिसिगोत्ति विसालचित्त । |
| णणहु मंदिर णवसंतु संतु,    | अहिमाणमेरु गुणगणमहंतु ।     |
| पत्थिउ महिपणवियसोसण,       | विणणण महोवहसीसण ।           |
| दूरुक्कियदुक्कियमोहणेण,    | गुणधम्मं अवरु वि सोहणेण ।   |
| भो पुप्फयंत पडिअणपणय.      | मुद्धाई केसवभट्टतणय ।       |
| तुहं वाएसरिदेवीणकेउ,       | तुहं अम्हहं पुणणणिबंघहेउ ।  |
| तुहं भव्वजीवपंकरुहभाणु,    | पइंधणु मणिमणिणउ तियसमाणु ।  |
| गुणवंतभत्त तुहु विणयगम्मु, | उव्वायपयासहि परमधम्मु ।     |

### घत्ता

ओलगिउ भावें दिणि जि दिणे, णियमयपंकय थिरु थविउ ।  
 कइ कव्वपिसल्लउ जसधवलु, सिसुजुयलेण पविण्णविउ ॥ २ ॥  
 भणु भणु सिरिपंचमि फलु गहीरु, आयणमि णायकुमारवीरु ।  
 ता वल्लहरायमहंतण, कलित्रिलसिय दुरियकयंतण ।  
 कुंडिल्लगोत्तरु हससहरेण, दालिइकंदकंदलहरेण ।  
 वरसच्चरयणयणयरेण, लच्छीपोमिणिमणिंससहरेण ।  
 पसरंत किन्ति बहुकुलहरेण, विच्छिण्णसरासइबंधवेण ।  
 बहुदीणलोयपूरियधणेण, मइं पसरपरिज्जयपरवलेण ।  
 णियपइवइणचितियफलेण, छणइंदविन्नसण्हमुहेण ।  
 कुंदव्व भरहदियतणुरुहेण, .....  
 णणणेण पउत्त महाणुभाव, भो कुसुमदसणहयवसणाताव ।  
 करिकव्वु मणोहरु मुयहि तदु, जिणधम्मकज्जिमाहोहि मंदु ।  
 आपणमिहउ भणु णिम्मलाइं, सियपंचमि उव वासहु फलाइ ।  
 णणणेण पवोल्लिउ एम जाम, णाइल्लइ सीलइ एम ताम ।

### घत्ता

कइ भाणउ समंजसु जसविमलु, णणणु जि अणणु ण धरसिरिहे ।  
 तहुं केरउ णामु महगयक, देविहि गायउ सुरगिरिहि ।  
 तं तुहुं मि चडावहि णिययकव्वि, दिहि होउ णणण आसणभन्नि ।  
 बुद्धीए णणणु सुरगुरु ण भत्ति, पर णणणहु णउ वइरिय जिणंति ।

पहु भक्तिं हरेण वसुमाखु दिह, पर गणणु ग वाणरु गणरु विसिद्धु ।  
 गंगेउ सच्चै जणियतुद्धि, पर गणणु ग वडरिहि देउ पुद्धि ।  
 धम्मेण जु हिडिलु धम्मत्तु, पर गणणु पवासदुहिण चत्तु ।  
 चाएण कणणु जणदिणचाउ, पर गणणु न बुधुहु देइ चाउ ।  
 कंतीए सणोहरु छणससंकु, पर गणणु गणउ दी इ कुलंकु ।  
 गरुयत्ति महिसुविसुद्धचारिउ, पर गणणु ग किडिदादइ धुरिउ ।  
 सुधरत्ते मेरु भणति जोइ, पर गणणु पुरिसु मत्थरु ग होइ ।  
 सायरु वे गहीरु कयायरैहि, पर गणणु ग मंथिउ सुवरेहि ।

### घत्ता

जो वणिणउं वणिणउं वरकइहि, भावे णियमणि भावहि ।  
 तहु गणणुहु केउ गामु तुहु, सुललिय रुक्वि चडावहि ॥ ४ ॥  
 णिचचेलत्तणु केसालु चणु, णिचचणि मेज्जादेहाउं चणु ।  
 न्हाणविवज्जणु दंताधोवणु, कालइ गोरसु पर वसु भोयणु ॥  
 धरणि सयणु रइरससंकोयणु, दसहदसममयमुहविणु ।  
 पिसुणाकोसणु ताडणु वंधणु, चंडयायवहलकं पवणइ ॥  
 धाराहरजलु धारासवणइ, सिसिरोसाकणहरमरु वेयइ ।  
 हिमपडणइ विदडतणु तेयइ, उन्हइ सोसियं गरसभेयइ ॥  
 वणतरुणइ सण सिहि सिइव नणइ, गुहगंय भीमोयरसहवसंणइ ।  
 कंठोलुं वियवि सहरचलणइ, सीहावग्घजीहादलेधुलणइ ॥  
 कोलघोरघोणाणिल्लुणणइ, संवरगंयगंडयकंडयकंडुयणइ ।  
 एव माइदुक्खाइं सहेप्पिणु, रणिवसेप्पणु भिक्खचरेप्पणु ।  
 सत्तु वि मित्तु वि मरिसु गणेप्पिणु, मिउ भु जेप्पिणु णिदाजणेप्पिणु ।  
 भोयभुयं गच्छिउ सुमरेप्पिणु, मणिजगंभंगुरत्त भावेप्पिणु ।  
 सुक्कब्बाणु मणि आऊरेप्पिणु, मोहमहारि राउं मिल्लेप्पिणु ॥  
 कम्मकसायराय ताडेप्पिणु, दूढकम्मदुगांठि मिल्लेप्पिणु ।  
 जुत्तायारु तिगुत्तिहि गुत्तउ, चउंहु मि तेहि रिसिहि संजुत्तउ ॥

### घत्ता

मति अणंगु अणंगु हुउ, पत्तउ मोक्खु अणंगविचारउ ।  
 पुप्फयंतसुरेणमियपहु, पसियउ गायकुमार भडारउ ॥

इय गायकुमारचरुचरिए गणगणामंकिण महाभइपुण्यतविरइए महाभवे सिरिणायकुमार-  
वालमहावाल छेयाभेयमोक्खगमणं गाम् एवमो संघी परिच्छेउ समत्तो ।

स्वस्ति संवत् १६१२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ५ शनिवारे श्री आदिनाथचंयालये तत्त्वकगढमहादुर्गे महा-  
राजाधिराज राउश्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघे नंदाभ्राये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री  
कुन्दकुन्दाचायान्त्रये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र  
देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री  
ललितकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्त्रये सवडा गोत्रे सा० घोडा तद्भार्या विजयश्री तत्पुत्राः पंचः ।  
प्र० सा० सोढा द्वि० सा० गाल्हट्टि, सा० रत्तेन, चतुर्थ सा० माल्हा । सा० सोढा भार्या भोलो तत्पुत्र चत्वारः ।  
प्र० सा० चाहड, द्वि० सा० खीवां, तृ० सा० दूल्ह, चतुर्थ सा० देवा, पं० सा० पूना । माह चाहड भार्या  
मदना । सा० दूल्ह भार्या करमा तत्पुत्रास्त्रयः । प्रथम सा० पोपा, द्वि० सा० थेल्हा, तृ० सा० श्रीपाल ।  
साह पोपा भार्या पोसिरि तत्पुत्रौ द्वौ प्र० साह सुरत्राण द्वितीय चि० पनाइण । सुरत्राण भार्या सुहागदे ।  
मा० थेल्हा भार्ये द्वे प्रथम सरस्वति, द्वितीय लाडा तत्पुत्रौ द्वौ, प्र० हंगरसा तद्भार्या नाथो, द्वितीय भेला ।  
सा० श्रीपाल भार्ये द्वे प्रथम सरुपदे द्वितीय लहुडी तत्पुत्र सा० रुपा । सा० देवी भार्ये द्वे । प्र० सोभा द्वितीय  
सरुपदे तत्पुत्रास्त्रयः । प्र० सा० सरवण भार्या होली तत्पुत्र हेसा सा० टीहा भार्या चंद्रा । सा० ईसर भार्ये  
द्वे प्रथम ईसरदे द्वि० चारु । सा० स्तन भार्या सारमा तत्पुत्र स्त्रयः प्र० सा० छीतर भार्या छायलदे तत्पुत्र  
चि० कौजू । सा० चौहथ भार्या चतुरगदे । तृ० सा० राणा भार्या राणादे । भेला भार्या भावलदे । सा० माल्हा  
भार्या द्वे । नाल्हा द्वि० मेहा तत्पुत्रौ द्वौ । प्र० सा० टेह द्वितीय सा० नोता । सा० टेह भार्यास्त्रयः प्रथम  
तहुणश्री द्वितीय सुहागदे तृतीय गूजीर तत्पुत्रौ द्वौ प्र० सा० पदमसी भार्ये द्वे प्रथम पतायदे द्वितीय  
पाटमदे तत्पुत्र चिरंजी रामदास । सा० नोता भार्ये द्वे द्वितीय कोडमदे तत्पुत्र चि० आखा भार्या  
अहकारदे द्वितीय सागा एतेषां मध्ये सा० टेह सा० नोता इदं शास्त्रं जगकुमार पंचमी लिखाय पंचमी व्रत  
उद्योतनार्थं मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिये दत्त ।

### १६. नागकुमार चरित्र ।

रचायता श्री प्र० माणिककराज । भाषा अर्धभ्रंश । पत्र संख्या १२४ । साइज १०×४ । इच्छ । प्रत्येक  
पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर । प्रति प्राचीन तथा सुन्दर है । प्रारम्भ के दो पृष्ठ  
नहीं हैं । कवि ने ग्रन्थ के प्रारम्भ में भी अपना विस्तृत परिचय दिया है । भाषा बहुत सरल और मधुर है ।

प्रारम्भिक कवि परिचय—

तहि जिणवरमंदिर धवलु भव्नु ।  
तहि शिबसइ पंडिय सहजणि ।  
इक्खकुवंसमहियलिवरिह ।

सिरिआइणाह जिणविधु दिव्नु ॥  
सिरि जइसवाल कुल कुमल तरणि ॥  
वुह सुराणदणु सह गरिह ॥

|                                |                               |
|--------------------------------|-------------------------------|
| उपंगणउ दीवा उरिरवणु ।          | बुहु माणिकु शामें बुइहि मणु । |
| तत्थंतरि सावउ इक्कुपत्तु ।     | वयदाणसीलसियमेणजुत्त ।         |
| बुहयणरंजणु गुणगणविसालु ।       | विद्धिणवत्थदिप्पंतभालु ।      |
| धमत्थ । मसेवंतु संतु ।         | तस जीवदयावक सिरिमहंतु ॥       |
| मेरुवधीरु गुणगणगहीरु ।         | जिणगंधो वयाणम्मलसरीरु ॥       |
| णारवइ सहमडणु सव्वभासि ।        | गोहाणगोहु सुयसीलरासि ।        |
| चंदुवभुवणसतावहारि ।            | वररुवमउणणउ णं मुरारि ।        |
| छहअंगवहूसिउ णं महेसु ।         | मदारयपुज्जिउ णं महेसु ।       |
| जिणपयसी सांकउ णीलकेसु ।        | रमदंसणपालउ सुयणतोस ।          |
| सिरि ठाकुराणि जिण धम्मधुरधरु । | सुरवइ करभुयजुयलेहि त्रिमलु ।  |
| सिरि जइसवाल इक्खाक्कुवंस ।     | चउजगसीणंदणु सुच्छवंस ।        |
| टोडरुमलुणामे धरपयंतु ।         | जं कित्ति तिलोयह पूरिधिरु ॥   |

### घत्ता

|                               |                     |
|-------------------------------|---------------------|
| ते आइ वि जिणहरि णयणाणंदणि,    | अइणाहु जिणवंदियउ ।  |
| पुणु दिट्ठउ पंडिउ भवियणमंडिउ, | अइविणयं अठभत्थियउ ॥ |

अष्टमी संधी परिच्छेद के बाद—

जइसवाल कुलसंपन्नो, दानपूयपरायणः ।  
जगसी नंदनः श्रीमान्, टोडरमल्लु चिरंजियः ॥  
वस्तुपाल इव ख्यातो, मध्यलोके वभूव यः ।  
टोडरमल्लु ते साध्वो, वद्धेतां काम्रलोचने ॥

अन्तम पाठ—

|                             |                          |
|-----------------------------|--------------------------|
| सिरि णायकुमारचरिउ खालु,     | पभणिउ कइयणपुव्वहि ।      |
| जो भव्वहभासइं लिहइ सुणइ मइं | ते सिवसुहु माणिकक लहहि ॥ |

इय णायकुमारचारु चरिये विबुहचित्तारंजणु पंडिय सिरिमणिककराज विरइए चउधरी जगसी पुत्त राइरंजण टोडरमल्लुणामंकिण सिरि णायकुमार वालि महाबालि छेया भेया णिउवाण गमणं णवमो सवि परिछेउ समत्तो ।

प्रशस्ति—

|                           |                           |
|---------------------------|---------------------------|
| णंदउ जिणवरिंद जिणसासणु ।  | दय धम्म विभव्वह आसासणु ।  |
| णंदउ णारवई पइपालंतउ ।     | णंदउ मुणिगणु सुत उतवंतउ । |
| णंदउ जिण सुहमाग्गीचरंतउ । | भवियणु दाणपूयविरयंतउ ।    |

दुक्खदन्तिह दहिक्खुं व गिरसउ ।  
 घरि घरि मंगलु गीउ पदरिसउ ।  
 घरि घरि लोउ सुहेहें रंजउ ।  
 जिणवरिदसुयगुरपयअंचणु ।  
 पुत्तकलत्तसुयणपह पंलउ ।  
 एण्डउ एहु गत्थुं ता महियलि ।  
 संघह चिरु दुकिउ विहु एतउ ।  
 लेस मुणोस विमर अंकाते ।  
 फागुण चंदिण प'ख सप्पि वालें ।  
 सिरि पिरथी चंदुपसायं सुंदरु ।  
 सज्जणलोयह विणउ करेप्पिणु ।  
 विरयउ एहु चरित्त सुवु'दए ।  
 ता महु दोसु भवु मगहउ कोई ।  
 मज्झु खमंतु ववुहसव्वाचत्तिम ।  
 मइ जलेण जं कायमि साहिउ ।  
 कइयण जण तिलोयहु सारी ।  
 अइरो सैंसो हि जहु गंथु वरि ।  
 एणउ कामिणि होउ सुमंगलु ।  
 माणिककराज वज्जिय मएण ।  
 टोडरमल्लहत्थें दिण्णु सत्थु ।  
 दाणेंसेयं सहकरण्णु तपि ।  
 पुणु समाणिउ वहु उत्थवेंण ।  
 अंगुलियहि मुळिय णिय करेहि ।  
 पुज्जिउ आहरणहि पुणु पुणु तुरंतु ।  
 गउ णिय घरिपंडिउ गंध तेण ।  
 तहि मुणिवर विदाह सुत्थ गंथु ।  
 वित्थारिउ अत्थु विचारि तेण ।

कालि कालि धाराहलु वरिसउ ॥  
 घरि घरि एणार उरहंसैं एणउ ।  
 घरि घरि संखुसुमदलु वज्जउ ।  
 चउविहसंघहदाणहपोसणु ।  
 एण्डउ टोडरमल्लु दयालउ ।  
 जा वहि मेरु चंदु रविणहयलि ।  
 भवियण लोयह पादि जंतउ ।  
 विक्कमरायहववगयकाले ।  
 पणरहसइगुणासियउर वालें ।  
 एवमी सुहणविसत्तु सुहवाले ।  
 हुउ परिपुण्णु कवु रसमंदिरु ।  
 पिसुणवयणकइमेणभरेप्पिणु ।  
 जइयहु अत्थमत्तहीणउ हुए ।  
 विणवेइ मणिककु कई इम ।  
 अण्णुवि अमुणंते हीणाहिउ ।  
 त जि खमउ सुय देवि भडार ।  
 बुइयणरोसुण करहु महु उप्परि ।  
 विसमउ गमिणि वज्जउ मंदलु ।  
 गुरुपण वज्जलें पंडिण ।  
 तं पुण्णु करेप्पिणु एहु गंथु ।  
 णिय सिरह चडाविउ तेण गंथु ।  
 पंडिउ चर पट्टहि थविउतेण ।  
 वर वत्थइ कंका कु'दलेहि ।  
 हरिरोवि वि सज्जिउ विणयं विरुत्त ॥  
 जिण गेहि णियउ वहु उत्थवेण ।  
 दिण्णउ गुर हत्थें सिवह पंथु ।  
 भव्यवणह सुह गइ दावणेण ।

घत्ता

पुणु टोडरमल्लहं णिवसरि पुण्णहं,  
 जिणि गिहि मुणि संघहं तववयवंतहं,

लिहिइयइ गंथ वहुसुत्थणिरु  
 एणणदाणु तं दिण्णुवरु ॥



अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १५६२ तत्र पोष मासे कृष्णपक्षे पंचम्यां तिथौ भौमवासरे श्री गलंव शुपस्थाने श्री पातसाहि हूमायुं राज्यप्रार्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्कर-गणे श्री भट्टारक श्री मन्त्रकीर्त्तिदेवान् तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणभद्रदेवान् तत्पट्टे मुनि क्षीमकीर्त्तिदेवान् तदा-म्नाये मुनि श्री थमभूषणदेवान् तदाम्नाये ब्रह्मचारि मुनि छाजू तत् शिष्य श्री मुनि ब्रह्मचारि पण्णा एतत् इक्ष्वाकुवंशे श्री गोत्रे भंडारी श्री जयसवाल वशाम्नाये श्री पंचदशलाक्षणीकव्रतपालकान् पंचमी उद्धरण घोर साधुवस्थावसे तस्य भार्या शीलतोयतरंगिनी विनय वागेश्वरी तस्य नाम सुनखी । तत्पुत्र तृतीय ज्येष्ठ पुत्र गुण गरिष्ठ साधू दासु— ।

२०. पद्मपुराण ।

रचयिता श्री पं० रङ्गू । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ६०. साइज १०।।४४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ५०-५४ अक्षर । विषय—पुराण । प्रति जीर्ण अवस्था में है । लिपि संवत् १५५१. ग्रन्थ का दूसरा नाम बलभद्र पुराण भी है ।

मंगलाचरण —

परणयविद्धं सणु मुणिसुव्रजिणु,  
सिरि रामहु केरउ सुकलजगेरउ,

पणविधि बहुगुणगुण भरिउ ।  
सह लक्खण पयडमि जरिउ ।

ग्रन्थकर्त्ता की प्रशस्ति—

सिरिआइणाहु भव्वयणइहु,  
पुणु समिपहु धम्मामयसवंतु,  
तहि संति वि जीवइयाअहाणु,  
पुणु वहमाणु चर मल्लुदेउ,  
पुणु ताहं वाणिज्जाए विचित्ति,  
पुणु इंदभूति गणहरु एवेवि,  
पुणु ताहं अणुक्कमि देवसेणु,  
पुणु विमलसेणु तह धम्मसेणु,  
तह सहसकित्ति आयमपहाणु,  
गच्छह नाइकु सिहि गुण मुणिहु,

पणवेप्पिणु लोचत्तयवग्गिहु ।  
भव्वयणहु भवतएहासमंतु ।  
जि भासिउ महियलि त्रिमत्तणुणु ।  
सो सव्वहं जीवहं केरउ सेउ ।  
लोचत्तमगामिणि वण्णंदित्ति ।  
सो धम्म वि जव्वसाम तेव ।  
इंदियभुयंगणिहलणवेणु ।  
मिरि भावसेणु गयगावरेणु ।  
तह पट्टिणि सन्नउ गुणनिहाणु ।  
सहत्थपयासणु विगवत्तहु ।

वृत्ता

तहु पट्टिजेईसरु णिहंयर ईसरु,  
तहु सिस्सु पहाणुउ तंववयठाणउ,

जंसकित्ति वि मुणियणतिलउ ।  
खेमचंडु आयमणिलउ ॥ १॥

गोव्वगिरि णामें गढु पहाणु,  
अइउच्चु धवलु णं हिम'गरिंदु,  
तहिं डु'गरेंदु णामेण राउ,  
तुं वर वर वंसहं जो दिणिंदु,  
तहो पट्टवरणि णं रुवत्तत्थि,  
तहु पुत्तु किच्चिसिधु जि गुणिल्लु,  
पियपायभत्तु पचक्खमारु,  
तहु रज्जिवणीसरु शुद्ध चित्तु,  
जसु चित्तु सुपत्तहं दाणिरत्तु,  
काणामरण अहिणिसहि णीणु,  
आयमपुराणपढणहसम्मथु,  
जो आइरवालवंसह मंयकु,  
चाट्ट साहु णंदणु पवीणु,  
जिणसासणि भत्त कसायलीणु,

णं विहिणाणि'म्मउ रयणठाणु ।  
जहि जम्मु समिच्छइ मणि'सुरेंदु ।  
अरिगणसिरिगि संदिन्नधाउ ।  
जि पवत्तहं मिच्छइ खणित्तु कंदु ।  
णामें चांद' देई सुयित्थ ।  
जो राइ णीइ वनसणइ छल्लु ।  
पज्जुणवमहियत्ति कुमरुसारु ।  
संचयित्तु जेण जिणधम्म'वित्तु ।  
जिणणाहपूयजोणिव्वभत्तु ।  
काउसगौतणु कियउ खीणु ।  
णियमणुयजंम्मु जि कियउ कयथु ।  
ब्रिहु पक्खसुद्ध सो खेयवत्तु ।  
णियजणणिहल्लोपयविणायत्तोणु ।  
हरसीहु साहु उद्ध'रय दीणु ।

धत्ता

तहु भज्जा गुणगणसज्जा,  
मुणिदाणपियंकर वयणियमाचर,  
बोई तिय वील्हाही गुणंग,  
जेठिहि णंदणु सिरिक मरमसीहु,  
मुणिसहणिवसह जसु पढमल'ह,  
तहु भज्जा जौणांही पवीण,  
तहु बहिणीणंतमई पहाण,  
चउविहदाणे पोसियसुपत्त,  
लुहु ईहि पुत्ति रुवें सुताग,  
जिणचरणकमलणमीयसरीरु,  
अणणहि वासरि चित्तियउ तेण,

द्योचंददी णामें भणिया ।  
णं पवित्तिरु बहुत्तणिया ॥ २ ॥  
अइसीलविशुद्धजिणाइ गग ।  
गिहभारधुरंधरु ब्राहुदीहु ।  
जाअयजणणापूरियसमीह ।  
गुरुदेव सथयपयभत्तिलीणु ।  
महसीललीणगिहलद्धमाण ।  
अहणिसु जिणवरपयकमलभत्त ।  
णामेण णणो गोहें सुसार ।  
वयभरणिव्वाहरणभीरु भोरु ।  
इ'सोहण'म ईच्छियसिवेण ।

धत्ता

कि किज्जइ वित्तें विहियममत्तें,  
कि तेण जिकोणं पयडयिरायं,

जेण णदीणु भरिज्जइ ।  
वयभरु जिणधरिज्जइ ॥

ણરુભજ પાવિવિ કરણીત એમ  
 ચિત્તિવ્વરુ વંસણ ણાણુ હઠ,  
 ધમ્મુ જિ દ્વહલક્ષણલોચસારુ,  
 વિણુ ધમ્મે જીવે ણ સુચિત્ત થાઈ,  
 હંહ ચિત્તવિ પુણુ ગુણુ સાહુ તત્થ,  
 વહુ વિણુણં પુણુ વિણુણતુ તેણ,  
 મો રહધૂ પંડિત્ત ગુણુણિહાણ,  
 સિરિપાલ્હ વમ્હ આયરિયસીસ,  
 સોઢલ ણિમિત્તિ ચોમિહિ પુરણુ,  
 તહ રામચરિત્તુ વિમહુ મણોહિ,  
 મુહુ સાણુરાઉ કહમિત્તજેણ,  
 મુહુ ણાંમુ લિહિહિ ચંદહુ વિમાણિ,

મવદહિણિરુહણુણો હોજેમ ।  
 ચરણુ વિ પુણુ લોચણુ વરિદ્ધ ।  
 સેવિવ્વત એતુ મવણુસારુ ।  
 તિ વિણુ કરુણ્ણિત વિસયલુ જાહ ।  
 અચ્છરુ પિઢિત્ત જિણુગેહિ તત્થ ।  
 કર આરોપેણુ ણિયસરેણ ।  
 પોમાવહ વરવંસહ પ્રહ'ણ ।  
 મહુવયણુ સુણુહિ માવુહ ગરીસ ।  
 વિરયઉ જહપહ જણુ ત્વિદિયમાણુ ।  
 લક્ષણુ સમેત્ત હંહમાણ મુણોહિ ।  
 વિણુણતિમ્મકુ અવહારિ તેણ ।  
 હય વયણુ સુદ્ધ ણિયચિત્તિઠાણુ ।

ધત્તા

હય ણિણુણિવિહં મંપિયસવંણહ,  
 હો હો કિં વુતઉ એહુ અજુત્તઉ,

પઢિયણ તાઉત્તઉ ।  
 હઉ'ગહ કમ્મે ગુત્તઉ ॥ ૪ ॥

અન્તિમ પાઠ તથા પ્રશસ્તિ—

મન્વહં ગુણુણંદઉ કિયસુ કમ્મુ,  
 રાઉત્તિ ણંદઉ સુહ પયસમાણુ,  
 ણંદઉ પુણુ હરસીહસાહુ પચ્ચુ,  
 સહ અગિમંતુ જસુ ફુરહ ચિત્તિ,  
 સિરિ રામુ ચરિત્ત વિજેણુણહુ,  
 તહુ ણંદણુ ણામે કરમસીહુ,  
 સો પુણુ ણંદઉ જિણુચલણમત્ત,  
 સિરિ યોમાવહ પરવાલવંસુ,

અરુ ણંદઉ જિણુવર મણિઉ ધમ્મુ ।  
 ણંદઉ ગોવગિરિ અચલઠાણુ ।  
 જિ માવિઉ ચેયણુ ગુણ પચ્ચુ ।  
 કલિકાલધરિયજિત્તિણિ સત્તિ ।  
 કરાવિઉ સન્વહં જણિયુ ણેહુ ।  
 મિચ્છતમહા વચ્છલણસીહુ ।  
 જો રાયમહાયણિ મારુ પુત્ત ।  
 ણંદઉ હરસી સંપૂર્ણી જસંસુ ।

ધત્તા

વાલોહમહણસિદ્ધ ચિરુણંદઉ હંહ,  
 મોલ્લિક સમ્માણુઉ કલ્લગુણજાણુઉ,

રહધૂ કહતીયઉવિધરા ।  
 ણંદઉ સહિયલિ સોવિયર ।

હય વલહદ પુરાણે તુહયણવિદેહિ લલ્લસમ્માણે સિરિ પંડિય રહધૂ વિરહય પંડિયવંધેણ અથ વિહિસહિય

सिरि हरसीहुसहु कंठिकठाहरणे ब्रह्मलोयसुहसिद्धिकरणे . सिरिरामणिग्वाराणमणं एकादशमो सुधी परि-  
च्छेड सम्पत्तो ।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५५१ वर्षे फाल्गुण सुदी ६ भौमवासरे श्री काष्ठासंघे पुष्करगणे भट्टारक श्री श्री कुवरसेण-  
देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री हेमचन्द्रदेवास्तस्मात्तये अमोक्तकान्वये-गर्गे गोत्र साधु सा हीगा भार्या खिमा पुत्र ५/  
सा. वोरु, सा. नानू, सा. रुपा, सा. घन्ना, सा. नगा । धीरु भार्या भजो पुत्र पोपा ... द्वितीय पुत्र कुंतिया  
भार्या वरमिणी ... । सा. नानू भार्या प्यारी । सा. होगा तृतीय पुत्र रुपा भार्या २ न्योरा पुत्र वोहिय,  
द्वितीया भार्या राजी पुत्र तिहुणा । सा. हीगा चतुर्थ पुत्र घन्ना भार्या प्यारी पुत्र छाजू । सा. हीगा पंचम पुत्र  
सा. जंगा भार्या डलो पुत्रे बाधू एतेषां मध्ये सा. जंगा तेन इदं बलभद्रचरित्रं लिखाप्य पं० हीगाय  
समर्पितं ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १७२, साङ्ग १ x४३ इत्य । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर  
२६. ३० अक्षर । लिपि संवत् १६५६. प्रति शुद्ध तथा स्पष्ट है ।

लेखक प्रशस्ति—

अथ संवत्सरेस्मिन् अ नृपविक्रसादित्यगत ज्दः संवत् १६५६ वर्षे मार्गसिरे बुदि त्रयोदशी चंद्रवासरे  
चित्रा नक्षत्रे श्री रुहितगवावरादुर्गमकोटे तत्र अनेक शोभाशोभितजणविहारे पातसाह अकबर राज्य-  
प्रवर्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे अनेकवादीभक्तमस्थलविदारणैकमंदोन्मत्तकेसरीन भव्या-  
बुजविकासनैकभास्करोदयान् अवोधजीवप्रतिवाधकान् भट्टारकश्रीहेमचंद्रदेवास्तत्पट्टोदयकरणैकसूर्योदयान्  
भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे अनेकविद्यासमुद्रान् पंचरसत्यागीभट्टारक श्री जसकीर्तिदेवास्तत्पट्टे अनेकगुण-  
समुद्रान् अनेकधोरवीरतपसंपुक्तान्, पंचमहाव्रतधारकान् भट्टारक श्री जेमेन्द्रकीर्तिदेवाः स्तत्पट्टोदयकरणैक-  
सूर्योदयान् भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्ति तथा भट्टारक श्री जसकीर्ति शिष्यपञ्चमहाव्रतधारकान् तप-  
संयुक्तान् आचार्यश्रीगुणचन्द्रः । तस्यशिष्याणि पंच खण्ड १४ रक न एकादशप्रतिमापुलक स्वदेशप्रदेशविख्यातमान्  
चाई जिदो तस्य शिष्या चाई सुहागो एतेषां गुरु-आम्नाये तिजारिये सोतमगोत्रे रुहितगवावरेंव तस्ये  
साहु लोला तयोः पुत्र नाधू तस्य भार्या माणी तयोः पुत्र ३ निलहा द्वितीयपुत्र स्वामिदास तृतीय भैरो; साह  
स्वामीदास तथा पुत्र ३ प्रथम पुत्र साह खिउपाल द्वित य हीरो तृतीय जालजुद; साहु भैरो तस्यो पुत्र ३ प्रथम-  
पुत्र राउपाल द्वित य सूनपाल तृत्त य पुत्र त्रोट एतेषां मध्ये साह स्वामोदास तस्यो पुत्र प्रजापुरंदरदान सिरिय-  
सावनारन विवेकसुंदर साह खिउपाल तस्य भार्या शालतोयतरंगणी चतुर्विधद ज्ञायाकी स्वाधिवमो तयो  
पुत्र ३ प्रथम पंचमीव्रतोद्धरणधोरा त्रिपंचशक्तियाप्रतिपालका राजसभाश्रमगारहारपंडितशिरोमणि साह  
पदारथ तस्य भार्या भामिणी प्रियवृंदाणुगमिणी बधूसभो तयो पुत्र कनकसिंह तस्य भार्या जीवा साधू  
खिउपाल पूजापुरंदर विवेकसुन्दर हीवानुदीपगुजैनसभाश्रमगारहार साह अगारमल तस्य भार्या भामिणी

प्रियछंदाणुग मिनी वधू जटो तयो पुत्र दुइ प्रथमपुत्र दयालदास तस्य भार्या सुन्दरी द्वितीय पुत्र रामदास तस्य भार्या सुन्दरी । साह खिउपाल तृतीय पुत्र जिनशासन उद्योतकारी जिनप्रतिष्ठाकरण इंद्रस्वरवतारान् भूपति सभा शृंगारहार चंद्रमा इव द्योतकारी विवेकसुंदर साधुमनोहर तस्य भार्या प्रियछंदाणुगामिणी भार्या नगीना तयो पुत्र चतुरभुज तस्य भार्या भागर्जुतो एतेषां मध्ये साह खिउपाल तस्यपुत्र चतुर्विधदान-दायक साह अगरमल्ल तेनेदं शास्त्रं बलभद्रपुराणं लिखापितं । लिखाय करि वार्ह जिंदो नैदत्तं पठनाथं । लिखतं पांडे केना । शुभं भवतु ।

## २१. परमेश्वि प्रकाशसार ।

अपभ्रंश । पत्र सख्या १८८. साइज ६।५४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३. ३६ अक्षर । प्रथम दो तथा १८७ का पृष्ठ नहीं है । विषय धर्म । प्रति प्राचीन है ।

तृतीय पृष्ठ का प्रारम्भ—

### धत्ता

गयसासयठणइ सिद्धपहाणइ,  
इय पणपरमिट्ठिहिं केवलदिट्ठिहिं,

कम्मरहिय गुणअट्ठजुवा ।  
रयणत्तयलदिकम्मचुवा ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

### धत्ता

इय सिद्धिसरुवइ सिवसुढदूवइ,  
सुयणाणणिरिक्खिंवि,  
इय परमिट्ठि पंचजगसारइ ।  
तह गुणपयडइ जिणवरवाणी ।  
गणहरदेवपमुहमुणिरायइ ॥  
इंदपमुह जे सुरवरवगइ ।  
तहं पडिनिवत्तिजयजहजत्थइ ॥  
तह अणु मग्गमुणिविदइ ।  
तह गुणपूरयहि जे भव्वइ ।  
जे तहिं शुत्त पढहिं तयकं लइं ।  
ते तह णाम जबहिं एकग्गाइं ।  
हो हि अमरणर सुक्खविरायइं ।

णिमुणि वि जेणिच्छड करहें ।  
सुमणिहरि वि धम्म अहिंसाते धरहें ॥ १ ॥  
भवियह जे भवदुत्तरतारइं ॥  
जा तयलोयपवित्तपहाणी ॥  
पयडहिं ते चहुरिद्धिविरायइं ॥  
मुणिहिणो तह गुणगणइणि सग्गइं ॥  
सुरणरअक्खहिं ते सुपसत्थइ ॥  
पुल्लणिज्ज ते तिहुयण चंदइ ॥  
पूयहिं ते हि ण रामरसव्वइं ॥  
तह शुइ करहिं अमरअंसरालइं ॥  
जे तह धम्मचित्त अणुरायइं ॥  
जे तह धम्म पसंसहिं चित्तइं ॥

पावहिं ते कमउत्तमगुत्तई ।  
कयणुमोयसुरालयपत्तई ।

जे तह णामु सुणहिं मरणंतई ॥  
.....

घत्ता

जह सयलतियालई, घम्मुधरालई, एरसुरकरहिं महंतई ।  
जे भावणभावहि ते सुइ पावहि, सासयकालअणंतई ॥ २ ॥

|                             |                            |
|-----------------------------|----------------------------|
| एहउ जहतयलोयपहुत्तणु ।       | तह अम्हारि सकहसुकयत्तणु ॥  |
| अप्पवुद्धि अमुणियवरगथई ।    | आयमपमुहअणावमअत्थई ॥        |
| तक्कळंदलंकारावहं।णउ ।       | ण विवायरणु मुणमि अपवीणउं ॥ |
| अक्खरमत्तययत्थहवज्जिउ ।     | त जि कच्चु वुइयणहअउज्जिउ ॥ |
| पुव्वसूरि जं कियसु कयत्तई । | तह जसपसरियभुवणमहंतई ॥      |
| जिणकमगोयमसामिणमंसिय ।       | घम्मापरियसुगुणसुपसंसिय ।   |
| जवृसामितिकेवल्लिजुत्तई ।    | विणहु दत्त पयु.....        |

× × × × × × ×

के पृष्ठ का अंश—

घत्ता

इहपणमयतेवणगयवासई पुण.  
विकमणिवसंवच्छरई ।  
तह सावणमासहु गुरपंचमिसहु,  
गथु पुण्णु तयसइसतई ॥

|                            |                             |
|----------------------------|-----------------------------|
| भालवदेसदुगामें डवचलु ।     | वट्टइ साहिगयासु महाचलु ॥    |
| साहिणसीरुणामतह एदणु ।      | रायधम्म अणुरावउ बहुगुणु ॥   |
| पुज्जराजुव शिमंति पहाणई ।  | इसरदासु गच्छंदई अणई ॥       |
| पत्थाइरणदेसु बहुपावइ ।     | अहाणसि धम्महुभावणभावइ ।     |
| तह जे रटणायसुपसिद्धई ।     | जिणवेइहरमुणिसुपबुद्धई ।     |
| शेमीसरजिणहरणिनसंतई ।       | विरयउ एहु गंथु हरि संतई ।   |
| जइ सिंधु तह संघचइ पसत्थई । | संकहु शे मदासु वुहत्तई ।    |
| तह गंथत्थ भेउ परियाणिउं ।  | एउ पसत्थु गथु सुहु माणिउं । |
| अवर सघवइ मणिअणुराइय ।      | गंथ अत्थ सुणि भावणभावइ ॥    |

तेहि लिहाइ शाश्वतगंधं ।  
विरह्य पदम'तमहि वित्थारिय ।  
पढहि भव्वजहं पडिय लोइयइं ।

इय हरिवंसपमुहसुपसत्थइं ।  
धम्मपरिक्खपमुहमणहारिय ।  
संतहोइ सुणि अत्थमणोयइं ।

धत्ता

पुरणयरणरेसहं गोमहं देसहं—

मुणिगणसावयलोयमहें ।

धणुकणु मणिसारइं धम्मद्वारइं

करहि संति परमिद्धिपहो ॥

इय परमिद्धिपुयाससारे अरुहादिगुणेहि वरणणाणलंकारो अप्सुद सुदकिप्ति जहासत्ति महाकवु  
विरयंतो णाम सप्तमो परिच्छेड संमत्तो इति परमोद्धिप्रकाशसार ग्रंथ समाप्तः ।

२१. पाण्डवपुराण ।

रचयिता मुनि श्री यशःकीर्त्ति । भषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ३४७, माइज १०॥४४॥ इअ । प्रत्येक  
पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति में ३८ । ४२ अक्षर । लिपि संवत् १६३६ रचना संवत् ।

प्रारम्भिक भाग—

बोयसु सरधयरद्वहो गयधयरद्वहो सिरिलालमु सोगद्वहो ।

पणवेवि कहाम जिणिद्वहो णयवलविद्वहो कह पंडवधयरद्वहो ।

ग्रंथ के प्रारम्भ में दी हुई प्रशस्ति—

\* \* \* \* \*

सिरिसरवण उववणगिरि बिसालु,  
तेहि निवसुइ जालपु साहु भवु,  
सिरिअयरल वसह पहाणु,  
तहो रांदणु चाल्हागयपमाउ,  
आवपिणु हितमक्खानु दिट्ठु,  
धेनाही तहो पियणामु सिद्धु,  
तहो रांदणु रांदणु हेमराउ,  
सुरतानममारखतणुइरज्जे,

गंभीरपरिद्वलत्तंगसालु ।  
णिउजी भज्जालं किउ अगवु ।  
जो संपहं वच्छलु विगयमाणु ।  
नवगावनयरे सो सइं जिआउ ।  
तेणवी सम्माणुउ किउ विदिट्ठु ।  
गुरुदेवभत्तपरियणहं इट्ठु ।  
जिणधम्मो वरि जसु णिउवभाउ ।  
मत्तिट्ठो थिउ पियभारकज्जे ।

धत्ता

जें अरहंतु देउ मणिभाविउ, जासु पहुत्ते को विण ताविउ ।

जेण कगाविउ जिणचेयालउ, पुण्णहेउ चिरयपक्खालउ ॥ १ ॥

धयतोरणकलसेहिं अलंउ,  
परतियवंधउ परउवयारिउ,  
संघधुरंधरु पयडु मुणिल्लइर,  
सत्तवसण जे धुरे वज्जिय,  
सत्तगुणहं दायारहं जुज्जउ,  
पणए पणगुणं सउं भंजिउ,  
विणयंदाणु देइ जो पत्तहं,  
तासु भज्जु गुणरयणवसुंधरि,  
त्तवे चेलणदेवपहाणिय,  
अमियसरसवयणहिं सच्चिद्धिठिय,  
उवरिकाडल्लुसीलजे धारिउ,  
धम्मसवणकुंडलजे धारिउ,  
जिणगेहम्मिगमणोउरसरु,  
जिणवरमतसरणु कंचुउ उरि,  
एउहं आहरणहं जा सोहिय,  
तासु पुत्तु पल्लणु जाणउजइ,  
धीयउ सरंगु वि पयभत्तउ,

जसु गुरुत्तिहरिजणु वि संकिउ ।  
जेण सवु जणु धम्महपेरिउ ।  
सावधम्मोणुचमणु रंजइ ।  
सीलसयणवित्तिवि आवज्जिय ।  
नवविहदाणाहिणु एउत्तउ ।  
रयणत्तयभावरणअणुरंजिउ ।  
जिणु तिकालु पुज्जइ समचित्तहं ।  
गघाणाम रोयगय नियसुरसरि ।  
जिणवरभत्तिहें रां ईदाणिय ।  
एउं तं बोत्तराय अणुरंजिय ।  
रयणत्तइ हारे मणु पेरिउ ।  
जिणमुहमुहय संचारय ।  
तहो चंदणकंकणसोहउ कर ।  
जिणवरएहवणु तित्तउ कउं णियसरि ।  
भारु मुणोवि कवणाहि नमोहिय ।  
चाए तक्कयगणहि थुंणउजइ ।  
कउल तइउणदुवमण चत्तउ ।

चत्ता

पल्लणणंदणु गुणणिलउ, मोल्लणमायपियरमणरंजणु ।

वेल्हा साहुहे अवरु सुउ, लक्खणाणु जणमण अणंदणु ॥ २ ॥

दिउराजहीयभल्लहि ममेउ,  
णंदणु हंगरु तह उधरणवखु,  
एक्कहिं दिणि चित्तउ हेमराउ,  
णिसुणिल्लइ चिरपुरमहं चरित्तु,  
ता होइ मग्ग जम्मुवि सल्लघु,  
इव चित्तिवि जिणभंदिहि पत्तु,  
सोउं इच्छमि पडवचरित्तु,  
विवरीउ संवुजणु वज्जरेइ,

कीलंन्हं हुउसंताणजोउ ।  
हंसराउ तइउ सुउ मल्लवखु ।  
जिणधम्महीणु दिणु अहलुजाइ ।  
हरिनेमिनाहपंडवहं वित्तु ।  
नासइ चिर संचिउ पाउ मिग्गु ।  
जसमुणिएणवि वि आक्खउ सचित्तु ।  
पण्डहि सामिय जं जेम वित्तु ।  
एरयावणि दुक्खहो एउ डरेइ ।



तं शिमुणिवि जंविउ मुणिवरिदु,  
पंडव चरित्तु अइगइणु जइवि,  
ता तहो वयणें गुणगणमहंतु,  
सज्जणदुज्जणभउ परिहरेवि

चंगउ पुच्छिउ चुरयणहं चंदु ।  
तुवउवरोहें हउ कहमि तइवि ।  
पांरभिउ सदत्थह फुरंतु ।  
णियणियसहाचरत्ते विदोवि ।

घत्ता

सज्जणु वि सहावु अकुडिलभावु,  
परदोस पयासिरु अवगुण भाभिरु,

ससिमेहु व उवयारमइ ।  
दुज्जणुसाधु व कुडिलगइ ।

अन्तिम भाग—

पढमहिं वीरजिणदें अक्खिउ,  
सोहम्मैं पुणु जंबूसामें,  
णंदिमित्त अवरज्जिय णाहें.  
एमपरंपराइं अणुलगाउ,  
सुणेसंक्खेवसुत्ता अवहारिउ,  
पद्धडिया छंदो सुमणोहरु,  
करेवि पुणु भव्वहं वक्खाणिउं,  
जं हीणाहीउ किंपिक्सिहिउं,  
जो इहु चरिउ वि पढइ पढावइ,  
जो पुणु सददेइ समभावें,  
जो आयरइति सुद्धि करेपिणु,  
जो पुणु एय चित्तु णसुणेसइ,  
एउ पुराणु भवियहं आसासइ,  
वइरिउ मित्तत्तणु दरिसावइ,  
पियकलत्ता पुत्तत्थिउ तं पुणु,  
इट्ठ समागमु धणु संपावइ,  
लाह सुहत्थिउ लाह सुहाइवि,  
साणुगगहगहसयलपयट्ठहि,

पढइ गोयमेण णउ रक्खिउ ।  
त्रिएहुकुमारें णिगगयणामें ।  
गोवद्धणेण सुभद्धसहावें ।  
आयरियाहं मुहाउ अवगउ ।  
मुणिजमक्कित्तमहिहिं वित्थारिउ,  
भवियणजणमणसवणसुहंकरु ।  
दिदुमिद्धत्तु मोहु अवसाणिउं ।  
तं सुयदेवि खमउ अवराहउं ।  
वक्खाणेपिणु भवियणदावइ ।  
सो मुच्चइ पुव्वकियपावें ।  
सो सिउ लहइकम्मछिंदेपिणु ।  
सगु मोक्खु सोसिग्गुलहेसइ ।  
अ युविद्धि जसुराद्धि पयासइ ।  
रज्जत्थिउ विरज्जु संपावइ ।  
रज्जभट्टु पुणु रज्जु चलगुणु ।  
गउ परणसु सिग्गु घर आवइ ।  
देव देहिंवरु मच्छरु मुंचिवि ।  
मिद्धा भावखणद्धें तुट्ठहि ।

घत्ता

आवडं सव्वइं जाहि खउ संपइ सुहवरि पइसहिं ।  
पंडवचरिउ सुणंताहं विवाहविलासइं विलसहिं ॥

अवरु वि सिउ कल्लणु पयासइ,  
संसारी वहितरि विसुलीलड,  
एउ चरिउ पवित्तु सिद्धक्खरु,  
सुसमाहिय चित्तिहे मो भावइ,  
भ वयणसवोहणहो 'णामित्ते,  
णउ कवित्त निचित्तिह धणलोहें,  
छंदु तक्कलक्खणुणउ जाणित्तं,  
णदउ मासण सम्मइणाहें,  
णदउ एरवड पयपालंतउ,  
णदउ मुण्णिगणु तउ पालंतउ,  
दाणु पूयत्रय'वाहपालंतउ,  
काल विणियणिच्चपरिसक्कउ,  
वज्जउ मंगलु गिउजउ मगलु,  
णदउ वील्ह पुत्तु गुणवतउ,  
अत्थावरुद्धु बुद्धाहो'हव्वउ,  
विक्कमराय हो ववगयकालए,  
कत्तियसिय अट्ठमि बुहवासरें,  
णह्हु महिचन्दु सूरु तार येणु,  
जाता एदउ कल्लु हरंतउ,

पुव्वकयइं दुरियाणिएणासइं ।  
अरिदुहवे विमुत्ति सहुकीलइं ।  
पु० पु० ग पु० रिमावणउ चिरु ।  
णउ सदेहु सौ जि सुहु पावइ ।  
एउ गंधु क्रिउ णिम्मलचित्तं ।  
णउ कासुवारि वाहिय मोहें ।  
कम्मखयणिमित्तु वक्खाणित्तं ।  
णदउ भ वयणु कयउछाहें ।  
णदउ दयधम्मु वरिसह कउ ।  
दुविहुधम्मु भवियणह कहंतउ ।  
णदणु सात्रय गणुरयचत्तउ ।  
कासविधण कणु दें तिन थक्कउ ।  
णच्चउं णारयणु रहसैंकलु ।  
हेमराउ न्नि पुत्त सइत्ताउ ।  
वम्मत्थें आलसुणउ किउवउ ।  
महिंसायरगह ।र।स अंकालड ।  
हुउ परिपुण्ण पढमणदीसरें ।  
सुरगारि उवाहिताउ सुहभायणु ।  
भवियजणहि विथारिउ जंतउ ।

धत्ता

इय चउविहसंवह विहुणियाव्वम्वहं णिएणासियभवजरमरणु ।  
जय कित्तिपयासणु अखलियसासणु, पयडउ सत्त सयंभुजिणु ॥

इय पांडुपुराणे सयलजणमणसत्रणसुहयरे सिरि' गुणकित्ति स'संमुणिजमेकित्ति' विरइय  
माधु वील्हा पुत्त हेमराजणामकिण णेणिएणहजुधिटरभीमोजुणणिव्वाणगेमणं एंकुलमहदैवमव्वट्टसिट्ठि  
यंलहृपंचममगमणपत्रासणो णाम चउतीसमो मगो समत्तो । इति पांडुपुराणं समाप्तं ।

संवत् १६३६ वर्षे भाद्रवा सुदी १ प्रतिपत्तिथौ आदित्यवारे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे श्रीमूनसंघे नंधाम्नाये  
वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दीदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवा  
स्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तत् शिष्य पं० श्री लालतकीर्त्तिदेवा-  
स्तत् शिष्य पं० श्री चन्द्रकीर्त्तिदेवास्तस्याम्नाये खडेलवालान्वये श्री नैमिनाथचैत्यालये निवाई वास्तव्ये राइ श्री

केसवदामराज्यप्रवर्तमाने छाबडान्वये सा० रेडा तद्भाया रयणेद तत्पुत्रौ द्वौ । प्र० सा० पदार्थे द्वि० सा० जिणदास । सा० पदार्थे भाया पौसरि तत्पुत्रास्त्रयः, प्रथम सा० नाथू द्वि० सा० श्री राणा तृतीय सा० हरदास सा० नाथू भाया तूनी तत्पुत्र सा० गोपाल भाया प्रथम गौरादे द्वि० सुहागदे तृतीय लाडी, तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम चि० रामसिंह द्वि० संकरदास तृतीय चि० उदयरज । द्वितीय सा० श्री राणा भार्ये द्वे प्रथम रयणादे द्वितीय लाडमदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० रूपसी द्वि० सा० सेखा, सा० रूपसी भा० द्वे प्रथम सुरुपदे द्वि० उछंगदे तत्पुत्रास्त्रयः चि० त्रामसी चि० खीवसी चि० साहमल्ल । द्वि० सा० शेपा भार्ये प्र० सुहलालदे द्वि० कोडिमदे तत्पुत्र चि० दुगादास । तृ० सा० हरदास भार्या हषमदे तत्पुत्रास्त्रयः सा० पूरण सा० नेतसी सा० साधू । सा० पूर्ण भार्या कपूरदे तत्पुत्र चि० प्रतापसिंह । सा० नेतसी भार्या नवलदादे तत्पुत्रास्त्रयः चि० नारायण चि० मानसिंह चि० सुरत्राण साधू भार्या सुजाणदे द्वि० सा० जिणदास भार्या द्वे प्रथम मनी सफलादे तत्पुत्र पंच सा० कूंजा भार्या कुसुमदे, द्वि० सा० करणा भार्या करणादे तृतीय सा० भापरभाया सावलदे चतुर्थे कान्हड एतेषां मध्ये सा० राणा भार्या लाडमदे हरदास भार्या हरषमदे एतभ्यां इदं पांडव-पुराणशास्त्रं लिखाय आचार्य श्री हेमचन्द्राय घटापितं षोडशकारणव्रतोघोषनार्थं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४७१. सा० ज १०।।४।। इच्छा । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रत  
पंक्ति अक्षर । प्रति पूर्ण स्पष्ट और सुन्दर है । लिपि संवत् १६१६ ।

संवत् १६१६ वर्ष भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे चतुर्दशी तिथौ बुद्धवासरे घनिष्ठानां त्रे आमेरमहादुर्गे श्री नेमीनाथ जिनचैत्यालये श्री राजधिराज भारमल्ल राज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसधे नंघाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतोगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनन्ददेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्री धमचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मंडला-  
चार्य श्री ललितकीर्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गोधा गोत्रे सा० माझू तद्भाया होली तत्पुत्राश्चत्वारः प्रथम सा० ठाकुर द्वि० सा० छाहड तृतीय साह थेल्हा चतुर्थे सा० चाचा । सा० ठाकुर भार्ये द्वे प्रथम डीडी द्वि० लाछि तत्पुत्राः सप्त प्रथम चतुर्विधदान वितरण कल्पवृक्ष जिनपूजापुरंदर सीलगांगेव साह तेजा द्वि० केल्हा तृतीय सा० लूणा, चतुर्थे सा० हज्यौराज पंचम साह उदा षष्ठ साह वोहिथ सप्तम सा० रेखा । साह श्री तेजा भार्ये द्वे प्रथम त्रिभुवनदे द्वि० ल्हौकन तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह लोहट द्वि० श्रंगारदे । द्वि० हठू, भार्या हरखमेद । द्वि० साह केल्हा भार्या केवलदे तत्पुत्राः पंच प्रथम सा० नारायण द्वि० नरवद तृतीय गोपाल चतुर्थ चिरंजीव सारंग पंचम साह पदार्थ । साह नारायण भाया नारंगदे, साह नरवद भार्या नरवददे तत्पुत्र चि० घीनड, सा० गोपाल भार्या गौरादे, तृतीय साह लूणा भार्या ललितादे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह हल्ल द्वि० भूणा । साह हल्ल भार्या हुलसिरी । पं० साह ऊदा भार्ये द्वे प्रथम उत्पोदे द्वि० लाडी षष्ठ साह वोहिथ भार्या बहुरंगदे तत्पुत्र चिरंजीव देवा द्वि० साह छाहड भार्या छाहडदे तृतीय थेल्हा भार्या थिल्हसिरी तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम साह हीरा द्वि० साह हेमा तृतीय साह नाथू । साह हारा भार्ये द्वे प्रथमे

द्वारः । द्वि० नौलादे । तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चिरंजीव छीतर द्वि० चि० छाजू । माह हेम भार्या हेमासरि तत्पुत्रा-  
श्रत्वारः प्रथम फलहू भार्या फूलमदे । माह डालू भार्या दाडौदेव । तृतीय नाथू भार्या नायकदे तत्पुत्रौ द्वौ  
प्रथम चि० हट्ट द्वि० चि० रूपा । चतुर्थ साह चाचा भार्या चौंसरि तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम साह नेमा द्वि० खेमा  
तृतीय साह पचायण । साह नेमा भार्या निमासरि तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह नानू द्वि० वाला । नानू भार्या  
नैगादे साह खेमा भार्या खेमलदे तत्पुत्र मोकल तृ० साह पचायण भार्या पाटमदे एतेषां मध्ये साह लेजाना  
मध्ये येन इदं शास्त्रं पांडवपुराणनामानं मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तये घटापितं दशलक्षशततोद्योतनाथं ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४७५. साइज १०×४। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पांक्तयां तथा प्रति पांक्ति  
में ३० । ३०. अक्षर । प्रति पूर्णं तथा प्राचीन है ।

संवत् १६०२ वर्षे माघमसे कृष्णपक्षे चतुर्दशीतिथौ दावडदूवाशुभस्थाने प्रोहितद्वारकेशरप्रतापे  
श्री मूलसंधे नंधाम्नाये जलात्कागणे सगस्ती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा-  
स्तपट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्त-  
तशिवमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तस्याम्नाये बीजावरग्यन्वये अजमेरा माहरोठ्यागोत्रे साह सकत भार्या नाऊ  
तत्पुत्राश्रत्वारः प्रथम साह धरणि द्वि० साह धर्मसी साह कर्मसी चतुर्थ साह आसा । साह धरणि भार्या  
हरखू तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह वील्हा, द्वि० संघभागधुरंधर जिणपूजापुरंदर साह कील्हा, प्रथम भार्या पूरा द्वि०  
भार्या लाडी । साह हट भार्या चत्वार प्रथम शीता द्वि० लक्ष्मी तृतीय तोल्ही, चतुर्थ मोल्ही पुत्र चत्वारः  
साह वोहिथ, रामादास, महेश, दामोदर, एतेषां मध्ये सा० कीलाख्येन इदं पाण्डवपुराणख्यं शास्त्रं लिखाप्य  
मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रशिष्यकमलकीर्त्तये दत्तम् ।

## २२. पार्श्वनाथपुराण ।

रचयिता श्रीपद्मकीर्त्ति । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १२५. साइज ११×५ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर  
१० पंक्तियां तथा प्रति पं.क्त में ३२ । ३६ अक्षर । प्रति शुद्ध है ।

मंगलाचरण —

चरवीस वि जिणवरसामिय सिवसुहर्गामिय पणविव अणुदिणु भावें ।

पुणु कहभुवणपयासहो पयडिमपासहो जणहमन्मिससावें ॥ १ ॥

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

सुपसिद्धु महामुणियमवरु,

तहि चंदसेणामेणरिसि,

तसु सीसु महामइ णियमघारि,

थिउसेणसंधु इह मिहयवरु ।

वयसंजमणियमइ जातुकिंसि ।

णायवत्तु गुणायरु वंभयारि !

१ जणहो मन्मिसभावें २ जाडकिंसि ३ तहो

सिग्भिभावसेणु महाणुभाउ,  
तसु पुण्वसिण्हि पउमकित्ति,  
तें जिणवरसासण भाविण्ण,  
गा खमयदोमविज्जिण्ण,  
त्तकइत्त विजयेसुकइत्तहोइ,  
जइ अग्निहि चुक्किवि किंप कुत्त,

जिण्णसेणुसीसु पुणुं तं सु जाउ ।  
उण्णणु सीसु जणु जासुचित्ति ।  
कह विग्गय जिण्णमेणहोमएण ।  
अक्खरपयजोडियलज्जिण्ण ।  
जइ सुखणहि भावइणु लोइ ।  
खमयव्वउ सुयणहिं तणिरुत्त ।

यत्ता

रिसिगुरुदेवसाएं कहिउ अमेसुविचरिउ मइ ।  
पउमकित्तिमुग्गमुग्गपुग्गवहो देउ जिण्णोसरु भिमलमइ ॥

इति पार्श्वनाथचरित्त समाप्तं ।

जयवविरुद्धं एयं णियाणव्वं जिण्णिदतुहसमए ।  
तह वित्तहयचलणकित्तिणं जउ पोमकित्तिस्स ॥ १ ॥  
इयं पासपुराणं भामयापुह्वीजिणालयादिह ।  
एवहि जीवियमरणे हरिसविसाउणपउमस्स ॥ २ ॥  
सावयकुलमिज्जंमो जिण्ण चरणाराहण कइ कहत्तं च ।  
एयइ तिण्णिजिणवरभवे भवे होंतु पउमस्स ॥ ३ ॥  
एयसयइ वाणऊरा वत्तियमासे अमावसीदिवसे ।  
लिहियं पासपुराण कइणा इह पउम णामेण ॥ ४ ॥

संवत् १६११ वर्षे अषाढ बुदि ६ दिने शुक्रवासरे आल्हणपुराथाने श्रीः मल्लिनाथ चैत्यालये श्रीः  
मूलसंघे नंघाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीः कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीः पद्मानन्दिदेवास्तत्पट्टे  
भट्टारक श्रीः शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीः जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीः प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे  
वसुधराचाये श्रीः धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये चौधरी गोत्रे साह गोपा तद्भार्या गारबंदे  
तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र साह भादा द्वि० साह महाराज । साह भादा भार्या भावलदे तयोः पुत्र चिरंजीव वृचा  
तद्भार्या बहुरंगदे । सा० महाराज तद्भार्या सैणा तयोः पुत्र सद्गुरुरूपदेशनिर्वाहक चतुर्विध दान  
कल्पवृक्ष साह घेलहा भार्या हरषमदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम चिरंजीव सुरत्राण द्वि० भीमसी एतेषां मध्ये साह  
महाराज तेनेदपार्श्वनाथचरित्रं षोडशकारणव्रतोपापनार्थं वसुधराचार्यं श्रीः धर्मचन्द्राय दत्तं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०८. संवत् १०५४ इब्ब । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति

१ गवसयणठवाणुइए २ गामं पउमस्स

में ४१×४४ अक्षर । इसमें १८ वीं संधि में प्रथम प्रति से एक कड़वक कम है ।

संवत् १४६४ वर्ष भाद्रपद २ शनीदिने श्री काष्ठासंघे माधुरानये पुष्करगणे भट्टारक श्री देवसेन देवास्तत्पट्टे श्री विमलसेनदेवास्तत्पट्टे श्री धर्मसेनदेवास्तत्पट्टे श्री भावसेनदेवास्तत्पट्टे श्री सहसकीर्तिदेवा स्तत्पट्टे श्री नेमीचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री गुणकीर्तिदेवा । श्री मदनचन्द्रदेवेन लिखित पुस्तकं ज्ञान वरणक्षयाथे पठनार्थं च । इदं पाश्वनाथग्रंथं पंडित रूपचन्द्रेण छुडाचितं पं० सांतू पासि ।

२३. पाश्वनाथचरित्र ।

रचयिता महोक्ति श्रीधर । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ६६. साइज १०×४१। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४×४० अक्षर । लिपि संवत् १५७०. प्रति शुद्ध तथा स्पष्ट है ।

मंगलाचरण—

पूरियमुअणासहो पावपणासहो एरुवमगुणमणिगणभगिउ ।

तोहयभवंगसहो पणवेविपामहो पुणु पयडोमि तैसु जि चंरउ ॥

अन्तमपाठ तथा प्रशस्ति—

× × × × × × ×

विक्रमणरिंद सुपसिद्धकालि.

सणवासी पयारसह,

कमणट्टमीहि आगहणमांस,

सिरि मसणाहु णिम्मंलु चरित्त,

पणवीससयडं गंअहो पंमाणु,

दिल्लो पट्टणि धणकणविसानि ।

पणिवि हिणं धरिसहपरिणंणि ।

विविचारिसंमोणिउ सिसिरेमांसि ।

संयल्लाम्लेगुणरियणहि दंसु ।

जाणिज्जहि पणवीसहि संमाणु ।

वत्ता

जा चन्ददिवायर महिहरस यर ता बुहयणहि दिज्जउ ।

भविथाहि भाविज्जउ गुणिहि थुणज्जउ. वरलेयहि लिहिज्जउ ॥

इय मिरिपामचरित्तं इयं बुहसिरिहरेहरेणगुणभंरय अणुमणायमणुज्जं राट्टलनामेणभव्वेण पुव्वभवंतकखहणो पासजिणिदंस च रु निव्वाणो जिणपियरदिव्खग. णो वारहमो संधा पारसम्मतो ।

आसीदत्र पुग प्रसन्नदत्ता व्याख्याप्रदत्तश्रुतिः ।

सुश्रूपादगुणैरलंकृतमना देवे गुणो भाक्तकः ।

सर्वज्ञक्रमकजयुग्मनिरतो न्यायान्वितो त्वयसो ।

जेजाख्यो विमलचन्द्ररोचिरमलकजसोभूषितः ॥ १ ॥

३०५

यस्यांगजो जनि सुधीरिहराघवाख्यो ज्यायानमदमतरुक्तिनसर्वदोषः

अत्रोतकान्वयनभोगणपाव्वण्डु श्रीमाननेकगुणरंजितचारुचेतः ॥ २ ॥

ततोभवत्सोढलनामधेयः सुतो वृतीयो वृषत मजेयः ।

धम्मार्थः मृतयेविदग्धो जित्नाधिपप्रोक्तवृषेन मुग्धः ॥ ३ ॥

पञ्चाद्रभूव शशिमंडलभ समानः ख्य तः क्षितौ चश्वरजनार्दपिलब्धमानः ।

सदृशानामृतरसायनप नपुष्टः श्री नटूलः शुभमनाक्षपितारिदुष्ट ॥ ४ ॥

तेन दमुक्तमधिया प्रविचिन्त्या चित्ते स्वप्नोपमं शेषमसागभृतं ।

श्री पार्श्वनाथचरितं दुरितु पनोदि मं क्षायकारितमितेनमुदं व्यलेखि ॥ ५ ॥

अहो जगन्नाथं लु चित्त करेवि.

रवाणकक पर्यापि मञ्जु सुणेहु.

इतिथ पखिद्वड डिल्लिहि डक,

समरत्त्वाम तुम्हह तसु गुणाई.

ससंकसुहा मर्मात्तहे धामु.

मणोहर माणि गिरंजणकामु.

जिणोसरेपायसरोयदुरेहु.

सयागुरुभत्त गिरिदुवधोरु.

अदुःखु सज्जणमुक्खपयासु.

असेसहंसज्जणमज्झि मणुज्ज.

महामज्झंतहं भावइ तेम.

सर्वंसणहं गणभासणसू.

सुहोह पयांसण धम्मयमुत्त.

दयालयवट्टण जीवणवाहु.

पिया अइवल्लहवालिहेणाहु.

भिसं िसए सुभमंतुधरेवि ।

कुभाधई सव्वई हों तह णोहु ।

एरुत्तमु णं अवइण्णडं सक्कु ।

सुरासुररायमणोहरणाई ।

सुरायले क्खण्णगाडयणामु ।

महंमहिमालड लोयहं वामु ।

विसुद्धमणोगड ित्तड सुरेहु ।

सुवं सुह ओजलहव्वगहीरु ।

विचाणियमागहलोयपयासु ।

एरिहं चित्तपयांसिय चोव्वु ।

सरोयणराहं रसायणु जेम ।

सवंधव वगमणिच्छियपूरु ।

विचाणियजिणवर आयमसुत्तु ।

खलाणणचन्दपयासणाराहु ।

..... ।

धत्ता

बहुगुणगणजुत्तहो जिणपयभत्तहो जो भासइ गुणनटूलहो ।

सो पयहि एहगणु रमियवरगणु, लंघइ सिरिहरहयखलहो ।

पंचाणुव यधरणुससयल सुअणहं सुहकारणु ।

जिणमयपहसचणु विममविसयासावरणु ॥

मृढभावरपरिहरणु मोहमहिहरणिहारणु ।

पवांवल्लिणिहलणु असमसल्लई उसारणु ॥  
 विच्छल्लविहाणपविहाणपवित्थरणु जिणमुण्यपयपुज्जाकरणु ।  
 अहिणदउणदुलसाहुचिरु, विवुहयणहं मणधणहरणु ॥ १ ॥  
 दाणवंतुतकिदंतिधरियतिरयणतकिमेणित्तं ।  
 भववंतुतकिमयणु तिजयतावणु रउ माणित्तं ॥  
 अइगहीरुत्तकि लणि गरुयलहरिदं हयसुखहु ।  
 अउधिरयणु तकिमेरुवपचय रदियत्तकिनहु ॥  
 णउदत्तिनसेणित्तं नचमयणु, ण जलहिमेरुपुणुननहु ।  
 सारिवंतु साहु जेजातणत्तं, जगिनदुल्ल सुपसिद्धु इहु ॥ २ ॥  
 अगंगकात्तिगगउडकेरुत्तकणणादहं ।  
 चोडदिविडपंचालसिधुखममालवलाडहं ॥  
 जट्टभोट्टणोवालट्टककु कणभरदुदहं ।  
 भायाणयहरियाणमगहगुज्जरपोरदुदहं ॥  
 इय एवमाइदेसेसु णिरु, जो जाणियइ नरिदहि ।  
 सो नट्टणुसाहु न वणिणयइ कह सिरिहरकउविदहि ॥ ३ ॥  
 दहलक्खणात्तिणभाणियधम्मु धुराणु वियक्खणु ।  
 लक्खणउवलक्खियसरुण परचित्तवलक्खणु ।  
 सुद्धिमज्जणुदुहयाणवणीउ सामात्तकरियत्तं ॥  
 क'हलोहमयाहिमाणभयमयपरिराहयत्तं ।  
 गुरुदेवपियरपियभक्तियरु अयववात्तकुलसिरित्तित्तं ।  
 णंदत्त सिरिनट्टणु साहुचिरु, कउ सिरिहरगुणगणनित्तं ॥ ४ ॥  
 गदिरधोसु नवजलहरुवसुरसेलुवधीउ ।  
 मलभररहियत्तनहयलुवजलणहिवागहीरत्तं ॥  
 चित्तिययरु चित्तामणिव्व तरणिवत्तेडल्लड ।  
 भाणियमणहररडवरुव्व भव यणपियत्तत्तं ॥  
 गंडीउवगुणगणमंडियत्तं परिनिम्महिय अक्खणु ।  
 जो सोवणिययइ न केउणभणु, णदुल्लुसाहुसलक्खणु ॥  
 इति श्री पार्श्वनाथचरित्रं परिसमाप्तं ।

संवत् १५७७ वर्षे आषाढ सुदी ३ श्री मूलसंघे नंघाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दा-  
 भोग्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्



शिष्य मुनि धर्मचन्द्रस्तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये पहोड्यागोत्रे साह ऊषा तद्भार्या लाड। तत्पुत्र साह फ० हू  
द्वि० गजर । फलहू भाया सफलादे साह गजर भार्या गुणै सरा तत्पुत्र पंचाङ्ग इद शास्त्र न गपु मध्ये  
लिखाप्य मुनिधर्मचन्द्र य दत्त ।

११ ३ ६ ३ ।

२४, पंचास्तिकायप्राभूत ।

मूलकर्ता श्री कुन्दकुन्दाचार्य । टीकाकार श्री अमृतचन्द्राचार्य । भाषा प्राकृत-संस्कृत । पत्र संख्या  
१४८. साइज ६।।x४ इञ्च प्रति पृष्ठे तथा सुन्दर है । विषय-सिद्धात ।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १६३७ वर्षे अषाढ बुदि १४ दिसे शनिवसरे मंगिसरे नक्षत्रे श्री मूलसधे नद्याम्नाये  
बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यव्यये मंदिरके श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री  
धर्मचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री चन्द्रकीर्तिदेवास्तदम्नाये  
खण्डेलवालान्वये गोधा गोत्रे सा० पचायण तद्भार्या पादमदे तयोः पुत्री द्वौ प्रथमे जिनपूनापुरंदर संपभार-  
धुरंधर चतुर्विध दानवितरण लपवृत्त सा० श्री नूना तद्भार्या नूनसिरि तयोः पुत्री श्रवणा प्रथम मा० वीरु  
नद्भार्या ल्हौकन, द्वितीय जिणदाम तद्भार्ये द्वे प्रथमे मरुपदे द्वि० लहुडा । तृतीय सा० चिमला तद्भार्या  
बहुरंगदे तयोः पुत्रास्त्रयः प्रथम सा० जीवा तद्भार्या जीवलदे तयोः पुत्र चि० दुर्गा द्वि० सा० डीहा  
तद्भार्या डिहिसिरि; तृतीय चि० किसनदास चतुर्थे मा० चौड्य तद्भार्ये द्वे प्रथमे चादणदे द्वि० लहुडा तयाः  
पुत्री द्वौ प्रथम चि० कौजू द्वि० चि० देशरथ । द्वितीय पूना तद्भार्या पुनसिरि । तयोः पुत्रास्त्रयः प्रथम सा०  
जादू तद्भार्या जौणादे, दि० सा० नेता नद्भार्या नेतलदे तृतीय चि० जिणदत्त द्वि० सा० कवरु तद्भार्या  
कौतिगदे एतेषां मध्ये सा० जिणदास तद्भार्या स्वरूपदे इदं शास्त्रं लिखाप्य उत्तमपत्रि य दत्त ।

११ १०८५ ६४ ३५३५ ११०८ ई. १०/१२

२५, प्रद्युम्नचरित्र ।

रचयिता महाकवि श्री सिंह सिद्ध । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १७५. साइज १२x५ इञ्च । प्रत्येक  
पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२x३५ अक्षर । प्रति प्राचीन है । पत्रों का रंग बदल गया है ।  
अक्षर मोटे हैं ।

मंगलाचरण ।

स्मदमयमनिलयहो, तिहुयणतिलोयहो, वियलयिकम्मकलंकहो ।

धुइ करमि ससत्तिण, अङ्गिरुमोत्तिण, हारकुलगयणससंकहो ॥

अन्तिम पाठ—

इय पञ्जुणकहाए पयडियधम्मसकाममोक्खाए बुहरल्हणसुव कइसीह विरइयाए पञ्जुण  
संबु भाणु अणिरुद्धेखिब्बाणगमनं गामापणारहमी संधीपरिच्छेउं सम्मतो ।

प्रारम्भ में दी हुई प्रशस्ति—

१  
हयदुरियरिणां,  
भवभयहरणां,  
सुहफलकुरुहं,  
पुण्य सत्त्वमई,

चरत्तणपया,  
पयपाणसुहा,  
३  
सर्वगिणिया,  
मुक्ताहरणा  
सुयवरवंयणी,

कङ्कणजगणी,  
मेहाजगणी,  
घरपुरपवरे,  
पिण्ड विजससहे,  
सरसइसुसरा,  
इमवज्जरइ,  
हयचोरभए,  
पहरद्धिदिए,

तःलोयइणं ।  
गिणितयकरणं ।  
चंदाच अरुहं ।  
कलहंसगई

२  
सगिणितय सया ।  
तोसिय विवुहा ।  
बहुभगणिया ।  
सुविसुद्धमणा ।  
णयगुणयणी ।

४  
त दुविहणणी ।  
सुहसयकरणणी ।  
गात्रे णयरे ।  
सुयक्रणवहे ।  
महु हो उवरा ।  
५  
फुड्ड सिद्धरुइ ।  
गिणिसमार विगए ।  
चित्तु णिए ।

धत्ता

जा सुतउ अंच्छइ तातहि पच्छइ णारिइक्कमणहारिणिया ।

सियवत्थणियत्थिय कंजयहत्थिय अक्कसुज्जसुयधारिणिया ॥१॥

सा चवेइ सिवित्ति तक्खणे,  
तं सुणेवि कवि सिद्ध जंपिए,  
कव्व वुद्धि चित्तु लज्जित,  
णावि समासु ण विहित्तं कारंउ,  
कव्वु कोइ ण कयावि विट्ठल,

क इ सिद्धचित्तहि णियमणे ।  
म इ मज्झुणिरू हिय कंए ।  
तक्कंछंउ लक्कंखेण विवज्जित ।  
संधिमुत्तंगंथहं असारंउ ।  
महु णिघट्टेणवि णासिट्ठउ ।

१ गय २ घरेवि ३ सगं ४ दुविहणणी ५ फुड्ड ।

तेण विहिणि चित्तु अच्चमि,  
अ'धुहोवि एवणट्टपिच्छिरो,  
तं सुणेवि जाजययमहासुई,

खुब्बु होवि तालहलु वंछमि ।  
गेय सुणणि वहिरोवि इच्छरो ।  
णिमुणि सिद्ध जंपह सरासई ।

घत्ता

आलसु संकिल्लहि हियउ म मेल्लहि,  
हउं मुणिवरवंसे कहामविसेसे,  
१ ता मलधारिदेव मुणिपुंगसु,  
माहवचन्दु आसि सुपसिद्धउ,  
तासु सीसु तवतेयदिवायरु,  
तक्कलहरि मंकोलियपरमउ,  
जासु भुवणी दूरं तरु वंकिवि,  
अमयचन्दु णामेण भडारउ,  
सरिसरणंदण वणसंछणणउ,  
वंभणवाडउ णामें पट्टणु,  
जो भुंजइ अरिणरखयकालहो,  
जासु भिच्चु दुज्जणमणसल्लणु,  
तदिं संपत्त मुणीसरु जावहिं,

मब्भु वयणु एउ दिदुकरहिं ।  
कव्वु किंपि तं तुहुं करहिं ॥ २ ॥  
णं पच्चक्खु धम्म उवससु दसु ।  
जो खमदमजमणियमसमिद्धउ ।  
वयतवणियमसील रयणायरु ।  
वरवायरणपउरपसरियपउ ।  
न ठिउ पच्छणणु मयणु आंसकिवि ।  
सो विहरंतु पत्तु बुहसारउ ।  
मठविहारजिणभवणरवणणउ ।  
अरिणरणइसेणदलवट्टणु ।  
रणधोरियहो सुयहो वल्लालहो ।  
खत्तिउ गुहिलपुन गहि भुल्लणु ।  
भवलोउ आणंदित्तवहिं ।

घत्ता

णियगुणअपसंसेवि मुणिहि णमंसवि, जो लोएहि अट्टगुच्छियउ ।  
णयविणयसमिद्धे पुणु कइसंद्धे, सो जइवरु आउच्छियउ ॥ ३ ॥

×

×

×

×

×

इय देवय णंदणु अविचण जणमणायणाणंदणु ।

बुइयणजणपयपंकय छप्पउ भणइ सिद्धु परमप्पउ ॥

अन्तिम प्रशस्ति—

कृतं कल्मषवृक्षस्य शास्त्रं शास्त्रं सुधीमता ।

सिंहेन सिंहभूतेन पापसामजभंजनम् ॥ १ ॥

कामस्य काम्यं कसनीयवृत्तेः वृत्तं कृतं कीर्तिमतां कवीनां ।

भवेन सिद्धेन कवित्वभाजी, लाभाय तस्याश्च सदैव कीर्ति ॥ २ ॥

सव्वण्ह सव्वरदसी भववण्हणो, सव्वमारस्स मारो ।  
सव्वाणं भववयाणं समणमगहो सव्वलायाण ससी ॥ ३ ॥  
सव्वेसु वत्थुरुवं, पयडणकुसलो सव्वणाणा व लोई ।

सव्वेहिं भूययाणं करुण विरयणो सव्वयालं जयो सो ॥ ४ ॥  
जं देवं देवदेवं अइसय सहिदं अगंदारोणिहंतं ।  
सुद्ध सिद्धोद्धरत्थं कलिमलरहिदं भाव भावाणु सुक्कं ॥  
णाणायारं अणंतं वसुगणगणिणं असहीणं मुणिच्चं ।  
अम्हाणं तं अणिदं पविमलसुहिदं देउ संसारपारं ॥ ५ ॥  
जातं मोहाणु वंधं सररुहणिलए किं तवत्थं अणत्थं ।

संतं देहत्थपारं विवुहविरमणं खिज्ज देदीयमाणं ॥

वाए सोए पवित्त विजयदु भुवणे कव्ववित्तं विचित्तं ।  
दिज्जं तं जं अणंतं विरयाद सुइरं णाणलाहं विदितं ॥ ६ ॥

### घत्ता

जं इह हीणादिउ कइमि साहिउ, अमुणिय सत्थपरंपरइं ।  
तं खमउ भट्टारी विहुवणसारी वाए सरिसच्चायरइं ॥ ७ ॥

जा णिरुसत्तहंणि जिणवयणविणिग्गय दुहविणासणी ।  
होउ पसरण मज्झु सा तुहयरि इयरणकुमइ णासर्णा ॥ ८ ॥  
परवाइयवायाहरू अंच्छम्मु, सुअकेवलि जो पच्चक्खु धम्म ।  
सो जंपउ महामुणि अमियचन्दु, जो भव्वणिवह कइरवहि चन्दु ॥  
मलभारि ११ पयपोमभसलु, जंगम सरसइ सच्छत्थ कुसलु ।  
तइ पयरउ णिरु उण्णइ मयाणु, गुज्जरकुलणह उज्जोय भाणु ॥  
जो उहय पवरवाणीविलासु, एवं विह विउसहो रल्लणासु ।  
तहो पणोइणि जिणमइ सुहयसील, सम्मत वातं णं धम्मलील ।  
कइ सीहु ताहिं गव्वमंतंरम्मि, संभन्निउ कम्मलु जइ सुरसरंमि ॥

१ सधेन २ सव्वदंशी ३ सव्वेसि ४ गणितं ५ सदेहयारं ६ सीए ७ सव्वापरइं ८ चिरु ९ भंगि १० कइरिहिव

११ उगायमाणु १२ जि णररुद्धसरम्मि ।

जण वच्छलु सच्चणजाणि हरिसु,  
उप्पणु सद्दीयरु तासु अबरु,  
साहारणु लहु वउ तासु ज्ञाउ,  
तडो<sup>२</sup> अणुवउ मह एउवि सु सारु,  
जावच्छहि चत्तारि सुभाय,  
एक्कहिं दिणि गुरुणा भणिउ व्रच्छ,  
भोवाल ! सरासइ गुणसमीह,  
चउविह पुसित्थर सोहभरिउ,  
कइ सिद्धहो विरयंतहो विणासु,  
महु वयण करेहि किं तुत्र गुणेण,

सुइ<sup>१</sup> सत्थविबह वइराय सारिसु ।  
णामेण सुहंकरु गुणहं पवरु ॥  
धम्मणरत्तु अइ दिव्वकाउ ।  
सविणोउ विणंसरु कुसुमसारु ॥  
पर-उवयारिय जणजणियराय ।  
णिमुणंहि च्छण्यय कइरायदच्छ ॥  
किं अविणोवइ दिणगमहि सीह ।  
णिवाहहि एउ पज्जुण चरिउ ॥  
संप्पणउ कम्म वसेण तासु ।  
संतेण कूउ छाया समेण ॥

### घत्ता

किं तेण पइवइ बहुधणई, जं विहडियहण उद्धरइ ।  
कव्वेण तेण किं कइयणेण, जं गच्छइल्लहं मणुहरइ ॥  
गुरुणो पुणो पउत्तं पवियप्पं पुत्त माधराहचित्ते ।  
गुणिया गुणं लहे दिणु जइ लोओ दूसेणं थवइ ॥  
को चारइं सविसेसं खुहो खुहत्तणं प वियरंतो ।  
सुवणो छुडु मज्झत्थो असुणं तोणियसंहावंच ॥  
संभवइ बहुयविग्गं मणुयाणं समय मगलगाणं ।  
मा होहि कज्जसिद्धलो विरयहि कव्वं वरं तोवि ॥  
सुह असुहं णं वियाणावि चित्तं धीरेवि तेजए वण्णा ।  
परकज्जं परकव्वं विहडंतं जेहि उद्धरियं ॥  
अमियमइंदगुरुणं आपसं लहेवि मत्ति इय कव्वं ।  
णियमइणा णिम्मविणं एदउ ससिदिणासणी जाम ॥  
को लेक्खइ सत्थस्से दुज्जणं पिअ सुहयरं ।  
सुयणं सुद्ध सहावं करमउ लिरए वि पत्थासि ॥  
जं किंपि हीण अहियं विउसा सोहंतु तं पि इह कव्वे ।  
धिट्ठत्तयेण रइयं खमंतु सव्वेवि सुह गुरुणो ॥

अथ संवत्सरोऽस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्दः संवत् १५८७ वषे माघवृद्ध ५ सूर्यवासरे कुरुजांगलदेसे श्री सुलतान बख्शसहिबिजयराज्यप्रवत्तमाने श्री सहारणपुर महादुर्गे निजर्द्धिर्वाद्धप्रहंस्तत स्वर्गो तत्र श्री सर्वज्ञ विहारी जिनोपदिष्टतत्त्वकथाकथनसारे श्री काष्ठासंघे माथुर न्वये उभयभाषाप्रवीण-  
नपोनिधि श्री उद्धरसेनदेवास्तत्पट्टे सिद्धांतजलसमुद्रवित्रेककलाकमलिनीविकासनैकादणभणिः भट्टारक श्री देवसेनदेवास्तत्पट्टे कविविद्याप्रधानचरित्रचूडाभणि भट्टारक श्री दिमलमति विमलदेवास्तत्पट्टे अनेकविद्यानिधान  
यमनियमस्वाध्यायध्याननिरतः भट्टारक श्री घम्मसेनदेवास्तत्पट्टे छत्तीसगुणनिलय पंचमहाव्रतधरणाधौरेयान्  
भट्टारक श्री भावसेनदेवास्तत्पट्टे काममातंतं मृगेन्द्रान् भट्टारक श्री सहस्त्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे सिद्धांत अध्यात्म  
भावसद्मान् निहतछद्मान् भट्टारकहीनदीनउद्धरणसमर्थान् कलितानेकशास्त्रार्थान् भट्टारक श्री गुणकीर्तिदेवा  
स्तत्पट्टे संयमविवेकनिलयान् विबुधकुलतिलकान् भट्टारकलघु भ्राता तथा श्री यशकीर्तिदेवास्तत्पट्टे वाचा  
शीतलान् भट्टारक श्री मलयकीर्तिदेवा तत्पट्टे वादीभकुंभस्थलविदारणैकपंचमुखान् लब्धवानेकसुखान् त्रयोदश-  
विधचारित्राचरित्रनिर्जितकरण भट्टारकश्री गुणभद्रसूरिदेवः एतेषां आचार्यान्नाये अमोक्त न्वये भूपणे गगगोत्रे  
जालहयहाडिये कलसौरेवालविहटवास्तव्यं तथा मणि उद्योतकारीपदसमाश्रितशीलगांगेव परोपकारी साधु  
लाधा, तस्य भार्या शीलशालिनी गुणमालिनी साध्वी साहणही । तस्य पुत्र २ प्रथम पुत्र पचमी उद्धरण धीरु  
सन्नेत्रकृतनितविभवभारान् साधू मल्लू तस्य भार्या शीतलवचनश्रवणसमर्थं मुनिगणअहारदान दाइकी  
साध्वी करमचन्दही तस्य पुत्र विज्ञानकलासंयुक्तान् मातृपितृपदसक्तान् साह वसावणु तस्य भार्या साध्वी धन्ने  
पुत्र २ । प्रथम पुत्र साधु गढमल्लू, द्वितीय कटारू, साधु लाधा द्वितीय पुत्र जिनप्रतिष्ठाजिनमहोत्सव  
करणकारणभर्ते स्वरावभारान् देवलोकगतः चौधरी बलिया, तस्य भार्या पुण्यपावनी साध्वीमायरही तस्य  
पुत्र ३ प्रथम पुत्र जिनशासनप्रभावकान् जिनपूजा श्रयनाद्रिकरणकारण भर्तेश्वरावतारान् आश्रितजन कल्प  
पादान्, पंचादितसभाश्रंगारहारान् चौधरी भेजू तस्य भार्या शीलतोयतरंगिणी विनयवागेश्वरी साध्वी  
कामेही । तस्य पुत्र ३ प्रथम पुत्र सदा सदाचारविचारसारपाहंगतान् साधु रावणु तस्य भार्या साध्वी इच्छाही  
द्वितीय पुत्र साधु तेजू । चिरंजीवि उगरदासु तृतीय पुत्र । चतुर्थ पुत्र चि० वेगराग । साधु बलिया द्वितीय  
पुत्र सुजनजनमनरंजन निजसरोवरमंडल कुमदिनीविकासनैकमणिउद्योतकान् चतुर्विधदानवितरण श्री  
यांसावतारान् भूपतिसभाश्रंगारहारान् चौधरी आसू तस्य भामिनी रूपेण निर्जितकामकामनी गृहभारधरा-  
धारकी जिणचरणकमलसंसेवन् चंचरोवन कारणी दानशीलप्रियंवदा साधू जिणदासही तस्य पुत्र विज्ञानकला  
संयुक्तम् चिरंजीवि कालदासु भार्या मोलंडही । साधु बलिया तृतीय पुत्र रत्नचक्रु डिडीरे पिंडपाण्डुरजसुः  
पुण्डरीकखंडमंडितत्राहोडमांडमाण्डयान् निखिलगुणालंकृतशरीरान् सः चौधरी चूहड्ड । तस्य धनिता  
शीलतोयतरंगिणी विनयवागेश्वरी साध्वीरणमलही इदं प्रद्युम्नचरित्रं वाई तोलही उपदेशेन साधू चौधरी  
आसू तस्य भार्या साध्वी जिणदासही लिखापितं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १७१. साइज ११×४३ इअ प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर । प्रति प्राचीन है अक्षरों का रंग घिलमिल होने लग गया है ।

संवत् १५६५ वर्षे भाद्रपद सुदी १३ दिने श्री मूलसंघे नंदाभाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्तकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र-  
देवास्तपट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये अजमेर वास्तव्ये  
खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे सा झालाण तस्य भार्या पीथी तयोः पुत्राः साह पट्टिराज द्वितीय सा० सुरजिन  
तृतीय साह ईमर । साह पट्टिराज भार्या पलंसिरी तत्पुत्र साह घणराज साह सुरजिन भार्या दानशीलवंती  
सुनखती । साह घणराज भार्या लाडी तत्पुत्र पारस द्वितीय लोहर एतेषां मध्ये साह सुरजिन भार्या पतिवृता  
विगुणयुक्ता सुनखत इदं शास्त्रं प्रद्युम्नचरित्रं लिखाप्य दशलाक्षणिक व्रतोद्यापनार्थं अजिका विनयश्रीवै दत्त ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६५. साइज ११।।x५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति  
में ५०x५४ अक्षर । प्रति प्राचीन है तथा पूर्ण है ।

संवत्सरे १५१८ वर्षे शाके १३८३ पञ्चवदमध्ये सव्वंधारिनाम्नि संवत्सरे उन्नायने ज्येष्ठ मासे  
शुक्लपक्षे ६ पण्ड्यां तिथौ शुक्रवासरे घटिका ४१ पुष्यनक्षत्रे घटिका ४६ सिद्धिनाम्नियोगे घटिका ४५ श्री  
नैणवाहपत्तने सुरत्राण अलावहोन राज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुन्दाचार्यान्वये  
भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा । भट्टारक श्री  
पद्मनन्दिदेवास्तत्शिष्य मुनि मदनकोत्तिदेवास्तत् शिष्य मुनि नेत्रानन्दिदेवा । तत् शिष्य ब्रह्म गाल्हा खण्डेल,  
वालान्वये साह राऊं तद् भार्या साध्वी रावश्री तयोः पुत्राः साह छाजू कर्मसी धर्मसी । साह छाजू तद् भार्या  
साध्वी छाहिणी तस्य पुत्राः साह धाना गंगा, गजा, एतेषां मध्ये साह कील्हा तद् भार्या साध्वी पतिव्रतानार्थं  
पुत्रपोत्रकल्याणवृद्धिप्राप्त्यर्थं इदं प्रद्युम्नशास्त्रं लिखाप्य ब्रह्मगाल्हा सुहस्ते प्रदत्त ।

२६. बाहुबलिचरित्र ।

रचयिता महाकवि भनपाल । भाषा अपभ्रंश । पृष्ठ संख्या २७२. साइज ६।।x३।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ  
पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३३x३८ अक्षर । रचना संवत् १४५४ लिपि संवत् १५८६ ।

प्रारम्भिक पाठ—

सिरिरिसहणाह जिणपयजुयलु पणविषि एसियकालिमलु ।

पुणु पढमकामए वही चरिउ, आहासमिक यमंगलु ॥

प्रारम्भ में दिया हुआ कवि परिचय—

गुज्जरदेसमज्जि णयवट्टणु,  
वीसलएउ राउ पयपालउ,  
तहि पुरवाढवंसजायामल,  
पुणु हुउराय सैट्ठि जिणभत्तउ,

वसइ विउलु पल्लण पुरु पट्टणु ।  
कुवलयमंडलु सयलु व मालउ ।  
अगणियपुव्वपुरिसणिम्मलकुल ।  
भोवइ णामें दयगुणजुत्तउ ।

सुहृद उ तहो रादणु जायउ,  
तहो सुउ हुउ धणवालु धसयले,  
एतहि तहि जिण तित्थणमंतउ,  
सिरिपहचन्दु महागणिपावणु,  
णं वाएसरि सरिरयणायरु,  
दिट्ठु गणीसैं पयपणवंतउ,  
सुणणा दिट्ठउ हत्थु विणोएं,  
मं नुदेमि नुहकयमच्छयकरु,  
सूरि वयणु सुणि मणु आणादिस,  
पढिए सत्थगुरु पुरउ अणालस,

गुरु सज्जणहं भुअणि विक्खायउ ।  
परमप्पय पयपंकपरउ अलि ।  
महि भमंतु पल्लणपुरे पत्तउ ।  
बहु सीसाहं सहि उणविरावणु ।  
सुमयकणयसुपरिक्खे णणायरु ।  
बुहु धणवालु विवुह जणभत्तउ ।  
हो सिवियक्खणु मज्झुपसाएं ।  
महु सुह णिमाउ घोसहिं अक्खरु ।  
विणएं चरणजु अलुमइं वंदिअ ।  
हुअजससिद्धि सुकइ आणावस ।

### घत्ता

पट्टणे खंभायन्वे, धारणायरि देवगिरि ।

मिच्छामयविहणंतु गणि पत्तउ जोइणिपुरि ॥१॥

तहि भव्वहिं सुमोच्छउ वि हियउ,  
महमंदसाहि मणुरंजियउ,  
गुरु आयसैं मइं किउ गमणु,  
पुणु दिट्ठउ चन्दवाडु गयरु,  
णं णाय कणयकसवट्टपउ,  
उत्तंगु धवल सिरिकयकलसु,  
मइंगपिय लोपउ जिणभवणु,  
सिरि अरुहविउ पुणु वंदियउ,  
हो किणेहेंसि विणं गयइं,  
भो भो परमप्पय तुहुं सरणु,

सिरिरयणकिंतिपट्टेणि हियउ ।  
विज्जहिं वाइय मउ भंजियउ ।  
सूरिपुरि वंदिउ णेमिजिणु ।  
णाररयणायरु णं मयररु ।  
णं पुहइ रमणि सिरि सेहरउ ।  
तहि जिणहरु णं वासहरजसु ।  
बहु समणालउणं समसरणु ।  
अप्पाणउं गरहिउ णंदियउ ।  
विहडंगइं किं सु हिं सगयइं ।  
महु णासउ जम्मजरामरणु ।

### घत्ता

पुणु मुणिधरचरणणमंसियइं, अच्छमि जा तहि एकक्खणु ।

ता पत्तउ सिरिसंवाहिवइ, दिट्ठउ वासद्धरु सुअणु ॥ २ ॥

जायववेंस पडणिहिउडुपहु,  
तहो रांदणु गोकणु संजायउ,

आसि पुरिसु सुपांसद्धउ जसहरु ।  
संभरिराय मंति विक्खायउ ।



तहो सुउ सोमएउ सोमाणणु,  
 तहो पेमसिरिभज्ज विक्खाइय,  
 एयहि सत्त पुत्त संजाया,  
 पढमु ताहंदय वल्लो सुरतरु,  
 जो दिवहाडिय चाउ पसिद्धउ,  
 पुणु वीयउ परवारि सहोयरु,  
 तइवउ सुउ पल्लाउ सलक्खणु,  
 पुणु तुरियउ महाराउ विमुद्धउ,  
 पंचमु भामराउ मोहायरु,  
 सत्तमु सयल वंधुजण वल्लहु,  
 एयहि सत्तहि सुपहि पसाहिउ,  
 जो पढमउं एंदणु वासाहरु,  
 पेक्खे विणु सारंग एरिदे,  
 रज्जधुराधरु शियमाणजाणिवि,  
 अप्पि विदेसु कोसुधणु परियणु,

कुणयगइंदविदपंचायणु ।  
 पिययमसीलगुणेहि विराइय ।  
 एंजिएगिरए तव विक्खाया ।  
 संचाहिउ एामे वासद्धरु ।  
 एट्टमंजु एिवमंतसमिद्धउ ।  
 विणयंकिउ हरिराउ मणोहरु ।  
 सजायउ आणादिय सज्जणु ।  
 गुणमंडिय तणु हुउ जसलुद्धउ ।  
 छट्टउ तणउ एाम रयणायरु ।  
 संतणु एाम जाउ अइ दुल्लहु ।  
 सोमएउ-ए एयहि जिणहिउ ।  
 सयलकलाभउ एं छणससद्धरु ।  
 बाहुवाणकुल कइरवचन्दे ।  
 मंतपयम्मिठावउ सम्माणिवि ।  
 भुंजइ रज्जु सोक्खु णिच्चलमणु ।

यत्ता ।

सो सुअणु गुणायरु बुहविहियायरु, दुत्थियजणणवकण्यतरु ।

जिणपयपंकयमहुयरु सिरिवासद्धरु, जा अच्छइ तहि दुरिय हरु ॥ ३ ॥

ता-पेक्खवि पंडिय धणवालें,  
 भो सम्मत्त रयणरयणायर,  
 विणयगुणालंकिण शिम्मछर,  
 करि वि पइट्ट भवजणु रंजिउ,  
 धणएउं तुहुं गुरुभात्तिकयायर,  
 जिणवरपायपउरहमहुयर,  
 दुस्समकालपहाधगुरुक्कउ,  
 दुज्जणपउरुलोउ अकयायरु,  
 असहाउहो जगिकोविणमणणइ,  
 धम्महीणु जणु जहिं जहिं गच्छइ,  
 ते कज्जे धम्मायरु किज्जइ,  
 इय धम्महो पहाउ उर-घुट्टउ,

विहसि वि भणिउं बुद्धिविसालें ।  
 वासद्धर हरिरायसहोयरु ।  
 पंडियजणमण रंजणकोछर ।  
 जें तित्थयरगोत्त आविज्जउ ।  
 मइसुरकिंति तरंगिणि सायर ।  
 सयल जाव रक्खणसुदयायर ।  
 जिणवरधम्ममगिजणुवंकउ ।  
 विरलउ सज्जणु गुणांवाहियायरु ।  
 धम्मपहावें लवभइ उणणइ ।  
 तहिं-तहिं-सम्मुहुं को विण पच्छइ ।  
 धम्महीणु ए कयाविहविज्जइ-  
 णिसुणिवि वासाधर-संतुट्टउ ।

घत्ता

पुणु जंपिवि पियचायए महरु, तहि गुरुचरणगों ठियउ ।

बहु त्रिणएसिरि वासद्धरेण, कइ धणवाकउ . पत्थियउ ॥ ४ ॥

जिणपय पंकय इंदिदरेण,  
सम्मत्तरयणेरयणायेरेण,  
भो किं अविणोएं गमहिं कालु,  
करि कवु मणोहरसच्छचित्त,  
जसु णामइं णासइ णिहिलु दुरिउ,  
जइ असणोवरि तं वोळु भवु,  
तुहुं चिरयहि भव्व मणाहरामु,  
किं विज्जए जाएण होइ सिद्धि,  
किं किवि णएण संचिय धरोण,  
किं णिवज्जलेण घ्रणगज्जएण,  
किं अप्पणेण गुणकित्तेणेण,  
किं विप्पिएण पुणु रुंसएण,  
किं मणुयत्तएि जं जणि अभवु.  
इय वयणसुणि वि संघादि वासु,  
भो कुण मि कवु जं कहिउ मम्म,  
इउं करमि कवु वुइजणियहासु,  
णालोयउ पवयणु पयसुअंगु,

आयम पुराण सुइमदिरेण ।  
कइ पत्थिय पुणु वांसाहरेण ।  
सुइ तटु थुणहिं जिणुस मिमालु ।  
जिणचक्किअम कह अइविचित्त ।  
चाहुवलि कामएवहो चरिउ ।  
तइ जिण तिलउ वरि सहइ कवु ।  
पद्धदियावंधेसइवामु ।  
किं पुरि सजेणण लद्ध लद्धि ।  
किं णिणोहे पियसंगमेण ।  
किं सुइहे सगर भ वजएण ।  
किं अविचेएं त्रिउ सत्तेणेण ।  
किं कव्वे लक्खणदूसिएण ।  
किं बुद्धिए जाएणरउ कवु ।  
धणवालु पर्यपइ त्रियसियासु ।  
गुरुपणहं सह एं किं असज्जु ।  
तुच्छमइं णपयडइ जसपयासु ।  
णउ लद्धउ मइकइयणहं संगु ।

घत्ता

वायरणमहो बहि दुत्तरु, सइलहरि विच्छएणउं ।

णाणाभिहाणजल पूरियउ, णउइउ पारुत्तिएणउं ॥ ५ ॥

वाएसरि कीलासरयवास,  
सु अपवणुहावियकुमयेरेण,  
महि मंडलि वणिणउं विवुइवंदि,  
जइ णेंद णामु जइयदुणलक्खु,  
सम्मत्तारु वुसु रायभवु,

हुअ अ सि मह कइ भुणिपयास ।  
कइ चक्कवट्टि सिरि धोरसेणु ।  
वायरणकारि सिरि देवणादि ।  
किउजेण पसिद्ध सवायलक्खु ।  
इंसणपमाणु वरुणयउ कवु

મિરિ વજ્રસૂર ગણિગુણિહાણુ,  
મહસેણ મહમંદ વિતંસમહિત,  
રવિસેણે પલમચરિત વુત્ત,  
મુણિ જહિંલ જહત્તણિવાણથુ,  
દિણયરસેણે કંદપ્પચરિત,  
જિણપાસચરિત અહસચસેણ,  
અમિયારાહણ ચિરહય ત્રિચિત્ત,  
ચંદ્રમહ ચરિત મણોહિરામુ,  
ધણયત્તચરિત ચહવગ્ગામ્મારુ,  
મુણિ સોહણંદ મહત્થવાસુ,  
ણવચારણેહુ ણરદેવવુત્ત,  
સિરિસિદ્ધસેણ પવચણત્રિણોત,  
ગાંવિદુ કદં તંસણકુમારુ,  
જયધવલ સિદ્ધગુણમુણિંભેત,  
વર પલમચરિત ફિત સુકદ સેટિ,

વિરહિત મહદ્ધદંસણપમાણુ,  
ધણણાય સુત્તોચણ ચંરિત કહિત.  
જિણસેણે હરિવંસુ વિં પાવિત્તુ.  
ણવરંગ ચરિત ચંદણુ પયથ્થુ.  
વિત્થરિત મહિંહિ ણવરસહં ભરિત.  
વિરહિતે મુણિ પુંગવં પલમસેણ.  
ગણિ અવંસેણ ભવદોસચત્ત.  
મુણિ વિલ્લુસેણ ફિત ઘમ્મુ ધામ્મુ.  
અવરેહિં વિહિત ણાણાપયારુ.  
અણુપેહા કદ સંપ્પણાસુ.  
કદ અસગવિહિત વીરહોચરિત્ત.  
જિણસેણે ચિરહિત આરિસેત.  
કદ રચણ સુમુદ્ધો લદ્ધયારુ.  
સુચસાલિહત્થ કદજીવ દેવ.  
હય અવર જાય ધરવલ્લય વીટ.

ધત્તા

ચલમુહું દોણ સચંભુકદ, પુણ્યંતુ પુણ વીરુ મણુ.

તે ણાણદુમણિવજ્જોયકર, હત્ત દીવોવમુહાણુ ગુણુ ॥ ૬ ॥

તં ણિસુણિવિ વાંસાહરુ જંપદ,  
જહ મયંકુ ફિરણહિં ધવલહ ભુવિ,  
જહ ચયરાત ગયણે ગમુ સહજહ,  
જહ કપ્પયરુ અમિયંફલકપ્પદ,  
જસુ જે ત્તિત મંદ પંસરુ પંવદ્દહ,  
હય ણિસુણિવિ સંઘાહિવ વુત્તત,  
તુમ્હ મત્તિ મારેણે દાયવર,  
પર દુજ્જણ મંદ મણંથિત કાયરુ,  
ફુહિલુ ગમણુ પરહિંદ ણિહાંલત,  
અહ ૫હ ગામિત પરદુહ દરિસત,  
ગયરસુ જહવાઈવ દુરાસત,

ફિં તુંહં હુહચિતાલુ સંપદ.  
તોલજ્જોત ણ છંદહ ણિયદ્ધવિ.  
તોસિહંહિ કિ ણિયકમુ વજ્જહ.  
તો કિં તરુ લંજ્જહ ણિય સંપદ.  
સો તેત્તિત ધરણિય લે પયદ્દહ.  
કદણાધણવાલેણ પલ્લત્ત.  
ચિરયામ કામચરિત ગુણસાયર.  
ચેલહુ ણ છુદ્દહ ગયણિણિ સાયરુ.  
ણચણાયણ દુજ્જીહુ વિસાંલત.  
ણિદ્ધરુ પિસુણુ ભુચ્છંગમ સંરિસત.  
દોસાયરુ રવલસુ વપલાસત.

णिबु को वि जइ खीगहि सिचइ.  
उच्छु को विजइ सत्थे अखंडइ,  
दुज्जण सुअण सहावे तप्पसु,  
अर्हातइ दुज्जण माविहडउ,  
जह गो सीरु अगमल दरे.  
जह रामउ पडु वत्थु गिरिक्खड,  
अहसो दोसु लेउ जो पेछइ,

तो विणमो कहु वत्तण सुचइ ।  
तो विणसोमहु रत्तण छंडइ ।  
सूरु तवइ ससहरु सायरु ।  
जे हों तें सज्जणगुण पयइ ।  
रात्रिण तुंगए दिण सुसमउ कतारें ।  
तह खल सगें सु अणु परिक्खड ।  
णिव्वणितण महु अरि कहि अच्छइ ।

वत्ता

गुरु लहुवण सवित्तरय, सवणदिहियर विमलपह ।  
वर पयत्थ अत्थगलिय, पुण लळ्ळिणंसु कहि कहि ॥ ७ ॥

अन्तम पाठ—

चउविहसंघमुद्धरण, वयणामय गीणिय विंसु ।  
पहचन्दु सुकंठु धणाहिबहा वासद्धरावयरु जसु ॥

इय सिरिव हुवालिदेववरिए सुहडएव तणय बुद्धणवाल विरइए सिरि वासद्धरणामकिए वाहुचलि-  
देव णिव्वाण गमणो णाम अट्टरामो परिछेउ समत्तो ।

दिग्नाथोद्गारस्तुतं विततयशो मंडनस्याभयं ।  
राज्यं लक्ष्मीनिकाप्यं गुणमणिनिधये रमचन्द्राय दत्त्वा ॥  
सारंगक्षोणिपानार्पितमवपदश्रीपतेन्याससिधौ ।  
व्याजाद्वासाधरस्यग्धिरमकृतगुरु स्वर्गतोभ्येत्य पुण्यात् ॥ १ ॥  
यावत्सागमेखलानुसुमती यावत्सुवर्णाचलः,  
भवन्नीरीकुचसंकुलः खममितं यावच्चतत्त्वाचितं ।  
सूयाधन्द्रमसौ च यादमितो लोकप्रकाशोद्यतौ,  
तावन्निन्दतु पुत्रपौत्रसेहितो वासाधरः शुद्धधीः ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

सिरिणेमिणहजिणपयजुयलु भत्तिए णविवि जमुत्तसु ।  
तच्चं सुवभवसिंघाहवहो भासम किपि कुलकम्मु ॥

जंवूदीविभेरहवि संतरि,

गिरिसरिसीमारमणिरंतरि ।

અંતરવેદમઠિમ ધણરિદ્ધત,  
 વીરસ્થાણિહપ્પત્તિ પવિત્તત,  
 સૂરસેણુ ણગ્ગવદ્ધ તદ્ધો ણંદણુ,  
 તદ્ધો પદ્ધવયપિયપાણપિયારો,  
 દસદસારતદ્ધિ ણંદણજાયા,  
 સાયરવિજત પદ્ધસુત વિણીયત,  
 તદ્ધયદ્ધઅમિયાસત સિરિવલ્લહુ,  
 વિજતણામુ પંચસુ સુદ્ધ વદ્ધણુ,  
 સત્તસુ ણામ પસિદ્ધ ઉધારણુ,  
 સુત અદ્ધિચંદુણવસુ પુણુ જાણહુ,  
 ઇયહં લહુઅ કોંતિમહીવર,  
 સમુદવિજત સૂરી પુરિ થાપ્પત,  
 તદ્ધો સુત રોહિણેત અગિગંજણુ,  
 તદ્ધો સંતાણ કોઢિકુલ લક્ખવદ્ધિ,  
 પુણુ સંભરિ ણરિંદ મહિસુંજિય,  
 આસવંસુ ચહુવાણુ પુદ્ધપહુ,  
 પહુ ગણપત્તિ હુઅં ધરણીયલિ,  
 સાહુણામ ગોકણુમંતી તદ્ધુ,  
 હુત સંભરિ ણરિંદુ મહિવાલત,  
 સોમદેવ તદ્ધો મંતિ મણોહરુ,

તદ્ધિ કાવિદ્ધવિસત સુપસિદ્ધત ।  
 સૂરીપુરુ જણપરિપાલંતત ।  
 અંધયાવદ્ધિરાત રિહમહણુ ।  
 ણામ સુદ્ધદા દેવિ મહારી ।  
 વીરવિત્તિતદ્ધુ અણવિક્કયાયા ।  
 પુણુઅવલોહુણામ હુત વીયત ।  
 પુણુ હિમવંતુ તુરંત જણદુલ્લહુ ।  
 છદ્ધત અચલુરિંદ સંકંદણુ ।  
 પુણુ અદ્ધમત તણુમ્મત પૂરણુ ।  
 દદ્ધમત સુત વસુપ્પમાણહુ ।  
 લાવણે ણિવિજય અમરદ્ધર,  
 ચંદવાહુ વસુદેવહો અપ્પિત  
 દેવદ્ધણંદણુ અણુ જણદ્ધણુ ।  
 સંજાયા કેવલિ પન્નવક્કવદ્ધિ ।  
 જાયવવં સુતમ્મત તે રંજિય ।  
 તદ્ધુ મંતિત જદ્ધવંણિજ જસરહુ ।  
 આસાતરિ સુરિપય પંકય અલિ ।  
 જિણવરચરણં મોરુહ મહુલિહુ ।  
 વરુદ્ધદેવ ણામ પયપાલત ।  
 સયલકલ્લ લંકિત ણં સસહરુ ।

વત્તા

પુણુ સારંગુ ણરિંદુ અમયચન્દુ તદ્ધો ણંદણુ ।

તદ્ધોસુત હુત જયચંદુ રામચંદુ ણામેં પુણુ ॥ ૧ ॥

ણિવસારંગરવિજ સમયંકિત,  
 ણિયપદ્ધુરજ્જ મારાદ્ધકંવરુ,  
 એકુજિ પરમ્પત્તિ જો ક્કવદ્ધ,  
 જો તિકાલ રયણત્તત અંચદ્ધ,  
 જો પરમેદ્ધિ પંચ આરાદ્ધદ્ધ,

વાસાદ્ધકમંતિત-ણીસંકિત ।  
 વિવુદ્ધવિદંતરુ પોમણવંવરુ ।  
 વે વવહાર સુદ્ધણયમાવદ્ધ ।  
 વ : ણિયરુદ્ધ કહવિ ણ મુચ્છદ્ધ ।  
 જો પંચગમંતમહિ સાદ્ધદ્ધ ।

जो मिळत पंच अवगणण्डं,  
जो सत्त'गु रज्जु सुणि हालड,  
दायारहुं गुणसहरत्तच,  
अट्टमूलगुणपालणतप्परु,  
अट्टसिद्धगुणगणसंभरण्डं,  
णवविहपुणपत्तदाणायरु,  
णवरसचरित सुणइ वरकाण्डं,  
एथारह अंगइ मणि इच्छइ,  
चारहसावय वय परिपालइ,  
चउदह कुलपक्खमु उवएसइ,  
चउदह मंगण वित्थरु जोवइ,

छक्कम्महि जो दिणिदिणिगम्मइ ।  
सत्ततच्च सहइ रसःलइ ।  
सत्तवसणे जो कहिवि णात्तउ ।  
सहंसणअट्ट'गरयणधरु ।  
अट्टदव पुज्जइ जिणवरणइ ।  
णवपयत्थ सुपरिक्खणायरु ।  
दहलक्खणधम्महि रइ म'णइ ।  
एथारह पडिमाउ णियछइ ।  
तेरहविहचरित सुणिहालइ ।  
चउदहविह पुव्वहि मणु वासइ ।  
चउदह पुरि सतण उज्जोवइ ।

### धत्ता

तहो वंधउ रयणमीहु भणिउं, मज्जायमेरु सुपसिद्धउ ।  
जिणत्रिवपहट्ट रएवि पुणु, जिणवरगोत्तु णिवद्धउ ॥ २ ॥

वासद्धर पिययम वे वरिण्डं,  
वे पक्खुज्जल पर ण मरालिय,  
पोमंकिय कुलसरणं पोमिण,  
पइवय सोल सलिल मंदाइणि,  
उदयसिरी होमाविणयजुय,  
उअरसिप्पि सुयरयण समुवभव,  
पढमपुत्तु जसपालु गुणंगउ,  
हुउ जयपालु वियक्खणुवीयउ,  
तुरियउ चंदपालु सिरिमंदरु,  
छट्टउ पुणपालु पुणायरु,  
अट्टमु रुवएउ रुवट्टउ,  
भाइय भत्तिवज्जय संजुत्तउ,  
जं हउं पत्थिउ पसमियगव्वे,  
सिरि बाहुवलि चरित जं जाणिउं,

परियण पोसण णं कुरु धरणिउं ।  
सीलतरुहि णं वेत्ति रसालिय ।  
सुयणसिंहडिणि णं जलहर भुणि ।  
दुत्थिय जण जण'णव सुहदाइणि ।  
चउविह सचहो कप्प'णहीइय ।  
संजायाकुलहरणं शुवभव ।  
रुवेण पक्खक्ख अणंगउ ।  
पुणु रउंपालु पसिद्धउ तीयउ ।  
पंचमु सुउ विहराज सुहंयरु ।  
सत्तमु बाहडु णाम गुणायरु ।  
एयहि अट्टसु अहि चिरु बहउ ।  
णंदउ वासाधरु गुण जुत्तउ ।  
वासाहरसंधाहिवमव्वे ।  
लक्खणउत्तुत्तक्खुणवियाणिउं ।

## घत्ता

लक्खणमत्ता छंदगणहोणहिउ जं भणित मई ।

तं खमउ सयलु अवरराहु वाएसरि सिवहंसगई ॥ ३ ॥

विक्रमणरिद अ'किय समए,  
पंचास वरिस चउअहियगणि,  
साईणक्खत्ते परिट्टियई,  
ससिवासरे रासिमयंकलुत्ते,  
चउवगसहिउ एवरसभरिउ,  
गुज्जरपुर वाडवंसतिलउ,  
तहो मणहर छाया गेहिणिया,  
तहो उवरि जाउ वहुविणयजुई,  
तहो विण्ण तणुवभव विउलगुण,  
थरअरुह भम्भु जा महिबलए,  
कणयहि जाम वसुहा अचलु,  
जो पठइ पठावइ गुण भरिउ,  
संताणसिद्धि बित्थरइतहो,  
वाहुबलि सामिगुरुगण संभरणु,

चउदहसय संवच्छरहं गए ।  
वइसाहहो सियतेरसिसुदिणि ।  
वरसिद्धि जोगणामें वियई ।  
गोलगे मुत्ति सुक्केंसवले ।  
वाहुबलिदेव सिद्धउ चरिउ ।  
सिरि सुहहु सेठि गुण गणणिलउ ।  
[ सुहडापवी गामें भणिया ।  
घणवालु विअसु गामेण दुई ।  
संतोसुतहयहारिराउपुण ।  
सायरजलु जा सुरसरिभलिए ।  
बासर होळठुव तोम कुलु ।  
जो लिहइ लिहावइ वर चरिउ ।  
मणवंछिउ पूरइ सयलु सुहो ।  
महुणासउ जम्म जरामरणु ।

## घत्ता

लो देइ लिहाइ वि पत्तहो वायइ सुणइ सुणावइ ।

सो रिद्धिविद्धि संपय लहिवि, पछइ सिवपउ प्रावइ ॥ ४ ॥

अ मत्प्रभार्चद्रपदप्रसादादवाप्त बुद्ध्या धनपालदक्षः ।

श्रीसाधु वासाधरनामधेयं स्वकाव्यसौधेयकलसो करोति ।

इति वाहुबलि चरित्रं समाप्तं । शुभं भूयात् । संवत् १५८६ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने वृषवासरं श्री मूलसंघे बलात्कारगुणै सरस्वतीगच्छे नंद्याम्नाये श्री कुंदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचंद्रदेवा..... श्री-रतनकीर्त्तिशिष्येण ब्रह्मरत्नेन लिखापितम् ।

प्रति नं० २, पत्र संख्या २३७, साइज १०x४। इच्छ । प्रारम्भ के १३७ पृष्ठ नहीं है । शेष के पृष्ठ

शुद्ध और सुन्दर है ।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५८४ वर्षे अश्विनवदि ६ बुधवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्री कुंदकुंदा-  
चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदा-  
म्नाये व्याघ्रेरवालान्वये ठोला गोत्रे सा नाथू भार्या सुनखत तत्पुत्राः सा. सहजा सा. रेडा सा. राणा सा.  
माधौ, माधो भार्या त्रिपुरु तयोः पुत्राः संगिठा ऊदा, वीरसिंह, तेजा, राजा; डीडा भार्या मदना तयोः पुत्राः  
पारस ऊदा भार्या अमरी वीरसिंह भार्या राजा एतेषां मध्ये सा. माधौ इदं पुराणं लिखाप्य ब्र. रत्नाय स्तदत्त ।

२७. भविष्यदत्तचरित्र ।

रचयिता कन्निर घनपाल । भाषा अपभ्रंश । पृष्ठ संख्या १६७, साइज १०×४॥ इअ । प्रत्येक पृष्ठ  
पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति में ३३ । ३७ अक्षर ।

प्रागम्भिक पाठ—

जिणसासणसारु, णिद्धुअ पावकलंकमलु ।

संमत्त विसेसु णिसुणहुं सुयपंचमिय फलु ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

धक्कडवणिबंसे, मोए सरहो समुभवहो ।

धणसिरिदेविनुएण विरेइउ सरसंइ संभवेण ॥ १ ॥

अहो लोयहो सुवपंचमिविहाणु,

दूरयरपणसिथ पावरेणु,

फलु देइ जहिछिउ मल्लोइ,

इह जा सा वुच्चइ भुवण संति,

णारणारिहो विग्वइ अवहरेइ,

णिन्वाइ जेणियसिवि भरेण,

सववास करइ जो सत्त सट्ठि

जइ भज्जइ अंतरि विग्घु होइ

इउजंत चितिय सुहणिहाणु ॥

इह जा सा वुच्चइ कामघेणु ॥

चितामणि वुच्चइ तेण लोइ ॥

अहभोक्खहो सुह. सोशण पंति ।

जो जं मंगइ तहो तंजि देइ ।

सो पुण्णवंतु कि वित्थेरण ।

उज्जमणंतहो सुहि तुडि पुडि ।

तहो सहहाणे फलु तंजि तोइ ।

घत्ता

अहो कि बहु. वायावित्थेरण एक्कवि चित्त महत्तरेण ।

१ णिद्धु २ सुव ३ समुभवणे ४ दुक्खंइ ५ सहहाणि ।



अणुमोहं ताहें तिहुं संपण्णगुणंतरेण ॥

अरि उरि अइरावइ दीहरद्धि

उज्जमिय ताए चिरु संजुएणं,

तहिं कित्तिसेण णामुज्जयाइं,

तहो फलेण ताइं तिण्णिणविजणाइं,

पहिलइ धणयत्तहो धणयदित्ति,

दिज्जइ भवि पंकय सारि सरुव,

तियलिंगुहणेवि विण्णिणविसुतेय,

तइयएभविसत्तु वि कणय तेउ,

चोत्थएभवि सुवपंचमि फलेण,

धणयत्तहो गेहिण धणयलच्छि ।

भाविय धणमित्तं तहिं सुएण ।

अणुमोइय वज्जो अरसुआएं ।

चउथइ भविसिन्नलोगहो गयाइं ।

इयरइ विण्णिणवि धणमित्तु कित्ति ।

सुउ भविसयत्तु भविमाएरुव ।

पहचूल रयण चूलाइं देव ।

हुउ दइमइं तेहें जि वि माणे देउ ।

णिहट्टु कम्म भाणाणलेण ।

घत्ता

णिसुणंत पढंतहं परिचितंतहं अप्पाहिया ।

धणवालें तेण, पंचमि पंचपयार किया ॥

इप धनपालकृतं पंचमी भविष्यदत्तस्य समाप्नोति ।

लेखक प्रशस्ति —

संवत् १५६५ भाद्रमासे शुक्लपक्षे तिथौ १५ रविवासरे नक्षत्र अश्लेषा राजाधिराज वज्रवाहा करमचंद मोजाबाद मध्ये लिख्यतं रामदास । श्री मूलसंधे नंद्याम्नाये बलात्करगणो सरस्वती गच्छे श्री कुदकुदा चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मानन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवस्तदाम्नाये खंडेलवालालान्वये पटणो गोत्रे सांगानेर वास्तव्ये साह हेमा भार्या केल्ल पुत्रास्त्रयः प्रथम साह सखण भार्या लाडो तयोः पुत्रा सह डाल्ल भार्या ऊदी तयोः पुत्रौ राणौ द्वितीय रामदास । द्वितीय गोविंद भार्या गौरी तृतीय टेह भार्या टिहुसिर । द्वितीय साह हीरा भार्या त्पल्ल तयोः पुत्राः त्रयः प्रथम दुग द्वितीय पल्ल तृतीय गोना डुगर भार्या धरमा पुत्रौ द्वौ स० सा० चाचा द्वि० घोराज पल्ल भार्या पूना तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम सोढा द्वि० छजू । गोना भार्या गंगा तयोः पुत्र माधव । तृतीय सा० तेजा भार्या दामा । हीरा नाम्ना इदं शास्त्रं लिखाप्य ज्ञानपालाय ब्रह्म कोल्हाय दत्तं ।

प्रति नं० २ । पत्र संख्या १४ । साइज १० × ४। इञ्च । प्रत्येत पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति-पंक्ति में ३६।४० अक्षर । अन्तिम पृष्ठ नहीं होने से प्रशस्ति अधूरी है ।

६ तिगिण्णम ।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५८६ वर्षे मार्गसिंभासे कृष्णपक्षे दोज बृहस्पतिवासरे । अजमेरमहगढवास्तव्ये राव श्री जगमलराजप्रवर्त्तमाने श्री मुससंधे नंदाम्नाये वलत्कारगणे सरस्वतोगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभा-चन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रस्तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये गोधा गं त्रे संघभारधुरधर सं० पारस तद्भार्या पौसिरि तयो पुत्राः प्र म जिनपूजा पुरंदरसं० फाल्हा द्वि० सा० स धू तृतीय जिनापूजापुरंदर सं० हामा चतुर्थे सं० काल्हा भार्या फल्हासिरि.....

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १४०. साइज ११×५ इञ्च । प्रति प्राचीन तथा जीण है । लिपि सं० १५८२.

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५८२ वर्षे श्रावणसुदी ११ रविवासरे कुरुजांगलदेशे श्रीपालवशुभस्थाने श्री इविराहिमसाहि-राज्यप्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंधे माथुरान्वये पुष्करगणे उत्तयभाषाप्रवीणतपोनिधिः श्री माहवमेनदेवास्तत्पट्टे सिद्धांतजलसमुद्रः भट्टारक श्री उद्धरसेनदेवास्तत्पट्टे विवेककलाकमलिनीविकासनैकदिरनमणिः भट्टारक श्री देवसेन-देवास्तत्पट्टे कविविद्याप्रधान भट्टारक श्री विमलसेनदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री धर्मसेनदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भावसेनदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सहस्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे लंका श्री यशः कीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे दयाद्रिचूडामणि भट्टारक श्री मलयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे वादीभकुंभस्थलविदारणैकवैसरि भट्टारक श्री गुणभद्रसूरितस्य शिष्य चरित्रचूडामणिमंडलाचार्य मुनिचेमकीर्त्तिस्तदाम्नाये अमोतकान्वये गर्गगोत्रे वनेईवास्तव्य पंचमीउद्धरणधीरश्रावकाचारदत्त साधुछाजू तद्भार्या साध्वी तस्य पुत्रास्त्रयः । प्रथमपुत्र साधु धी द्वितीय पुत्र साधु पाल्हा, तृतीय पुत्र साधु लाडमु तद्भार्या साध्वीकल्हो तस्य पुत्र स्त्रयः प्रथमपुत्र साधुगेल्हे तद्भार्या साध्वी धारी तस्य पुत्र चारि प्रथमपुत्र देवगुरुशास्त्रभक्त शास्त्रदानदायक साधु पचाइण । साधु गेल्हे द्वितीय पुत्र साधु रणमलु । तृतीय पुत्र साधु राज । चतुर्थ पुत्र साधु भोजराजु । साधु लाडम दुतिय पुत्र पंडितगुणाविराजमान पंडित हरियालु तद्भार्या शीलतोयतरंगिणी विनयवागेश्वरी साध्वासरो । तस्य पुत्राः त्रयः प्रथम पुत्र साधु जीवंदु दुतियपुत्र साधु देई सुदा । तृतीय पुत्र साधु माणिकचदु । साधु लाडम तृतीय पुत्रसाधु सिउराजु । तद्भार्या साध्वी सुनषा । पंचमी उद्धरणधीर साधुगेल्हे सुत साधु पचाइण तेन इदं श्रुत-पंचमीभविष्यदत्तशास्त्रं लिखापितं । पंचमीउद्धरणधीर श्रावकाचारदत्त चतुर्विधदानकल्पवृत्त साधु जगमल उपकारेण ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ११५. साइज ११×४। इञ्च । प्रति सुन्दर है । लिपि संवत् १५४० ।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५४० वर्षे आसोज सुदी १२ शनिवासरे धनिष्ठा नक्षत्रे लिखितं हेमा । शुभं भवतु । श्री

मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण गुरुपदेशात् मुनि श्री रत्नकीर्ति पठानार्थ खंडेलवालजातीय साइ लाला भार्या लतादे सुत साह वीरम भार्या वील्हणदे भानु परवत भार्या पुहसिरि तत्पुत्रवलराजेन ज्ञाना-  
वरणकर्मक्षयार्थ लेखायित्वा दत्त ।

२७. भविष्यदत्त चरित्र ।

रचयिता पं० श्रीधर । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ६४. साइज ११।।x५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा तथा प्रति पंक्ति में ३०x३७ अक्षर । रचना संवत् १२३०

संगलाचरण—

ससिपहजिणचरणइं सिवसुहकरणइं पणविवि शिम्मलगुणभरिउ ।  
आहासमि पविमलु सुअपंचमिफलु भविसयत्तकुमरहो चरिउ ॥

प्रारम्भ में दी हुई प्रशस्ति—

सिरि चन्दवारणयर द्विपण,  
माहुरकुल गयण तमीहरेण,  
णारायण देह समुभवेण,  
सिरिवासुएव गुरुभायरेण,  
णीसेसवलक्खगुणालयण,  
विणण भणिउं जोडेवि पाणी,  
इह दुलहु होइ जीवहं णारत्तु,  
जइ कहव लहइ दइयहो वसेण,  
ता विलउ जाइ गम्भेवि तेम,  
अहलहइ जम्मु ता बहु विहेहिं,

जिणवम्मकरण चक्कंठि पण ।  
विवुहयण सुयण मणवणहरेण ।  
मणवयणकायणिदियभवेण ।  
भवजलणिहि शिवडणकायरेण ।  
मडवर सुपट्टा णामालएण ।  
भत्तिए कइसिरिहरु भववपाणि ।  
णीसेस सहं संसाहिय परत्तु ।  
चउगइ भर्मतु जिउ सहसरेण ।  
वायाहउ णहे सरयम्मु जेम ।  
रोयहिं पोडिज्जइ दुहगिहेहि ।

धत्ता

जइ णिहय मायरि अय खामोयरि अवहरेइ णियमणि अणिसु ।

पयपाण विहोणउ जायइ दीणउं ता सो णवि जीवेइ सिसु ॥ २ ॥

इउं आयइ मायइ महमइएसइं,  
कप्पयहव चउलासए सयावि,  
जइ एवहिं विरयमि णोव्यारु,

सइं परिपालिउ मंथरगइए ।  
दुल्लहु रयण व पुण्णण पावि ।  
उग्घाडिय सिवसउ हल्यवारु ।

ता किं भणु कह मह जायएण,  
एव जाणिवि सुललिय पयहिं सस्थु,  
महु तणिय माय णामेण जुत्तु,  
अणिवइ भाविस्सयत्तहो चरित्तु,  
महुपुरउ समक्खहिं वप्पतेम,  
तं णिसुणेविणु कइणा पउत्तु,  
जइ मुच्च समच्छिउ णउ करेमि,  
ता किं आयइ महु बुद्धे याइ,

जम्मण सह पीढा कारणेण ।  
विरयहिं बुहयण मणहक पसस्थु ।  
पायडिय जिणेसर भाणय सुत्तु ।  
पंचमि उववासहो फलु पवित्तु ।  
पुव्वारियहिं भासीयउ जेम ।  
भो सुप्पट पई वज्जरिउ जुत्तु ।  
हउं अज्जु कहव णिरु पइहरेमि ।  
कीरइ विउलाए ससुद्धियाइ ।

घत्ता

कि बहुणा पुणु भणिएं लइ सुणु सावहाणु विरएवि मणु ।  
भो सुप्पट महामह जाणिय भगवइ ण गणमि इउ मणे पिसुणयणु ॥ ३ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

णारणाह विक्कम इच्चकाले,  
वारहसय नरिसहिं परि णहि,  
फग्गुणमासम्मि वलक्खपक्खे,  
रविचारि समाणउं एउ सस्थु,  
भासिउ भविस्सयत्तहो च रत्तु,  
इह साहु पुरा सुपसिद्धु आसि,  
जिणपायपऊरुह जुयदुरेहु,  
वज्जल्लवयण विरयण छइल्लु,  
ववहारभारपविहणवंधु,  
तहो तणिय धरिणि सियणाम हउ,  
तहें हाले णाम तणउ जाउ,  
णिंदिय असार संसारु साहु,

पवहंतए सुहयारए विसाले ।  
दुगुणिय पणरह वच्छर जु एहिं ।  
दसमिहि दिणो तिमिरुक्करविवक्खे ।  
जिह महं परियाणिउं सुंप्प सस्थु ।  
पंचमि उववासहो फलु पवित्तु ।  
महियलु णामे गुणरयणरासि ।  
अइ मंथरगइ णिज्जियसुरेहु ।  
दिढयरकुसगातिक्खणमइल्लु ।  
पियवयणहि सम्माणिय सुवंधु ।  
विणयाइं गुणामल रयणभूअ ।  
सम्मत्त बिहसण कलिय काउ ।  
सुहि सुहयरु लोहव धरिणि णाहु ।

घत्ता

तहुं सुउ संजायउ जगि विक्खायउ साहु देवचन्दुक्खुवाणि ।

जिण भम्मासत्तउ गुरुयणभत्तउ णिम्मलपर गुणरयणखणि ॥ १ ॥

माहुर कुल णहयलक्षणससंकु,  
बुहणियर दाणविहि करणधुत्तु,

जिण भासिय भम्मे विमुक्कसंकु ।  
णयमागणिरउ वज्जिय अजुत्तु ।

तहो माढी णामें धरिणि जाय,  
कोयल इव सुहयर ललियनारिणि,  
तहो गढभे समुष्पणउ रवणु,  
पढमउं परियाणिय णाय मग्गु,  
वीयउ णारायणु णायणउत्त,  
णिम्मलयर जसलच्छी णिहणु,  
मइवत्तु संत्तु पाविय पसंसु,  
करुणालउ किरियावत्तु साहु,  
तह रुपियणि णामें जाय भज्ज,

णावइ लच्छी सयमेव आय ।  
पविरइय कज्ज जाणो वि जाणि ।  
साहारणु सुउ णवकणयवणु ।  
जिणधम्मकम्मसाहिय सुमग्गु ।  
मणे परियाणिय जिणभणिय सुत्त ।  
माहुरगयणहयलसेय भाणु ।  
जिणवर कह कय कण्णावत्तु ।  
सुद्धासउ मयरहरुव अगाहु ।  
सिरिहरहो सिरिवजाणियसकज्ज ।

घत्ता

सज्जणसुहयारिणि पावणिवारिणि पविमलसीलालंकरिया ।

बंधवहं पियारी श्रीयणसारी विणयाइय गुणगणभरिया ॥ २ ॥

तहो पढसु सुउ पटुणामें,  
माणवरुउ लएप्पिणु लोयहो,  
वीयउ वासुएउ संजायउ,  
तज्जउ पुणु जसएव पवुच्चइ,  
लोहडु तुरिउ समासहि पियहिं,  
पंचमु लक्खण कलिउ सलक्खयणु,  
पंचवि णं मणसिय हो सिलीमुह,  
पंचवि मय मयगण पंचाणण,  
ताहं मज्जे जो सुप्पडु भायरु,  
जिणपय पुजकरण उच्छुल्लउ,  
जिणवरभासिय धम्मगहिल्लउ,

हुउ णं अप्पउ दरसिउ कामें ।  
धम्मपह वें माणिय भोयहो ।  
वासुएउ जिह तिह विक्खायउ ।  
जो णीसेसहं वंधुहु रुच्चइ ।  
आवडिजय णिम्मलगुण णियरहि ।  
कमलवयणु कज्जेसु थियक्खणु ।  
पंचवि बंधवयण विरइयसुह ।  
पंचवि पिसुण जणोह भयाणण ।  
वर वड्डल्ला णंदिय णहयरु ।  
परियाणिय सत्थत्थर सुल्लउ ।  
लीलागइ जिय पांडल पिल्लउ ।

घत्ता

तेणेहु मणोहरू तिमिरतमीहरू णियजणणी णामंकिउ ।

अठ्ठमयेवि सिरिहरू कइगुणसिरिहरू पंचमि सत्थुकराविउ ॥ ३ ॥

सुप्पट तणंय जाणणि जासुहमइ,  
धम्मपसत्ता हें मज्झिमाहो,  
होउ समाहि वोहि रयहारिणी,

तियरण विणिवारय कुसमयरइ ।  
गुरुयण भत्तहें रुपिणि णामहो ।  
अठ्ठम महि लच्छी सुहकारिणी ।

सुपट साहुहं वसु कम्मखरु,  
मज्झुएउ राउ अण्णु समीहमि,  
णंदउ संघु चउन्विहु सुंदरु,  
विलउ जंतु घणपडलुव दुज्जण,  
एयहो मत्थहो संख पसाहिय,  
जाम जउण अमरसर सुरालय,  
विजयायलंगरि ता स रसायर,  
ताम मुण्णिदहिं एहु पडिज्जउ,  
सुन्दरयरभायरहं विराइउ,  
णियजणणीए समाणउं सुन्दरु,

होउ तहय अवरुवि दुक्खवखउ ।  
भवजलणिहि शिवडण गिरु वीहमि ।  
णियजसंपूरिय गिरिवर कंदरु ।  
चिरु णंदंतु महीयले सज्जण ।  
१५३०  
पंचदहजिसयफुडुनीसाहिय ।  
कुलगिरि तारा भयणघरायात्त ।  
सिसर किरण दिणणयरय णायर ।  
भावियण लोउ सयलु बोहिज्जउ ।  
कामकोहमच्छरअवराडउ ।  
पुज्जाविहि विभविय पुरुंदरु ।

धत्ता

सम्मत्ता लंकिउ धम्मिअसंकिउ दाणविद्वाण विसत्तउ ।

सुपटु अदिणंदउ जिणपयवंदउ तवसरिहर मुण्णिभत्तउ ॥ ४ ॥

इय सिरिभविसयत्तचरिउ विवुहांसरिसुकडसिरिहर विरइए साहु णारायणभज्जा रूपिणायामकिए  
भविसयत्तणिवाएण गमणं भवंतर कित्तेणो णाम छट्ठोपरिच्छेउ सम्मतो ।

२८. मदनपराजय ।

रचयिता पं० हरिदेव । भाषा प्राकृत । पृष्ठ संख्या २३. साइज १०×४। इच्छ । प्रत्येकपृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०×३५ अक्षर । प्रारम्भ के आठ पृष्ठ नहीं हैं ।

अन्तिम पं० —

|                             |   |                            |   |   |
|-----------------------------|---|----------------------------|---|---|
| ×                           | × | ×                          | × | × |
| विसहसेणु मुणिवरु अच्छेसइ,   |   | तं चारित्त नयरु रक्खे सइ । |   |   |
| इय भणेवि गउ मोक्खहो जिणवरु, |   | विसहसेणु पालइ संजमभरु ।    |   |   |
| अमुणंनहं कइवि साहिउ,        |   | मुणिवर तं खमंतु ऊणाहिउ ।   |   |   |
| जिणवरिंद पयपंकयभंसलिं,      |   | नरविज्जाहर गणहरकुसलिं ।    |   |   |
| मयणपराजए ण विरइय कह,        |   | हरणविरंति विवुइयणसह ।      |   |   |

धत्ता

गुणदोसपयाउ अक्खिउ भाउ महुच्छलेण विरइय कह ।

भक्तवैराग्यपियारी हरिसजगोरी नंदउ चउविहंसैधैं ॥

इय मयैण्यरा जैयचरिए हरिएवंकइ द्विरइए मयणपायपराजय नामेहु ईजउ परिच्छेउ सम्मतो ।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५७६ वर्षे कार्तिक सुदी १३ थी मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे नंदाम्नाये कुदकुदा-  
चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री त्रिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे  
भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालांन्वये गंगवाले गोत्रे सा डोवरं तस्य भार्या माल्ही तयोः पुत्रा  
स्त्रयः सा दूदा, सा भोल्लु सां जुंगर । सा दूदा भार्या चाहु तयोः पुत्रौ सा० रणमलं द्वितीयं सा० चोखा सा  
रणमल भार्या जिणसो । सां चोखा भार्या ऊदा । सा दूदाख्येन लिखोपितं कम्मं चया निमित्तं ।

२६. मृगांकलेखाचरित्र ।

रचयिता श्री पंडित भगवतीदास । भाषा अभ्रंश । पत्र संख्या ७४. साइज १०॥ x ५ इञ्च । प्रत्येक  
पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२x३६ अक्षर । प्रति स्पष्ट है । मंगलाचरण करने के पहिले लिपिकार  
ने भट्टारक माहेन्द्रसेन को नमस्कार किया है । बीच २ हिन्दी भाषा के पद्य भी लिखे हुये हैं । रचना  
संवत् एवं लिपि संवत् १७००. ग्रन्थ का दूसरा नाम चन्द्रलेखा कथा भी है ।

प्रारम्भिक पाठ—

पणविवि जिणवीरं णाणगंहीरं तिहुंवेणवइरिसिगइजई ।

णिक्खमविसअत्थं सीलपसत्थं भणमिकहाससिलेइसई ॥

अन्तिम पाठ तर्था प्रशस्ति—

दोहा

ससिलेहा णियकंत सम धारइ संमजमु सारु ।

जम्मणमरण जलंजली दाण सुयणुं भवतार ॥१॥

करितणि तपु सिवपुर गयउ, सोवणि सागर चन्द ।

ससिलेहां सुरवरुं भई तेजि तिय तणुं अतिणिहुं ॥२॥

लेहिं णेरभंड णिरवांण पद, पावसि सुंदर सोइ ।

कंवि सु भगौतीदासं कहि पुणुं भव भमणुं ण होई ॥३॥

सीले वंडा सेंसारं मेहि सोलि सरहिं सब काज ।

इह भेवि परेभेवि सुइ लहई आसि भणहिं सुणिराज ॥४॥

कट्टासंघसु माहुरगच्छए,

जिणवाणी पुवंगा सयावरु,

पुष्करगणि णिम्मल वयसच्छए ।

अवइएणउ णावइ जणिगणहरु ।

भविष्यकमजहिदु रणणदिवायंरु,  
तासु सीस गुणचंद जेसाहियउ,  
चउविहसंघ महाधुर धारणु,  
धम्मवरिसु समंगुणं मसरुवउ,  
णामि सयल ससि सत्यकालालउ,  
धम्मामिय वरि सणसु पयोहरो,  
वर जस पसर पसाहिय महियलु,  
भट्टारउ महिचलि जाणज्जइ,  
तासु सीसि यहु चरिउ पर्यासउ.  
सलि पहाउ अपणि जस किउणु,  
लिहइ लिहावउ आइणणइ एरो,  
अमुणते णिरु जुत्ति अनुत्तउ,  
तं खमकरउ मइदेविया,  
सौल चरित्तं विचित्तु पियारउ,  
हीणुं अहिउ किरवणु विचारण,

रिसि जेसाकिउ गुरु तवसायरु ।  
परवाइयं मयजेहमि गोहियउ ।  
हुसहमयण सुणिवोरणु ।  
गुणससिपट्टि सीसु संभूवउ ।  
जिण हरिसावइ सहसु मगलउ ।  
तासु पट्ट तव भार धुराधरो ।  
णियम महत्थ पराजिनिय णहयलु ।  
माहिदसेणु विहारणं गिज्जइ ।  
भगवइदासे णाणरु भासइ ।  
संसिलेहा चरित्तं सरत्तणु ।  
सो सुरवरपउ लहइ मणोहरो ।  
लक्खणं छंदु हीणुं जं वुत्तउ ।  
इदं अहिदं एरिदं सुसेविया ।  
पणुं बुहसोहि करहुं गुण सारं ।  
ठाणि ठाज्जइ परउ वयारण ।

घत्ता

सगइहसय संवदतीतदां, विक्कमराए महप्पए ।  
अगइण सिय पंचमो सोमदिणे, पुण्ण ठियउ अविचप्पए ॥

दोहा

चरिउ मइक लेहचिरु एंदणु, लाम गयणि रवि ससि हरो ।  
मंगलयरु हवइ जणि मे इणि, धम्मयसंगाहिद करो ॥

घत्ता

रइउ कोटि हिसरे, जिणहरि वर वीर वड्डुमाणस्स ।  
तत्थविउ वयंधारो, जोई दासो विवमयारीउ ॥  
भागवई महुरीआ वत्तिगवर वित्तिसाहणाविण्ण ।  
विबुहसु गंगारामो तत्थठिउ जिणहरसु मइवतो ॥

दोहा

संसिलेहा सुयवधुजे अहिउ कटिणजोअसि ।



महुरी भासउ देस करि भण्डि भगौतीदासि ॥

जावगयणि रवि ससि म'ह जाव लरह धिरू खित्तु ।

सासलेहा सु'दर भई खंदउ ताउं चरित्तु ॥

इयसिरिचन्दलेदाकहाए रजियतुचिचमहाए भट्टांगभिरिमुणिमहेंदसेण सीसा-तुहभगवददास विरहए । भासतेहा भगिगमणु इविशयलिगंहेउ इंदयगोपयणं सायरचन्ह एण्वाणगमणं तवदीखासाहणं ए'म चउरगो संधि परिलेउ समतो । इति श्री भगवतीदास कृतं सुगांकलेखाचरित्रंसंपूर्ण ।

अथ संवत्सरेरिभन् श्री नृपति विक्रम-दित्य राज्ये सत्रतु मन्त्रहस्तसंपूर्ण १७०० फाल्गुणमासे शुक्ल पक्षे सप्तम्यां रजिवासरे श्री साहिजहाराजगवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माधुरान्वये पुष्करगणे श्री लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्री गणेशः कर्त्तिदेवास्तत्तट्टे भट्टारक श्री गुणचन्द्रदेवास्तत्तट्टे भट्टारक श्री भकलचन्द्रः तत्तट्टे भट्टारक श्री महेंद्रनेण दाम्नाये हिसारिवास्तन्वये अमोतकान्वये गर्गगोत्रे सेठो पारस तस्य भार्या सेठाणी परोज तस्य पुत्र श्री ज्येष्ठ पुत्र सेठो पाधु हि० पुत्र सेठो सुखनन्द तस्य भार्या सेठणी घनो तस्य पुत्र दुग्ग पथम पुत्र ताराचन्द हि० पुत्र जगहरा, सेठो पार्श्व पुत्रो शोलतोत्रपरिणिण विनयगोस्वरो माधर्मिणी जीवणी स्वर्-अमोतकान्वये गोयल गोत्रे आसीनाल चौधरी वनु तस्य भार्या सा० जमो तस्य पुत्र अर्जुन तस्य भगिनी शीलतोयतरंगिणी दानगुणे रेवतो साधर्मिणी दगल तेन श्री० साधर्मिणी दशजाखिणी वन उशानाथं सुगांकलेखाचरित्रं लिखापितं हिपार नगरे श्री वरखलमानचेंस्यालये पंचगोष्ठे तत्रस्थिति अवोधजीव सवोधिनी बाई माधुरी जाग्य घटापत ।

३०. मेघेश्वर चरित्र ।

रचयिता श्री पं० रङ्गू । भाषा अपभ्रंश, पत्र संख्या ११६, साइज १०।४। इन्द्र । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२ । १६ अक्षर । प्रति जोख शीर्षे अवस्था में है । प्रारम्भ के ५ पत्रों का आधा भाग कितनी ही जगह से फटा हुआ है । प्रारम्भ में कांव ने अपना विस्तृत वंश परिचय लिखा है लेकिन अक्षर घलामिल होने के कारण पढ़ने में नहीं आती ।

अन्ति पठ—

इय सेणियगयहो कयअणुरायहो गोयनेण जसविप्फुरिउ ।

मेहेसरचरियः तहुगुणभरियः अक्खिउ जुइयण आदेरियउ ।

प्रशस्ति—

खंदउ आइजियोसर सासणु,

खंदउ सायवायविहि जुती

खंदउ एरवइ एीइवियारउ

खंदउ सुरयणु धम्मपयासणु ।

भारइ देवी जयत्तसवित्ती ।

खंदउ भन्वलोयगुण सारउ ।

१ पुरयणु

गंदहु बुहयण जे सुयसायर  
गंदउ जो सो लिहइ लिहांवइ  
गंदउ सो यारउ सपवीणउ,  
गंदउ सिरिहरि सिधु संवाहिउ,  
जमु संताणि कई सु अंमच्छरु,  
जेण चरिउ मेहेसर केरउ,

सत्थ अत्थ पवियारण णायर ।  
गंदउ जो सो पढइ पढावइ ।  
विज्जोक्कवरसायणलोणउ ।  
देवराज सुउ पवरगुणाहिउ ।  
रइधू संजापउ गुण कोच्छरु ।  
विरयउ बुहमण सुक्खजणेरउ ।

घत्ता

जं मइ हीणाहिउ किं पि विसाहिउ, तं बुह सुय सोहंतु णिरु ।  
कुपयं फेडेप्पिणु भवु ठवेप्पिणु, महिवित्थारहु सत्थंचिरु ॥ १ ॥

जयजद्धसंसु,  
अहुणा भणेमि,  
इह अइरवाजि,  
एदिलहि गोत्ति,  
देदाहि दाणु,  
तहु सुउ णिरुत्तु  
तहु अंगजाउ,  
पइत्तं पवित्तं,  
तणुरुहु वितासु  
सइ पुण्णपालु,  
चाहडिय पत्ति,  
तहि गन्धिजाय,  
चंदक्कतेय,  
झा जागिद्ध,  
तहु सुउ अवाहु,

दयारवंसु ।  
पायहु कुणेमि ।  
अण्णइ गुणालि ।  
पयडियसु जुत्ति ।  
हुउ चिरुपहाणु ।  
महिया पवित्तु ।  
जायउ अपाउ ।  
जिण वम्मत्तित्तु ।  
कुलहर पयासु ।  
णामें गुणालु ।  
तहु सील थत्ति ।  
सुयविण्णभाय ।  
वडिद्धय विवेय ।  
बुहयणमणिद्ध ।  
नाथू जि साहु ।

घत्ता

णाथू साइहु सुयविण्णव ललिय भुया, भाक्कणु बीघा णामहुय ।  
ते गंदहु भूयलि णिण्णासियकलि, धणक्कणपुत्त पढत्तजुया ॥ २ ॥

पुण्णपालसाइहु सुउ बीयउ,

परउवयारविहाण विणीयउ ।

देवसत्त्वगुरुभक्तिकयायह,  
 वील्हाही पिय यम तहु सारी,  
 ताहि तणुवभव बुद्धमणरंजणु,  
 जिण समयाणु भत्ति अणु रायउ,  
 तहु भज्जा भणसिरि गुणवंती,  
 एणंदण चारि ता'ह उरि जाय,  
 चारि दाण एं पायड भूयलि,  
 ताह पढमु गुणमाणरयणायरु,  
 रतणपाल ही तासु जि भूमिणि,  
 उद्धरणहि हाणु हुउ एणंदणु,  
 तहु पह जिणि जिज्जिणि मयंको,  
 सुरतरु एं दुत्थियेज्जणीपोसणु,  
 मणणपालही तासु जि भज्जा,  
 सोणपालु तहि एणंदणु एणंदउ,

पंजेणसोहु गोमं शियेमायंकं ।  
 सीलाहरण विद्वसणधारी ।  
 जाचय जण दालिद विहंजणु ।  
 खेऊमाहु गाम त्रिकलायउ ।  
 चन्दहु गोहिणी विपहवन्ती ।  
 चरिपाण एं जीव सहाय ।  
 चारि वि दिग्गय एं जस शिम्मल ।  
 सहसराजु कुलकमल दिवायरु ।  
 शियभेत्तारचित्त अणुगामिणि ।  
 परियणजण चित्तह आणंदणु ।  
 वीयउ पहराजं गय संको ।  
 परउवयरंसारसुपयासणु ।  
 दाणपूजाविहि करणमणोज्जा ।  
 शिच्चं जिणिंदसूरपिय वंदउ ।

### घत्ता

पुण सुउ तहु तीयउ अइव विणीयउ जिणसासणरहधुरधणु ।  
 रइपतिरंयणोवमु पात्तिक्कुलकमु दुत्थिय जणदुहभरहरणु ॥

रइपति भामिणि,  
 कौण्डे गामा,  
 सुउ खेमकरु,  
 तुरिउ वि पुत्तो,  
 साहु हु भोसिउ,  
 विज्जामंदरुं,  
 बुहं चूडामणि,  
 होलू पायडु,  
 तासु कलत्ता,  
 भणिय सरासड,  
 ससि व कलालउ,  
 इहु परियण धुउ,

कुलमिहसामिणि ।  
 पूरियकामा ।  
 सुक्खरिवेक्खरु ।  
 गुणगणजुत्तो ।  
 पवरंजसासिउ ।  
 वंसहु चंदिरु ।  
 शिम्मच्छेरुं गुणि ।  
 सयलकलापडु ।  
 सररुहवत्ता ।  
 विणउं पयासइ ।  
 चंदपालु हुउ ।  
 ..... ।

|                  |                   |
|------------------|-------------------|
| गण्डउ सुक्खे,    | सयलु पयक्खे ।     |
| जा संसिदिण्यंरुं | जां म घेराधंरुं । |
| जा दिवि ईंशे,    | जा माअंहिंदो ।    |
| ता खेमकेखो,      | गण्डउ दक्खो ।     |
| मज्झु सहार्ह,    | गुण अणुगार्ह ।    |
| जासु णिमित्तं,   | येहा सत्तं ।      |
| विरइउ कव्वो॥     | इहु भइ भव्वो ।    |

घत्ता

तं सुंइरुं पडेंदवसें एहुं महि पाढि जंतउ वुंइयणेहिं ।  
सिरि मेहेसरं गणहरं चरिउ णिव्वरुं पूरिउं वहुं गुणहिं ॥

इय मेहेसरचरिए आइपुराणस्स अणुसरिए सिरिपंडियरइधू विरइए सिरि मंहाभव्व खेमसीहसाहु  
णामकिए रिसहेसर णिव्वाणगमण भरइचक्काहिवइ मेहेसरणिव्वाणगमणो वणणं अणोविसगगमणं  
णामतेरहमोसंधीपरिछेउ सम्मत्तो ।

लेखक प्रशस्ति—

अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यगताब्दः संवत् १६१६ वर्षे माघ बुदि ११ बुधवारि कुरुजांगल-  
देश. श्री रुद्रितगगढदुर्गे पातिसाहि हकवरराज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठासंधे माथुरान्वये पुष्करगणे उभयभाषा  
प्रवीण तपोनिधिः भट्टारक श्री गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जगकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे सरस्वतीश्रंगारहार  
तेरहविधिचारित्रचूडामणि गुणभद्रसूरिदेवास्तत्पट्टे अनेकतर्कव्याकरणछंदसाहिः यनाटकलहरातरंगान्  
अनेकआगमाभ्यात्मरसखतारविराजामानान् परमपूज्य भट्टारक श्री मानकीर्त्तिसूरयः—।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १७३. साइज ६।।×४ इञ्च । प्रारंभ के २१ पंक्तें नहीं है । शेष पत्र सुन्दर  
और स्पष्ट है । लिपि संवत् १५६६ ।

अथ संवत्सरेस्मिन् श्री विक्रमादित्यराज्ये संवत् १५६६ वर्षे ज्येष्ठ बुदि ५ भौम दिने उत्तराषाढ  
नक्षत्रे श्री काष्ठा संधे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्त्ति देवाः  
स्तत्पट्टे श्री मलयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे वादाकुंभविदारणैककैसरी भट्टारक श्री गुणभद्रदेवाः तेषाम्नाये अमोत-  
क्रान्वये ..... ।

३१. यशोधरचरित्र ।

रचयिता महाकावि पुष्पदंत । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ६५. साइज ११।।×४।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ  
पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६ । ४० अक्षर । प्रंत प्राचीन तथा शुद्ध है ।

प्रारम्भिक पाठ—

तिहुअणंसिरिकंतहो अइसयवंतहो अरहंतहो हयवम्महहो ।

पणवेवि परमेद्धिहो पविमज्जदिद्धिहो चरणजुअल णयसयमहहो ॥

कोंडेलगोत्तणहदिणयरसु,

णणहो मंदिरि शिवसंतु संतु,

चित्तइ इहु धणणारीकह ए,

कह धम्मणिवद्धी का वि कहमि,

पंचसु पंचसु पंचसु महीसु,

धुड पंचसु दससु त्रिणसु जाइ,

काला विक्खए पढमिल्लु देउ,

पुरुदेउ सामिरायाहि राउ,

वल्लहणरिदघरमहयरासु ।

अहिमणामेरु कइ पुप्फयंतु ।

पज्जुत्तउ कयदुक्कियपहाए ।

कहियाइं जाइं सिवसोक्खु लहमि ।

उप्पज्जइ धम्म दया सहीसु ।

कर्णविक्खइ पुणु पुणु वि होइ ।

इय धम्मवाइ सियवसहकेउ ।

आणंदिय चउ सुखर णिकाउ ।

वत्तो

वत्त गुट्ट णें जणु धणदाणें, पइं पोसिउ तुहुं खत्तधरु ।

तवचरणविहारें केवलणारें, तुहु परमपउ परमपरु ।

अन्तिम पाठ—

१

किउ उवराहें जरम कइमइं एउ भंवतर ।

नहो भव्वहु णामु पायडमि पयडउं धर ॥ २६ ॥

चिरु पट्टणं छंगे साहु साहु, तहो सुउं खेला गुणवंतु साहु ।

तहो तणुरुहु वीसलु णाम लाहु, वीरो साहुणियहि सुलहु णाहु ॥

सोयारु सुणाणगुणगणसणाहु, इक्कइय चित्तइ चित्ति लाहु ।

हो पंडियठक्कुर कणइपुत्त, उवयारियवल्लहपरममित्त ॥

कइ पुप्फर्याति जसहरचरित्तु, किउ सुट्टु सदलक्खणविचित्तु ।

पेसहि तंहि राउलु कउलु अज्जु, असहरविवाहु तह जणियचोज्जु ॥

सयलहं भवभमणभवंतराईं, महु वंछिउ करहि शिरंतराईं ।

ता साहु समोहिउ क्रियउ सव्वु राउलुविवाहु भवभमण भव्वु ॥

वंक्खाणिउं पुरउ हवेइं जाम, संतुट्टउ वीसलु साहु ताम ।

जोइणपुरवरि णिवसंतु सिट्टु, साहुहि घरे सुत्थियणहु घुट्टु ॥

१३६५

पणसद्धि सहिय तेरहसयाईं, णिवविक्रम संवछर गयाईं ।

१ यह मूल ग्रन्थ कार का पाठ नहीं है । ग्रन्थ रचना के पश्चात् जोड़ा हुआ है ।

चइसाहप्रहिल्लाह प्रक्खि वीय, रचिवाहि ससिमिथिइ म्मिहसतीय ॥  
चिरुवत्थुत्तंभि कइ कियउ जं जि, पद्धहियवंधि मइ इइउ तं जि ।  
गंम्वे कइइयगंइणेण, आयइ भवाइ किय थिरमणेण ॥  
महु दोसु ण त्रिल्लइ पुत्ति कइउ, कइ वच्छराइ तं सुत्तु लइउ ।

### घत्ता

जो जीवदयावरु णिप्पहरणकरु, वंभयारि हय-जर-मरण ।  
सो माणंणिसुंभणु धम्मणिरंजणु, पुण्णयंतु जिणु महु सरणु ॥

पावण सुंभणु सुद्ध वंभणि,  
कासवगोत्तं केववपुत्तं,

उवरुण्णंणं ससुलवण्णं ।  
जिणपयभत्तं धम्मासत्तं ।

वयसंजुत्तं,  
वियलियसंसंकि,  
पहसियतुडि,  
रजियवुडिसइ,  
जो आमणणइ,  
लिहइ लिहावइ,  
जो मण भावइ,  
बहुणिय वणरय,  
जण वयणीरसि,  
कइणदायारि,  
पडियकवालइ,  
बहुरंकालइ,  
पवरागरि,  
सुण्हि चेलि,  
महु उवयारिउ,  
गुण भत्तिल्लउ,  
होउ चिराउसु,  
त्तिपइ मेइणि,

उत्तमसत्तं ।  
अहिमाणंकि ।  
कइणा खंडे ।  
कसुजसहकय ।  
जंगड मणणइ ।  
पढइ पढावइ ।  
सो एरु पावइ ।  
सासयसंपव ।  
दुरीयमलीमांस ।  
दुसहिदुहपरि ।  
णारकंकालइ ।  
अइछुककालइ ।  
सरसाहारि ।  
चस्तंवल्लि ।  
पुण्णि पेरिउ ।  
णणु महल्लउ ।  
वरिसउ पाउसु ।  
धणकणदाइणि ।

१ यहाँ से मूलग्रन्थकार की प्रति का पाठ प्रारम्भ होता है ।

|                |                 |
|----------------|-----------------|
| विलसत गोमिणि,  | गच्छत कामिणि ।  |
| धुम्मरु मंदलु, | पसरत मंगलु ।    |
| संति वियंभउ,   | दुक्ख गिसुंभउ । |
| धम्मच्छाहे,    | सहु एरण्णाहे ।  |
| सुहु रांदउ पय, | जय परमपय ।      |
| जय जय जिणवर,   | जय भवमयहर       |
| विमलसु केवलु,  | एण्णु मुज्जलु । |
| सहु उप्पज्जउ,  | एत्तिउ दिज्जउ । |
| मई अमुणांति,   | कवु करंति ।     |
| जं हीणाहिउ,    | काइं मि साहिउ । |

### घत्ता

तं माय महासइ देवि सरासइ, गिहयसयल संदेहदुह ।

सहु त्वमउं भडारी तिहुअणसारी, पुप्फयंत जिणवणयकह ॥

इय जंसहरमहारायचरिए महामहल्लणएणकणाहरणे महाकइपुप्फयंतविरइए महाकवे चंडमरि  
देवय मारिदत्तरायधम्मलाहो अणोविसगागमंणं एणम चउत्थो परिछेउ सम्मत्तो ।

संवत् १६१२ वर्षे आसोज मासे कृष्णपक्षे द्वादशीदिवसे शुरुवारि अश्लेषानक्षत्रे तत्तकगढमहादुर्गे  
महाराजाधिराज राउ श्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने अ आदिनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे नंदाग्नाये बलात्कारगणे  
सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक  
श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्य श्रीधमचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्य  
श्रीललितकीर्तिदेवास्तदाग्नाये खंडेलवालान्वये छावडा गोत्रे सा सोढा तद् भार्या सुहागदे तत्पुत्राश्चत्वारः  
प्रथम सा० चाहड द्वि० सा० दूलह, तृतीय सा० देवा, चतुर्थ सा० पूना । प्रथम सा० चाहड भार्या मदना, द्वि०  
दूलह भार्या दूलहदे तत्पुत्रास्त्रयः । प्रथम सा० पोया द्वि० सा० थेल्हा तृतीय सा० ओपाल । प्रथम सा० पोय  
भार्या पसिरि तत्पुत्रौ द्वौ, प्रथम सा० सुरभाण द्वितीय चि० पचाइण । प्र० सा० सुरत्राण भार्या सुरत्राणदे ।  
द्वि० सा थेभाल्हा र्ये द्वे प्रथम थेल्हश्री द्वितीय कौतिगदे तत्पुत्रास्त्रयः प्र० सा० डूंगरसी द्वि० चि० भेला, तृतीय  
सा० तोल्हा । प्र० सा० डूंगर भार्या दाड्यौदे । तृ० सा० श्रीपाल भार्ये द्वे प्र० स्वरूपदे द्वि० ल्हौकन तत्पुत्रौ  
द्वौ प्र० चि० रूपा द्वि० चि० धर्मदास । तृ० सा० देवा भार्ये द्वे प्रथम घोसरि द्वितीय स्वरूपदे तत्पुत्रौ द्वौ प्र०  
सा० सरवण द्वि० सा० ईसर । प्रथम सा० सरवण भार्या सुहागदे, तत्पुत्र चि० हेमराज द्वितीय सा० ईसर  
भार्या अहंकारदे चतुर्थ सा० पूजा भार्या वाली एतेषा मध्ये सा० पूजा भार्या वाली इदं यशोधरचरित्रं लिखाप्य  
सोलहकारणप्रतोद्यापनार्थं मंडलाचार्य श्रीललितकीर्तये दत्त ।

प्रति नं० २ । पत्र संख्या ८६. साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६ । ३२ अक्षर ।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५७५ वर्षे मार्गसिर सुदी ४ शुक्रवारेऽपुष्यनक्षत्रेऽश्रीमूलसंघे नंदात्मनाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदात्मनाये खंडेलवालान्वये साह गोत्रे सघभारधुरंधर संघइ बीडा तस्य भार्या सोना तत्पुत्र सा० तेजा तस्य भार्या लोचमदे तत्पुत्र दूलइ । द्वितीय पुत्र श्रीपाल । साह दूलइ तस्य भार्या दूलइदे तत्पुत्र चोखा द्वितीय आखा । चोखा भार्या चादणोद । साह श्रीपाल तस्य भार्या सरसति तत्पुत्र होला द्वितीय लाला तृतीय पुत्र बाला एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं यशोधरचरित्रं बाई पावेंती लिखायितं कम्मक्षय नामत्तं श्री प्रभाचन्द्र योग्य दातव्यं ।

प्रति नं० ३ । पृष्ठ संख्या ७३. साइज ११×४। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ३२ । ३६ अक्षर । प्रति प्राचीन है ।

संवत् १६१० वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पष्ट्यांतिथौ सोमवारे स्वाति नक्षत्रे तत्तकगढमहादुर्गे श्री आदिनाथचैत्यालये पातिसाह श्रीसलेमसाहगज्यप्रवर्त्तमाने रावश्रीरामचन्द्र प्रतापे श्री मूलसंघे नंदात्मनाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्-शिष्यमंडलाचार्ये श्री धर्मकीर्ति-देवास्तदात्मनाये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे सा लोहर तद्भार्या शीला तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा० गोइदं द्वितीय सा० दामा तृतीय सा० मोकल । सा० गोइदं भार्या सोठी तत्पुत्राश्चत्वारः प्रथम सा० पासा द्वितीय सा० आसा तृतीय सा० आल्हा चतुर्थ सा० पचाइण । सा० पासा भार्या पाटमदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० नेमा, द्वि० चि० खेमा । सा० आल्हा भार्ये द्वे प्रथमा नौजू द्वितीया सुहागदे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सीहातत् भार्या सफलादे द्वितीय चि० हेमा तृतीय चि० धोनह । सा० पचाइण भार्या गूजारि तत्पुत्रौ द्वौ प्र० वीरदास द्वि चि० गणा । द्वि० सा० दामा तद् भार्या चांदो तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम वोहिय द्वितीय सा० बाला । सा० वोहिय भार्या बालादे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० सुरत्राण द्वि० सा० साधू । सा० सुरत्राण भार्ये सुरत्राणदे द्वि० सोभागदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० सारंग द्वि० चि० माधव तत् य सा० मोकल भार्ये द्वे प्रथम भार्या मुक्तादे द्वि० लाडी तत्पुत्र सा० कुंभा तद्भार्या कौतिगदे तत्पुत्रौ द्वौ प्र० सा० त्राणा द्वि० चि० पदमसी एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं श्री ललित-कीर्त्तये घटायितं ।

प्रति नं० ४ । पत्र संख्या ६४. साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३० । ३४ अक्षर । प्रति शुद्ध और सुन्दर है ।



संवत् १५२० वर्षे आसोज सुदी १० शनिदिने श्रवण नक्षत्रे श्री स्यान्नामनुगारे तत्पार्श्वे मिकरावः द  
शुभस्थाने सुलितान साहि इब्राहिमराज्यप्रवक्षमाने श्री मूलसंघे बल रकारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचा-  
र्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक आशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे  
पूर्वाचलदिनमणि षट्कर्तारिकिचूडामणि वादिमद्विपसिंह विबुधवादिमददलनवादिकंदकुहाल सकलजीव  
अबुधप्रतिदोष भट्टारक श्रीप्रभाज्जन्देवास्तत् शिष्य तत्कर्क व्यकरणकुंदोलंकारसाहित्यसिद्धांतयोतिषवै दक  
संगीत शान्तरपारंगत जितकवि सुहृद् भूततत्त्व ज्ञानदाय षट्द्रव्यपञ्चांगितकाय अध्यात्मप्रथसमुद्रमध्यमहारल-  
नार्यानभिचार सीलव्रतसागर संपूर्णब्रह्मप्रतिमापरिपालक श्री प्रभाज्जन्द्रं गुरुवामित्रायस्मर्योस्म इति  
चित्तदेशव्रति तिरुकोभून ब्रह्म व्रीडा तदाज्ञाये खंडेलवालात्त्रये परमभावक सा कृता तस्य भार्या सीता तयोः  
पुत्रत्रयः । प्रथम सा० देवू तस्य भार्या राणी । द्वितीय पुत्र सा० नरसिंधु भार्या सांझिण तृतीय पुत्र सा  
चरण्य भार्या राणी देवू पुत्र सा दोदू तस्य भार्या सबीरी तपोत्पन्न ज्ञानारः प्रथम पुत्र सा, घरमू भार्या देवल ।  
द्वितीय पुत्र सा० दासा तस्य भार्या सुहो । तृतीय साह विमल चतुर्थ पुत्र गजपालु प्रतेमां मध्ये साह दोदू इहं  
चशोवरशास्त्रं लिखाय कर्मच्यनिमित्तं ब्रह्मवीडाय दत्तं ।

३२. रत्नकरण्ड शास्त्र ।

रचयिता श्री प्रंडिताचार्य श्रीचंद । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १४५, साइज ११x४॥ इञ्च । प्रत्येक  
पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४० । ४४ अक्षर प्रति पूर्ण होने के साथ २ सुन्दर भी है । अन्तिम पृष्ठ  
नहीं है । रचना संवत् ११२० लिपि संवत् १६४० ।

मंगलाचरण—

सो जयव जयमिं जयमे, मडमो मडम पयसिब जेस ।

कुमईसु पडंताणं दिणं कालवणा भम्मो ॥ १ ॥

सो जयव संतिणहो, विग्गसहन्साइं गाम मिसेण ।

जस्सावहस्सिऊणं, माविज्जइ ईहिया सिद्धी ॥ २ ॥

जयव सिरिबीरइंदो, अकलंको अक्खव गिरवारणो ।

गिम्मलकेवल्लजोएंडा उज्जोइय सयल भुवण यत्तो ॥ ३ ॥

सिद्धिविद्धि जयवुद्धि, सुद्धि पुद्धि पीयंकर ।

सिद्ध संख्व जयंतु, चच्चरीसवि तित्थंकर ॥ ४ ॥

प्रारम्भ में कवि ने आचार्यों का इस प्रकार स्मरण किया है—

पणुवेण्णु जिणुवयणुगायाहें,

विमलई पयाई सुयदेवयाहें ।

१ अणुवरणो ।

दंसणकहरयणु करडणामु,  
एककेवकपहाणु महामल्ल,  
हरिणदि मुणिदु समंतभद्दु,  
मुणिवद्द कुलभूसणु पायपुज्ज,  
वरसेणु महामद्द वीरसेणु,  
गुणभद्वणंकुर उच्छमल्लु,  
चउमुहु चउमुहु वपसिद्धभाद्दु,  
तह पुण्यंतु णिम्मवक्कदोसु,  
सिरिहरिसकालिया साद्दसाग,  
हीणाहिं मद्द संपय आरिसेहिं,  
तह विहु जिणिंद पयभत्तिपाएं,

आहासमि कव्वु मणोदिरामु ।  
इत्थत्थि अणोयकई छइल्ल ।  
अकलकुएउ परमयविमद्दु ।  
तह विज्जाणदि अणंतविज्जु ।  
जिणसेणु कुत्रोहि विहंगु सेणु ।  
सिरिसोमएउ परसमयमल्लु ।  
कइराय सयंभु सयंभु णाद्दु ।  
व'एणउज्जइ किं सुयएवकोसु ।  
अवर वि को गणइं कइत्तकार ।  
किं कीरइ तहिं अम्हारि सेहिं ।  
लइ कर म किं पि णिय सत्तिपाएं ।

अन्तिम पाठ--

सम्पत्तसोलसंजमतवेण छिण्णिणविणारिलिगु असुद्द ।

सगगगु गयउ सिर चटुरवि, लं घवि जत्थ महंत सुद्द ॥

१. सिरिचंदमुणिंदकए पयडियकोऊहलसए सोदणभ वपवत्तए परिओसियवुहचितए । दंसणकह रय-  
गकरंडए मिज्जत्तपओहितरंडए कोहाइ कसायविहंडए सत्थम्मिमहागुणसंडए गयणगइ तुरयं कडाणयं उदिदो-  
दयरायादाणपव्वयण सगगमणं णाम एकवोसमो सवि परिच्छेउ समसो ।

प्रशास्ति--

परमारद्धतमहंत गुणउण्णइं ।  
देसीगणु पहाणु गुणगणहह ।  
तत्र पहाव विभावि य वासउ ।  
भव्वमणो णलिणाणदियेसरु ।  
तासु सासु पंडिय चूडामणि ।  
पोलतमिये सुइ पायसरोरुहु ।  
वरजस पसर पसाहिय महियलु ।  
चउविहसंघमहाधुरधारणु ।  
धम्मुवरिसि रुवें जसरुवउ ।  
तासुवि परवाइय मय भंजणु ।

कुंदाकुंदाइरियहो अण्णइं ॥  
अवइण्णं गा-इ सइं मण्णह ।  
धम्मज्जाणवि णिहय पावासउ ॥  
सिरिकित्तिनिसुविस्सिमुलीसरु ॥  
सिरिगंगेय पमुहं पउरावाणि ॥  
मुणिउदुलिण मय गयण सुहारुहु ॥  
णियमहत्तपरिणिज्जियणःयलु ॥  
दुसहकाम सरघोर'णवारणु ॥  
सिरिसुय'कत्तिणामुसंभूयउ ॥  
णाणावुहयणणिर वीरंजणु ॥

१ सिरिचंदकए २ अण्णइं ।

चारु गुणोद् रयणरयणायरु ।  
इन्दिय चंचल मयहं मथाहिउ ।  
सिरिचन्दुजल जसु संजायउ ।

चाउरंग गणु वल्ललायरु ॥  
चउकसाय सोरंग मिगाहिउ ॥  
णामें सहमकित्ति विक्ख यउ ॥

घत्ता

तहो देवकित्ति पुरु सीसु हुउ, वीयउ अहो वासिणि मुण ।  
वारिंदु उदयकित्ति वि तहासुहइंदु वि पंचमउं भणि ॥

जो चरणकमल आयमपुराणु ।  
आहरिय महागुणगणसमिद्धु ।  
तहो त्रीर इंदुमुणि पंचमासु ।  
सउजएण मडामाणिककखाणि ।  
सिरिचंदुणाम सोदण मुणीसु ।  
तेयोउ अणोयछरियधामु ।  
किउ कवु विहिय रयणोहवामु ।  
जो पढइ पढावइ एय चित्तु ।  
आयण्णइ मण्णइ जो पसत्थु ।  
जिप्पइ ए कसायहि इदि एहि ।  
तहो दुक्किय कम्म असेसु जाइ ।  
जिण्णगाइ चरणजुय भत्तएण ।  
जं काइं वि लक्खण छंदहीणु ।

णायत्त ई बहु सायमसमाणु ॥  
वल्ललमहोवाइ जय प्रसिद्ध ॥  
दूरुक्किय दुम्मइ गुण्णवासु ॥  
वयसोलालंकिउ दिव्ववाणि ॥  
संजायउ पंडिउ पढम सीसु ॥  
दंसणकह रयणकरंडु णामु ॥  
ललियरक्खरु सुयणमणोहिरामु ।  
सई लिहइ लहावइ जो णिरुत्तु ॥  
परिभावइ अहिणिसु एउ सत्थु ॥  
तो लियइ ए सो पासंडिणहि ॥  
सो लहइ मोक्ख सुक्खुभावइ ॥  
अमुणंते कत्थु करंत एण ॥  
मई वुत्त इत्थ अह अहिउ हीणु ॥

घत्ता

सं खमउ सवु बहु जेणणमिय, सुयदेतय अण्णोणमइ ।  
जगपुज्जणिउज सिरिचंदमइ, तहय भडारी विउस सह ॥ १ ॥  
एयारह ते वीसा वासमंयाविकमस्स णरवइणो ।  
अइय ग्याहु तइया समणियं सुंदरं एयं ॥ २ ॥  
कण्णणरिदहो रज्जिसुहि सिरिसिरिवालपुरम्मि ।  
बुहसिरि चंदे एउ किउ रांदउ कवु जयम्मि ॥  
जयउ जिणवरु जयउ जिणवम्म, जिणवयणुवि जयउ जंइ ।  
जयउ साहु संतइ सुहंकर पणवंतहो भव्वयण कुणउ जयहो सासुहपरंपर ।

दाणपुञ्जदयधम्मरय सच्चसउच्चपवित्त ।  
 भव्व जयंतु सया सुयण वहु गुण परदियचित्त ॥ ३ ॥  
 जयउ एरवइ णायणयणेत्त पयं पालउ धम्मरउ ।  
 सयणवधु परिवारस'हयउ णिण्णासियविउण्णु जणु ॥  
 जेण णियय णिय कम्म णिदियउ, पिच्चउ मेइणिसइहवउ वरिसउ देउ सयावि ।  
 कित्तिधम्मु एरवइ जयउ जसु खंडणु ण कयावि ॥ ४ ॥  
 जाम मेइणि जाम महणइउ, कुलपव्वय जाम तहि ।  
 जाम दीवगय सख एरवइ, पायालु आयासलु ।  
 जाम सग्गु सुरणियरु सुरवइ, जा तारायणु चटुरवि जा जिणं धम्मं पसन्थु ।  
 त म जणउ सुहु भव्वयणि, जयउ एहु जइ सन्थु ॥ ५ ॥  
 जो सव्वएहु तिलोयवइ सिद्धसाहु वंभंडु ।  
 ताम जणउ सुहु भव्वयणि दंसण कह रयणकरंडु ॥

इति पंडित श्रीचंद्राविरचिते रत्नकरंडनाम शास्त्रं समाप्तं ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १५६. साइज १८x४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ १६-११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्त में ४०x४४ अक्षर । प्रति पूर्ण हैं ।

संवत् १५८२ वर्षे शाके १४४७ प्रवर्त्तमाने द्वितीयायां तिथौ गुरुवारे घटी ५४ पुष्ये नक्षत्रे घटी ४६ हपंणनामजोग घटी ३ : धटियालीपुरात् श्री मूलसंघे नयाम्नाये बलात्काराणो संरस्वती गच्छे श्री कुन्द-कुन्दचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदात्मन ये खडेलवालान्वये साह गौत्रे चतुर्विधदानपूजासंश्रुयतान् परोपकार निरतान् प्रशस्तचित्तानुसम्यक्त्वरतिपालकान् श्री सर्वज्ञोक्तधर्मान् रजितचैतसान् कुटुंबसाधारकान् रत्नभूपालकृतदिविदेवान् आहारशास्त्रदानसमान्वतान् साह अवर्णं तस्य भार्या साइसि तस्य पुत्र साह सक्करु तस्य भार्या सुहृदादे तस्य पुत्र साह रावण भार्या पवयणी तस्य पुत्र साह बल्लभ भार्या लक्ष्मी पुत्र चेला द्वि० साह जालय भार्या जवणादे । तृतीय साह ईसर भार्या ईसरदे चतुर्थ पुत्र साह अर्जुन पतान् बाई भोली इदं शास्त्रं मुनिहेमकीर्तियै दत्तं ।

३३. वर्द्धमान चंगिरं ।

रचयिता श्री जयमित्रहल । भाषा अपभ्रंश, पत्र संख्या ५१ । साइज १०x४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६ । ४० अक्षर । लिपि संवत् १६२७ ।

प्रारम्भिक पाठ —

परावेवि अण्णिदहो चरमजिण्णिदहो वीरहो दंसण्णायणवहा ।

सोणयहो णरिदहु कुवलयचंदहो, णिसुणहो भविहो पवरकहा ।

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

जयदेवाहिदेव तित्थंकर,  
 णिरुवमकण्णरसायणु धणणं,  
 सो णंदउ जो णियमणिभावइ,  
 सो णंदउ जो लिहइ लिहावइ,  
 जो पयत्थु पयडेइ सुभवहं,  
 णंदउ देवराभणदंणुधर,  
 एहु चरित्तु जेण बिथारिउ,  
 होउ संति णिसेसह भव्वहं,  
 वरिसउ सयल पुहमि घरवारहं,  
 घरि घरि मंगलु होउ सउणउ,  
 होउ संति चउविहजिणसंघहं,  
 णंदउ सासणु वीर जिणेसहो,  
 मदर सिहार होउ जं मुळउ,  
 होउ सयल पूरंत मणोरह,  
 अमियविहउ सहएवहं णंदणु,  
 विण्णवेइ सम्मय दय किज्जउ,  
 अल्हसाहु साह सुमहु णदणु,  
 होहु चिराउ सणियकुलमडण,  
 होउ संति सयलहं परिवारहं,  
 पउमणंदि मुणिणाह गणिदहु,  
 जं हीणाहिउ कव्वु रसढइ,  
 तं सुयणाण देवि जगसारी,

वेड्ढमाणजिणमव्वसुहंकर ।  
 कव्वु रयणु कुँडल भउ पुण्णउ ।  
 वीर चरित्तु विमलु आलावइ ।  
 रस रसहं जो पढइ पढावइ ।  
 मणिसदहणु करेइ सुकव्वहं ।  
 होलिवम्मु कण्णवउ णयकर ।  
 लेहाविबि गुणियणउवयारिउ ।  
 जिणपयभत्तहं वियलियगव्वहं ।  
 मेहजालु पावसवसु धारहं ।  
 दिणि दिंण धणधणहं संपुण्णउ ।  
 देस बास णरणाह दुलघह ।  
 णिग्गउ सेणिउ णरयणि वासहो ।  
 घरि घरि दुंदुहि सल्लु अतुल्लउ ।  
 परमाणंदु पवड्ढउ इह सह ।  
 तणि जगमित्तु वि दुरियणि कंदणु ।  
 सासय सुहु णिवासु महुदिज्जउ ।  
 सज्जणजणमणायणाणंदणु ।  
 मग्गणजणदुद्धरोरविहंढण ।  
 भत्तिय बड्ढउ गुरुवय धारह ।  
 चरण सरणु गुरु कइ हरि ईदहु ।  
 पउ विरइउ सम्मइ अविउदइ ।  
 महु अवराहु खमउ भडारी ।

धत्ता

दयधम्म पवत्तणु विमलु सुकित्तणु णिसुणंतहो जिण ईदहो ।

१ मण्णइ २ आयणहं ३ पयडे ४ धणधणहं ।

जं होइ सुधण्णउ इउमणिमण्णउ, तं सुहु जगिहंरि ईदहो ॥

इय सिरी बद्धमाणकन्वे पयहिय चउवगगगरसभन्वे सेणियअभयचरित्ते विरइय जयमित्त  
हल्लसुकडत्तो भवियणजणमणहरणो, संधहि बहोलिभम्मकणहरणे सम्मइजिण शिणव्वाण गमणो णाम  
एयारहमो संधि पण्छेउ सम्मत्तो ।

संवत् १६२७ वर्षे अषाढ सुदी ५ श्री मूलसंधे नंदाभ्याये वृत्ताकारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्द-  
कुन्दाचायान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रस्तपट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रस्तपट्टे  
भट्टारक श्री प्रभावन्द्रस्तपट्टे शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रस्तपट्टे शिष्यमंडलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवस्तपट्टे  
खडेलवालान्वये पांड्या गोत्रे साह पीथा तस्य भार्या पिर्वासरी तस्य पुत्र साह चाचा तस्य भार्या चउसिरी  
तयोः पुत्रास्त्रयः प्रथम पुत्र बाला तस्य भार्या बलालदे तस्य पुत्र सोठा इत्यादि । साह चाचा द्वितीय पुत्र स.  
माधव तस्य भार्या माणिकदे । तस्य तृतीय पुत्र सा. नेता तस्य भार्या नारंगदे । सा. पीथा तस्य द्वितीय पुत्र  
साह वसा तस्य भार्या करणदे इत्यादि । साह पीथा तस्य तृतीय पुत्र साह रतनपाल तस्य भार्या अणादे  
तस्य त्रयः पुत्राः प्रथम पुत्र साह गीदा तस्य भार्या कोडमदे तस्य पुत्र ५ प्रथम पुत्र ईसर तस्य भार्या अहं-  
कारदे तस्य पुत्र भोजराज । साह गीदा द्वि० पुत्र णोता तस्य भार्या नयणादे । तृतीय पुत्र गठमल चतुर्थ  
साह कल्याणमल पंचम पुत्र चिर कान्हड । साह रतनपाल तस्य द्वि० पुत्र साह धामा तस्य भार्या साध्वी  
खारादे द्वि० भार्या लाडी तयोः पुत्र चि० श्रीपाल द्वि० पुत्र पासा इत्यादि । साह रतनपाल तस्य तृत्त य पुत्र  
सा. तेजातस्य भार्या तेजलदे द्वि० भार्या त्रिभुवनदे तस्य पुत्र चि० सांगा इत्यादि । साह पीथा तस्य चतुर्थ  
पुत्र साह बाजू तस्य भार्या लक्ष्मी तयोः पुत्र चि० नानू द्वि० पुत्र चि० हेमराज इत्यादि । साह पीथा तस्य पंचम  
पुत्र साह बाजू तस्य भार्या बहुरंगदे द्वि० भार्या साध्वी लाछि तस्य पुत्र साह बीजू तस्य प्रथम भार्या छीतरदे  
द्वि० भार्या लक्ष्मी साध्वी स्वरूपदे इत्यादि । साह पीथा तस्य षष्ठम पुत्र साह दासा तस्य भार्या दाडमदे  
तयोः पुत्राः सप्त प्रथम पुत्र साह पदारथ तस्य भार्या लाडी तस्य पुत्र महेश तस्य भार्या महम दे तस्य द्वि०  
पुत्र साह हीग तस्य भार्या हरपमदे तस्य पुत्र तोल्ह तस्य भार्या तुल्हासरि तस्य ..... साह दासा  
तस्य तृतीय पुत्र साह आत्रा तस्य भार्या अबसिरि तस्य पुत्र चि० सांगा तस्य भार्या सिंगारदे द्वि० पुत्र  
कान्हा ..... साह दासा तस्य चतुर्थ पुत्र साह खीवा तस्य भार्या खीवासिरी, साह दासा पंचम  
पुत्र स ह कुंभा तस्य भार्या कुंभसिरि । सार दासा तस्य षष्ठम पुत्र साह टेह भार्या टिहसिरि तस्य पुत्र  
..... । साह दासा तस्य सप्तम पुत्र साह दुरगा तस्य भार्या दुगादे इत्यादि एतेषां मध्ये साह  
बाजू तस्य भाय बहुरंगदे तस्य पुत्र निजमुजोपार्जितवित्तेन आहाराभयभेषजशास्त्रदानवितरणतत्परेण साह  
लानू तेनेदं श्रेणिकचरित्रं निजज्ञानावरणीय कर्मक्षयनिमित्तं लिखाप्य ब्रह्म सोमाय घटापितं ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ५४, साइज १२x४॥ इत्यत्र । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में  
४२x४६ अक्षर । प्रति पृष्ठे तथा प्राचीन है ।

संवत् १५६३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ वृहस्पतिवारि श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुंदकुदा-  
चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे  
भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे  
साह नाथू तस्य भार्या तोला तत्पुत्र तिहुण तस्य भार्या चोखी तत्पुत्र धाना पारस । धाना भार्या नेमी तत्पुत्र  
कचमल, हेमराज, वील्हा, भरथा, श्रीवंत । कचा भार्या गागी, हेम भार्या पूरा, पारस भार्या कर्मा, द्वि. भार्या  
गेगी एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं लिखाय नेमी आर्यका विनयसिरी जोग्यदत्त ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ६२. साइज ११×४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति में  
३५×४० अक्षर । प्रति नवीन है तथा पूर्ण है ।

संवत् १६३१ वर्षे सहस्रदि ११ शुक्लवारि श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री  
कुंदकुदाचार्यान्वये भट्टारक पद्मनन्दिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचंद्रस्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचंद्रस्तत् शिष्य  
मंडलाचार्य श्री ललितक्रीस्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये रात्रका गोत्रे साह देवा भार्या रानादे तस्य पुत्र वृताय  
साह खेमा तस्य पुत्र घाटमल्ल द्वि० पुत्र साह वील्हा भार्या लाली तस्य पुत्र साह थेल्हा भार्या तिहुणश्री तस्य  
पुत्र लानग । वृतीय पुत्र साह खेता तस्य भार्ये द्वे० प्रथम सहखु द्वि० मानं तस्या पुत्र चत्वारः प्रथम पुत्र  
नानु द्वि० पुत्र हीरा वृतीय पुत्र बिइरा चतुर्थ पुत्र पाला । हीरा भार्या हीरादे तस्य पुत्र बुधमल्ल । पाला  
भार्या प्रतापदे तत्पुत्रो पुत्र द्वौ प्रथम हेमराज व्रतीक नेमदास । एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं चटापित साह हीरा  
दशलाक्षणीक व्रतकनिमित्त्य मुनिश्रीरत्नानि ? मालपुरा मध्ये साह धान, चंपा, हेसा, हीरा, के देहुरा (मंदिर)  
श्री भगवानदास राज्ये ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ५६. साइज १०×४ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में  
३५×४० अक्षर । प्रति सुन्दर और स्पष्ट है ।

संवत् १५४५ वर्षे वैशाख सुदी २ रविवारे कृतिका नक्षत्रे लाडणपुरवरे आदिनाथचैत्यालये पेरोज-  
खान राज्ये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुंदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे  
भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मुनि जयनंदि तत् शिष्य ब्रह्म अचल  
लिखितं कर्मक्षयार्थ ब्रह्म वीराय दत्त ।

३३. वर्द्धमान कथा ।

रचयिता श्री नरसेन । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १७. साइज १०॥×५ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर  
३२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२×३८ अक्षर । लिपि सुन्दर है । प्रति प्राचीन है ।

मंगलाचरण—

तवसिरिभक्तारहो णिज्जियमारहो पणविवि अस्सुइं जिणवरहो ।

त्रयजिणरत्तिहेफलु अक्खमि शिम्मलु भन्नसयसंचयदुहहरदो ॥

अन्तिम पाठ—

इय जिणरत्ति विद्वाणु पयासिउ,  
जं हीणाहिउ काइमि वुत्तउ,  
एहु सन्थु जो लिहइ लिहावइ,  
जो गारु गारि एहु मणिभावइ,

जइ जिणसासणो गणहर भासिउ ।  
तं वुहयण महु खमहु गिरुत्तउ ।  
पढे पढावइ केहइ केहावइ ।  
पुणह अहिउ पुणफलु पावइ ।

वृत्ता

सिरिणरसेणहो सामिउ सिवपुरगामिउ वडढमाणुतिथंकरु !  
जइ मणिउदेइ करुणुकरेइ, देउ सुवोहिउ लाहु परमेसरु ॥

इय सिरिबडढमाणकहापुराणो सिंघादिभवभाववर्णाणो जिणराइविद्वाणफलसंपत्ती सिरिणरसेण  
विरइए सुभवयणणिमित्तो णाम वडढो परिच्छेउ सम्मत्तो ।

३४. षट् कर्मोपदेश रत्नमाला ।

रचयिता श्री महाकवि अमरकीर्ति । भाषा अपभ्रंश । पृष्ठ संख्या १०४ साइज १०।।×५ इञ्च ।  
प्रत्येक पृष्ठ पर दस पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ३५×४० अक्षर । अपभ्रंश भाषा का बहुत प्रसिद्ध ग्रन्थ है ।  
कर्म सिद्धांत का सुविस्तृत वर्णन किया गया है । रचना संवत् १२७४ लिपि संवत् १५६६ ।

मंगलाचरण—

परमपयभावणु सुहगुणपावणु, शिहणिय जम्मजरासरणु ।

सासयसिरिसुन्दरु पयणपुरंदरु, रिसहु णविवि तिहुवणसरणु ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

छक्कम्मिहिं सावउ जाणिज्जइ,  
छक्कम्मिहिं सम्मत्त वि सुब्बइ,  
छक्कम्मिहिं जिणधम्मु सुणिज्जइ,  
छक्कम्मिहिं उवसणु ण दुक्कइ,  
छक्कम्मिहिं दुक्कम्मइ तुट्ठिहिं,

छक्कम्मिहिं विणदुरिउ विलिज्जइ ।  
छक्कम्मिहिं घरकम्मि ण सुब्बइ ॥  
छक्कम्मिहिं गारजम्मु गणिज्जइ ।  
छक्कम्मिहिं विद्धिहिं णवि चुक्कइ ॥  
छक्कम्मिहिं पमायअ हट्ठिहिं ।

१ पणय २ सुद्धइ ३ कम्म ४ पमाइउपट्ठइ ।



छक्कम्मिहिं पसत्ति मणिजम्भइ,  
 छक्कम्मिहिं पसद्धि जणि लम्भइ,  
 छक्कम्मिहिं वसिजायहिं एरवर,  
 छक्कम्मिहिं वंछिउ संप्वज्जइ,  
 छक्कम्मिहिं उप्पज्जइ केवलु,

छक्कम्मिहिं सुरणय रिहि गम्भइ ॥  
 छक्कम्मिहिं तिहुयणु खणि खुम्भइ ।  
 छक्कम्मिहिं देवा वि आणायर ॥  
 छक्कम्मिहिं सुरदुंदुहि वज्जइ ।  
 छक्कम्मिहिं लम्भइ सुहु अवियलु ॥

### घत्ता

छक्कमइ जो णीसल्लमणु, भविउ भवाहि विवज्जिउ पालइ ।  
 सो जिण्णहो देसियउ मोक्खम्मग्गु थिरदिट्ठि णिहालइ ॥

### गाथा

विहियाए सवुद्धीए एयाइ मए गिहत्थकम्माइ ।  
 अमुणंतेण सुअत्थं जिण्णहोपयासियं सम्मं ॥

ताइं मुण्हि सोहेवि णिरंतरु,  
 फेडिण्वउमसत्तु भावंतिहिं,  
 छक्कम्मो वएसु एहु भवियहिं,  
 अंवपसाएं चच्चणि पुत्तो,  
 गुणवालहो सुएण वरयाविउ,  
 २ १२७४  
 वारहसयहिं ससत्तचयालिहिं,  
 गयहिमि भहवयहो पक्खतरि,  
 एक्के मासे एहु समत्थिउ,  
 एणंदउ परसासण णिण्णासणु,  
 एणंदउ अणिसु देवि वाएसारि,  
 एणंदउ धम्मं जिणिदि भासिउं,  
 एणंदउ महिवइ धम्मासत्तउ,  
 एणंदउ भवियणु णिम्मलु दंसणु,  
 एणंदउ अंव पसाउ वियक्खणु,  
 एणंदउ अवत्ति जिण पय भत्तउ,

हीणाहिउ विरुद्ध, णिहियक्खरु ।  
 अम्भहं उप्परि बुद्धिमहंतिहि ॥  
 वक्खाणिण्वउ भत्तिए ण'मयहं ।  
 गिह्छक्कम्मपवित्तिपवित्ते ॥  
 अवरेहिमि णियमणि सभाविउ ।  
 विक्कम संवज्जहो विसालिहि ॥  
 गुरुवारम्मि चउहसि वासर ।  
 सइं लिहियउ आलसु अवत्थिउं ॥  
 ३  
 सयलकालजिण्णहो सासणु ।  
 जिणमुहकमलुम्भवपरमेसरि ॥  
 एणंदउ संघु सुसील विहुसिउ ।  
 पयपरियालण णायमहंतउ ॥  
 धक्कमीहिं पाविय जिण मासणु ।  
 अमरसूरि लहु वंधु वियक्खणु ॥  
 विवुहवग्गु भाविय रयणत्तउ ।

## घत्ता

एतदु शिरु ता महि सत्यु इहु, अमरकीर्तिगणि विहिउ पयत्ते ।

जा महि महिमारुयमेरुगिर एहयलु, अवपमाए गिमित्तें ॥

इय छक्कम्भोवएसे महाकइसिरिअमरकीर्तिविरइए महाकव्वे महाभव्व अवपसाएणु मणिणए तनदाए-  
फल वणणणो णाम चउदहमो संधी सम्भत्तो ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ११३ साइज ६x५॥ इअ । प्रति की स्थात अच्छी नहीं है ।

लेखक प्रशस्ति—

अथ संवत्सरे नृपविक्रमादित्यराज्ये संवत् १५६२ वर्षे कार्तिक वुदी ५ शनिवासरे पतिसाहि हुमायुं  
राज्यप्रवर्तमाने सिंहनन्दस्थाने ग० श्री विनयसुन्दर शिष्य मुनि धर्मसुन्दरेण पुस्तकं लिखितं ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ७५ साइज १०x५ इअ । ५४ से ६४ तक के पृष्ठ नहीं है । साधारणतः  
ग्रन्थ की हालत अच्छी है ।

लेखक प्रशस्ति—

अथ नृपविक्रमादित्य संवत् १५५८ वर्षे चैत्र सुदी १० सोमवासरे अश्लेखा नक्षत्रे गोपाचल-  
महादुर्गे महाराजाधिराज श्री मानसिंहराज्ये प्रवर्तमाने श्री काष्ठासंधे नंदिगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री  
सोमकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री विजयसेनदेवास्तत् शिष्य ब्रह्म काला इदं पट्कर्मोपदेशशास्त्रं लिखाय  
आत्मपठनार्थे ।

संवत् १५५३ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ५ भौमवारे श्री मूलसंधे श्रीमत्रैविद्यभट्टारक श्री पद्मचन्द्रदेवास्त-  
त्पट्टालंकार गुज्जरलाढमालवकलिगमहाराष्ट्रकर्णाटअंगवंगमगध ... ।

प्रति नं० ४ पृष्ठ संख्या ६५ साइज ११x४ इअ । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में  
४०x४४ अक्षर है । प्रति प्राचीन, शुद्ध तथा सुन्दर है ।

प्रशस्ति—

संवत्सरेस्मिन् १४७६ वर्षे अषाढ सुदी ५ बुधदिने श्री गोपाचलदुर्गे राजा श्री वीरभद्रदेव राज्य  
प्रवर्तमाने गढोत्परे श्री नेमिनाथ चैत्यालये श्री काष्ठासंधे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री भावसंन  
देवास्तत्पट्टे श्री सहस्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे श्री प्रतिष्ठाचार्य श्री गुणकीर्तिदेवा तथा श्री विशालकीर्तिदेवा राम  
कीर्तिदेवाः खेमचन्द्रदेवाः । श्री गुणकीर्तिदेवनां शिष्याः श्री यशःकीर्तिदेवा कुमारकीर्तिदेवा हरिभूषण देवाः  
धर्म श्री संजय श्री शील श्री चारित्र श्री धर्ममतिविमल श्री सुमति एतेषामाम्नाये अग्रोतकान्त्रये चनुमुख

वास्तव्या साधु यजने भार्या दौसिरि पुत्र जौत गृन्तर। जौत भार्या सरो पुत्र बाधू तस्य भार्या जोल्हा हो वि०  
सुहाग श्री पुत्र धाढा एतेषां मध्ये साधू जौत भार्या सरो तथा निजज्ञानावरणीयकर्मक्षयनिमित्तं इदं पद  
कर्मोपदेशशास्त्रं लिखाप्य बाई जौतमिरि शिष्या बाई विमलसिरि तस्या देवशास्त्रंगुरुपूजाविधाने  
महामहोत्सवेन बाई विमल श्री योग्य सम्मर्पित। लिखित पढत रामचन्द्र। इदं शास्त्रं ब्रह्म पेमा तेन यं  
इदं विमल दासाय समर्पितं

३४. पद् पाहुड सूदीक।

मुक्तकर्ता श्री कुंदकुंदाचार्य। टीकाकार श्री अतसगर। भाषा प्राकृत संस्कृत। पत्र संख्या १६५  
प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४×४२= अक्षर।

प्रशस्ति —

संवत्सरे वाणरस्तुनीकुमिते १७६५ मघमासे शुक्लपक्षे पंचमीतिथौ पुनर्वसुनक्षत्रे वनोपवन-  
दीपिकासरोनदीप्रसादशोभिते चतुर्विधसंघकृतगीतवाद्यप्रभावन निरंतरप्रवृद्धितमित्योत्सवे वगह नगरे  
श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री मूलसंघे नद्यान्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक  
श्री देवेन्द्रकीर्ति ..... श्रीमद् जगत्कीर्तिजितः शासनकारी निजवचनचातुरी पांडित्यगुणरजित  
नगरलोकदृष्टः पंडित श्री छीतरमल्लः तत् शिष्यः स्वशीलपंडित्यवदान्यलोकरंजकस्व धैर्यगांभीर्यसौंदर्यप्रस-  
न्न एतत्सरोहणचक्रः पंडितचेतोर्गजायसीकुरणसृणिः प्रत्ययः पंडित श्री हीरनंद तत् शिष्येण चोत्तमचंद्रेण  
स्वशयेनेदं पद् पाहुडशास्त्रं संलिख्य भट्टारक श्री जगत्कीर्तिशिष्याय श्री दोदराजाय प्रदत्तम्।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १२६ साइज ११।।४५ इच्छ। लिपि संवत् १५२५।

संवत् १५२५ वर्षे मद्वावुदी ४ श्री मूलसंघे नद्यान्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदा-  
चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्ददेवास्तत्पद्वे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पद्वे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पद्वे  
भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मंढलाचार्य श्री धर्मचन्द्रस्तदान्तये खड्गेलालान्वये वाक्पलीवलगोत्रे  
साह चाचा भार्या चौसिरि तत्पुत्र साह नेना भार्या सवीरी वि० कोहनेड तयोः पुत्र साह घोपाल सात्  
रुपा। साह घोपाल भार्या दानसिरि। साह सात् भार्या बाई माह रुपा भार्या दामा एतेषां मध्ये कोहमदे  
रोहिणी व्रतोद्योतनार्थं इदं शास्त्रं लिखाप्य भक्त्या मुनि श्री धर्मचंद्राय ज्ञानपात्राय दत्तं।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १६ साइज ११।।४५। इच्छ।

संवत् १६०२ वर्षे वैशाखसुदी १० तिथौ रविवासरे उत्तरफाल्गुननक्षत्रे राजाधिराजशेह  
आतन गच्छे नगरपंचावती मध्ये श्री प्रार्थनाचैत्यालये श्री मूलसंघे नद्यान्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे  
भट्टारक श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्ददेवास्तत्पद्वे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पद्वे भट्टारक श्री

जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये ..... ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ४४ साइज ११×४॥ इच्छ ।

संवत् १५६४ वर्षे महासुदी २ वृधवारि अवशानक्षत्रे श्री मूलसंघे घलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नंदा-  
म्नाये श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मलालदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री  
जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेल  
वालान्वये चंपावतीनगरे राठौडवंशे रायश्रीवीरमधराज्ये बाकलीवालगोत्रे सं० तीर्था भार्या पुनी । प्रथम  
पुत्र माह चाया भार्या गूजरि तत्पुत्र साह होला भयो हुलसिर । द्वि० पुत्र सं० तालहू भार्या नौलादे ।  
प्रथम पुत्र सं० तालहू भार्या ललितदे द्वि० भार्या रुपा । द्वि० पुत्र सं० चालू भार्या जेलसिर द्वि० भार्या  
चहुरंगदे पुत्र नथमल इदं शास्त्रं लिखापितं ।

३६. श्रावकाचार ।

रचयिता श्री लक्ष्मीचन्द्र । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या २० साइज ६×४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर  
६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८×४२ अक्षर । विषय अक्षर धर्म ।

भंगलाचरण—

रावकोरधिष्णु पञ्चगुरु दूरदलियदुहकम् ।  
संखिने पयडरकरहि अक्खमिसावयधम् ॥

अन्तिम पाठ—

दंसणु णाणु चरित्तं तचरिसि गुरु जिणवरुदेव ।  
घोहि समाहिणं सहं मरणु भवे भवे दिज्जव एव ॥

संवच्छरेचद्रन्युगमवस्विदुमिने फाल्गुणमासे कृष्णम्यां पक्षे पंचम्यां तिथौ विवाहसरे सवाई जयपुरे  
महाराजाधिराज श्री सवाई माधवसिंहजी प्रवर्तमाने राज्ये ऋषभदेव चैत्यालये साह श्री जोधराजपाटोदी  
कारापिते श्री मूलसंघे नंदा-  
म्नाये घलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये श्री नरेंद्रकीर्तिस्तत्  
शिष्य ब्रह्म श्री अमरचन्दस्तत् शिष्यः पंडितः श्री जयमल्ल तत् शिष्य पंडित श्री मनोहरदास तत् शिष्य पं०  
श्री छोतरमलस्तत् शिष्यास्त्रयः प्रथम हरानंदः द्वि० ब्रह्म टेकचन्दस्तृतीयश्चतुर्भुज । हीरानंदस्य शिष्यौ  
द्वौ प्रथम चोखचन्द द्वि० ऋषभदास । चोखचन्दस्य त्रयः शिष्याः प्रथम सुखराम द्वि० किसनदासस्तृतीये  
नानिगंदासः । सुखरामस्य चत्वारः शिष्यः प्रथम कल्याणदास द्वि० केसरीसिंह तृतीय मोहनदास चतुर्थ नेमिदास  
एतेषां मध्ये विनयवतः सुशिष्यस्य केसरीसिंहस्य पठनार्थं लिखितं नैणसागर संवत् १८२१ मिति  
फाल्गुन बुदी ..... ।

## ३७. श्रीपाल चरित्र ।

रचयिता श्री पं० नरसेन । भाषा अपभ्रंश । पृष्ठ संख्या २६ साइज १२x४। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४x४८ अक्षर । प्रात प्राचीन है ।

मंगलाचरण—

सिद्धचक्कविहिरिद्विय गुणहसमिद्वय पणवेप्पिणु सिद्धमुणीसरहो ।  
पुणु अक्खमि णिम्मलु भवियहमंगलु सिद्धमहापुरसामियहो ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

इय रज्जु करंतउ पुणु वि विरत्तउ देविसयलु णियपुत्त हो ।  
संसारहो संकिउ पुणु दिखंकिउ मंतिपुोहियजुत्तहो ॥

पुहवीपालुहु रज्जु समप्पिउ,  
मयणासुंदरिपमुहंते उर,  
सयल विसंजइ यउ संनायउ,  
महासुक्क सुरइंदुइ वोप्पिणु,  
अंगरक्खजहिं जहिं वउ भायउ,  
सयल वि णारणरवइ समदेप्पिणु,  
गउ सिरिपाल परमणिव्वाणहो,  
अवरु वि नरुनारिज्जु करेसइ,  
सग्गि सुराहिव सुहु भुंजेसइ,  
कत्तिय आसाढहिं फग्गुणमासहिं,  
वहु भंत्ति हिं जिणपूयकरे सहिं,  
जिणइ अकत्तिमाइ वंदेसइ,  
करिं विरज्ज पुणु मोक्खु लहे सहिं,

अप्पउराय महाव्वइ अण्णियउ ।  
हरडोरउत्तारिय णेउर ।  
दुविहिं तवयरणेहिं विरायउ ।  
गइय देव तियलिंगुह णोप्पिणु ।  
तहिं तहिं देवत्तणुसुहु पाविउ ।  
घोरु वीरु तवयरणु चरेप्पिणु ।  
सिद्धचक्कफलु भवियहु जाण हो ।  
एव माइ सो फलु पावेसइ ।  
सुक्खण्हं सिहु कील करेसइ ।  
ते णंदीसर दीउ गवेसहिं ।  
सिद्ध चक्कफलु सुहु भुंजेसइ ।  
पुणु महियांल चक्कवइ हवेसहिं ।  
..... ।

घत्ता

सिद्धचक्क, विहि रइयमइं, णारसेण भणइ णियसंत्तिण ।  
भवियणजणआणंदयरे, करिवि जिणेसर भत्तिण ॥

इय सिद्धचक्ककहाए महारायसिरिपालमयणासुंदरिदेवचरिए पंडितसिरिणारसेण विरइए इह

लोयफलसुहकहाए सिरियालमहारायणोम द्वितीय संधि ।

संवत् १५१२ वर्षे चैत्र बुदी ११ भौमे रावरपत्तने राजाधिराज श्री डूंगरसिंहदेवराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः खडेलवालान्वये सरस्वती गोत्रे साह बाल्हा तद् भार्या साध्वी राना तयोः पुत्राः साह बीमा भाषीलाल एतेषां मध्ये साह माधौ भार्या साध्वी महाश्रीसफलादे निजज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थ इदं शास्त्रं श्रीपालचरित्रं स्वहस्तेन लिखाय महासिरि दत्तं । ज्योतिषो भयागदास स्वपुत्र ज्योति श्री बाल लिखितं ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४८ साइज ११×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०×३४ अक्षर । प्रति पूर्ण तथा स्पष्ट है ।

संवत् १५७६ वर्षे मार्गसिमासे द्वितीया दिवसे बुधवारो रोहणी नक्षत्रे सिद्धिनामजोगे टौकपुरनाम नगरे पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंधे नंदाम्नाये सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खडेलवालान्वये टौक्या गोत्रे साह धरमसी तस्य भार्या खात् तयोः पुत्र चत्वारि प्रथम पुत्र साह बीको तस्य भार्या गल्ली तत्पुत्र हामा । द्वि० पुत्र जाल्हा । तृतीय पुत्र नेता । चतुर्थ पुत्र श्रीवर्त । साह हामा तस्य भार्या सोना तत्पुत्र तेजसी । साह जाल्हा तस्य भार्या पदमा तत्पुत्र सहसमल्ल । साह नेता तस्य भार्या उंदी तत्पुत्र बुचमल्ल साह श्रीवंत तस्य भार्या वाली तत्पुत्र सीहमल्ल द्वि० पुत्र पद्माली तृ० पुत्र रणमल्ल सा० लाखा तस्य भार्या रोहिणी तत्पुत्र गुणराज द्वि० भाइ तृतीय पदारथ । साह समंदीस तस्य भार्या रयणादे तत्पुत्र साह कुंभा तस्य भार्या धरमा तत्पुत्र गोइदं साह वस्त तस्य भार्या नीकू साह डूंगर तस्य भार्या खेत तत्पुत्र चाया तस्य भार्या चादणदे एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं लिखापित श्रीपालचरित्र बई पदमसिरि जोग्य दाताव्य ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ४३ साइज ११×४॥ इञ्च ।

लेखक प्रशस्ति—

अथ संवत्सरेस्मिन् श्री विक्रमादित्यराज्ये संवत् १५८४ वर्षे मादौ बुदि ८ रविवासरे मृगसिर नक्षत्रे साके १४४६ गते पंचाब्दयो मध्ये मन्मथनामसंवत्सरप्रवर्तमाने सुलितानमोर वनवरराज्यप्रवर्तमाने श्री कालपाराज्यआचमसाहि प्रवर्तमाने दौलतिपुरसुप्रस्थाने श्री मूलसंधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे श्री जिनचन्द्रदेवास्तदाम्नाये बलवक्रचुक्रान्वये जहमसमुद्धमजिनवरणकमलचंचरोकान दानपूजासमुद्यतान परोपकारनिरतान प्रशस्तचित्तान साधु श्री थेधू तद् भार्या धमपत्नी सुशीली साध्वी अमा । तस्थोदरसमुत्पन्न जिनचरणाराधनतत्परान् सम्यक्प्रतिपालकान्

सर्वज्ञोक्तधर्मरंजितचेतमान् कुटुंबभारधरधुरान् साधु श्री नोकमु तद्भार्या शीलतोयतरंगिनी हीरा तयोः पुत्र  
सर्वगुणालंकृत देवशास्त्रगुरविनयवंत सर्वजीवदयाप्रतिपालकान् चन्द्ररणीधीरान् दानश्रेयांसावतारान् आभार  
मेरान् परमश्रावक महासधु श्री महे सुतेनेदं श्रीपालनामशास्त्रं कर्मक्षयनिमित्तं लिखापितं । लिखितं पं  
वीरसिधु । बाई मानिकी योग्य प्रदानार्थ ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ३७ साइज ११×५ इञ्च ।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १६३२ वर्षे वैशाख..... अमावस्यां तिथौ भौमवासरे शावरतपगच्छे पं० न्यास, श्री पं०  
नयरत्नगणिशिष्य पं० न्यास न्यास विद्यासुन्दरगणि लिखितं चाटसुमध्ये ।

श्री पार्श्वनाथचैत्यालये चपावत्तीमहादुर्गे महाराजाधिराजरावश्रीभगवानदासराज्ये श्री मूलसंधे  
नंद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री  
शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्ये श्री  
धर्मचन्द्रदेवा तदाम्नाये तत्पट्टे मंडलाचार्ये श्री ललितकोत्तिदेवा तत् शिष्य चन्द्रकोत्तिदेवा खंडेलवालान्वये  
साह गोत्रे साह टेह भार्या बांहु । तत्पुत्र साह नानू भार्या नारंगदे । द्वि० भार्या दिवू । नानू पुत्राः पंच  
प्रथम पुत्र साह कपूरा भार्या नमी । तत्पुत्र गुणराज । द्वि० पुत्र साह श्रवण भार्या साहिदेव तत्  
हारिल .....

३८. श्रीपाल चरित्र ।

रचयिता पं० रङ्गू । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १२८ साइज ११×४ ॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर  
६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६×३२ अक्षर । प्रति शुद्ध तथा स्पष्ट है ।

मंगलाचरण—

सिद्धहं सुर्पासिद्धहं वसुगुणरिद्धहं, हियइ कमले धारे वि निरु ।  
अक्खामि पुणु सारउ सुहसयसारउ, सिद्धचक्क माहपुवरु ॥

अन्तिस पाठ—

इयं चरित सुहायरु बुहयणमणहरु नंदउ महियलि गुणभरिउ ।  
भवभमणविणासणु दुरियपणासणु अत्थपसत्थहि विप्फुरिउ ॥  
सत्यं वदति व्रतानि कुरुते शास्त्रं पठत्यादरात् ।  
मोहं मुञ्चति गच्छति स्वसमयं धत्ते निरोहपदं ॥  
पापु लुपति पाति जीवनिवहं ध्यानं समालंबते ।  
सोऽयं नंदतु साधुरेव हरसी पुष्पाति धर्म सदा ॥ १ ॥

पुणु देवि मरासइ नविधि समासइ नेमिच्छिहु वंसु जि भणमि ।

पुणु जासु हि रब्जे दुणयवजें हुवउ सत्थ तं पुणु थणमि ॥

गोपालचलु दुग्गु पसिद्धु नामु,  
गोवर पाथारंकिउ सवित्तु,  
तहि आत्थिराय अरिक्कुलकयंतु,  
सिरि हूंगरेंदु नामेण सूरु,  
तहु कित्तिपाल नंदणु गरिद्धु,  
तहु रायर जि समाणवतुं,  
सावयवयपालण विगयतंदु,  
वाहुडु जिसाहु हुउ आसिधणु,  
तहु भञ्ज जसोवइ कमलवत्त,  
गण गणु भायणु राहु सुजेठु

धणकंचणरिद्धु जणाहि रामु ।  
परनर अगमु नं सयहि चित्तु ।  
तोमर कुलि पायडु महमहंतु ।  
विष्फुरिय पयावे नाइ सूरु ।  
नं रुविकामु सविहं मणिह ।  
सिरि अइरवात्त वंसहि महंतु ।  
रिसिदाण पहावें जो अमंदु ।  
नयजसेण जेण दिसि मग्गु छुणु ।  
तहि उवरि उवणाविणि पुत्त ।  
जिणचरणकमल जो भसलसिद्ध ।

### घत्ता

वीयउ नंदणु पुणु भाविय जिणगुणु सकलकलालउ सुद्ध मणु ।

वाटू साहु जिहउ वंदियणहि थउ रंजिय अहनिमु सयणु यणु ॥ १ ॥

तहु तियसोल विसुद्ध पवत्ती,  
नंदण चारि ताहि उर जाया,  
पढमु साहु नयणसिद्ध पउत्तउ,  
विजपालहिय तासु पुणु भामिणी,  
वाटू साहु हु वीयउ तणुरुह,  
वील्हाही पिययम अणुरायउ,  
जाटा नामे पढम भणिजे,  
जोल्हाही तहु पिययमउत्ती,  
गविदहु तिय धोल्ही वुच्चइ ।  
भणसीहहु सुउ वीयउ माला,

असपालहिय नाम साउत्ती ।  
चारि दाणमनं पायड जाया ।  
नीयमग्गु जि मुणिउ निरुत्तउ ।  
साहुय सील महाधण सामिणी ।  
धणसी णामु सुपरियणु कियसुह ।  
पुत्तहु जुयलु ताहि उर जायउ ।  
गायणेहें जो अहनिमु गिजइ ।  
सा गोविंद सुवेणं सुपत्ती ।  
तहु नंदणु पुणु चोचा सुच्चइ ।  
तहु तिय लाडो अइसुकुमाला ।

### घत्ता

वाटू साहहें सुउ तीयउ पुणु हुउवोद्धिथ नामेंदीह सुउ ।

गुणगणरथणापर जिणवयणायरुननिग ही पिय भज जुउ ॥ २ ॥



जो पुणु वाटूसाहु पयासउ,  
हरसी साहु नौसुं मोह पायडु,  
तहु कलत्तः परियणहं पहाणी  
देशसंस्थ गुरु वयणकलायर,  
वाई भज्जाः पुणु श्रील्लाही,  
तहु नंदणु पुणु कइयण वणिउ,  
नामैं करम सीहु सो नंदउ -  
जउ सोही तहु तय सुपसिद्धो,  
पुणु हरसीहं पुत्ति पउत्ती,  
जाइ अखंडु भीलु बउ पालिउ,  
पुणु गिननो तहु लहु सुयसारी,  
एहु गोतु नंदनु महि भंडलि;  
एयह सव्वहं मरिस पहाणउ,  
कलिकालैं जित्माणु द्वारियउ,  
तिण्णिकलि रंयणत्तं अ चंड,  
जि चेलहंइ पुराण सुहंरु,  
सो हरसीह साहु चिरु चंदउ,

तहु चउत्थु नंदणु विजयासिउ ।  
जो जित्ते भणिय सेछं अत्थहु पडु ।  
जिह सिरिरामहु सोया ज्ञाणी ।  
दिवचंदही नामं नेहायर ।  
नं गोविंदुहु लछिपसाई ।  
जो ह्वारणं निरुमाणिउ ।  
अहंनिसु जिणवर चरणं वंदिउ ।  
विहु कुल सुद्ध रूवगुणारिद्धि ।  
न मानंतमेई सुणजुत्ती ।  
कलिमलु असुहु अचित्तहु खालिउ ।  
सयलहु परिवारहु सुपियवी ।  
जा रवि सांस निवसहि आहंडलि ।  
सत्थ पुराण भेय वुह जाणउ ।  
चेयणु गुणु अखंडु त्रिफुरियउ ।  
सुद्ध धम्म जो अहंनिसु संचइ ।  
कारा वियंउ पयेंतें मणहुरु ।  
सव्वण चित्तहु जणिया, एणंदउ ।

### घत्ता

पोमावइ पुरवाड वंसिउ वणउ कुनतिलउ ।

हरसिध संघविहु पुत्तु रइधू कइगुण गणनिलउ ॥

इति श्रीपलसिद्धचक्रवर्तिन रइधू पंडितकृतं समाप्तं ।

संवत् १६३१ वर्षे कार्तिके वृद्धी ६ शुक्रवासरे पुण्यनक्षत्रे साधानामयोगे श्री मूलसंघे नंदाम्नाये  
वत्साकारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये षड्त्रिंशद् गुणं विराजमानं व्योमकरणलंकारसाहित्य-  
तत्कार्गमादिशास्त्राण्यवधार्योपेतान् भट्टारकं श्री पद्मनंददेवास्तत्पट्टे भट्टारकं श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकं  
श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकं श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्यं श्री चन्द्रकोत्तिदेवास्तत् आता  
आचार्यं श्री हेमचन्द्र तदाम्नाये खंडेलवालान्वये पुस्तिका लिखापितं नागरचालमध्ये टौक समीपे सांख्यिणा-  
नगरे पातसाह श्री अकबरविजयराज्ये सोलंकी महाराय श्री सुरजन श्री साह गोत्रे साह कमा भार्या करणादे  
पुत्र चिरजीव साह उदा भार्या ज्यौदे पुत्र द्वि० चि० साह भीरवा । साह भीरवा भार्या भावलदे पुत्र जैसा  
द्वि० पुत्र मोटा । साह सीला भार्या सिंगारदे पुत्र चि० तेजपाल साह माधू भार्या मुक्तादे पुत्र साह छोट

धमा, लाखा, पर्वत, नानग । साह छोट भार्या चतरंगदे पुत्र खीमसी, सांगा माल्हा । माह घर्मा भार्या भारादे पुत्र ताळ् । साह चांदू भार्या चांदणदे । माह श्री रंग भार्या सुहंगदे साह हीरा भार्या हीरादे..... ।

### ३६. सकलविधिविधान काव्य ।

रचयिता श्री नयनन्दि । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ३०४ साइज ११×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८×४० अक्षर । लिपि संवत् १५८० चैत्र बुदि ४ ।

मंगलाचरण—

धवलमंगलणंदजयवद्ध मुहूर्तमिसिद्धस्थणिव ।  
मदिरमि णरलोय हरिसुव संकर्मचं सग्गाड जिणु ॥  
जयउ पुरिमकल्लाणकलसुव अहणं निद्धि वद्धविमल ।  
मुत्तावर्लिइ णिमित्तु सुहसुत्तिण पियकारणहि सिण्हि मुत्तिउखित्त ॥ १ ॥

अन्तिमपाठ—

धत्ता

आराहिय आराहणाए मन्वच्छसिद्धि सुहु भुजवि ।  
लीह सहि सिद्धवद्धणिलउ णयणंदिय पंडियमुणिरंजवि ॥

मुणिवरणयणंदीसणिवद्धपमिद्धे सयलविहिणहारणे एत्थक्खे सुभक्खे अरिहपमुहसुत्तुवुत्तु, माराहणाए पभाणउं फूड् संधी अट्टावण समोत्ति । लेखक काइस्थ स धू । अथ प्रशास्तेका । संवत् १५८० वर्षे चैत्र बुदि ४ गुरवासरे श्री मूलसंघे नद्याम्माये..... ।

### ३६. सन्मति जिन चरित्र ।

रचयिता महापंडित गडधू । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १२६ साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०×४२ अक्षर । लिपि संवत् १६२४ ।

मंगलाचरण—

धत्ता

जयसररुहमाणहुं वडिढयमाणहुं वढमं एत्थियेसरहु ।  
पणिवविपयं जमलं एहपहविमलं चरिउ भणामि तहु हयसंगहु ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

×

×

×

×

×

णंदउ राणउ गीइ वियाणउं,

पयंपुणु णंदउ पाउणिकदउ ।

सावयवगु वि पुण्णसमग्गु वि,  
मिच्छातम भरु भव्वहं खिज्जउ,  
मुणि जसक्कित्तिहु सिस्स गुणायर,  
मुणि तहं पाल्ह वंमुए णंदहु,  
देवराज संघाहव णंदणु,  
पोमावइ कुलकमतादवायरु,  
जस्स घरि जि रइधू बहु जायउ,  
घरिउ एहु णंदउ चिरु भूयलि,

घरि घरि वीयराउ अं।वज्जइ ।  
..... ।  
खेमचन्द हारिसेण तवायर ।  
तिण्ण वि पोवहु भरु णक्कंदहु ।  
।हरिसिधु बुहयणकुलआणदणु ।  
सोविसु णंदउ इत्थु जसायरु ।  
देव सत्थ गुरु पयअणु रायउ ।  
पाढ ज रूपवट्टइ इह काल ।

घत्ता

येणगिरि दुग्गहि खयअरि वग्गहि सुक्खयरे ।  
गोउर चउ दारहि तोरणफारहि बुहयणमनसंतोसयरे ॥

धयल्लिहमेहहि जिणवरगेहहि,  
जिणु पुाज्जज्जइ धम्मसुण्णज्जइ,  
तव ता विज्जइ भवमलु खिज्जइ,  
मंगल्लिगिज्जहि उज्जवकिज्जहि,  
तिविहं पत्तहं गुणगणजुत्तहं,  
घरि घरि सहंसणु भाविज्जइ,  
आवणि आवणि वरकंचण मणि,  
करि करदारो जहि अपमारो,  
दह दिह धविय कत्थणमाविय,  
रुवें णं सरु कंतिए ससिहरु,  
कर करवालो अरिखयकालो,  
उज्जोयणयरु कुलसंतयधरु,  
तासु जि रज्जहि मइ णिरवज्जहि,  
विरयउ कव्वो एहु जि भव्वो,  
अणु कमेण संठिउ वयसायरु,

मणिगणचदिरि णयणा णंदिरि ।  
णिच्चजिजत्थहि थक्क अवत्थहि ।  
पुणु पुणु घरि घरि घण कं वण भरि  
सावय लोयहि मणहुं पमोवहि ।  
दाणइ दिज्जइ पुण्णइ लिज्जइ ।  
तसु भावणाइ कम्ममलु खिज्जइ ।  
विककहि वणिवर रुवें जियसर ।  
पंथइ सित्तइ अलिआसत्तइ ।  
तहि पुहइसरु णाइ सुरेसरु ।  
लच्छहि आयरु णावइ सोयरु ।  
तोमर वंसहु लद्ध पसंसहु ।  
णामे डुगरु अरियण खययरु ।  
जिणःरिठंति सुहमइ वंति ।  
पुव्वाहयरियहं पट्टि गुणायरु ।  
..... ।

घत्ता

सिच्छित्त तिम्मिररु णाइसहसयरु आयमत्थ हरु तवणिलउ ।

णामेण पयडुजणि देवसेणुगणि सजायउ चिरु बुहत्तिलउ ॥

तासु पट्टिणि रुवमगुणमंदिरु,  
विमलमई फेहियमलसंगमु,  
वत्थसरुवधम्मधुरधारउ,  
वयतवसीलगुणहिं जो सागउ,  
धम्मसेणु मुणि भवसर तारउ,  
दंसणु णाणु वरणु तहं चेयणु,  
घम्मामइ पोसिउ भवहं गणु,  
सुद्धभासरुउ संभाणु,  
सहसकित्ति उव्वासिय भववणु,  
वज्जम्भर तत्र कथ आथारु,  
बुहयणु सत्थञ्जात्थ चिंतामणि,  
तहुं सिंघासणि सिहरि परिट्टउ,  
सुजसपसर वासियद्दिवासउ,  
तहुं आसणि गुणगणिमाणसायरु,  
दोविह तव तव तव त्रियंगो,  
वज्जम्भतरसगअसंगो,  
पुव्वापरियहमगपयासाणि,  
णिग्गंथु विअत्थहं संजुत्तउ,  
छंदतक्कवायर णहिं वाइय,  
उत्तमक्खमवासेण अमंदउ,

णिच्चाभवजणणयणामंदिरु ।  
विमलसेणु णामे मुणि पुंगमु ;  
दहविह वम्म भुवणि वित्थारउ ।  
वज्जम्भंतरसंग णिवारउ ।  
भावणु पुणु भाविय णिय गुणु ।  
दोविह तव तेवण ताविय तणु ।  
मूलुत्तर गुणेहि जो पावणु ।  
कम्मकलंकपंकसोसणइणु ।  
तासु पट्टि उदयहि दिवायरु ।

।

सिरि गुणकित्ति सूर पायडु जणि ।  
मुत्ति मणि राएणो ककठिउ ।  
सिरि जसकित्ति णामदिवासउ ।  
पवयणअवभासणसायरु ।  
भवक्कमलवणवोहपयंगो ।  
जिं दुजउणि जियउ अणगो ।  
सच्चेयणु मउ रंदुव णारुज्जणि ।  
सत्थाणाविइयरहं परिचत्तउ ।  
जिणि जिणि विसि सिक्खादाविय ।  
मलक्कित्ति रिसि वरु चिरु णंदउ ।

घत्ता

एयहं मुणिविदहं भवतमचंदहं पयकमलहं जे भत्तहुय ।  
ताहं जिं णामावालि पयडमिभूयलि वंदिगणहं जाणिच्चथुय ॥

णियजसपसर दिसामुहं वासिय,  
अयरवाल कुलकमलदिवायर,  
आसि पुरिसजे अगणिय जाया,  
जिणपयपंकयहं णिरुल्लप्पउ,  
जाल्हे णासु साहु चिरु बुत्तउ,

घर हिसार पट्टणहिं णिवासिय ।  
गोयाजगोत्तिपयडणियमायर ।  
ताहं जिं किं वणमि विक्खाया ।  
परियाणियउं जेण परमप्पउ ।  
पुत्तु जुयलु तहु हुयउ णिरुत्तउ ।

सहजो भवगुणमणिरयणायरु,  
सहजपालु पढमउ जय चलहु,  
गिरिवम रुत्रसीलवयसज्जा,  
भुरिभरयणउ पाय एरस्ताणी,

तिविह पत्त दाणेण कयायर ।  
तेजू डयरु त्रिवुह जण दुल्लहु ।  
...:.... ही पढमिल्लहु भय ।  
सच्चित्तजि परहु उवसमवाणी ।

### घत्ता

तहि उवरि उवण्णा लक्खणपुण्णा छह मांदण आणंदयर ।  
एणं जिणवर भासियं दूव सुहासिय एणं अहरसज्जणपोसयर ॥

ताहं पढमु करकीत्तिलयाहर,  
दाणु एय करुणं सुक्खं र करु  
जिणपूयाविहि करणपुरंदरु,  
भूरि दवु वक्साएँ अज्झाव,  
जिणणाहहु पइठ काराविवि,  
तित्थयरत्त गोत्तु जि वद्धउ,  
धामाहिय तहु भासिणिभासिय,  
कुमरपालहिय जिणदासहु पिय,  
आमणु आइय जिणपय कमला,  
पढमउ बोयउ तीयउअमला,

दुहिय जणाण दुक्खघणखयमर ।  
परिवारहु पोसणे सुरभूरहु ।  
णियकुलमंदिर बहु सोहाहरु ।  
लच्छि सहाउ चवलु पडि वज्झाव ।  
मूणइ छिय दाणवहु दाविवि ।  
संवहिउ सहदेउ जसद्वउ ।  
जिणदासहु सुवस्सणेहासिय ।  
बहु उवमिज्जइ तहि सीलहु सिय ।  
तिणणि पुत्त हुयताह गुणात्ता ।  
वच्छरजुसभु नामात्ता ।

### घत्ता

सहजपाल सुंदर यउ पुणु हुउ छीतमु गयतमु विमलजसु ।  
दुहियण दुहखंडणु णियकुलमंडणु, गुणवण्णणि कोई सुत ॥

तासु पियखिम गुणसील अतुली,  
खिउं धरहिय अहि हारो साहिय,  
छह पमाण भूयलि सुयमाणिय,  
वणिवर यइहं जो मुक्खेसरु,  
वीरदेउ पढमउ गुणमंदिरु,  
बोयउ हेमाहेमु व दुल्लहु,  
लउवीं एणमे भासिउं तीयउं,  
रुपां रुवो जिय मयं रुद्धउं,

जायण जण आसातरु वली ।  
ताहि गांभइय पुत्त गुणाहिय ।  
गुरुयण जेहि णिचं सग्गमाणिय ।  
वीयराय पय पकय महियरु ।  
दाणु एय कंसे जो नणि सुंदरु  
णियपरियणयणम्मि अइवाल्लहु ।  
देव सत्थगुरपाय विणायउं ।  
जि महियलि जसु विममलुलद्धउं ।

आस्थिधिरा पंचसु घर्मंगो,  
गिर रायरहु जत्तहं संवाहिउ,  
छट्टउ जालपु वणिणाय जाणणु,  
सहजुपाल रांदणु पुणु तीयउ,  
मणवंदिय दायणु चितामणि  
भीखू ही तहु पिययमसारी,  
पढसु पुत्त खेता खेमंकरु,  
ठाकुरु णामें तायउ रांदणु,

सिरिसहजपालु सुउ तुरिय पुणु हु डाला णामें वीण सुउ ।

आमादिय तहु पिय णं रामहु सिय चारिपुत्त संजायधुउ ॥

जिणदेवभत्त दुदणु गरिट्टु,  
सेणू णामें तिजउ सपुण्णु,  
पुणु सहजपाल सुउ पंचमिल्लु,  
केसवइ भासिकलत्त तहं  
पहराजु पसिद्धउ गम्भलोइ,  
हरिराजु जि पंडिय गुणवहाणु,  
जगसाहु जयम्मि मई पहाणु,  
सिरि सहजपाल सुउ भाणउं छट्ट :  
सगवसणविरत्तउ धम्मि रत्तु,  
गेहंमि वसति अहपवित्ति,  
तोसडु णामें तोसिय जणोह;  
णं कुलहरकमलणिवासलच्छि,  
सुर वल्लिव परियणपोसयारि,  
दाणें पीणिय णिरु तिविहपत्त,  
तहि गम्भि समुग्भव पुत्त दुण्णि,  
जेट्टउ दंसणायणहुं करंडु,  
विल्हा णामें गुण सेणि संडु,  
कुरुखेतदेस वासिय पवित्त,  
जिणपूयाइविह छक्कम्मरत्तु,  
जिणधम्मधुरंधर इत्थलोइ,

णिन्ववि हियवुहयणजणसंगो ।  
चउविह संघभारु णिन्वाहिउ ।  
परिवारहु भत्तउ कमलाणणु ।  
जिणसासणु वि जेण मणिभायउ ।  
खेमट्टु णामें विक्खायउ जण ।  
पुत्त चउक्कहि सोहावारी ।  
वीयउ चाचा चाय सुंदरु ।  
भोजा चउत्थउ जण आणंदणु ।

परिवारभत्त दरवेसु सिट्टु ।  
जासा चउत्थु रांदणिकणु ।  
धील्हा णामें बहु गुणगरिलु ।  
तिणिय पुत्त जाया पवित्त ॥  
चउविदाणें जो भवजोइ ।  
छक्कम्मर तुगुणगणणिहाणु ।  
णियकुलकमलत्स वियासभाणु ।  
संसार महाणव पडणभट्टु ।  
पालियउ जेण सावयचरित्त ।  
धणु अज्जिउ जि दाणहु णिमित्ति ।  
आजाही तहु पिय जणिय रोह ।  
सुर सिधरगामिणि दीहरच्छि ।  
जुवईयण सयलहं मज्झसारि ।  
महमीलपइव यणाहभत्त ।  
णं महिपयक्खउ वडयविण्ण ।  
कुलकमलवियसणकिरणचंदु ।  
मिच्छत्तसिहरि सिरि वज्जदंडु ।  
सावय वय पालण विमलचित्त ।  
परिवारहु मंडणु गुणणिउत्तु ।  
तंह गुण वण्णणि को सक्कु होइ ।

सहजासाहु हि पमुहहिंर वणु,  
सिरि सेट्टिवंसि उण्णु धण्णु,  
तहु पिय जालिपहिय वण्णणीय,  
तहिं गाठिभउ वण्णासुयपुण्णिण,  
तुरिया वि पुंत्त जा पुण्णमुत्ति,  
त्तेमी ए मा वरसीलजुत्त,  
सा परिणिय तेण गुणायरेण,  
णिय भायर रांदणु गुण णिउत्त,  
हेमा णामें परिवारभत्त,

x

x

x

x

x

जिण वयधारण उक्कंठएण,  
जणणी जणु वि परवारलोउ,  
अपुणु वि खमेप्पिणु तक्खणेण,  
जसक्कित्तिमुण्णिदहु एवि विपाय,  
तासड रांदणु दिवराजु अण्णु,  
परिवारभत्त गुण सेणजुत्त,  
सच्चवावइ भासि सच्चवेवलीणु,  
तहु रांदणजाया दुण्णिणीवीर,  
चंदुव्वकालयरु सिखरचंदु,  
वीयउ पुणु णामें मल्लिद सु,  
तोसडहु पुत्ति पुणु विण्णिणजाय,  
जोठी णामें जीवो जिउत्त,  
त्रयणयमसीलपालणसमग्ग,  
लहुडी णामें सेल्ही पवित्त,  
सेलें सोहग्गे सिय समाण,  
तहिं रांदणहु याविण्णिणसज्ज,  
पंच वि भायरहं जि अण्णसुया,

इहु परियणु वुत्तउ सजसपवित्तउ, जा कणायलु सूरसांसि ।

जावहिं महि मंडलु दिवै आहंढल, रादंउ तान्नि सजसवन्नि ॥

भायर चउक्कजु उण्णु वियणु ।  
तेजा साहु जि णामें पसण्णु ।  
परिवारभत्त सीलेणसीय ।  
राजसपालु ठाकरु जि तिण्णिण ।  
णिण्णचजि विग्गय जिण्णाह भत्ति ।  
कोकइ वण्णइ तहिं गुणहं कित्ति ।  
वहुकालि जंति सायरेण ।  
मग्गेप्पिणु गिण्हउ कमलवत्तु ।  
तहु घरहु भारदेप्पिणु विरत्तु ।

संसारु असारुउ मुण्णिमणेण ।  
सयलहं विपमावणु कार विसोउ ।  
जिणवेसुधरिउ णीसल्लएण ।  
अणुवयधारिय ति विंगयमाय ।  
सा घाहिय पियणेहिं पसण्णु ।  
णियवसगयण उज्जोयमित्त ।  
जिणधम्मकब्बिज्जकारेणयत्रीणु ।  
जिणधम्मधुरंधरगुणगहीर ।  
पढमउ सज्जणहं जणइ अगंदु ।  
वीसेगूणहुं जिणवरहुं दासु ।  
जिणधम्मिं कम्म रयन्निगम माय ।  
जिणपयगंधोवयणिच्चसित्त ।  
जिणसमयहुं भरुं धरणअभग्ग ।

विहुं परिवारहं जा णिच्चभत्त ।  
णिरु पत्तहं चउविह देइ दाण ।  
भाडा तेजा णामें मणुज्ज ।  
जालही वीरो पमुहइं हुया ।

इय सस्मइजिणचरिए णिरुसंवेयरयणसंभरिए वरचउवगययासे वुहयणवित्तस्य जणियउल्लासे  
सिरिपंडियरइधूविरइए साहु सहजपाल सुय सिरिसंधाहिवसहदेवलहुभायरमहाभव्व साहु तोसडणा  
मणामकिए कालवक्तहेव दायाखंसणि देसवणणों णाम दशमो संधो परिच्छेउ मम्मत्तो ।

सव्वस्थे महदोविशुद्ध करणो जो जईणत्तभोरदो । णिसंकादिगुणादली परिविहो सम्मग्ग संगंउग।  
णिट्ठोघम्मान्ताससिअखदयए सवस्सुजोहाणिसं । सो जीवउ सिरि तोसडो तह कइ रइधू णुणिभोणधि ।

संवत् १६२४ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १७ गुरुवासरे श्री काष्ठासंधे माथुरांश्वये पुष्करगणे भट्टारक अष्टाविं-  
शांति मूलगुणप्रतिपालकान् जिनमदनकरिघटकुंभविघटनकेसरीकिसोरान् श्री श्री श्री हेमकीर्तिदेवास्तत्पट्टे  
भट्टारक परमोदासीनगुणविराजमान कुमारसेनदेवास्तत्पट्टे भट्टारक हेमचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक अबोधजीव-  
मतिप्रतिबोधकान् परोपकारकरणसमर्थान् भव्यांयुजविकामनैकमार्तडान् भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे  
आगमाध्यात्मरसगालिकान् परमपनीयसंसोपितगात्रान् परमोदासीनपंचरंस्यागी भट्टारक श्री यशकीर्ति-  
सूरनामधेयान् तदाम्नाये शिष्यणी शीलतोयतरगिणो विनयवागेश्वरी पंचअनोवृत व्रतपालकी अर्जिकादेवी  
श्री ब्रह्म जिनप्रभावनाधारक हीनदीनदुखितममुद्धरण ब्रह्म पचायणा अर्जिकादेवश्री तत् शिष्यणी शीलतोय  
तरंगिनां विनयवागेश्वरी वाईजी ब्रह्मपचाइण इदं बद्धमानचरित्रं लिखापितं । लिखितं पांडे तिपरदास अलवर-  
गढ-वास्तव्याय ।

### ४०. सुदर्शनचरित्र ।

रचयिता श्री नयनन्दि । भाषा अपभ्रंश । पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ३५-४० अक्षर ।  
रचना संवत् ११००, लिपि संवत् १५६७, विषय-सुदर्शन स्वामी का चरित्र अथवा रामोकार मंत्र का प्रभाव ।

मंगलाचरण —

इह पंचणमोकारं लहेवि गोउवि हुवउ सुदंसणु ।

गउ. मोक्खकहु अक्खस्सकमि तहो चरिउ वरचउवगपयासणु ॥

अन्तिम भाग—

अ.यहो.गंथहो वुहजणियतुह्ठ,

पुणु गंथसिद्धि जय मणहरेण,

सोहम्मं जंवूसांमि एण,

पुणु णादिमित्त अपरज्जिएण,

पुणु भद्वाहु परमेसरेण,

पोढिल्लएण पुणु क्खत्तिएण,

विगइए.अरहंतहिं अत्थसिद्धि ।

गोयमअहिणाणें गणहरेण ।

पुणु विणहुदत्त दिविगांमिएण ।

गोवद्धणेण सुरपुजिएण ।

पयडेविणु साहु मुणीसरेण ।

जय णामें धम्मपवित्तिएण ।



शामें सिद्धर्थें संजएण,<sup>१</sup>

पुणु विजयसेण पुठिल्लएण,

पुणु धम्मसेण शकवत्तएण,

पंडुवु ध्रुवसेणें जियमएण,

भहें जय भहें पुंगमेण,

विदिसेणें तत्रसिरिरंजिएण ।

पुणु गंगएव शामिल्लएण ।

जइपालें मुणिएजय पत्त एण ।

पुणु कंसायरियं गयभएण ।

लोहज्जे सिक्कोडियकमेण ।

### घत्ता

गणहरएव मुनिः<sup>२</sup>हि कुवलयचंदहें<sup>३</sup> एयहि<sup>४</sup> अवरहि<sup>५</sup> अविचलु ।

आहासिउं पवयणे जहं मइभवेयणेतहं पंचणमोकारहो फलु ॥

जिणदस्स वीरस्स तित्थें<sup>६</sup> बहंतें,

सुसिक्खाहिहाणें<sup>७</sup> तहा पोमणंदी,

जिणुदिट्ठ<sup>८</sup> धम्मं धुराणं विसुद्धो,

भवं वोहि पोउं महीविस्सणंदी,

जिणिदागमाहासणे एयचित्तो,

णरिंदाभीरदाहिवाणंदवंदी,

असेलाणगंधम्मि पारंमिपत्तो,

गुणायास भूवोसु<sup>९</sup> तिल्लोककणंदी,

महाकुंदकुदाणए एंतसंते ।

पुणो विसहुणंदी तउ णंदणंदी ।

कयाणेय गंधो जयंते पसिद्धो ।

खमाजुत्तसिद्धं<sup>१०</sup> तउ विसहणंदी ।

तवाचारणिट्ठाइ लद्धाइ जुत्तो ।

हुउ तस्स सीसो गणीरामणंदी ।

तवे अगंवी भव्वराईवमित्तो ।

महापंडि अंतस्स माणिककणंदी ।

### घत्ता

पढंमसी सुतहो जायउ,

चरिउं सुदंसण णाहहो तेण,

आराम गाम पुरवरणिवेसि,

सुरवइ पुरिव्व विवुहयणइट्ठ,

रणिदुद्धर अरिवर सेलवज्जु,

तिहुयणु णारायण सिरिणि केउ,

मणिगणपहट्ठसिय रविगमित्थं,

जगविकलायउं मुणिएयणंदि आणिदिउं ।

अवाह हो विरइउं वुहअहिणंदिउं ।

सुपसिद्ध अवंती शाम देसि ।

तहि अत्थि धारणयरी गरिट्ठ ।

रिद्धियदेवासुरजणियचोज्जु ।

तहिणरवइ पुंगमु भोयदेउं ।

तहि जिणवर वद्धु विहारु अत्थि ।

१ पोठिल्लएण २ अविचलु ३ मइभवेयणेतहि ४ पंचणमोकारहं फलु ५ महाकुन्दकुन्दएण ६ ससिरकाहि,  
सुणहाखारि, ७ ओहि ८ महीविसहं, महाविस्स ९ भूउ ।

एव विक्कमकालहो वचगएसु,  
तहि केत्रलि चरिउं अमरछरेण,  
जो पढइ सुणइ भावइ लिहेइ,

एयारह संबछर सएसु ।  
एयणंदी विरयउ विछरेण ।  
सोसामय सुहु अविरल लहेइ ।

घत्ता

एयणंदयहो सुणिदहो कुवलयचंदहो एरदेवासुगंदहो ।  
देउ देइ मइ एम्मल, भवियहंमंगल वायाजिणवरचंदहो ॥

इत्थसुदंमणचरिए पंचणमोकारफलपयासरे माणिककणंदितइविज्ज सीसणयणादिणारइए, गइंदएरिवित्थरो सुरवरिदथोत्तं तहा सुणिदसहमडवं तसु विमोक्ख वासे गमनणमोपयफलं दोहदमो पुणो-सयलसाहुनामावलीइ माणकयवणणो भणिएउ संधि दोदहमो ।

संवत् १५६७ वर्षे माघ मासे कृष्णपक्षे द्वितीयायां तिथौ बुधवासरे पुष्यनक्षत्रे श्री कुन्दकुंदाचार्या-न्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवाः तोडागढमहादुर्गात् राजाधिराज सालंकीराउ श्री सूर्यसेन विजइराज्ये तदाम्नाये खंडेलवालाग्वये सह गोत्र साह तेजा भार्या करम इती द्वितीय भार्या लोचमदे । प्रथम भार्या करम इती तत्पुत्र साह डूलह, द्वितीय भार्या लोचमदे तत्पुत्र साह श्रीपाल, साह डूलह भार्या डूलहदे तत्पुत्रौ द्वौ साह आशा द्वितीय पुत्र साह हेमा । आशा भार्या अहंकारदे द्वितीय कनौलादे । साह हेमा भार्या हपंमदे । साह श्रीपाल भार्या सरस्वति । तत्पुत्रौ साह होला द्वितीय साह लाला । होला भार्या हुलासरि तत्पुत्र साह सुरभ्राण लाला भार्या ललिनादे । पुत्र साह रतसी भार्या रयणादे एतेषां मध्ये साह रतनसी इदं पुस्तकं सुदर्शनं चरित्रं लिखपितं । पल्पविधानं त्रय निमित्तं आचार्य श्री अभयचन्द्रदेवा तत् शिष्य मुनि पद्मकीर्ति समर्पितं ।

प्रति नं०२ पत्र संख्या ११५. साइज ११।।x४।। इञ्च । पत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २५-३० अक्षर । प्रति में दो तीन पुस्तकों के पृष्ठों की मिलावट है ।

संवत् १६७७ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां तिथौ श्री मूलसंघे नंदास्नाये वलाङ्कारणो सर-न्वनीगच्छे भट्टारक श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री धर्मचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री ललितकीर्त्तिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्तिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिदेवाः तदाम्नाये चंपावत्यां वास्तव्ये श्री पार्श्वनाथचैत्यालये खंडेलवालग्वये बोहरा गोत्रे सा० श्री वीरम तद्भार्या

१ भोजराठ ७ विष्णुरेण ।

वीरमदे तत्पुत्र सा० लाला तत्पुत्री द्वौ सा० रामा कर्मा तद्भार्या रैणादे तत्पुत्र सा० पर्वत तत्पुत्रास्त्रयः सा० आशा तद्भार्या असलदे द्वितीय सा० कर्मा तद्भार्या करणादे तृतीय पुत्र सा० लूणा तद्भार्या ललितादे । तत्पुत्रे द्वौ प्रथम सा० नारायण तद्भार्या नौलादे द्वितीय पुत्र सा० कैसोदास तद्भार्या कैसरीदे एतेषां मध्ये सा० देवू तद्भार्या देवौदे तत्पुत्रे सुंदरदास श्यामदास इदं शास्त्रं सुदर्शनाभिधानं लिखाप्य षोडशकारण-ब्रतोद्यापनार्थं दत्तं कर्मक्षयनिमित्तं श्री १०८ देवेन्द्र कीर्तये ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६५. साइज १०।।४।। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति में ३३-३८ अक्षर । लिपि संवत् १५०४.

प्रशस्ति—

संवत् १५०४ वर्षे मार्गसुदी ६ शुक्लपक्षे गुरुवासरौ श्री काष्ठा संघे पुष्करगोणे भट्टारकं श्री गुणकीर्ति-वास्तपट्टे श्री यशकीर्तिदेवाः तस्य शिष्य श्री भवसेनदेवाः तस्य शिष्य मुंवनकीर्तिदेवा । म० हुमांसनि तस्य भर्ज गुनविराजमान चतुर्विधदानसंयुक्त मनगातास्य डालु भर्ज दौसिरी तस्य लघु भ्राता गुजर । तस्य भार्या गुनसिरि तस्य पुत्र उत्पन्न पदमा तस्य लघु भ्राता नादा तस्य भर्जनरक पुत्र जिनदास तस्य भगिनि वड धर्मिणि कर्मक्षयनिमित्तं इदं सुदर्शन चरित्रं लिखापितं ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १०६. साइज १०×४ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर २५-२८ अक्षर ।

संवत् १६३२ वर्षे चैत्र मासे शुक्लपक्षे चतुर्दशी दिवसे हस्तनक्षत्रे श्री चन्द्रप्रभवेत्यालये वला-त्कारगोणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यन्वये भट्टारक श्री पद्मनन्ददेवास्तपट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा-स्तपट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमहलाचार्य श्री घमचन्द्रदेवा-स्तत् शिष्यमहलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवा स्तत् शिष्याचार्य श्री..... तदाम्नाये खण्डेल-वालवंशे निवाई वास्तवे सेठी गोत्रे सा० धाळू तद्भार्या राजी तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम ठाकुर द्वि० देवा तृतीय सा० पहराज । सा० ठाकुर भार्या देव तत्पुत्र साह महणा तद्भार्ये द्वे प्रथम धोखी द्वि० लोडमदे तत्पुत्रास्त्रय प्रथम सा० हीरा भार्या हीरादे द्वितीय रामदास तृ० चि० शैशादेव भार्या देवलदे तत्पुत्री द्वौ । प्रथम चि० कोजू । साह पहराज भार्या पाटमदे एतेषां मध्ये साह पहराजेन इदं शास्त्रं सुदर्शन चरित्रं लिखाप्य आचार्य हेमचन्द्राय धर्तापितं ।

४१. सुलोचनीचरित्रे ।

रचयिता महाकवि गणिदेवसेन । अं पा अपभ्रंश । पृष्ठ संख्या २४८. साइज १०×४।। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-४० अक्षर । लिपि संवत् १५६०.

प्रारम्भिक पाठ—

वयपंचतिकखणहरो पवयणमायासुदीहजीहालो ।  
चारित्तकेसरदो जिणवरपंचाणणो जयउ ॥  
तिहुयणकमलविणोसु णिण्णासियघणतमिरभरु ।  
पयाढमि चरिउ पसत्थु पणविवि रिसंहु जिणोसरु ॥१॥

अन्तिम पाठ—

पुणुलहेवि एयमणुयत्तउं दिक्खिउपालविसेजमु ।  
देवसेणगणबंदियउ होइसिद्ध जयउत्तमु ॥

इय सुतोयणाचरिए मंहांकव्वे मंहांपुराणहिट्ठिए गांणदेवसेणविरइए अट्ठावीसमो परिछेउं सम्मत्तो ।

प्रशस्ति—

णंदउ सुइ रुज्जिणिदहो सामणु, जयसुहयक भव्वयणासासणु ।  
णंदउ पयजे धम्मपयासिउ, पाढउजेणसत्थु उणासिउ ॥

साहुवगुरयणत्तयधारउ,  
दाणु देवि इंदिय वलढमंगहं,  
णंदउ शरवइ सेहुं पेरिवारे,  
णंदउ पर्यपरि मुच्चउपावे,  
वीरसेणं जिनेसेणांपरियहं,  
तिहंसेताणि संमोयंउ मुणिपवेरुं,  
रात्रणुव्वेवहुंसीस परिगहुं,  
गढं विमुत्त सीसु तहो केरउ,  
वालुक्किय वंसहो तिलउल्लउं,  
तिणमिवमुंथ विरज्जुं दिक्खकिउ,  
जांयउसांसुसीसुसंजमंधंरु,  
सांसु सीसु ऐकको जि मंजांयउं,  
सीलेगुणोहं रंयणंरंयणांरु,  
मोहमहल्लमल्लंरुंरुंरुंरुं,  
तवसिर रामालिगियविगहुं,  
पंच समदिगुत्तियत्तयखिद्धउ,  
मययद्वयं सरपसरणिंवांरुं,  
सिरिमल्ल धारिदेउ पंभणिंविइं,

णंदउ सावउ वयणुणसारउ ।  
वेज्जाववु करेउ मुणिपरहं ।  
पालिय गांणियं यारे ।  
रांगल्लं जंणधम्मपहावे ।  
आयमंभाधंभेयंवेहुभरियहं ।  
होइल्लेमुत्तं शांभं वेहु गुंणधारु ।  
संयलोयंमुं हुत्तउं अपरिगहुं ।  
शंभंभं गुंणं तवसारउं ।  
होतउणरवइ चाए भल्लेउ ।  
तिरयणरयणांहरणांलंकिउं ।  
णिंवांदिदेउणां मुणिहंणिंयंसरु ।  
णिंहंणिंयं पंचेदियं सुहरांयउं ।  
उव्वंसम खम संजमजलसायरु ।  
भविंयण कुंमुयंवेहुं च्छंणससंहरु ।  
चारिय पंचायाळ परिगहुं ।  
गणवदिउ भुवणयलि पसिद्धउ ।  
उद्धंरं पंचमं हंवेय धारउं ।  
शांभं विमल्लेणु जांणिंजंइं ।

तासु सीसु णिधि मयणुभउ,  
 कहिय धम्म परिपालियसंजमु,  
 सच्छपरिगाहु णिहयकुंसीलउ,  
 उवसम णिलउ चरिय रयरयणत्तउ,  
 देवसेण णामें मुणि गणहरु,  
 असुणं तेण किंपि होणाहिउ,  
 सयलु विखगउ देववांसरि,  
 पुडु वुहयणु मोहेणिणु भल्लंतउ,  
 रक्खस संवत्सरे बुहदिवसए,  
 चरिउ सुलोयणाहि णिप्पउं,

गुरु उवएसैं णिवाहियतउ ।  
 भवियकमलरविणिणासियतमु ।  
 धम्मकहाए पहावणा सीलउ ।  
 सोम्मु सुयणु जिणु गुणअणुरत्तउ ।  
 विरइउ एउ कवु तें मणहरु ।  
 सुत्तविरुद्धउंकाइं मिसाहिउ ।  
 तिहुयण जणवंदिय परमेसरि ।  
 केरंतु पउदेउणवल्लउ ।  
 सुक्क चउहसि सावणमासए ।  
 सदअत्थवणयसंपुणउं ।

घत्तो

एवि मइंकवित्त गव्वेणकियउ, अवरुण केणवि लाहैं ।

किउ जिणधम्मो अणुत्तर गुहमणे कयधमुळहैं ॥

अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १५७७ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षे नवम्यां तिथौ सोमवासरे अश्विनो नक्षत्रे श्री योगिनीप्रत्यासने श्री कान्तिदीतहे श्री फेरोजाबाददुर्गे गुणिजनव्रतिसंसेव्यमान विद्वज्जननिहितनिवासायां भव्यजनाध्यासपरिव्रितास्त्रिजनिवासिमनप्रवृत्तवासायां जिनधर्मरत्नाकारप्रियायां दुस्थितस्वस्थोकरणकृमायां प्रतापपरमेश्वर महाराजाधिराज राजश्री इवराहिमशाहि रत्नसाणार्या जैनबौद्ध-वार्वाक सांख्य नैयायिक शैवादि षट् दर्शनाद् संसेव्यतायां जयवंत श्री काष्ठासंधे माथुरान्वये पुष्करगणे वादिकविभंजनभट्टारक श्री ३ गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीमलय-कीर्त्तिदेवास्तत्पट्टोदयाद्रिभास्वद् भट्टारक श्री गुणभद्रसूरिदेवा स्तदाम्नाये अमोतकान्वये गर्गगोत्रे श्री योगिनीपुरेवास्तव्यः सुश्रावक साधुनानिग तस्य भार्या साध्वी महीधरही लखणसी भार्या देवराजही तत्पुत्र वीरदास तस्य भार्या घनराजही तृतीय पुत्र साधु हेमा तस्य भार्या वेगाही एतेषां मध्ये चउधरी लखणसी तस्य भार्या शीलतोय तरंगिणी प्रिया नाम दिउराजही तत्पुत्र वीरदास दिक्षानां पचमहाव्रतधारकः विवेकगुण-संपन्नः विद्वज्जनसभारंजनः भव्यजीवप्रतिबोधकः मुनि श्री ३ विमलाकीर्त्तिदेवैरिदं सुलोचना चरित्रं लिखा-पितं निजद्रव्योपार्जित कर्मक्षयनिमित्तवर्थं सद्भावतत्परेण लिखापितं आत्मपठनार्थं ।

४२. सुकुमाल चरित्र ।

रचयिता मुनि श्री पूर्णभद्र । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ४५ साइज १०।।x५।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३१x३३ अक्षर । प्रारम्भ के २ पृष्ठ से ३० पृष्ठ तक पत्र नहीं है ।

मंगलाचरण—

पदसु जिह्वारुणो विवि भविण जडमउड विह्वसियेच विसह मयणारि णासणु ।  
अंसुरांसुरारुणुअचलुणु सत्ततन्नणवणयपयांसणु ॥  
लोयालोयपयांसवरुजमु उप्पणउणाणु ।  
सो पणवेप्पणु रिसहजणु अक्खयसोक्खणिहोणु ॥

प्रशस्ति—

|                                                  |                             |
|--------------------------------------------------|-----------------------------|
| भगह खेत्ते संपणवेसु,                             | चिउगुज्जरसं क्षामिण देसु ।  |
| तासु वि मज्झहं ठिउ सुप्पसिद्ध,                   | णीयरमंडल धणकणसंभिद्ध ।      |
| तेहि णयरु णामे संठिये ठाणु,                      | सुप्पसिद्ध जगतय सियेवहाणु । |
| सिरि वीर सूरि तेहि पवरमांसि,                     | विणायोलेकिउ गुणरयणसि ।      |
| मुणिभदसीसु तेसु जाउ सेतु,                        | सोहारि विणासणु णिम्ममेत्त । |
| तासु वि सुकुमाउड हयाउ,                           | सिरि कुसुमभद मुखि सोस जाउ । |
| तासु वि भविआयण आसपूरि,                           | संजाउ सीसुगुणभद सूरि ।      |
| हउ तासु सीसु मुखि पूणभद,                         | गुणसील विह्वसिउ गुणसमुहु ।  |
| मइ बुद्धि विह्वणइ पडु कवु,                       | विरयउ भविआयण णिसुणंत सवु ।  |
| जमजय सायरु तवइ दिवायरु जाम मेरु महि वलइ धिरु ।   |                             |
| जो वाइ पहंजणु जणमणरंजणु ताइउ सत्थु जइ होइ चिरु ॥ |                             |

इय सिरिसुकुमासांसामिचरिण भव्ययणाणंदयरे सिरिगुणभदसीसु मुणिपुणंभदविरइण सुकुमाल-  
सामिसव्वत्थसिद्धि गमणाणं छेडी परिच्छेद समतो ।

४३. सुकुमाल चरित्र ।

रचयिता श्री पं० श्रीधर । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ४५ साइज १०।५५ हज्ज । प्रत्येक पृष्ठ  
पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०×४४ अक्षर । रचना संवत् १२०८ लिपि संवत् १५४६ लिपि संवत्  
बाद में लिखा गया है ।

मंगलाचरण—

सिरिपंचगुरुहुं पयपयइ पणविवि रंजियसयणहं ।  
सुकुमालसामिकुमरही, चरिउ आहासमि भव्ययणहं ॥

प्रशस्ति—

|                            |                          |
|----------------------------|--------------------------|
| आसि पुरा परमेष्ठिहि भत्तउ, | ववविह चारुदाण अणुरत्तउ । |
| सिरि पुरवाड वंस भंडण धउ,   | णिगुणणिधराणंदिय वंधउ ।   |

गुरुभक्तिय परिणामिय मुणीसर,  
 तहो गल्हु णामेण पियारी,  
 पविमलसीलाहरण विहसिय,  
 ताह तरुणरुह पीथे जायउ,  
 अवरु महेंदो वुच्चइ वीयउ,  
 जाल्हणु णामें भणिय चवत्थउ,  
 छट्ठउ सुवसं पुण्णहु यउ जह,  
 अठ्ठसु सुवणइ पालु समासिउ,  
 पढमहु पियणामेण सलक्खण,  
 तहि कुमारु णामेण तणुरुहु,  
 त्रिणयविहसण भूसिय कायउ,

णामें साहु रजाणु वणीसर ।  
 गेहिणि णामेणईदिय सुहयारी ।  
 सुहि सज्जण बुहयणहपसंसिय ।  
 जणसुहयरु महियलि विक्खायउ ।  
 बुहयणु मणहरु तिककउ तइयउ ।  
 वुणु विसलक्खणु दाणमहत्थउ ।  
 समुदपालु सत्तमउ भयउतह ।  
 विणया इय गुणहि परिभूसिउ ।  
 लक्खणकलिय सरीर वियक्खण ।  
 जायउ पंकय जेम सरोरुहु ।  
 महियलिमय मिच्छत्त परिचत्तउ ।

धत्ता

णारु अवरु वीयउ पवरुकुमरहो हुय वरणेहिणि ।  
 पचमा भणियासुयणहि गणिय जिणमय रयवहु गेहिणि ॥

तहि पाल्ह णामेण पइयउ,  
 वीयउ ताल्हणु जो जिणु पुजई,  
 तइ यउ वलि जाणिव जणिज्जइ,  
 तुरियउ जायउ सूपट्टु णामें,  
 एयहणासेसह कम्मक्खउ,  
 मज्झु वि एउ जि कज्जण अण्णें,  
 चउविहु संघु महीयलि रांदउ,  
 खयहु जाउ पिसुणु खलु दुज्जणु,  
 एउ सत्थु मुणिवरइ पढिज्जउ,  
 जामणहंगणि चंददिवायर,  
 पीथे वंसु ताम अहिणंदउ,  
 वारहसयइ गयइ कय हरिसइ,  
 कसणपक्ख आगहणो जायए,

पठसु पुत्त णं मयण सरुवउ ।  
 जसु रुवेण णामणसिउपुज्जइ ।  
 वंधव सयणह सम्माणिज्जइ ।  
 णावइ णियसवुद्ध सियकामें ।  
 जिणमयरयहो दोउ दुक्खक्खउ ।  
 संसारिय सुहणेसुरवण्णें ।  
 जिणवरपयपंकयए वंदउ ।  
 दुट्ठदुरासउ णिंदिय सज्जणु ।  
 भक्तियभवियणेहि णिसुणिज्जउ ।  
 कुलागिरिमेरु महीयलसायर ।  
 सज्जणसुहिमणाइआणंदउ ।  
 अट्ठोत्तरइ महीयलि वरिसइ ।  
 तिज्ज दिवसि ससि वासरि मायइ ।

धत्ता

वाहिर सइय गंत्यं कहइ पद्धदिणहिर वण्णउ ।

जगमणहरण सुहृत्स्वरण एव अत्युत्तु संपुण्ड ॥

इय सिरिसुकुमालसामिमणोहरचरिण सुंदरयरागुणयरागुणयराभरिण विबुहसिरिसुकुमालसिरिहरचरिण साहु पीथे पुत्र कुमारणाभकिण सुकुमालसामिसव्वत्थसिद्धि गमणो णाम छट्ठो परिच्छेउ सम्भत्तो । इति सुकुमालस्वामि चरित्र पंडित श्रीधर विरचितं ।

संवत् १५४६ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ६ बुधवासरे पुष्पनक्षत्रे चारावतीनक्षत्रे सुरत्राणगयासुदीनराज्ये श्री श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री नंदसंघे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारके श्री पद्मनादिदेवा तत्पट्टे भट्टारके श्री शुभवन्ददेवा ..... ।

४४. हरिवंश पुराण ।

रचयिता आचार्य श्रुतकीर्ति, भाषा अपभ्रंश । पत्रसंख्या ४१७. साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५ । ४० अक्षर प्रति प्राचीन है । रचना संवत् १६०७ ।

मंगलाचरण—

ससिद्धयवोमंसहं तं हरिवंसहं पावतिमिरहर विमलवरि ।  
गुणगणजसभूसिय तुरय अदूसिय सुव्ययणेमियर्हालयहरि ।

अन्तिम पाठ—

वीरजिणिंद वल्लणपठावेपिणु जिणसासणमहंतहो ।  
दिसतु सम्माहि संति भव्वयणहं धम्मणु रायरत्तउ ॥

इय हरिवंशपुराणे मणहरसरायपुरिसगुणालंकारकल्लाणे तिहुयणकित्ति सिरंस अप्पसुदकित्तिणा महाकज्जु विरयंतो णाम चवालीसमो संधि परिच्छेउ समत्तो ।

णिबणियरदेसुरट्ठो, जयसिरि धम्माणु राउमणिदिट्ठो ।  
णंदउ जणवउपवर्रो, सुह संपह दाणकण्यरो ॥ १ ॥  
चउविह मुणिगणसहिउ, णंदउ सिरिणंदसंयुसुरहिउ ।  
णंदउ जयसिरिजुत्तो, सावयगणुवम्मअणुरत्तो ॥ २ ॥  
हरिवंसगयणचंदो जहदंसण सयल भुवणआणंदो ।  
तयलोयसुजसपवर्रो णोमिजिणो भविचदुरि पहर्रो ॥ ३ ॥

प्रशस्ति—

इय हरिवंसपुराणु,

अङ्गरिट्ठु कहणा विहिउ ।

पण्हमितहोअविहाणु,

जे लेहाविउ पुणु लिहिउ ।

भूभरह पांसदउसुह समिद्धु,

कुरु भूमियदह विहरिद्धि रिद्धु ।



सुरसरिजङ्गाण्डै त्रितोली,  
 तहि ग्यंरुं प्रभयपुरि महिरवणु,  
 इन्दुलारसगौरस कंकणौड,  
 पहियण पोसिय पयसालजत्थ,  
 चङ्कवणममिद्ध वसइ लोउ,  
 जहि पूरिउ बहु मयणाह वासु,  
 णारणारिमणोहरगेहगेह,  
 धम्माणु रत्त जण वसइ जत्थ,

तंसोभेखेत्तधेणकणविसालि ।  
 सुरणाहु ववहुत्तुहहिमणुणु ।  
 तरुहेलइ रसालइ वणेषणाइ ।  
 समविसमछुहातिसण्णित्थ ।  
 सुरसत्थुवमणणइ विविह भोउ ।  
 मणइछय मणणहिरइ विलासु ।  
 णावइ सुरसद्धर अइसणुइ ।  
 चउ दाणय हरइवपसत्थ ।

घत्तो

चेयालयवेवि अइत्तंग विसाल तहि ।  
 धवलियसिहरगमंडिय कंचण कलसजहि ॥ १ ॥

रांदणवणु वसवणवहुमंडिय,  
 धयतोरण चत्तोन्नयसोहिय,  
 कित्तिमपडिमअ कित्तिमजेहिय,  
 मंगलगीय महुछउ किञ्जइ,  
 एककु कट्टमघह चेईहरु,  
 सत्थपुराण पूय जिणणाहउ,

धम्मणिलय पावारि विहंडिय ।  
 पिडिमहुछउ सुरणरमोहिय ।  
 जिम कइलासहु दीसहितेहिय ।  
 दुंदुहि सरुवहु थुई रज्जइ ।  
 धम्मसंचुणिएणासिय भवडरु ।  
 विमवणामिसिबलछिसणाहहु ।

घत्तो

सावय पुरवाडि णिवाहिया गेहधम्मभरु ।  
 वयचाई समत्थ तनिह पत्तउणत्तकरु ॥ २ ॥

तहि वीयउ पसिद्धु जिणमेदिरु,  
 मूलसंघजिणसासेणसारउ,  
 गुज्जरगोडि धम्मभरु खे चउ,  
 सोहइ सहचउ संघसमिद्धउ,  
 चिरु सामिउ सिरिगोयमुगणहरु,  
 कुंदकुंदआयरियगरिद्धउ,  
 तासु पट्टि अणुकमेण कुरुक्कउ,  
 तासु सिक्खसिक्खणियअणेयवि,

भेन्नियेण जणे मणे ग्यंरणा रांदिरु ।  
 रविबिबुवत्तमणियेरणिवारउ ।  
 णियधणुपुण्णणिमित्तं संचिउ ।  
 मुणितवत्तेव वारिद्धिरिद्धउ ।  
 तहु संतइ अणेयणिजियसरु ।  
 अंगपुव्वधरु आयमसिद्धउ ॥  
 धम्मकित्ति मुणिवरु मल्लमुक्कउ ।  
 महवयेअणुवये वुह वहु भेन्नवि ।

तर्हि चेयालइ विवससिरोमणि,  
पोमावइ पुरवारु गुरुक्कउ,  
सीखमाववसणंदु महपंडित,  
आयमवेयपुगाण पहाणउं,

भवियण कमल पवोहरण दिणमणि ।  
वसुमय विसणपमायपमुक्कउ ।  
णिम्मल विज्ज चारिदइमंडित ।  
जोइसअत्थ सत्थ गुण जाणउं ।

### घत्ता

चायह सुपहाणु चाइमल्लु सरसइ णिलउं ।

पणवासरुणाई सोहइ बुहयण कुल तिलउ ॥ ३ ॥

गुज्जर गोठि गुट्टि सुपहाणवि,  
धम्मजुत्त संम्मज्जालंकिण,  
रज्जकज्जसज्जणसुहदाइय,  
पूयपतिट्ठइट्ठसुणिमित्तं,  
मंगलगायसइणाइयरस,  
जिण कल्लाण मित्तिविणारोणर,  
डावभावविज्जम अइकुल्लर,

संयं सुवपचडेचउदाणवि ।  
पुंण्यपवित्तासचंदंकिण ।  
विट्ठावित्ताछि चेईहरित्ताइय ।  
णियउणाय करमुक्कलचित्तं ।  
णिच्चमहुल्लव पुण्यहु सरइस ।  
तणसिगारसार मोहवर ।  
चउणकाय सुरणवइ सइर ।

### घत्ता

कि वण्णामताहं गुज्जरगुट्टिसमत्त्वजहि ।

जिमधम्मपहाण पयहु पहावणधम्म तर्हि ॥ ४ ॥

जेणलिहाविउ गंध गरिट्टउ,  
गुज्जर गुट्टि आसि पयडियजस,  
हेरुकिया वंसह सुयहाणवि,  
हरसीसाहु णामु सुगरिट्टउ,  
हरसीभज्जल्लिक्कमल्लिण,  
तामु उवरि णंदणु उप्पणउं,  
तामु सरो नेहिणियगामिणि,  
तामु पुत्र चंदू चंदाणणु,  
वीयउ मदूमणोहर गारउ,  
चदूं भज्ज सयलगुणसारी,

पयडमितासु वंसु सुविसिट्टउ ।  
पीणिय भन्वलोय चाएं रस ।  
पीणिय भन्वलोय चउदाणवि ।  
लहुराइसीविवसमणइट्टउ ।  
गिहधम्महु पडिपाललणदक्खिय ।  
उधू णामु जसरसि मणुणउं ।  
धम्मलीण परिवारहु सामिणि ।  
सुक्खिचिहिल्लद्धीहलमाणणु ।  
परम भम्मरहवरघुरघारउ ।  
ए म णयण सिरि णयणपियारी ।

## घत्ता

तहु गेहिउवण वेविपुत्त णं चंदरवि ।

सिउ गणु पढमिल्लु अयसमही हरणाईपवि ॥ ५ ॥

तहु भीषमु पुण्णालये खंभुअ,  
 सिउगणतिय रुपारुवहरइ,  
 भीखमभज्जपटोगुणजुत्तिय,  
 सिउगुणतणाय वेविकुलमंडण,  
 माणभज्ज पाथुल मणमोहण,  
 चंदू वंधु मंदू चिरु भासिउ,  
 तासु भज्ज पदमागुणसारी,  
 वीई मुद्ध कुवरि णामंकिअ,  
 सीलाहरणविहूसियदेहिय,  
 कुवरिउयरसुअ तिण्णउ वण्णई,  
 णंरयणत्तय धम्महु कारण,  
 दादू साहु पढमसुउ भासिउ,  
 जसहरु वीउ भुवणि जस सायरु,  
 दादू णारिउ हयसु मणोहरि,  
 पढम भज्ज रुइ सासुय खण ।  
 खिउ सिरिणोम अवर सुवहाणी,  
 दाणमाण सम्मत्त सुरेवइ,  
 अतिहि दाणु अणु दिणु बहु दिज्जइ,  
 तासु सरीरि पुत्तु उप्पण्णउं,  
 आसकण्ण णामेण मणोहरु,  
 गेहणितासु रुवगुणसारी,  
 परियणु अवरु जई वण्णज्जइ,  
 एयह मज्झि गरुउ पुरिसत्तणु,  
 दादू साहु जिणेमरि भत्तउ,  
 अभयाहारसत्थ पुणु ओसहु,

धम्मधरारुहसिचणअभुअ ।  
 दाणपुण्णचेलणियमहासइ ॥  
 सीलणिकेयजणाय णं पुत्तिय ।  
 मीणुवीउ भाउं अहखंडण ।  
 मुह ससिहर ससिकिरण गिरोहण ।  
 जासु सुजसु वुहयण सुपयासिउ ।  
 रुवरासि वल्लहसुपियारी ।  
 जा सोहग्ग रुवरइ संकेय ।  
 मुणिवर विणायदाणसुसणोहिय ।  
 सुजसंपुंज कव्वह वण्णैकइ ।  
 कप्पतरुवजण दुक्खणिवारण ।  
 जें सुय णाणु दाणु सुपयासिउ ।  
 णयण सीहु तहु लहु वडभायरु ।  
 णंरइ पीइ वेवि कामहु घरि ।  
 लल्ल पयकिअ अगंसुह लक्खण ।  
 ससिमुह जिम इंदहु इंदाणी ।  
 रइ सोहग्ग सुजस णंदेवइ ।  
 चउविह संघ विणउ विरइज्जइ ।  
 माणससरिह सुवसु मण्णण्णउं ।  
 चिरु णंदउ जें मंढउ णिवधरु ।  
 णाम राइ सिरिपइसुपियारी ।  
 तउ वीयउ पुराणु विरइज्जइ ।  
 वणिउ जासु सुयण गुण कित्तणु ।  
 पुरिससीहु वय सीलपवित्तउ ।  
 तिविह पत्तपीणियसंतोसहु ।

## घत्ता

लेहाविउ एहु गुणणिहाणु कल्लोलणिहि ।

णिसुखंत कहंत भवियण जणमण होइ दिहे ॥ ५ ॥

संवच्छरु सोलह सइ उत्तउ,  
मगसिरह सियपंचमि णिम्मल,  
जोगु महुत्त लग्गुणरक्तुवि,  
चंदवार गढ दुग्ग दुग्गिम्मह,  
रामपुत्त पंगारवलिहियउ,  
सुद्धुकरि वि जो भवियण भासइ,  
णंदउ भवियण धम्म गुरुक्कउ,  
णंदउ पुहइ चंदुवुहु गुणणिहि,  
णंदउ कमू चउद्धर माणउं,  
णंदउ-रुहरीवगरिट्टउ,  
णंदउ साहु सधारण सुदंरु,  
णंदउ पदमसीहु जें साहिउ,  
एयइ पमुह संघु णंदउ चिरु,  
णंदउ पढइ सुणइ वर काणइ,

उवरि सत्तवरि सह संजुत्तउ ।  
गुरुवासरु गरिट्ठु पयडउइत्त ।  
सुहदायउससिहख सु जुत्तु वि ।  
संघाहिण चेयाले मंज्झह ।  
जिम सुइ कित्ति कईसैं विहियउ ।  
पोहि लाहु तहु देव सरसइ ।  
णंदउ जइण संघु मलमुक्कउ ।  
दाणु पूयसुपयासिय बहुविहि ।  
णंदउ दीपु भुवणि सुपहाणउं ।  
णंदउ चूहरु चंदु जणिट्टउ ।  
णंदउ राम गरुवगिरमंदरु ।  
वारसंगुसयलु वि अवगाहिउ ।  
सुहु संपय समूहुणवाणि थिरु ।  
णंदउ भाव सुद्धु मणिमाणइ ।

धत्ता

णंदउ गुज्जरगुट्ठि परियणपुत्तकलत्तज्जुउ ।

जव लाग कह हरिवंस जाम ससि रवि अटल धुउ ॥

४५. हरिपेण चरित्र ।

रचयिता अज्ञात । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या २४. साइज ११×४। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३२ अक्षर । प्रति पूर्ण है । विषय-चक्रवर्त्ति हरिपेण का जीवन चरित्र ।

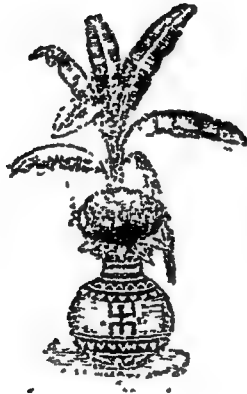
मंगलाचरण—

भावे पणविम्विमुणिसव्वयहो, चरणवभलभवतावमहा ।  
निसुणहु भवियहु बहु रसभरियहु, हरसेणहु पयडेमिकहा ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

बुहयणाह णवपरियव्वहो, गुरु उवए सिंजाणियउ ।  
काविजीयइ जिणपणवोप्पिणु, ते हरिसेण सम्माणियउ ॥ १ ॥

संवत् १५८३ वर्षे आसोजमासे शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ शनिवारे उत्तराषाढनक्षत्रे अतिगंजनामजोगे श्रीमूलसंघे नंदाभ्याये बलात्कारण्ये सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचायान्वये भट्टारक श्री पद्मानन्दिवास्तपट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तपट्टे श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रः तदाम्नाये पोरवाडगोत्रे साह कुंभा भार्या पुरी तत्पुत्र द्वे तस्य भार्या हिवसिरी, द्वितीय पुत्र रातु तस्य भार्या बाई चोखी, तृतीय पुत्र दीता तस्य भार्या सहजू, चतुर्थ दासा तस्य भार्या दौडादे तस्य पुत्र पदार्थ द्वितीय साह बोथु तस्य भार्या राता तस्य पुत्र पाथ्यू तस्य भार्या लाडो तस्य पुत्र चोखा इदं शास्त्रं लिखापितं । बाई पदमसिरी जोग ।



# हिन्दी भाषा के ग्रन्थों की प्रशस्तियां



## १. अनित्य पंचाशत ।

रचयिता श्री त्रिभुवनचंद । भाषा हिन्दी (पद्य) पद्य संख्या ५५, छन्दों में अधिकतर छप्पय तथा सवैया हैं ।

प्रथम पद्य—

मुद म्वरूप श्रनूपम मूरति जासु गिरा करुनामय सोढे ।  
संजमवंत महामुनि जोध जिन्हों घट धीरज चाप धरो है ।  
मारन कौ रिपु मोह तिन्है ब्रह् तीक्ष्ण साइक पंकति हो है ।  
सो भगवंत सदा जयवंत नमों जग में परमात्म जो हैं ॥१॥

अन्तिम पद्य—

पदमनंदि मुनिराज तासु आनन जलधारी,  
ता तहिं भई प्रसूति सकल जन मन सुखकारी ।  
धन वनिता पुत्रादि सोक दावानल हारी,  
भय दलनी सद्बोध अन्न उपजावन हारी ॥  
उन्नत मतिधारी नरनिकों अमृत वृष्टि संसय हरनि ।  
जय यह अनित्य पंचासिका त्रिजग चंद मंगल करनि ॥१॥

॥ दोहा ॥

मूल संस्कृत ग्रंथ तै, भाषा त्रिभुवनचंद ।  
कीनी कारन पाइ कै, पदत बढत अ नंद ॥

## २. अनेकार्थध्वनिमंजरी ।

रचयिता श्री नन्ददास । भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या ६, साइज १२×५ इञ्च । रचना संवत् १८२४.

मंगलाचरण—

यो प्रभु व्योतिमय जगत मय, कारन करत अभेद ।



विधन हरन सब शुभ करन, नमो नमो भा देव ॥

अन्तिम पाठ—

भारु पुत्र अवतसे कहि, कुल अवतसे सुजानि ।  
 सोह वरिष हौ सु जो, अभिनव कदं बखानि ॥  
 मार्गसीर्य दशमी रचौ                      आसित पक्ष सुभ जानि ।  
 अन्ध अठारसै बरसि                      उपरि चोवीस मानि ।  
 पढन काज लिख प्रेम कर                      नंद किसोर द्विवेद ।  
 क्षात्री लेहु सुधारि करि                      अक्षर ही को भेद ।

३. अष्टाहिका कथा ।

रचयिता श्री जीवणराम गोधा । भाषा हिन्दी (पंथ) । पत्र संख्या ६ साइज ११x४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर । रचना संवत् १८७१.

मंगलाचरण—

प्रथम देवगुरु सारदा नमिहुं मन बेंच कोय ।  
 वरत अठाई की कथा कर प्रथ अनुमारि ॥

प्रशस्ति—

शुभचंद्रादि सुनीश्वर जेम.      कथा करि हिरदै धरि प्रेम ।  
 गोधो जीवणराम सुजान,      वरत करै बिधि सु अभिराम ।  
 ताकै कहाँ कथा या कहौ,      या कुं बुधजन सोधो सही ।  
 रेणु नगर कसबो सुभ ठाम,      वनवाडी बापी अभिराम ।  
 पार्श्व जिनालय सोभै सदा,      पूजन करी कथा हम यदा ।

॥ दोहा ॥

अठारह सै इकितेरियां भाविन उजैती तीज ।  
 बार बहसतिवारै नैं सतगुरु कथा कहीजे ॥

४. अष्टाहिका कथा ।

रचयिता श्री खुशालचंद । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ५. पद्य संख्या ११७, रचना संवत् १७७४.

मंगलाचरण—

आदि जिनेसुर बंद फिरि,      वर्षमान जिनराय ।  
 कहूं अठाई की कथा,      सुण ज्यौ भनि मन लाय ।

सतरासैरचदौतरै, कातिग मास वखानि ।  
सुदि आठै वरनन वरुं, विसपतिवार सुजान ।

अन्तिम पाठ—

कीयो कथान दिल्ली कै माहि, जैस्थंघपुरै मनोहर गांव ।

दोहा—

सतरामै चौहैतरे, मास असाढ वखानि,  
कहै खुशाल सुध भांयतै, सुकल तीज मनि आनि ।

लिखत पांडे दयाराम । जाति मोनी ।

५. आदिनाथस्तुति ।

रचयिता श्री मुनि कमलकीर्ति । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) । पृष्ठ संख्या ५५ साइज १०×४॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर ।

मंगलाचरण —

श्री जिनवर शुभ सारदा नमते गणधर पाय ।  
कर जोड़ी करुं वीनती अवधारु जिनराय ॥

प्रशस्ति—

आदि दिगंबर रुवडोए, रुवाढा रुवाढा श्रीमूल संघ कि ।  
सरसति गछ सोहामाणाए, प गछपति गछपति गिरुवासार कि ॥  
गच्छ पतीय गिरुवा सुमति कीरति सकल भूपण सूरि सरु ।  
तास पाय प्रणमी मधुरी चाणी कहि कमलकीरति सुनिवरु ॥  
नर नारि-अति घणु भाव आणी गीत जिनागम गावए ।  
सुर नर किन्नर पद लही निमी पछि सिव पुरि पामए ॥

६. आदि पुराण ।

रचयिता ब्रह्म जिनदास । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) संख्या २१५ साइज १०॥४५॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८×३० अक्षर ।

मंगलाचरण—

आदि जिनेश्वर आदि जिनेश्वर आदणमेसु ।  
सरस्वती सामी ने वलीस्तवु,  
बुधि सारहु मागडं निरमल श्री सकलकीर्ति पाय प्रणमीन ॥



मुनी भुवनकीर्ति गुरु बंदसौहजला रासकरीसोद्वरु बडो ।  
तव परसादे सार,  
श्री आदि जीणंद गुण वणवुं चारित्र जोद्व भवतार ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति —

रास कीयो मे नोर्मलोए,  
आदपुराण जोई करीए,  
पढे गुणे जे साभलए,  
मनबांछीत फल ते लहए,  
लेखे लखावे रु बडोए,  
तेह ने नवनीध संपजेए,  
जे भवियण विस्तार करए,  
जिनवर गणधर मुनीवर,  
तीर्थकर श्री वृषभ जीन ए,  
जुगल्या धर्मनी वरो यो उ,  
षट् कर्म स्वामी थापी पाए,  
मुगति रमणी प्रगट कीयो ए,  
तेह गुण मे जांणी या ए,  
भवि २ स्वांमी सेवसुं ए,  
आदि जिनेसर २ तणो मेरा ए,  
एक चित भाव आणीए,  
जिनसासण गुण अणंत जाणीए,  
मुनी भुवनकीरति भवतार,

भाव सहित वीसालतो ।  
सुगम कीयो मे गुणमाल तो ।  
तेह ने पुन्य अपारतो ।  
मुगति रमणी वसी होय तो ।  
करे ज्ञान उधार तो ।  
मुगति रमणी होय हार तो ।  
तेह ने पुन्य अपार तो ।  
गुण गुथ्यां मे सार तो ।  
कीयो पर उपगार तो ।  
लोक कियो जयवंत तो ।  
धर्मोद्धर्म वीचार तो ।  
त्रिभुवन जय २ कारतो ।  
सद गुरु तणो पसावतो ।  
लागु सह गुरु पाय तो ।  
कीयो सार सोझागणो ।  
पढे गुणे जे सांभले ।  
श्री सकल कीर्ति गुरु प्रणमीने ।  
ब्रह्म जिनदास कहे निमलो ।  
रास कीयो मे सार ।

दोहा

वखाणे जे रु बडा सभा मांहि गुणवंत ।  
रुचि सहित जे सांभले ते ह ने पुन्य महंत ।  
समकीत गुण उपजे वरत नीमवली सार ।  
तत्त्व पदारथ जाणीये ज्ञान उपजे भवतार ॥

संवत् १८५६ मंगसीर सुदी ३ गांव श्री मैतत्राल मध्ये पार्श्वनाथ उपासरे लिखापितं श्रीमत् भट्टारक जी श्री रत्नचन्द्रजी । सस्वती गच्छे वलात्कार गणे आचार्य श्री कुन्दकुदास्नाये सकलकीर्तिजी आचार्यो स्नाये तसपट्टे भट्टारकजी श्री १०८ देवचन्द्रजी तसपट्टे भट्टारक श्री धर्मचन्द्रजी तसपट्टे भट्टारक जी श्री १०८ महीचन्द्रजी तत् शिष्ये आज्ञाकारी ब्रह्म प्रेमचन्द ने लिख्यो हे ।

### ७. आदित्यवार की कथा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र १८. साइज ८x४। इञ्च । पद्य संख्या १५७. लिपि संवत् १७२०. विषय—दीतवार व्रत की कहानी ।

मंगलाचरण—

रिखहनाह प्रणमुं जिणंद, जा प्रमाद चित होइ आनंद ।  
प्रणमौ अजित पणसै पाप, दुख दालिद्र हरे संताप ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

|                         |                              |
|-------------------------|------------------------------|
| अजर अमर निर्मल रह्यो,   | सो जिणदेव सुभा कौ ज्यो ।     |
| दीन्ही ठौर रच्यो पुराण, | हीण बुद्धि कौ कियो बखाण ॥    |
| हीण अधिक अक्षर जो होइ,  | बहुरि सवारै गुणीवर लोय ॥     |
| अप्रवालीयै कीयो बखान,   | कुवारि जननी तिहु नग्री थान । |
| गरग गोत मल्ल कौ पूत,    | भयौ कविजन-भगति संजूत ॥       |
| करण कथा कुं मो मति भई,  | तौ यह धम कथा अरठई ।          |
| मन धरि भाव सुणै जो कोइ, | सो नर सुरग देवता होइ ॥       |

### ८. आदीश्वर फाग ।

रचयिता भट्टारक ज्ञानभूषण । भाषा संस्कृत हिन्दी । पत्र संख्या ३१. साइज १०।।x५ इञ्च । पद्य संख्या ५६१. कवि ने पहिले संस्कृत पद्य लिखे हैं और वन्ही का हिन्दी पद्य से भाव दिया है । विषय—भगवान आदिनाथ के जीवन की एक घटना का वर्णन ।

मंगलाचरण—

आहे प्रणमीय भगवति सुरसुति जगति विप्रोधनमाय ।  
गाइस्युं आदि जिणंद सुरंदवि बंदित पय ॥

अन्तिम —

आहे उपनउ पंचकल्याणक ऊपरिमान्तराग ।  
ज्ञानभूषण गुरिइ कीधउ तेह भणी एइ फाग ॥

आहे नारीय नर जे भाव धरी नित गाईसिइ एह ।  
 इन्द्रादिक पद पामीय शिवपुर जासिइ तेह ।  
 आहे एकाणउ आविका शत पंच सलोक प्रमाण ।  
 सुणउं भणिसिइ लिखसिइ ते नर अतिहि सुजाण ।

इति भट्टारक श्री ज्ञानभूषणविरचित श्री आदीश्वर फाग समाप्त । संवत् १६३४ वर्षे पौष बुदी १०  
 बुधवार लिखितमिदं शास्त्रं । मालपुरा मध्ये पांडे श्री हूंगा लिखावितं ।

### ६. आराधना प्रतिबोध ।

रचयिता श्री भट्टारक सकलकीर्ति भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ४. पद्य संख्या ५५-३६ नम्बर के  
 गुटके में ४६ से ५२ पृष्ठ तक हैं । विषय-आराधना । आराधनासार का संक्षिप्त भाव दिया हुआ है ।

मंगलाचरण—

श्री जिनवरवांणी नमोवि गुरु निग्रन्थ पाय प्रणमेवि ।  
 कहूं आराधना सुनिचार संक्षेप सारोद्धार ।

अन्तिस—

जे भणई सुणई नरनारि, ते जाई भवि नैइ पारि ।  
 श्री सकलकीर्ति कह्यु विचार आराधना प्रतिबोधसार ॥

### १०. ऋषभविवाहलो ।

रचयिता श्री कुमुदचन्द्र । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ८, साइज ६×५॥ इञ्च । गुटका ५३, नं०  
 गुटके के २२७ से २३४ पृष्ठ तक हैं ।

मंगलाचरण—

समर वीसरसतीद्योमउ शुभमती करौ वरवाणी पसाउ लोए ।  
 प्रथम तीर्थकर आदि जिनेश्वर चरणानु तास विवाहलोए ॥ १ ॥

अन्तिस पाठ—

संवत् सोल अठौतरै ए मास आसाढे धनसार सु ।  
 ऊजली बीज रली आंगरलीए..... ।  
 लक्ष्मीचंद्र पाठे निरमलो ए, अभयचन्द्र मुनिराय ।  
 तस पट्टे अभय..... रतन कीरति शुभकाय ।  
 कुमुदचन्द्र मन ऊजलोए.....

## ११. कर्णात्मृतपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री विजयकीर्ति । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ८२. साइज ६x६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर । रचना संवत् १८२६. अन्तिम पृष्ठ एक दूसरे से चिपके हुये हैं । प्रशस्ति दी हुई है । लेकिन पत्रों के चिपक जाने से नहीं दा जासकी ।

मंगलाचरण—

॥ दोहा ॥

बानी जानी भारती अपनी जिन मुख जैन ।  
सो सब कौं मंगल करी, हरौ दरिद्र दुख मैं ॥ १ ॥  
विमल बुद्धि वह सारदा, श्री गौतम गणधार ।  
बंदौ बंदित देवकों, देय भवोदधि पार ॥ २ ॥

प्रशस्ति का एक अंश—

संवत् अठारह सौ छबीस, ग्रन्थ रचित..... बीस ।  
कार्तिक वदि वारस गुरुवार, रूप नगर में रच्यौ सुसार ॥१॥

## ११. कन्योणमन्दिर स्तोत्रभाषा ।

रचयिता महाकवि बनारसीदास । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ७. पद्य संख्या ४४.

मंगलाचरण—

परमज्योति परमात्मा, परमजाणि परवीन ।  
बंदौ परमानंद में, घटि घटि अंतर लीन ॥ १ ॥  
निरभै करन परम परधान, भाव समुद्र जल तारन जानि ।  
सिवमंदिर अघहरन अनंद, बंदौ पारस चरन जिनंद ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

इह विधि श्री भगवंतसुजस जे भविजन भासै ।  
ते निज पुनि भंडार संचिर पाप पनासै ।  
रोमराय बलसंति अगं प्रभु के गुन गावै ।  
सुरग संपदा भुजि, वेग पंचमि गति पावै ।  
इह किलाण मन्दिर कियौ कुमचन्द्र की बुधि ।  
भाषा कहत बनारसी, कारण समकति सिधि ॥१॥

### १३. कथा कोश संग्रह ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ६७. साइज ६×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में १६-२० अक्षर । कथा कोश में दश लक्षण व्रत कथा, निर्दोष सप्तमी व्रत कथा, चांदण पष्टि व्रत कथा, आकश पंचमी व्रत कथा, मोक्ष सप्तमी व्रत कथा, पंच परमेष्ठो गुण वरणन का सप्रह है । गुटका नवीन है । मंगला चरण तथा अन्तिम पाठ प्रत्येक का अलग २ है । दश लक्षण व्रत कथा का मंगलाचरण इस प्रकार है—

मंगलाचरण—

श्री वीर जिंगवर पाय, पाय प्रणामवि सरस्वती ।  
स्वामिणीं बलीस्तु, बुद्धि सार हूं वेगि मांगु ॥ १ ॥  
बलि गणधर स्वामी नमस्कुरु, श्री सकल कीर्ति पाय वंदतु ।  
रास करीस्यू हूं निरमलो, ब्रह्म जिंगदाम भणें सार ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—( पंच परमेष्ठो गुण वरणे )

श्री सकल कीर्ति पाय प्रणामीने, श्री भुवन् कीर्ति भवतार ।  
ब्रह्म जिंगदास गुण वरणया, पंच परम गुण सार ॥ १ ॥  
पढे गुणे जे सांभले, मनि धरी निरमल भाउ ।  
मन वंछित फलरुवणा, पावें शिवपुर उठा ॥ २ ॥  
इति श्री पंच परमेष्ठो गुणवर्णनरास समाप्त ।

### १४. चतुर्दशी चौपई ।

रचयिता श्री टोकम । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या २० साइज १२×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में १२-३४ अक्षर । रचना संवत् १७१२. लिपि संवत् १७६३. विषय—अनन्त चतुर्दशी व्रत की कथा ।

मंगलाचरण—

प्रथम वंदि पार्श्व जिनदेव, तीनि जगत जाकी करे सेव ।  
रिद्धि सिद्धि वर सुख दातार, बालपणै जीत्यो जिहि सार ॥

प्रशस्ति—

सतरह सै बारहत्तरै फागुण तेरसि जांणि ।  
वो छौ अधिकौ शुद्ध करि, पंडित कहै ब्रह्मांणि ॥ १ ॥  
बुद्धि सारु टोकम कहै. काल परमा है बास ।

पंडित होइ छोटी बहौ हुं सबही को दास ॥ २ ॥  
 भोजराज को राज है दादौ भयौ खंगार ।  
 घणौं भार दे थापियौ, सुखमल साह हुजदार ॥ ३ ॥  
 चौइसो कै देहुरें, वैठैं आवक आय ।  
 राति दिवस चरचा करै, बंदै जिनवर पाय ॥ ४ ॥

संवत् १७६३ का मिति वैशाख वुदी १२ दिल्ली का जैसिंहपुरा में पांडे दयाराम ने लिखा ।  
 जाति सोनी ॥

#### १५. चरचासमाधान ।

रचयिता श्री भूषरदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १४१. साइज १०×५ इञ्च । रचना संवत् १८०६. प्रति पूर्ण है । विषय—धार्मिक चर्चाओं का वरण ।

जयो वीर जिन चंद्रमा उठे अपूर्व जासु ।  
 कलजुग काले पापमय कीनौ तिमिर विनाशु ॥  
 बंदौ बांणी भगवती विमल जौन्ह जग माहि ।  
 मरमातप जासो मिटै भवि सरोज विगसाहि ॥  
 गौतम गुरु के पद कमल हृदय सरोवर आनि ।  
 नमो नमो नित भाव सों करि अष्टांग विधान ॥

प्रशस्ति—

ठारहसे पटहोतरें माघ मासे अवसान ।  
 सुकल पक्ष तिथि पंचमी ग्रंथ समापति ठान ॥  
 भूधर विनवै विनय करि सुनिये सज्जन लोग ।  
 गुण के गाहक बहु जियौ यह विनती तुम योग ॥

#### १६. चन्द्रनृपरास ।

रचयिता पं० लब्धरुचि । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ८०. साइज ६।५।४। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०—४३ अक्षर । रचना संवत् १७१३. तिथि संवत् १७६४. विषय—चन्द्रप्रभु भगवान का जीवन चरित्र ।

संगलाचरण —

श्री जिननायक सद्गरीय ऋषभदेव अरिहंत ।  
 वंछित पूरण सुरगुरु, भय भंजण भगवंत ॥

प्रशस्ति—

शिव सुखदायक सेवीयें, शांतिनाथ जिणचंद ।  
 यादववंश नमो मणी, नमोई नेमि जिणंद ॥  
 जुगप्रधान श्री हरिचिजै गुरु सोह रमसम अंतरे ।  
 पातसाइ अकबर प्रतिबोधक जिणसासण सिणंगार रे ॥ १ ॥  
 तस पटोवर सूरि सदाई श्री विजैसेन सुरीसरे ।  
 साध परपणह परम गुरु गुण निधि गच्छाधीशरे ॥ २ ॥  
 पट प्रभावक गळ धुरंधर श्री विजैदेव गणदेवरे ।  
 नाम जपता नवनिधि लहीये उपसम रस भंडारीरे ॥ ३ ॥  
 तास पटोवर वंछित सुहकर उदयो अविचल जायरे ।  
 श्री विजैप्रभ सूरि पुरंदर सुंदर गुणमनि खानि रे ॥ ४ ॥  
 तम गच्छ पंडित बड वैरागी संवेगी गुण भरीयोरे ।  
 श्री गुरु सहज कुसल सुखदायक उपसमरसतो दरीयोरे ॥ ५ ॥  
 साखी पांच तिहां प्रगटी कुसल चंद रुचि सार रे ।  
 वधन धर्म धमना घोरी सहज गुणौ मिरदार रे ॥ ६ ॥  
 प्रथम ऋषि श्री सहज कुसलना सकलचंद उत्रजीयारे ।  
 बीजा श्री लक्ष्मी रुचि पंडित नामें नवनिधि पायरे ॥ ७ ॥  
 तास सीस सुध संयमधारी श्री विजै कुसल बुध ईसरे ।  
 क्रियावंत पंडित कुलदीपक जै कारी सुजगीसरे ॥ ८ ॥  
 तस पदपंकज भ्रमर बीरजी श्री उदै रुचि कविराय जी ।  
 कुमत मतंगज कुंभ विदारण कंठीरु कहि वायरे ॥ ९ ॥  
 तास सीस संवेग महोदधि श्री हृष रुचि विबुध कहीईरे ।  
 उपगारी मुज गुरु मिलीयो दरसन सुख लहीयेरे ॥ १० ॥  
 विबुध सरोमणि मुकट नगीनो, श्री विचारुचि तस सोसरे ।  
 गुण मणि मांडत पूरो पंडित सुखदायक सुजगीसोरे ॥ ११ ॥  
 तस लघु बंधु विबुध लब्ध रुचि रच्यो चंद मृप रास रे ।  
 छं ओ अधिको जे कहियो ऊं वैमि वामिह कंड तीसरे ॥ १२ ॥  
 मुनिसुव्रत जिन चारित्र धकीये सरस संबंध बलाणुरे ।  
 चारित्र प्रभावक मांहि पणिए प्रगट प्रणमै जाण्यो रे ॥ १३ ॥  
 संवत् सतरहसोतेरह क्रांतिक मास उदार ।  
 सुदी तेरस दिन निरमलो बलवत्त गुरुवार ॥ १४ ॥

संवत् १७६४ वर्षे वैशाख सुदी १४ दिने लिखितं सकलपांडित पांडितौत्तमपांडित श्री पं० विनयसागर जी तत् शिष्य पं० विनोदसागर जी तत् शिष्य गणो वृद्धसागर लिपि कृत ।

### १७. चिद्विलास ।

रचयिता श्री दीपचन्द काशलीवाल । भाषा हिन्दी ( गद्य ) । पत्र संख्या ६६, साइज ६×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर २२ पंक्तियां तथा प्रांत पंक्ति में १६-२० अक्षर । रचना संवत् १७७६.

मंगलाचरण—

अविचल ज्ञान प्रकाशमय गुण अनन की खान ।

ध्यान धरत शिव पाइये परमसिद्ध भगवान ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

इस ग्रंथ में प्रथम परमात्मा का वर्णन किया । पीछे उपर्य परमात्मा पायवे का दिखाया । जे परमात्मा को अनर्भो कियो चाहै ते या ग्रन्थ को बारबार विचारो । यह ग्रन्थ दीपचंद साधर्मी कीयो है वास सांगाने । आमेर में आये तब यह ग्रन्थ कियो संवत् १७७६ मिते फागुण चुदी पंचमी को यह ग्रन्थ पूरे कियो ।

देव परम मंगल करो परम महासुखदाय ।

सेवत शिवसुख पाइये हैं त्रिभुवन के राय ॥ १ ॥

### १८. चेतनकर्म चरित्र ।

रचयिता भैया भगवतीदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १७, साइज ११×५ ॥ इञ्च । पद्य संख्या १६८, रचना संवत् १७३२.

मंगलाचर—

श्रीजिनचरण प्रणाम करि भाव भक्ति उर आनि ।

चेतन ओर कछु कर्म कौ कहुं चरित्रबखानि ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

चेतन अरु यह कर्म कौ कह्यौ चरित्र प्रकास ।

सुतन पर सुख पाइये, कहई भगवतीदास ॥

संवत् सत्रवत्तीसकै, ज्येष्ठ सप्तमी आदि ।

श्री गुरुवार सुहावनो, रचना कीनी अनादि ॥

इति श्री चेतनकर्म चरित्रं सम्पूर्ण ।



संवत् १८४३ वर्षे क्वारमासे कृष्णपक्षे मित्ती क्वार बुदी १४ शुक्रवारे मट्टारक श्री रत्नकीर्ति जी तत् शिष्य पंडित गणेशरामेन चेतन कर्म वरत्र लिखायो शेरगढमध्ये श्री पार्श्वनाथचैत्यालये ।

### १६. चौदह गुणस्थान चर्चा ।

रचयिता श्री अखयराज श्रीमाल । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ६६, साइज ६।।x५।। इच्छ । लिपि संवत् १८०३.

अन्तिम पाठ—

यह चौदह गुणस्थान का स्वरूप संक्षेप मात्र कह्या । जिनवाणी अनुसारि कथन करि पूरन किया । जौ कहीं भूत चूक भइ होइ तौ जो पंडित जिनवाणी में प्रवीन होइ सो सुधारि पढ़ियो ।

॥ दोहा ॥

चौदह गुणस्थान क कथन भाषा सुनि सुख होई ।

अखैराज श्रीमाल 'ने करो जथा मति जोइः॥

इति श्री गुणस्थान की चर्चा संपूर्ण । ग्रंथ कर्ता साह अखैराज श्रीमाल शुभ भवतु । लिपि कर्ता साह संकरदास स्वामा चाटसू का । संवत् १८०३ मित्ता वैशाख सुदी ७ बुधवार संपूर्ण भयो ।

### २०. छंदशिरोमणि ।

रचयिता कवि शिरोमणि श्री शोभानाथ । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ३०. साइज ६x५ इच्छ । पृ संख्या २००. रचना संवत् १८२५. लिपि संवत् १८२६.

प्रशस्ति—

श्री गुरु रसिक किसोरकी, कृपा चाहि अभिराम ।

सोभनाथ पंडित कियो, छंद शिरोमणि नाम ॥ १ ॥

x x x x x

संवत् अठारह सतक ता पर वरष पचोस ।

जेष्ठ मास सुदि सुदिन लहि, भयो ग्रंथ यह गीस ॥ २ ॥

सूरजि कुल आमेर पति, नृप जन कौ सरताज ।

इक छित राज छत्र धरि, पृथ्वीस्थंघ महाराज ॥ ३ ॥

ताके तीछन नेज ते, गारति होत गनीम ।

पीथल नृप माधव तनै, छै है बल की भीम ॥ ४ ॥

ताकौ चारयो चक्र के, नृपति नवावे सीस ।

सन्नि कुल मंडन मही पृथ्वी सिद्ध अवतीस ॥ ५ ॥

माधव साहि नरेस नै, मनि में करिकै हरप ।

सोभनाथ पै कृपा करि, राख्यो कै गुन परख ॥ ६ ॥

पृथ्वीसिध के सुनस कौ, आलंबन अभिराम ।

प्रथं क्रियो इक अवर यह, छंद शिरोमणि नास ॥ ७ ॥

x x x x x x

अरम्यो जय नगर में पृथ्वीसिध जह भूप ।

पंडित बहुत प्रकार के जित बडे कविन के भूप ॥ ८ ॥

इति श्री महाराज गुरुदेव सरसि रसिकसिरोमणि सेवक कवि सोभनाथ कृते छंद शिरोमणि  
वरण वृत्ति संपूर्ण ।

संवत् १८२६ तिथौ फागुण सुदी १० शनिवासरे लिखतं जोसी स्योजीराम स्थान देवपुरीमध्ये ।  
लिखापितं पांडे देवकायजी ।

२१. जवुस्वामीचारित्र ।

रचयिता पांडे श्री जिनदास । भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या ३५. साइज ६॥४॥ इच्छ । सम्पूर्ण  
पद्य संख्या ५०३. रचना संवत् १६४२. लिपि संवत् १८४३.

पारम्भिक मंगलाचरण —

प्रथम पंच परमेष्ठी नडं दूजौ सारद को बीनचं ।

गणधर गुरुचरणन अनुसरौ होय सिध कवित उचरुं ॥१॥

अन्तिम पाठ प्रशस्ति—

संवत मोलैसे जे भये बयालीस ता उपर गये ।

भादौ बदि पंचमो गुरुवार, ता दिन कथा कीयो उचार ॥ १ ॥

अकबर पातसाह कै राज, कोनो कथा धम के काज ।

भूत्यो बिछूरो अछर जहां, पांडित गुनी सवारो तहां ॥ २ ॥

करै धम्म सो दीया साह, टोडर सुत आगरै सनाहु ।

ताकी नांम कथा यह करो, मथुरा में जिन निस हो करी ॥ ३ ॥

रिखवदास अरु मोहनदास, रुपचंद अरु लखसन्दस ।

धम्म बुधि तुम रहियो जित, राजकरहु परिवार संजुत ॥ ४ ॥

ब्रह्मचर्य भये संतोदास, ताको सिष पांडेजिनदास ।

तिन यह कथा करी मनलाय, पुन्य हेत उपचार कराय ॥  
 पढ़ै सुनै मन लावै कोय, मनवांछित फल पावै सोय ।  
 जब लग मेरु सूर ससि रहे, तब लग खीर समुद जल वैदै ।  
 जल लग तारा गन अरु चदं, जब लग सूर उद्योत करंत ।  
 जब लग जैन धर्म अवलोई, स्वामी कथा पढो सब कोई ।

सवैया

संवत् सत्रैहसै इक्यावन फागुन द्वेज बुधि वाद आइ,  
 अन्तिम केवली केरी कथा रचिकै जिनदास विचित्र बनाई ।  
 सो यह लाल विनोदी लिखी अपने हित वाचन कौमुदुभाई,  
 तक्षपि भव्यन कौ उपदेशन हेतु करैहु महासुखदाई ॥

॥ दोहा ॥

अन्तिम केवली की कथा, वरनी परम पवित्र ।  
 और ले आपुन तरे, पावन परम विचित्र ॥

इति श्रीजंबूस्वामीचरित्रे भाषा पांडे जिनदासविरचिते कथा संपूर्ण । संवत् १८४३ पौषमासे शुक्ल पक्षे गुरुवासरे शेरगढमध्ये अष्टमी जाटू लिखितं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३४. साइज ११।।×५ इञ्च । लिपि संवत् १७६३.

संवत् १७६३ का वर्षे सावणमासे शुक्लपक्षे तीज वृहस्पतिवारं जिहांनावादजैसिंहपुरामध्ये श्री वर्द्धमान चैत्यालये श्रीमूलसंघे नंद्यास्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री १०८ देवेन्द्रकीर्ति जी तत्पट्टोदयाद्रिदिनमणिप्रख्यः भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्तिजी तदाज्ञानुवर्णी पं० दयारामेन जंबूस्वामी ग्रंथ भाषा चौपई स्वहस्तेन लिपि कृपा ।

२२. जैनशतक ।

रचयिता पं० भूधरदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १४. साइज ६×४।। इञ्च । पद्य संख्या १०७. रचना संवत् १७८१.

मंगलीचरण—

ग्यान जिहाज वैठि गणपति से गुणपयोधि जिस नांहि तरे हैं ।  
 अमर समूह आन अवनी सौं घसि घसि सीस प्रणाम करे हैं ॥  
 किधौं भाल कु करम की रेखा दूरि करण की बुधि धरै हैं ।

औंसे आदिनाथ के आहि निसि हाथ जोर हम पाय परै हैं ॥

प्रशस्ति—

आगरे में बाल बुधि भूधर खण्डेलवाल ।  
बालक के ख्याल से कवित करि जाने हैं ॥  
औं स ह करत भयो जैस्यंघ सवाई सूवा ।  
हाकिम गुलाब चंद आये तिए थाने हैं ॥  
हरोस्यंघ साह के सुवंस धर्मरागी नर ।  
तिनके कहे सौं जोर कीनी एक ठानै हैं ॥  
फिर फिर परे रे मेरे अलास को अंत भयो ।  
उनको सहाय इह मेरे मन मानै हैं ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सत्राहसं इक्यसि पोष मास तमोजीन ।  
तिथि तेरस रविवार कौ सतक संपूरन कीन ॥ २ ॥

२३. तत्त्वार्थ सूत्र भाषा ।

भाषाकार मुनि प्रभाचन्द्र । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र सख्या १४२. साइज ८"X४"। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३२ अक्षर । लिपि संवत् १८०३. सूत्रों का विस्तृत अर्थ दिया हुआ है । प्रथम अध्याय की समाप्ति—

इति तत्त्वार्थाधिगम मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः । इति तत्त्वार्थसूत्रप्रभाकरग्रन्थे मुनि धर्मचन्द्रशिष्य मुनि प्रभाचन्द्र विरचिते ।

अन्तिम पाठ—

केईक जीव कर्म भूमि विना सिद्ध होइ है । केईक जीव दीपस्यौ सिद्ध होइ है । केईक जीव उदधिस्यौ सिद्ध है । केईक जीव थल सिद्ध हैं । केईक जीव रिधि प्राप्त सिद्ध हैं । केईक जीव रिद्धि विना सिद्ध है । केईक जीव चारणी रिधि करि सिद्ध हैं । केईक जीव चारणी विना सिद्ध है । केईक जीव घोर तप करि सिद्ध है । केईक जीव उद्ध सिद्ध है । केईक जीव माघ सिद्ध है । केईक जीव अधो सिद्ध है । कई भांति करि घणा ही भेद स्यौ सिद्ध हुवा है । सो सिद्धान्त थे समझि लीज्यौ ।

इति तत्त्वार्थाधिगम मोक्षशास्त्रे दसमोऽध्यायः

संवत् १८०३. वर्षे असाढ़ बुदी १ शनिवार लिपि कृतौ जोसी कुस्यालराम टोंकनगरमध्ये वास्तव्य लिखापितं पांडे श्री कुंभाकरण जी स्वयं पठनार्थ ।

प्रति नं २. पत्र संख्या १५५. साइज ११।x४ इञ्च ।

संवत् १७८२ का ! भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति जी का सिध्य दयाराम लिखितं । मिति वैशाख सुदी ३ दीतवार कैं दिन संपुग्ण करो ।

२४. त्रिभुवननी विनती ।

रचयिता श्री गंगादास । भाषा हिन्दी गुजराती । (पद्य) । पत्र संख्या २७. पद्य संख्या ६३. ६ पंक्तियों का एक पद्य माना गया है ।

मंगलाचरण—

गंभीराण्वत् विदुना नभ तारा संख्या ।  
गहन मही मे वृक्ष जे वृण ते पण लेख्या ॥  
दारिद्र भंजणा अकलदेव मिल ज्ञान पेख्या ।  
सत्यवचन जिन स्वामिना, गणधर गुण भाख्या ।  
करयां कविता वणा ए, ते मिइ किंपि न थाय ।  
हितवर दिव मुक्त सारदा, थोडि बहु बोलाय ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

|                      |                       |
|----------------------|-----------------------|
| महापुराण समुद्र थी,  | मइ काव्या मोती ।      |
| स्वरा करो निकंठ करी, | मंशि माला मोती ।      |
| सूरत नगरे सोहामणचं,  | वणिकोत्तम वास ।       |
| नरसिंहपुरा न्यातिमा, | जिन घर्म अभ्यास ।     |
| परवत सुत कविता कहइ,  | गंगादास गुणवत् ।      |
| भणइ भणायव पय करी,    | तेहन पुण्य महंत ॥ २ ॥ |

२५. त्रिलोक दर्पण ।

रचयिता कविवर श्री खड्गसेन । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १५७. साइज १०x५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३१-३३ अक्षर । रचना संवत् १७१३.

मंगलाचरण—

ॐ नमः सिद्धं नमूं जिनराय, हुवा और होसी कर भाय ।  
साधु सकल जे सत्यके सार, सरस्वति आदि नमूं सिरधार ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

यही लालपुर नगर में, आवण परम सुजाण ।  
सब मिलि करि चरचा करै, जाकौ जो उनमान ॥

खड्गसन तिनमें रहे,  
 (जनवाणी हिरदै बसै,  
 ताकूं यह इच्छा भई,  
 अकृत्तम जे (जन भवन हैं,  
 एकदिवस रजनी समै,  
 नाम पंच परमेष्ठा,  
 हृदये परम आनंद भयो,  
 प्रति अधिक चित में भई,  
 अधो मध्य ऊरध जिते,  
 ते प्रतिभासे सहज ही,  
 ता दिन तैं आनंद बढ्यो,  
 अब यह किस विधि धारिये,  
 तब विचार औंसी भई,  
 जब चाहै तब देखिये,  
 करि विवेक जीव में तवैं,  
 ग्रन्थ चारि में देख लें,  
 काल पांचमौ अति विषय,  
 ए संजोग तिन ही मिलै,  
 अपणैं समझन कारणै,  
 दूषण कोउ लेहु मति,  
 या कथ तैं सुख अति लखौ,  
 अंतर सब सांची लखी,  
 षट मद् लाकी ताल में,  
 ऊपरि है बदरंग सा,  
 जो कछु या में सार है,  
 दोष भरै सब जगत जीव,

सबकी सेवा लीन ।  
 ग्यान मगन रस चीन ॥  
 काल लखि परभाव ।  
 ते सुमरुं चितलाय ॥  
 पढी एक जयमाल ।  
 तामैं अकृत्तममाल ॥  
 लखी लोक विधिसार ।  
 सुलख्यो बोध विचार ॥  
 है जिनवर के धाम ।  
 सुमरत गुरु मुख ग्यान ॥  
 भयो परम रस पोष ।  
 सो कीजे निरदोष ॥  
 रचिये कथा अनूप ।  
 यह त्रिलोक सरूप ॥  
 किस विधि सीमै काम  
 तब पायौ विश्राम ॥  
 अलप पुनी ए जीव ।  
 निकट भवौ सु अतीव ॥  
 यह गूथो गुणमाल ।  
 भूषण दीव्यो चाल ॥  
 मुख करि कह्यो न जाय ।  
 अरौन कछु सुहाय ॥  
 चठै तरंग अपार ।  
 अंतर बदरंग असार ॥  
 ताहि गहौ बुधिवंत ।  
 तीन्यौ काल अनंत ॥

### चौपाई

जिनवर चैत्य लाभपुर मांही,  
 तहां आय बैठे सब लोक,

महा मनोहर चस्तिम ठांही ।  
 गुण गवै पढिये बहु थोक ॥

तहां बौठि यह कियौ विनोद,  
 पूरण करि पूरव विधि धरी,  
 जो यह कथा पढ़ै धरि कंठ,  
 उघड़े पलक तिमर मिटि जाय,  
 पंडित राय नरिदे समान,  
 सभा मध्य बडा गुणवंत,  
 सभा सिगार हार मुख सार,  
 बाणी सुणत वृषति नहि होय,  
 सुर ता पढ़ै अति गुणवंत,  
 तिन का नाम सुणौ तुम जाय,  
 पंडित हीरानंद प्रवीण,  
 मंघवी जग जीवन गुणखाण,  
 रतनपाल ग्याता बुधवंत,  
 अनूराय अनूपम रूप,  
 दामोदर दंसेण गुण लीन,  
 हीरानंद हिरदै परगास,  
 विषनदास बुधि तीषण सरी,  
 मोहनदास महा गुण लीन,  
 कुंदन कनक नारायणदास,  
 पांडे हिरदै पूजा करै,  
 हृदय राम भो जग हितकार,  
 ए सब ग्याता अति गुणवंत,  
 सब श्रावक अति ही गुणवंत,

× × ×

साहि जहां सुलितान महान,  
 छत्रपति सेवै तसु पाय,  
 संवतसर विक्रमत्तै आदि,  
 चैत्रशुक्ल पंचमी प्रमाण,

× × ×

बागड देश महा विसतार,

तोन लोक का है यह मोद ।  
 रची माल ते बहु विधि सगी ॥  
 मुक्ति श्री लावै तसु कंठ ।  
 दूजे वेद तयो परभाय ॥  
 मिसर गिरधरे जंगत प्रमाण ।  
 ग्रन्थ बखोण सुरित्तवंत ॥  
 सुणत सबै रजै चित्त धार ।  
 अमृत वचन पीवै सहु कोय ॥  
 अपणौ बुधि अनुसार लेहत ।  
 भूर पुण्य उपजै तहां सोय ॥  
 चौदह विद्या में लय लीन ।  
 सकल शास्त्र मय अर्थ सुजाण ॥  
 हिरदै ग्यान कला गुणवंत ।  
 बाल पणौ जिम सोहै भूप ॥  
 माचोदास मेधुर प्रवीण ।  
 तिलोकचंद तहां ग्यान विलास ॥  
 प्रतापमल पूरण मति धरी ।  
 हंसराज जि हिरदै प्रवीण ॥  
 ग्यान कला आगम परवास ।  
 हिरदै हरष सेव चित्त धरै ॥  
 सेवा करै सुजिन गुणधार ।  
 जिनगुण सुणै महा विकसंत ॥  
 सुणै ग्रन्थ पावै विरतंत ।

× × ×

फेरी चहु चक्क में आन ।  
 चक्रता चक्रवै सुभीहान ॥  
 सतरह सैं तेरहै सुखस्वाद ।  
 यह त्रिलोक दरपण सुपुराण ॥

× × ×

नारनोल तहां नगर निवास ।

तहां पौण छत्तीसौ बसै,  
 आवक बसै परमगुणवन्त,  
 सब भाई मैं परमित लियै,  
 तिसके दोग पुत्र गुणश्रवास,  
 ठाकुरसी कै सुत है तीन,  
 घडो पुत्र धनपाल प्रमाण,  
 करमचंद अति भये प्रधान,  
 लखणराज के सुत दोग भये,  
 धरमदास सबमै गुणरास,  
 खडगसेन दूजो बुधवंत,  
 गुरु प्रसाद कीयो अति घणौ,  
 चतुरभुज वैरागी जाण,  
 तिन बहुत्तौ कीयो उपगार,  
 तवतै बुधि बढी अतिसार,  
 पायौ मरम हृदय भयौ चैन,  
 बहुत बार आये लाहौर,

अपणै करम तणा रस लसै ॥  
 नाम पापडीवाल बसन्त ।  
 मानू साह परमगण कियै ॥  
 लखणराज ठाकुरसीदास ।  
 तिनकौ जाणौ परम प्रवीन ।  
 सोहिलदास महा सुख जाण ।  
 माने श्री जिनवर की आन ॥  
 पुन्यवंत सुन्दर बहु कहै ।  
 मूरति धमवंत प्रतिभास ॥  
 ताकै हृदय ग्यान विलसंत ।  
 द्रव्यरूप लिख्यौ बहु मुणौ ॥  
 नगर आगरै मांह प्रमाण ।  
 द्रव्य सरूप दीये भंडर ।  
 सोलहसै पिचयासीया धार ॥  
 अंगणित जिन गुण लागौ लैण ।  
 कछु न उपजी मन मैं और ॥

× × × × × × ×

संवत् १७६८ का वैशाख मासे शुक्ल पक्षे दुतिया दिने सोमवारवारे भगवतगढ नाम नगरे श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये भट्टारकजी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्ति जी तत् शिष्य पं० दयाराम जाति सोनी नरायण का चासी इदं पुस्तकं लिखितम् ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०८, साइज १२×५॥ इच्छ ।

संवत् १७६८ वर्षे मितिमासोत्तममासे पोस शुक्लपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ गुरुवासरे श्रीमूलसंघे चलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिजी तत्पट्टे भट्टारक श्री महेंद्रकीर्ति जी आचार्यजी श्री ज्ञानकीर्ति जी तस्य पट्टे आचार्य श्री सकलकीर्ति जी तस्य शिष्य पंडित खेतसो लिखापित श्री उदयपुर नगरमध्ये राणाजी श्री जगतसिंहजी राजकरे श्री मैडांकुं देहुरै लिख्यो ।

२६. त्रेपनक्रिया ।

रचयिता श्री ब्रह्मगुलाल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ४. स इज १५ इच्छ । रचना संवत् १६६५.

मंगलाचरण—



प्रथम परम मंगल जिन चर्चनु, दुरित तुरित तजि भाजै हो ।  
कोटि विघन नासन अरिनंदन, लोक सिखरि सुख राजै हो ।  
सुमिर सरस्वति श्री जिनउद्भव, सिद्ध कवित सुभ बानी हो ।  
गन गधर्व जत्थ मुनि इंद्रनि, तीनि भुवन जन मानो हो ।

अतिम पाठ—

ए त्रेपन विधि करहु क्रिया भवि पाप समूहनि चूरे हो ।  
सोरह से पेसाठ संमच्छर कातिग तीज अधियारी हो ।  
भट्टारक जग भूषण चेला ब्रह्म गुलाल विचारी हो ।  
ब्रह्म गुलाल विचारि बनाई गढ गोपाचल थानै ।  
छत्रपती चहु चक्र विराजै साहि सलेम सुगलाने ॥ १ ॥

२७. त्रेपनक्रियाकोप ।

रचयिता श्री विश्वनाथसिंह । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ७५. साइज १०×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर । रचना संवत् १७८४. लिपि संवत् १८२६.

मंगलाचरण—

समवसरण लछमी सहित, वधमान जिनराय ।  
नमो विबुध वंदित चरण, भविजन कूं सुखदाय ॥

प्रशस्ति—

खंडेलीवालं वंसविमालं नागरचालं देसाधियं ।  
रामापुरवासं देवानवासं धर्म प्रकासं प्रगटकियं ॥  
संगही कल्याणं सवगुणजाणं गोत्र पाटणी सुजसलियं ।  
पूजाजिनरायं श्रुतगुरुपायं नमै सकति नज दानदियं ॥ १-॥  
तसु सुत दुय एवं गुरुमुखदेवं लहुरो आणंदसिंधसुणौ ।  
सुखदेव सुनंदन लिनपदवदन थान मान किसनेस सुणौ ॥  
किसन इह कीनी कथा नवीनी निजहित बीनी सुरपद की ।  
सुखदायक्रियाभनि यह मनवचननि सुद्धपलै दुरगति पदकी ॥ २ ॥  
माथुरराय वंसंत कौ जानै सकल जिहान ।  
तसु प्रधान सुत कौ तनुज किसनसिंध मतिमान ॥ ३ ॥

अडिल्लछंद

चेत्रविपाकी कर्म उदै जब आईया, निजपुर तजि कै सांगानेरि बसाईया ।

तह जिनघमप्रसादि गर्मै दिन सुख लही, साधमीजन सज्जनमानै दे हित गही ॥

॥ दोहा ॥

इह विचार मनि आइयौ किया कथन विधिसार ।  
होई चौपई बंध तौ सब जन कौ उपगार ॥

× × × × ×

अठिल्लछन्द

किसनसिह इह अरज करे सब जन मुनौ, करि मिथ्यात कौ नास निजातम पद मुनौ ।  
किया सहित व्रतपाल करणवसिकीजिये, अनुक्रमलहि सिवधान सार्वता लीजिये ॥

सवैया

सत्रहस संवत चौरासिया सु भादौमास वर्षारितिश्वेत तिथि पुन्यौ रविवार है ।  
सतिविपारिपिध्रतिनाम जौग कुंभ सासस्यंघ कौ दिन समूहरत अति सार है ।  
द्वंद्वारह देश जान बसै सांगानेरि थान, जैसिहसवाई महाराज नितिधार हैं ।  
ताकै राजसमै परिपूरण की इह कथा, भव्यन कै हिरदै हुलास दैनहार है ॥

× × × × ×

श्री सकल पंडितोत्सर्पडित श्री ३ श्री नायक विजयगणि तत्त शिष्य सेवक पं० मुक्तिविजयेन लिपि-  
कृतं श्री पट्टावानगरमध्ये साह स्वरूपचन्द्रजी शास्त्र लिखायौ । संवत् १८२६ का मिति मंगसिर मासे शुक्लपक्षे  
तिथौ सप्तमी भगुवासरे ।

२८. त्रेयनक्रिया विनती ।

रचयिता श्री कुमुदचन्द्र । भाषा हिन्दी (पद्य) । पद्य संख्या १३.

मंगलाचरण—

वीर जिनेश्वर मनि घरुं, प्रणमुं गुरु पाय ।  
त्रेयन किरिया नो विचार, कहि सुं सुखदाय ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

ए त्रेयन उपवास, सर्व कहि लक्ष्मीचन्द्र ।  
अभयचन्द्र गुरु अभयनन्दि गत माया तन्द्र ॥ १ ॥  
रत्नकीर्ति वाणी विशाल गुणवंत मुनीन्द्र ।  
ललित वाणी कहि कुमुदचन्द्र पद नामत नरेन्द्र ॥ २ ॥

जे नर नारी गावसे ए बीनती सुचंग ।  
ते मन बंछित पावसे नित्य नित्य मंगल तरंग ॥ ३ ॥

२९. दशलक्षव्रतकथा ।

रचयिता ब्रह्म ज्ञानसागर । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ४. साइज १०×४॥ इच्छ । पद्य संख्या ५५. लिपि संवत् १८३८.

मंगलाचरण—

प्रथम नमन जिन चरनै करुं सारदा गणघर पद अनुसरुं ।  
दश लक्षण व्रत कथा विचार, भाखुं जिन अगम अनुसार ॥

प्रशस्ति—

भट्टारक श्री भूषणधीर सकल शास्त्र पूरण गंभीर ।  
तसु पद प्रणमो बोले सार, ब्रह्म ज्ञानसागर सुविचार ॥ १ ॥

संवत् १८३८. श्रवाणमासे शुक्लपक्षे सप्तम्यां पट्टणनगरे भट्टारक सुरेंद्रकीर्तिना लिखितं ।

३०. दिलारामविलास औरआत्मद्वादशी ।

रचयिता श्री दिलाराम । भाषा हिन्दी पद्य । साइज ६×५॥ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २७-३० अक्षर । प्रति पूर्ण है ।

मंगलाचरण—

|                         |                      |
|-------------------------|----------------------|
| परम पुरुष परमात्मा      | परम जोति परधान ।     |
| परमेश्वर परब्रह्म प्रभु | पूजौ परम पुरान ॥ १ ॥ |
| सबै काल के सिध सहु      | नमौ सदा पद तास ।     |
| जा प्रसाद जग विस्तरी    | यह दिलाराम विलास ॥   |

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

राजवंशावलिवर्णन—

ससि वंश चौहाण हाडा कहाये कीयो राज बूंदी मवासेदहाये,  
भये भोज नामी बडे राव वंसी तनै रत्न सांचे भये रतन अंसी ।  
भये नाथ गौपी न टीकै विराजे भये छत्रसालै तिन्है राज साजे,  
लखै राजधानी सबै शत्रु कपै चहुं चक के चकवै सास जंपै ।  
भये तास के देवता राव भाऊ सबै देस मै दक्ष नीमौ पुजारुं,  
लहो भाग तैं पाट अनुरुद्ध जाको बढ्यो देश मै राज आतंक ताको ।

भये बुद्ध ताकै तिनहै राज साजा क्रिया छत्रधारी कीयो रावराजा,  
सबै तास के राज मैं राजधानी लहै भोग देवा पुरी सुभिमाना ।

बूंदी नगर वर्णन—

वन उपवन चहुँ नंदन से मधि गिर मेर नंदी गंग सम सोभै बढवती ।  
अतुल विलास में बसत सबै वनपति वन भौन भौन रंभाति गायती ।  
महल विमान सभा सुर मधि राजै राव बुद्ध ईद जिम जाके किति लछि अवती ।  
ग्रंथनि मै सुनियत नैनानि को अभिलाप पूजत लखैं तैं अंसी बूंदी अमरावती ।

कवि वंश वर्णन—

वसि विपुल आदर सहित ल्याए रतन नरेश ।  
सो कविकुल वंसावली वणें करत सुदेस ।  
प्रथम खंडेले तैं, प्रगट आति धर्म जिनराज ।  
पुर पहन तैं पाटनी जाको विपुल समाज ॥  
सो वणन संक्षेप सौं दस पीढी मध्य चारि ।  
टोडै प्रथम विचार पुनि षट् बूंदी मध्य धारि ॥

सरवन कीरति सुनी जो साह सरवन दूहै कविकुल के सुदूहै गुनदाए हैं ।

गुनदत गेगराज भासै जग भासै साह,  
धनपाल धनकार सुजस अघाए हैं ।  
चत्रभुज बाहुवली तनय दोलतिराम,  
भजनेरो दो बलकरि संगही कहाए हैं ।  
साही के प्रसाद हिदै रामकुलमंडनभो,  
तनुज साहिवराम बंस वरगाए हैं ॥

॥ दोहा ॥

|                      |                        |
|----------------------|------------------------|
| सतरासै अठसठि समै     | दसमी विजैकुमार ।       |
| लगन महुँरत बार सुभ   | भयो ग्रंथ तत सार ॥ १ ॥ |
| असौ रस या ग्रंथ मैं  | जो थापै घट मांदि ।     |
| सो नर कर्म निवार करि | भवदधि आवै नांदि ॥ २ ॥  |
| सहसकृत प्राकृत नहीं  | नहीं छंद अलंकार ।      |
| बाल ख्याल रचना रची   | सुकीवसु लेहु सुधारि ॥  |

|                      |                      |
|----------------------|----------------------|
| संहसकत समजिन परै     | पराकृत गम नांहि ।    |
| भाषा कछु एक कवि कला  | रची ग्रंथ या मांहि ॥ |
| मबै काल के सिधि महु  | नमो जौरि पद तास ।    |
| जा प्रसाद जग विभरौ   | यह दिलाराम विलास ॥   |
| धनि सम यो धनि वा वडो | धनि वा वार मिलाय ।   |
| अनुभव करण सुर पूजिये | गोगि सधमी पाय ॥      |
| बहूत गये मिथ्यात मो  | अजहु नांहि अघाय ।    |
| थाना सु दल वीनती     | मेरो बेगि बलाई ॥     |

### ३१. धनपालरास ।

रचयिता ब्रह्म जिनदास । भाषा हिन्दी । पत्र ६. साइज ११।।x५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर ।

मंगलाचरण—

वीर जिनवर २ नमुं ते साग, तीर्थकर चौबीस मो ।  
बंछित फल बहु दान दातार, सारद सामिण वीनबुं ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्री सकलकीरति गुरु प्रणमीनें, श्रीभवन कीरति भवतार ।  
दानतणा फल वरणव्या, ब्रह्म जिणदास कहै सार ॥ १ ॥  
पढे गुणें जो सांभलें, मनधरी निरमल भाऊ ।  
मनबंछित फलरु बडां, लाभें शिवपुर ठाउ ॥ २ ॥

इति श्री दानफलमहात्म्ये ब्रह्म जिणदासविरचिते प्राकृतवधे धनपालवनमतीरास संपूर्ण । संवत् १८२८ वर्षे श्रावण सुदी १ प्रतिपत्तिथौ रविवासरे पांडे रूपचन्दजी तस्य वाचनार्थे ।

### ३२. धर्मपरीक्षा ।

रचयिता श्री मनोहरदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १२४. साइज १२x५।। इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या ३०००.

मंगलाचरण—

प्रणमुं अरिहतदेव गुरु निरग्रन्थ दया धरम ।  
भवदधि तारन एव अवर सकल मिथ्यात भणि ॥

प्रशस्ति—

घमपरीक्षा पूरी भई बुधिसारु मनौहर निर्मई ।  
मुझें दोस मति लावौ कोई जैसी मति तैसी गति होई ॥

॥ सोरठा ॥

सुमुनि अमितगति जान सहसकीर्ति पूर्व कहौ ।  
यामैं दुधि प्रमान भाषा कीनी जोरि कै ॥

॥ दोहा ॥

विक्रम राजा कौ भयौ सात अधिकसहजार ।  
वरप तवै यह सहसकृति, भई कथा सुभ सार ॥  
देश दादरो परवति भली, तहां घामपुर सोभा भली ।  
चहूं दिशि शोभित बाढी बाग, करै कोकला पंचम राग ॥  
कूप वाडरो शुभ पोषरी, दीसैंई निर्मल पाणी भरी ।  
मधि वमलनी करै विगास, मधुकर आइ लेहि तिस बास ॥  
तहां बसै धनपति सब लोग पांन फूल के कीजे भोग ।  
तहां सराउग नीकै सुखी, कर्म उदै कोई होइ है दुखी ॥  
वितसारु सब दांन करहि, जुगम बार जिन थांनक जांहि ।  
तिन मधि आसू जेठ साह, खरचें द्रव्य लेह धन लाह ॥  
दुरजन कोई धीरन धरे, करण मतै सोही विधि करै ।  
घणी बात को करै बढाइ नगर सेठ है मन वचकाय ॥

॥ दोहा ॥

जेठमल सुत त्रिधोचंद दाता दीन दयाल ।  
सज्जन भगतां गुण उदधि दुर्जन छाती साल ॥  
कुल धन जोवन रूप मद, अवर काणि मद ताहि ।  
एते मदन विमद करै बढौ तमासौ आहि ॥  
सब ही भाई हैं भले, अपने अपने काजि ।  
मति कोउ मानौ बुरी सच कहत हौ राजि ॥

॥ सवैया ॥

बाणारसी सेठ प्रतिसागर पृथ्वी प्रसिद्ध कौटिक कौ घनी ताकै पाप उदै आयो थो ।

सदन सौ निसि अजोध्या कौ गमन कीनों अजोध्या कै सेठ उह उछिम करावै थो ॥  
अपनी बराबरि को करि नाना भांति सेती देकर बडाई निज थान कौ पठायौ थो ।  
औसे हम आसू साह राखे निज बांह देके कहै मनौहर हम पुनि जोग्य पायौ थो ॥

॥ दोहा ॥

सातौ पहुँचे शुभग गति बारो सुभग बजाई ।  
त्रिधो चढ़ सुख भोगवै धर्म ध्यान चित्त लाई ॥  
हीरामणि उपदेश तैं भयौ शास्त्र शुभ सार ।  
दुष्ट लोग को प्रति हंसै हरदौ घरी विकार ॥

॥ सवैया ॥

रचति सालवांहरा आगरै कौ बुधिवंत हिरदै सरल तिन ज्ञान रस पीयो है ।  
जगदत्त मिश्र गौड द्विषारको बासी शुभ विद्यावलि जगत में सरजस लीयो है ॥  
गेगुराज वांभण पंडित है नगर माहि जौतिया कौ पाठी सरस्वती वर दीयो है ।  
इतने साई भये दोही जिनराज जू की तब मैं विचार करि भाषा बुधि कीयो है ॥

॥ दोहा ॥

दया समं ब्रह्मदालीया भयौ दूसरौ नाव ।  
मिरलोभी मन कौ सरल दया धर्म शुभ गाव ॥  
सो भी हम प्रेरक भयौ दिन में वारंवार ।  
तब हम यह भाषा करी लघु बुधि छारि विकार ॥

॥ छप्पय ॥

नगर धामपुर माहि करी भाषा बुधि सारु  
धम परीक्षा मित्र अर्थि विजन घरि वारु ॥  
ना कछु कीर्ति हैति न कुछ अरति धनु वंछन  
जथा जुक्त मंडली रचो पद २ रस चंदन ॥  
पढे सुणै उपजै सुबुधि है कल्याण शुभ सुख धरण ।  
मनरसि मनौहर हम कहै सकल संघ मंगल करण ॥

संवत् १८०२ वर्षे श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ पूर्णिमा बार वृहस्पतिवार श्री सवाई जेपुरमध्ये  
श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये भट्टारकजी महेन्द्रकीर्ति जी प्रवर्तमानेतत् समीपे पं० दयारामेण

### ३३. धर्म स्वरूप।

रचयिता ब्रह्म श्री गुलाल । भाषा हिन्दी (पद्य) । पद्य संख्या ६२. रचना संवत् १७२०. लिपि संवत् १७३२.

भंगलाचरण—

प्रथम सुमरौ सारदा, गणपति लागू पाय ।  
गुण गाऊं श्री जिण तणा, सुनो भव्य मन लाय ॥

प्रशस्ति—

संवत् सतरासैं बतीस, भादवा मास सुकल पख तीज ।  
सोमवार सुभ बेला घटी, तब यह कथा बंचे कस्यौ करी ॥ १ ॥  
जैसी विधि श्री गुर कहो, तैसी ही सगला सर रही ।  
सुभचन्द्र भट्टारक भलो, बराड देस मही छै निलो ॥ २ ॥  
सभा मांहि घणा वैण साह, खरचै द्रव्य पुनि कौ लाह ।  
वीरजी संगही विद्यावंत, धनजी लालचदं गुणवंत ॥ ३ ॥  
सब ही मिलि यौ कारिज कियो, भामा श्रावग ने पोरिस दियो ।  
कीजै वाणी श्री जिणवर सार, संसार संग चतरैं पार ॥ ४ ॥  
खानदेश में सोहे सलो, ब्रह्मानपुर नम्र है भलो ।  
छतीसपुरा विधि बाजार, साहिदरो सोहे अति सार ॥ ५ ॥  
भावक गोठि अंजम आचार, व्रत विधान निश्चै व्योहार ।  
मंदिर वेदी दारघ होइ, जीणवर धरम जपै सो होइ ॥ ६ ॥

### ३४. धर्मरासो ।

रचयिता श्री अचलकीर्ति । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या २४. साइज ८x४॥ इञ्च । पद्य संख्या ७९. रचना संवत् १७२३. लिपि संवत् १७२६.

भंगलाचरण—

प्रथम जोतीस्वर लागौ जी पाइ, सिद्धि सतगुरु नमौ ।  
सरस्वति स्वामिणी दे मति माइ, राज भणौ जिण तणौ ॥

प्रशस्ति—

सत्रह सै जु तेईस मै, पौप सकल पक्ष सुभ दिन जोग ।  
दोज सोमवार सुहं बण्यौ, उत्तम नक्षत्र तहां उन्नाएषाढ ॥



सहर नगर सुभ थांन में, कुण भट्टारिक आमनाय ॥ १ ॥  
 श्री काष्ठाये संघनायक गच्छराय, भट्टारिक भवि जण रंजण ।  
 श्री कुवरसेण कुल केवल दिणंद, विद्या बचन गुण वारिधि ।  
 रतन कीरति तस सीष सुजाण, दिली मंडलाचार्य दीपता ।  
 आज्ञा कारी तस आचाये जाणि, अचलकीरति अवगाहि कै ।  
 धरम रासौ कीयौ धरि सुभ ध्यान, आत्मा पर चपगाहु ॥  
 पढत सुणत सुख संपदा होइ, सुरग मुर्कात सुख सार्वता ॥ २ ॥

### ३५. धर्मोपदेश आचाराचार ।

रचयिता श्री धर्मदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ४६. साइज ६×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति में २८-३० अक्षर । रचना संवत् १५७८. प्रथम पृष्ठ नहीं है । विषय—आचार धर्म दूसरे पत्र का प्रारम्भिक पाठ—

पणवहु भविजन शीतलनाहुं, शीतलगुन निज अधिक अगाहुं ।  
 दह भेय जिन भास्यौ संव, बंदहु ताहि सयल तजि गव्व ॥

### प्रशस्ति—

पंद्रहसैं अट्टहत्तरि वरिसु, संवच्छर कुसलह कन सरसु ।  
 निर्मल वैसाखी अवतीज, बुधवार गुनियहु जानीज ॥

ता दिन पूरो कियो यहु ग्रंथ,  
 मंगल करु अरु विधानि हरनु,  
 अच्छाससवदछंद करि हीन,  
 सो मो मंद बुधि जानेहु,  
 सुध असुध मात्र करि हीन,  
 सो सब खमहुं देवि सगसुती,  
 बारहसैंनी उत्तम जाति,  
 जिनवर पय भत्तउ होरिल साहु,  
 तासु मनू सत्य जस गेहू,  
 त.सु पुत्र जेठो करमसी,  
 दया आदि दे धर्म हि लीन,  
 पदम नाम ताकै भो पूत,  
 अवरु बहुत गुन गहिर समान,

निर्मल धर्म भनौ जो पंथ ।  
 परम सुख भवियन कहुं करण ।  
 किंचितु मात्र मैं जुयहु कीन ।  
 तातैं बहु जन विमा करेहु ।  
 इहु प्रमाद ज्ञान में कीन ।  
 जान ही मोहिं बालक सममती  
 मूल संघ आवग विख्यात ।  
 सो जु दान पूज कौ पवाह ।  
 धर्म शीलवतु जानेहु ।  
 जिनमति सुमति जासु मन वसौ ।  
 परमाविदेकी पाप विहीन ।  
 कवियनु वैदर कला संजूत ।  
 महा सुमति अति चतुर सुजानु ।

अरु सो सज्जनता गुण लीन,  
 बहू मित्रो तस मन बि कोइ,  
 राम सिखी तसु तनिय कलत्त,  
 तामु उदर सुत उपनौ वेवि,  
 जे को धमु विबुह सिरमनी,  
 दया लोन जिनवर पय धुनी,  
 पंचौदर न मिथ्या जेवि,  
 जैन धर्म सेवै नित्त,  
 नित निमेष मुनि मानेंउ,  
 निः केवल अरहंत थुनै,  
 तिहि यहू कियौ धर्म उपदेशु,  
 विघनकलंक पाप कहू हरै,  
 पठतन हुं मति हरइ बित्त,  
 जे जिन सासन लीन निरुत्त,  
 घन कन दूध पूत परिवार,  
 मेदिनी उपजहु अनंत अनंत,  
 मंगल वाजहुं घर घर वाग,  
 घरि घरि सीत उपजहु सुख्य,  
 घरि घरि दान पूज अनिवार,  
 नंदउ जिन सासन संसार,  
 नंदहु जिन पडिमा जिन गोह,  
 नंदउ धर्म धुरंधर साहु,  
 जिनि केवल जति व्रत पालंत,  
 ए भत निविमांगै जिनदेव,  
 भवि भवि आवागकुलि अवतारु,  
 जन्म जन्म उपसम चित हेउ,  
 भवि भवि गुर निर्मथह संग,  
 भवि भवि दया उपजौ चित्त,  
 भवि भवि जैन धर्म की लीव,  
 कहै धर्म कवि सुनहु संत,

पर उपगारी विघना कीन ।  
 सलहही देस देस के लोइ ।  
 परम सील वे पथ पवित्र ।  
 जिनु तिजि अवरुन चाहिं तेवि ।  
 जिहि पररास अवागनी ।  
 पर पायो धनु धूलिसम गिनी ।  
 अह निशि झूठे मानै जेवि ।  
 अरु दह लक्षण भाव पवित्त ।  
 जिन अगम कहू पठतु सुबंद ।  
 और देवि अथ्यकर गिनै ।  
 धर्म सुख्य जो करै असेसु ।  
 मंगल सब सुजन कहै करै ।  
 उपजइ निर्मल बुधि पवित्र ।  
 — कहू उपजै सुख बहूत ।  
 मंगल सुजसु अपार ।  
 [मांस भरि जेल बरसंत ।  
 नी गारहि मंगल चारु ।  
 रोग आपदा दुख ।  
 चलहु आप आचार ।  
 दयादिक चलौ अपार ।  
 नंदहु गुर निर्मथ अमोह ।  
 दान पूज जे करहि अगाह ।  
 धर्म कथहि कर्मनि जालत ।  
 भव भव करौ तुम्हारी सेव ।  
 जिनकै धमु अधमु चिवार ।  
 जन्म जन्म जिन सासन भेउ ।  
 जातैं होइ पप कहू भंग ।  
 क्षमादि .... भाउ पवित्र ।  
 पावहिं मुक्ति जासु ते जीव ।  
 नर भव पायो बहुत भसंत ।

जिन सासन दुर्लभ जानेहु,  
जिन पूजहु जिनवर धुनहु,  
जिन सिद्धांत जु कह्यो विचार,  
कहै धर्म कवि वेकर जोडि,  
मति सारु हम कीनौ एहु,  
जह अड्ड तह सुद्ध करहु,  
साधु नित नौ भाउ वह नित्त,

पायौ तो दूर करि मानेहु ।  
गुरु निग्रथ सत्ये करि मुनहु ।  
सो पालहु त्रिभुवन माह सार ।  
पंडित जन मन लावहु खोडि ।  
कपटु मुनि विमनि दया करेहु ।  
अपनी सज्जनत विस्तरहु ।  
पर उपगारु घरहि ते चित्त ।

इति धर्मोपदेशश्रावकाचार पं० धर्मदास विरचित संग्रह । मिति मार्गशीर्ष शुक्लसप्तम्यां तिथौ-  
शनिवासरे समाप्तोऽयं ग्रंथो । पं० शत्योदयेन मुनिना लिखितमिति ।

### ३६. नयचक्र भाषा

भाषाकार श्री हेमराज । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या २४, साइज ६×४ इञ्च । रचना संवत् १७२६  
विषय-नैगमादि सात नयों का वर्णन ।

#### संगलाचरण—

बंदौ श्री जिनके वचन,  
ताहि सुनत अनुभव तहीं,  
ता कारण नयचक्र की,  
अधिक हीन अबबोकि कै,  
स्यादवाद नय मूल ।  
हैं मिथ्यात निरमूल ॥  
सरल वचनिका कीन ।  
करहु सुद्ध परवीन ॥

#### अन्तिम पाठ प्रशस्ति—

सिरीमाल गच्छ खरतरै,  
लवधो रंग उवमोय मुनी,  
विबुध नारायण दास नै,  
जो नयचक्र सटीक हैं,  
तिन प्रसन्न हैं के सही,  
तव हमहुं उधम कियो,  
हेमराज की कीनती,  
यहु भाषा नय चक्रकी,  
सत्रहसैं छवीस को,  
रज्जल तिथ दसमी जहाँ,  
जिन प्रभु सूरि सत्तानि ।  
तिनके शिष्य सुजान ॥  
यह अरज हम कीन ।  
पढे संवे परवीन ।  
भली भली यह बात ।  
रची वचनिका माव ।  
मुनियो सुकवि सुजान ।  
रची सुबुधि बनमान ।  
संवत् फागुण मास ।  
कीनो वचन विलास ।

इति श्री पं० नारायणदासोपदेसेन साह हेमराज कृत नयचक्र की सामान्य वचनिका समाप्त ।

### ३७. नेमीश्वर गीत ।

रचयिता श्री चतुरुमल । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १५. साइज ६×४॥ इच्छा । पद्य संख्या ४४.  
रचना संवत् १५७१. लिपि संवत् १८२०.

#### मंगलाचरण—

प्रथम चलन जिन स्वामि जुहारु,  
लहइ मुक्ति दुति दुति निरै,  
सुमरित उपजै बुद्धि अपारु,  
गुरु गोतमु मो देख पसीउ,

ज्यो भव सायरु पावहि पारु ।  
पंच परम गुरु त्रिभुवन सारु ॥ १ ॥  
सारद मनाविउं तोहि ।  
जौ गुन गांव जादुराइ ॥ २ ॥

#### प्रशस्ति—

श्रावग सिसीमल अरु जसवंत,  
वरु चलन भवि वंदतौ,  
जनमत नाउ चतुरु तिन लियौ,  
नेमि चरित ताके मन गहै,  
नेमि ..... दैसु सुख सयल निधान,  
एक सोवन का लंका जसि,  
भुव वल आयु जु माहस धीर,  
ताके राज सुखी सब लोगु,  
जैन धर्म बहु विधि चलै,  
निहचै चितु लावैहि जिन धर्म,

निहचै जिय धर्म धरंत ।  
पुत्र एक ताके वर भयौ ।  
जैन धर्म दिनु जीयह धरौ ।  
सुनि पुरान उर गानो कहै ।  
गढ गोपाचलु उत्तिम ठन ।  
तौ वरु राव सबल वरवीर ।  
मानसिह जग जानिये ।  
राज समान कराह दिन भोगु ।  
श्रावग दिन जु करै पट धर्म ।  
नेमि कुवर नेमि जिन वंदि हैं ।

( २ )

संवत् पंद्रहसें दो गने,  
भादौ वदि तिथि पंचमीवार,  
लगुन भली सुभ उपजामती,  
चतुरु भनै भावी सयलनि दासु,  
लट्ठि उपसमै बुधि हीन,  
पढत सुनत जी उपज्यै ग्यान,  
राजमती जिन संजमु लियौ,

गुन गनुहुं तरि ताउपरि भने ।  
सोम नषितु रेवती ।  
चंद्र जन्म बलु पाइयौ ॥  
गुनिय सुनत जिय करहिनदासु ।  
मैं स्वामी को कियो बलानु ।  
मन निहचल करि जिय धरहु ।  
नेमी कुवर नेमी सयल मवी नयौ ।

नेम कुवर नेमिजिन वंदि है ॥

संवत् १८२० वर्ष माह बुदी १४ लिखितं गुरु देवेन्द्रकीर्ति आचार्य ।

## ३८. नेमीश्वर चंद्रायण—

रचयिता श्री भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ८, साइज ६ x ४ इञ्च । पद्य संख्या १०४ । लिपि संवत् १६६० । विषय—नेमिनाथ का जीवन ।

## मंगलाचरण—

परम चिदानंद मन्यवरी अनि प्रणमी श्री गुरु पाय ।  
हरष अणिदि सुंस्तवुं श्री नेमीश्वर जिनराय ॥ १ ॥

## प्रशस्ति—

महीयल महिमिमावत वखांणो, श्री मूत्तसंघ गळपांत जांणो ।  
विजय कीरति सुरि नमित नरेन्द्र, तत्पट्ट दायक श्री शुभवचन्द्र ॥  
तत्पट्ट पंकज सुर समान, सुमति कारति सुरी गुणह निधान ।  
ते चरण चित्त धरी रे विशाल, नरेंद्रकीर्ति कहि रे रसाल ॥  
नरेंद्रकीरति पाठक कहि अनि नेमिचंद्रायणसार ।  
भाव सहित भणि सांमलि, ते पावे भव पार ॥

संवत् १६६० वर्षे भाद्रवा सुदी ६ रवौ श्री मूलमंघे सरस्वती गच्छे वलात्कारगणे कुंदकुंद चायान्वये  
भट्टारक श्री वादिभूषणदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री रामकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनन्दि गुरुपदेशात् तत्पट्टे  
गुरु आता मुनि श्री देवकीर्ति तत् शिष्य मुनि श्री कल्याणकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्मसिंहजी लिखित ।

## ३९. नेमीश्वर रास—

रचयिता श्री ब्रह्मरायमल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या २२, साइज ७ x ६ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या १२६, उक्त रचना गुटके में है । गुटके के ११६ से १६० तक के पृष्ठों में है । रचना संवत् १६१५, लिपि संवत् १६८६ ।

## मंगलाचरण—

स्वामी हो नेमीसर जिननाथ, चरण वंदे धरि मस्तक हांथ ।  
मन अरु वचन कायां थुणौ, सोभा जी सांवला वर्ण सरीर ॥ २ ॥

## अन्तिम पाठ—

अहो मूल संगि मुनि सरस्वति गच्छे, छोटि हो चार कषायनि निभछि ।  
अनंतकीर्ति गुरु वंदितै अहो तास तणौ सखी कीयो बख्साण ।  
राइमल ब्रह्म सो जाणियो, स्वामी हो पारसनाथ के आनि ॥ १ ॥

अहो सोलहसै पन्दरह रच्यौ रास, सांवालि तेरसि सावण मास ।  
 वार तेजी बुधवासर भलै, जैसि जी बुद्धि दिन्हौ अवकास ॥  
 पंडित कोइ जी मत हंसौ, अहौ तौसि जि बुधि कियो परमास ।  
 अहो बाग बाढी घणा, नीकौ हो ठाणि ।  
 वसै हो महाजन नगर भौणि पौणि छत्तीस लाला करे ।

#### ४०. पद्मनंदिपंचविशिका —

चयिता श्री जगतराय । भाषा हिन्दी ( पद्य ) । पत्र संख्या १३२, साइज १०॥ × ६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २७ । ३० अक्षर । रचना संवत् १७२२, लिपि सवत् १८१८

मंगलाचरण —

अमल कमल दल विपुल नयन भल—  
 सकल अचल बल उपसमधरि है ।  
 अखिल अवनितल अटल प्रबल जस  
 सुरपति नरपति स्तुति बहुकरि है ।  
 धृति मति पति धर सब जन सुलकर  
 कनक धरण तन सिद्धि बधु वरि है ।  
 वृषभ लखिन धर प्रगट तनय भर  
 अघ तिम रवि कर भव जल तरि है ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

पद्मनंदि पचवीसी सार, जगतराय भाखी सुविचार ।  
 उठो अधिको जे कबु होइ, मो अपराध खमहु कवि सोइ ।  
 पांती पंथ सुदेस सहर गुहानो जानिये ।  
 कबहीं न दुखको ले सुख वरतैं जहां सबदा ॥

दोहा

अग्रवाल है उमग्यानि,  
 माई दास श्रावक परसिद्ध,  
 नंदन दोइ भये तसु धीर,  
 सालिभद्र कलिथुग में एह,  
 उपगार आनी मन मांहि  
 पद्मनन्दि पचवीसी किद्ध,

सिघल गोत्र वसुधा विख्यात ।  
 उत्तम करणी कर जस लिद्ध ।  
 रामचंद नंदलाल सुवीर ।  
 भाग्यवंत सब गुण को गेह ।  
 जगतराय श्रावक उछांहि ।  
 भाषा बंध भई परसिद्ध ।

पदमनंदि की बांनि गंभीर,  
भाषा पढ़तैं न है खेद,  
सहर आंगरौ है सुख थान,  
धारौ वरन रहै सुख पाइ,  
संवत् सतरासे बाबीस,  
तिथि दशमी पुष्य मंगलवार,  
नवखंड में है जाकी आन,  
राज करै श्री अवरंग साहि,  
न भई भीति कछु ताके राज,  
निजमति के अनुसारे यह,

ताकौ अर्थ लहै कोइ धीर ।  
मूरख जन पुनि जानै भेद ।  
परतपि दोसै स्वगं विंमा ।  
तहां पहु शास्त्र रच्यौ सुखदाइ ।  
फागुण मासि सुविपक्ष जगीस ।  
ग्रन्थ समाप्त भयौ जयकार ।  
तेजवंत दीपै जिन भांन ।  
जाकैं नहीं किसी परवाहि ।  
धर्मी भविजन पढन कै काजि ।  
भाषा कीनी मन धरि कै नेह ।

॥ छप्पय ॥

पाठक अतिहि प्रवीन पुण्य हर्ष गणि दीपै ।

आगम युगति अनेक भेद करि वादी जीपै ।

कीनी भाषा एह जगतराय जिहि विधि भाषी ।

पंडित महामति मंत वीरदास जु है साषी ।

वाढे बहुविधि सकल पाप संताप हर ।

इहुं ग्रंथ संतनि कै सुनहु करौ वीनति जोरि कर ॥

चौपई—

सुजान सिध नंदलाल सुनंद, जगतराय सुत है टेकचंद ।

जौ लौ सागर ससि दिनकार तो लौ अविचल ए परिवार ॥

सोरठा—

अभय कुसल आनंद पदमनंदि पंचवीसि की ।

भाषा भई निरदंद सुनियो भविजन सर्वदा ॥

इति श्री जगतराय विरचितायां पदमनंदिपंचविशिकायां भाषा समाप्ता संवत् १८११ वर्षे मिति...

## ४१ पंचेन्द्रिय बोल

रचयिता कवि धेल्ह । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ७. साइज ७x७ इञ्च । पद्य संख्या ६. रचना संवत् १५८५. लिपि संवत् १६८८. पंचेन्द्रियों की बात चीत ।

प्रशस्ति—

कवि धेल्ह सुजन गुण ठावो,  
तौ बेलि सरस गुण गाया,

जगि प्रगट ठकुरसी नावो,  
चित चतुर मुख समझया ।

मुरिख मनि संकउ पाइ,  
नहुजपौ घणौ पसारो,  
संवत् पंद्रासैर पिच्यास्यो,  
इ पांच इंद्री वसि राखै,

तहि तणौ न चिति सुहाइ ।  
यौ एक वचन मै सारौ ।  
तेरसि सुदि कारिग मासे ।  
सो हरत परत सुख चाखै ।

### ४२ पंचास्तिक य भाषा,

भाषाकत्तो पांडे हेमराज । पत्र संख्या १४८. प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर । रचना संवत् १७३६. लिपि संवत् १७३६. विषय-सिद्धान्त ।

संवत् १७३६ वर्षे आपाढ सितपक्षस्य द्वादशीतिथौ गुरुवारे श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचायान्वये भट्टारक श्री चंद्रकोर्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री ५ जगत्कीर्ति जी तदाम्नाये अग्रवालांन्वये गोइल गोत्रे सा. धानू तस्य भार्या धनादे तयोः पुत्र सा. श्री रूपचंदजी तस्य भार्या तारादे तयोः पुत्र सा० श्री तेजन तस्य भार्या मथुरा ननू तयोः पुत्र सा० श्री रूपचंदजी तस्य भार्या माणकदे तयोः पुत्रो द्वौ प्रथमपुत्र सा० श्री चूडमलजी तस्य भार्या गंगा तयोः पुत्रारचत्तार प्रथम पुत्र चि० रणधोर द्वितीय पुत्र चि० मानसिंह तृतीय पुत्र चि० चतुर्भुज चतुर्थे पुत्र चि० जोधसिंह । द्वितीय पुत्र सा० श्री बनारसीदासजी तस्य भार्या कपूरं तयोः पुत्र चि० सिवदासजी एतेषां मध्ये सा० श्री बणारसीदासेनेमं पंचास्तिकाया-भिर्धं ग्रंथं लिखाप्य आचार्य श्री दयाभूषणजी तत् शिष्य पंडित हीरानंदाय दत्तं ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं । कामानगरमध्ये ।

### ४३ परमार्थ दोहा ।

रचयिता कवि रूपचंद । भषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ४. पद्य संख्या १००. सुन्दर २ पद्यों का संकलन है ।

मंगलाचरण—

अलखरूपचिद्रूप जोतिमय ज्ञान प्रकार

अंचल अवाधित अखय परम आतम सुभाष धर ।

निराकार अवगाह मैलगन मून गगन वत

अमल अनाकुल परम तेज वन सुद्ध सरवगत ।

सुखधाम अनादि अनंत अज जगत सिरोर्मान सिद्ध गन ।

मनघरि सरूप अनुभवनि पुन करहि वंदना भव्य जन ॥

अन्तिम पाठ—

रूपचंद सद्गुरुनि की जन वलिहारी जाइ ।



आपुन जे सिवपुर गये, भव्यनि पंथ दिखाइ ॥

४४. प्रद्युम्न प्रबंध ।

रचयिता भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ३७, साइज १०।।x४।। इच्छ ।  
प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर । रचना संवत् १७२२. विषय—जीवन चरित्र ।

मंगलाचरण—

सकल भव्य सुख नेमि जिनेश्वर पाय ।

यदुकुल कमल दिवसपति प्रणमुं तेह ना पाय ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

श्री मूलसंघ मुक्तमणि श्री सकल कीर्ति गुरु पायरे ।

भुवनकीर्ति तेह निपाटि, बहु भूपति पूजित पायरे ॥ १ ॥

तास पटांवर दिनमणीह वा ज्ञान भूषण भवतार रे ।

विजयकीर्ति तस पटधारी, प्रगट्या पूरण सुखकार रे ॥ २ ॥

तेह यह कुमुद पूरण सखी, शुभवन्द भवतार रे ।

न्याय प्रमाण प्रचंड थी गुरुवादी जल दशमीर रे ॥ ३ ॥

तस पटोवर प्रगटीया श्री सुमतिकीर्ति जयकार रे ।

तस पट धारक भट्टारक, गुणकीर्ति गुणगण धार रे ॥ ४ ॥

तेह तणि पारि प्रसिद्ध धणी श्रीयवादि भूषण सूरी संत रे ।

रामकीर्ति तेहनि पाटि, प्रगट्यो गुरु विद्यावंत रे ॥ ५ ॥

तस पट धारी पूरण मतो श्री पद्मनंदी सूरीस रे ।

विद्यावाद विनोदथी जेहि नामि नरवर शीस रे ॥ ६ ॥

तस पट कमल कमल वंधु, श्री देवेन्द्रकीर्ति गच्छ ईशरे ।

प्रद्युम्न प्रबंध रच्यो तिणि भवियण भणयो निश दिश रे ॥ ७ ॥

संवत् सत्तर बाबोसि सुदि चैत्र तोज बुधवार रे ।

महेश्वर मांहि रचना रचि, रहि चंद्रनाथ गृहद्वार रे ॥ ८ ॥

सूरत वासी संघपती चेर्माजि सूरजि दातार रे ।

तेह आप्रह थी प्रद्युम्न नो ए प्रबंध रच्यो मनोहार रे ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

मनोहार प्रबंध ए गुंथ्यो करि विवेक ।

प्रद्युम्न गुण सूत्रिकरी, सब वन कुसूम अनेक ॥ १० ॥

भवीयण गुणि कौंठ करो, एह अपूरव हार  
घरि मंगललक्ष्मीघणो, पुण्यतणो नहिं पार ॥  
भणि भणावि सांभलि, लिख लिखावइ एह ।  
देवेंद्रकीर्त्ति गच्छपतीकहि, स्वर्गमुक्ति लहि तेह ॥  
इति श्री प्रद्युम्नप्रबन्ध संपूर्णः ।

#### ४५. प्रवचमार भाषा —

भाषाकार श्री जोधराज गोदीका । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ७२. साइज १०॥४॥ इञ्च ।  
प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३-३६ अक्षर । प्रति नवीन है । विषय-सिद्धान्त । लिपि  
संवत् १८४६ । रचना संवत् १७२६ ।

#### प्रारम्भिक मंगलाचरण—

परम उद्योति परमात्मा नमौ सुद्ध परवान ।  
एक अनूपम जोध कहि सिव दायक सुखधान ॥

#### प्रशस्ति—

कुंदकुंद मुनिराज वृत्त,  
अब कवि कौ व्यवहरन कहौ,  
मूल ग्रंथ करता भये,  
तिन प्राकृत गाथा करी,  
तिन ऊपर टीका करी,  
सहसकृत अति ही सुगम,  
ता टीका कौ देखि कै,  
करी बचनिका अति सुगम,  
देख बचनिका हरषियौ,  
तब मन में इह धारिकै,  
सत्रह सौ छवीस सुभ,  
अरु भादों सुदि पंचमी,  
सुनय धरम हि सुख करन,  
मान वंस जयस्यंघ सुव,  
ताकै राज सु चैन सौ,  
संगानेरि सुधान में,

पूरन भयौ वखान ।  
सुनहु भविक धरि कान ॥  
कुंदकुंद मुनिराज ।  
प्रथम महा सुख पाय ॥  
अमृतचन्द्र सुख रूप ।  
पंडित पूज्य अनूप ॥  
हेमराज सुखधाम ।  
तत्त्व शीपिका नाम ॥  
जोधराज कविनाम ।  
कीये कवित सुखधाम ॥  
विक्रम साक प्रमान ।  
पूरन ग्रंथ वखान ॥  
सब भूपनिसिर भूप ।  
रामस्यंघ सुख रूप ॥  
कीयो ग्रंथ यह जोध ।  
हिरदै धारि सुबोध ।

जो कहूँ मेरी चूक हूँ;  
वरण छंद कौं देखि कै,  
यहां मिश्र हरिनाभजी,  
ताकी संगति जो करी,

लीज्यौ संत सुधारि ।  
गुण औगुण सुविचारि ॥  
रहौ सदा सुखरूप ।  
पायो काव्य सरूप ॥

सवैया—

कोई देवी खेतपाल वीद्यासनिमान्त है,  
केई सती पित्र सीतलां सों कहै मेरा है ।  
कोई कहै सावलौ कवीर पद कोई गावै,  
केई दादू पंथी होय परे-मोह घेरा है ।  
कोई ख्वाजै परमान कोई पंथी नानिग के,  
केई कहै महाबाहु महारुद्र चेरा है ।  
यांही बारा पंथ में भरमि रह्यौ सबै लोक,  
कहै जोष अहो जिन तेरापंथी तेरा है ।

x x x x x x

इति श्री प्रवचनसार सिद्धान्ते जोधराज गोदीका विरचिते कवि वरुण नाम द्वादश प्रभाव ।  
संवत् १८४६ का कार्तिक सुदी १२ शुक्रवार सवाई जयपुर में लिख्यौ असल महाराजाधिराज श्री सवाई  
प्रतापसिंहजी का में पुस्तक जोधराज गोदीका की है संवत् १७२६ कौ लिख्यौ तीसु लिखी पुस्तक जीवण-  
राम गोधा रैणी का को । लिखत कन्होराम बाकलीवाल संपतरामगोधा ।

४६. प्रवचनसार ।

भाषा प्राकृत संस्कृत-हिन्दी १ ( गद्य ) । पत्र संख्या ४४, साइन १२×४॥ इन्द्र । प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पंक्तियां  
तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर । लिपि संवत् १७२७, प्रस्तुत ग्रंथ में प्राकृत और संस्कृत मूल ही दिया  
हुआ है । हिन्दी में प्रत्येक गाथा में वर्णित विषय का संकेत दिया गया है । इसके अतिरिक्त हिन्दी में फुटकर  
टीका भी दी हुई है । भाषा परिसर्जित है ।

भाषा का प्रारम्भ—

आगै श्री कुन्दकुन्दाचार्य प्रथम- हो आरंभ विषै मंगलाचरण निमित्त नमस्कार करै है । .....  
..... । आगै आत्मा के शुभ अशुभ शुद्ध औ से तीन भावनि की ठीकता करै है ।

फुटकर टीका की भाषा—

स्निग्ध रुक् गुणविषै अनन्त अंश भेद है । एक परमाणु-दूजे परमाणु सौं तब वंघे जब दोइ अंश  
अधिक स्निग्ध अथवा रुक् गुण का परिणाम होइ .....

संवत् १७२७ वर्षे अपाढ मासे शुक्लपक्षे नवम्यां गुरुवासरे रामपुरे श्री जिनचैत्यालये लिखापितं  
प० विहारीदास आत्मपठनार्थे । लिखितं ब्राह्मण दीननाथेन ।

४७. प्रद्युम्नरासो ।

रचयिता श्री ब्रह्म रायमल्ल । भाषा हिन्दी-पद्य । पत्र संख्या १८ साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ  
पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५×३८ अक्षर । रचना संवत् १६२८ लिपि संवत् १८२०.

मंगलाचरण—

हो तीर्थकर वंदू जगनाथ ।

तोह सुमंगल मनि होइ उछाह तो हुवा छै अरु होय जी सी ॥

तिह कारण रहै घट पूरि गुण छीयालीस सोभै भला जी ।

दोप अठारह किया दूरतो रास भणो परद्यमन को जी ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

हो मूलसंघ मुनि प्रगटे लोय, अनंतकीर्ति जाणै सह कोय ।

तास तणो सिष्य जाण्यो जी, हो रायमल ब्रह्म मुनि कियो बखान ॥

बुधि थोड़ी जाणू नहीं जी, तिहि दीठो हरिवंशपुराण तो ॥ १ ॥

हो सोलासै अठवीस विचारो, भादवा सुदो दुतिय बुधवारो ।

गढ हरसोर महा भलो जी, तिह में भला जिनेसुर थान ।

आवक लोक बसै भला जी, देव शास्त्र गुरु राखे मान तो ॥ २ ॥

४८. पार्श्वनाथ चौपई ।

रचयिता श्री आचार्य महेन्द्रकीर्ति । भाषा हिन्दी ( पद्य ) पत्र संख्या १७. साइज १२×५ इञ्च ।  
प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर । पद्य संख्या २६८. रचना संवत् १७३४.  
लिपि संवत् १७६३.

मंगलाचरण—

प्रथम वंदि पार्श्वजिनदेव, तीनि जगत जाकी करे सेव ।

रिद्धि सिद्धि वर सुखदातार, बाल पण्यौ जीत्यो जिहि मार ॥

प्रशस्ति—

संवत् सत्तरासै चौतीस, कार्तिक शुक्ल पक्ष शुभ दीस ।

नौरंग तपै दिली मुलतान, सबै नृप अति बहै सिरि आण ॥

नागर चाल देस शुभ ठाम, नगर वणहटो उत्तम धाम ।

सब श्रावक पूजें जिनधर्म, करें भक्ति पावै बहु शम्भ ॥  
 कर्मक्षय कारणशुभहेत पार्श्वनाथ चौपई समेत ।  
 पढित लाखो लाख समान सेवौ धर्म लहौ सुख थान ॥

भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिजी का शिष्य पांडे दयाराम नरायण का वासी जाति सोनी । भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्ति का राजपट विषै दिल्ली का जैसिहपुरा का देहुरा में पार्श्वनाथ चौपई लिखी ।

### ४६. पार्श्वनाथपुराण ।

रचयिता श्री भूधरदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ६१. साइज १०।।x४।। इञ्च । रचना संवत् १७८६. रचना प्रकाशित हो चुकी है ।

मंगलाचरण—

मोह महातम दलिनदिन तलदमी भरतार ।  
 ते पारस परमेस मुक्त होहु सुमति दातार ॥

अन्तिम पाठ—

प्रभु चरित्र मिस किमपि यह कीनो जिन गुन गांन ।  
 श्री पारस परमेस कौ पूरन भयौ पुरान ॥  
 पूरव चरित त्रिलोक कै भूधर बुधि समान ।  
 भाषा बंध प्रबंध यह कियौ आगरै थान ॥

x x x x x

दोहा—

संवत सत्रैसै समै और निवासी लीन ।  
 सुदि अषाढ तिथ पंचमी, ग्रंथ समापित कीन ॥

इति पार्श्वनाथपुराण की भाषा संपूर्ण । लिखावितं साहजी श्री चैनरामजी ठोल्या सवाई माधोपुर मध्ये । महाराजाधिराज श्री सवाई जगतसिंहजी विजयराज्ये लिपीकृत जती अमरचन्द्रेण वासी कोटा का ।

### ५०. पोसहरास ।

रचयिता भट्टारक श्री ज्ञानभूषण । भाषा हिन्दी ( पद्य ) पद्य संख्या ११५.

मंगलाचरण—

सरसार्त चरण युगल प्रणमी सहि गुरु आणू ।  
 वार वरत महि साह वरत पोसहवरे काणू ॥ १ ॥  
 आठमि चउदसि नीम सहित नित पोस लीजे ।  
 उत्तम मध्यम अधम भेदि त्रिहुं विधि जाणी जे ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

चारि रमाण्य मुगति जन्म अनुप सुख अनुभवइ ।  
भवसकारि पुनरपि न आवइ, इहक फल जस गमइ ॥  
ते नर पोसइ कांन भावइ, एणि परि पोसइ धरइ ।  
जे नर नारि सुजण गुरु रम भएइ ते करउ वखाण ॥ २ ॥

५१. बनारसी विलास ।

रचयिता महाकवि बनारसीदास । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ६६. साइज ११।।x५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३७-४० अक्षर । रचना संवत् १७७१. लिपि संवत् १८२१.

मंगलाचरण—

परमदेव परनाम करि गुरकों करूं प्रणाम ।  
बुद्धि बल वरनों ब्रह्म के सहस्र अठोतर नाम ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

गुरु उपदेस सहज उदयागत मोह बिलकलता छूटे ।  
कहत बनारसि होइ करुना मय अचल अपैनिधि छूटै ॥  
नगर आगरे में अगरवाल आगरो  
गरगगोत आगरे में नागर नवलसा ।  
संघ ही प्रसिध अभिराज राज माननीक  
पंचवाल नलना में भयो द्वै कवलसा ।  
ताके प्रसिद्ध लघु मोहनदेसधइनि,  
जाके जिनमारग विराजित धवलसा ।  
ताहि को सपूत जगजीव सुदिठ जैन,  
बनारसी बेंन जाके हिए में सबलसा ॥ १ ॥  
समें जोग पाइ जग जीवन विख्यात भयो,  
ज्ञान की मंडली में जिसको विकास है ।  
तिन तैं विचार कीनां नाटक बनारसी का  
आपछे निहारवे को आरसी प्रकास है ।  
और काविधनी खरी करी है बनारसी नैं  
सो भी एक क्रम सेती कीजै ज्ञान भास है ।

असौ जानि एऊ ठौर भीनी सब भाषा जोरि  
ताको नाम धरयो यो बनारसी बिलास है ।

॥ दोहा ॥

सत्रहसैं एकोत्तरे समैं चैत सित पाख ।  
दुआसौं पूरन भई इह बनरसी भाष ॥ १ ॥

संवत् १८२१ मिति फागुण सुदी ५ आदित्यवार लिखापितं पंडित जोधराज जी वृंदावती मध्ये ।  
साह शंभूराम दाकलीवाल आंवांका लिपि कृतं ।

५२. वाशिठिया बोलरो स्तवन ।

रचयिता मुनि श्री कान्तिसार । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १४. साइज ८x३॥ इच्छ । प्रत्येक  
पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६-३० अक्षर । रचना संवत् १७८३. विषय-सिद्धान्त

संगलाचरण—

श्री गुरुवचनलही करी आगम नैं अणुसार ।  
बोल वाशिठिया मार्गनो, द्वार तणो सुविचार ॥  
वासठि बोल कहा जिनैं, वन ते जिन चौबीस ।  
ते माहैं वाशिठिया बोलत वन पभणीस ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

|                              |                              |
|------------------------------|------------------------------|
| संवत् सतरैं त्रयाशिया वरसैं, | नगर चंदयपुर माहि रे ।        |
| नर नारि समन्तावण हेतैं       | एह वन करयो उछाहि रे ।        |
| तपगच्छ माहि सुर शिरौमणि      | श्री विजयक्षमा सुहिरायो रे । |
| गुणवंता जयवंता वर तो         | जस अनैतेज जस बायो रे ।       |
| कान्तिसागर पंडित सुपसाया     | जसवंत सागराय रे ।            |

इम घुणयो जिनवर सयल सुखकर तीर्थकर जोवीस ए ।  
वासठि बोलैं अमिय तोलैं जे कहा जगदीस ए ।  
जसवंत सागर सुजस आगर, जिनैद्रसागर शिष्य ए ।  
नवनिधि होयैं संघ नैं घर दिएं इम आसिस ए ॥

इति श्री वाशिठिया बोलरो स्तवनं संपूर्ण । मुनि मोहनविजय वाचनार्थ ।

### ५३. भरतबाहुबलि छंद ।

रचयिता श्री कुमुदचन्द्र । भाषा हिन्दी ( पद्य ) । पत्र संख्या ६. गुटके नं० ५३ के ४० वें पृष्ठ से ४८ तक । प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २५-२८ अक्षर । रचना संवत् १६०७.

मंगलाचरण—

पणविवि पद आदीश्वर केरा,  
ब्रह्म सुता समरु मति दांती,  
वंदवि गुरु विद्यानंद सूरि,  
तस यह कमल दिवाकर जाणुं,  
तस पट्टे पट्टोघर पंडित,  
अभय चंद्र गुरु शीतल दायक,  
अभयनंदि समरु मनमांहि,  
तेह तणि पट्टे गुणभूषण,  
भरत महीपति कृत मही रक्षण,

जेइ नामें छुटें भव फेरा ।  
गुण गण मंडित जग विख्याता ॥  
जेह नी कीर्ति रही भर पुरी ।  
मल्लि भूषण गुरुगण बलाणु ॥ २ ॥  
लक्ष्मीचन्द्र महाजश मंडित  
सेहेर वंश-मंडन सुख दायक ॥ ३ ॥  
भव भूला बल गाडे बांदि ।  
चंदान्न रत्नकारति गत हूषण ।  
बाहुबलि बलवंत विचक्षण ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

सवत् सोलसमें सत सहैं,  
कविधर वारैं घोषानयरैं,  
अष्टमं जिनवर ने प्रासादे,  
रत्नकीरति पदवी गुण पूरे,

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष तिथि छहैं ।  
अति उत्तम मनोहर सुधरैं ॥  
सांभलीये जिन गान सुसादैं ।  
रचियो छंद कुमुद शशि सूरै ॥

॥ कलश ॥

एकैक विकट कठोर रोरगिरि भंजन सपवि,

विहृत कोह संदोह मोह तम उचहरण रति ।

विजित रूप रति भूप चारु गुण कूप वनुत कवि,

धनुष पांच से पंचवीश वर उच्च तनु छवि ॥

संसार सखिपति पार गत विबुध वंद वंदित चरण ।

कहे कुमुद चन्द्र भुज बली, जयो सकल संघ मंगल करण ॥ १ ॥

### ५४. भविष्यदत्त कथा ।

रचयिता कविवर ब्रह्म रायमल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ६७. साइज ७x६ इंच । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में १८-२१ अक्षर । रचना संवत् १६३३. तिथि संवत् १६६०.



मंगलाचरण—

स्वामी चन्द्रप्रभ जिण्णाथ, नमौ चरणधारि मस्तकि हाथ ।  
लंछिन चण्यौ चंद्र माता सु, काथा उज्जन अधिक उजासु ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

मूल संघ शारद शुभ गच्छि, छोडी चार कषाय निरभच्छि ।  
अनंत कीर्ति मुनि गुणह निधान, ता सुत नै सिख कीयो बखाण ॥

ब्रह्म रायजल थोड बुधि,  
जैसी मति दीनै औकास,

जो इह कथा सुणे दे कान,  
सोलह सै तेंतोसा सार,  
स्वाति नक्षत्र सिद्धि शुभजोग,  
देस दूँढाहड सोभा घणी,  
निमल तले नदी बहु फिरै,  
चहुँ दिशि बाण्या भला बजार,  
भवन उत्तुंग जिनेश्वर तणा,  
राजा राजै भगवतदास,  
परजा लोग सुखी सुख बसैं,  
प्रावक लोग बसै धनवंत,  
उपराउ परी बैरन कास,  
मंगल श्री अरहंत जिणि,  
मंगल पढइ कई बखाण,

अखिरपद की न लहै सुधि ।  
व्रत पचमी को कीयो परकाश ॥  
केवल पाइ तहिने फुरै ।  
काल लहिबपहुचै निरवान ।  
कातिग सुदी चौदसि सनिवार ।  
पंढा ख न व्यापै रोग ।  
पुजै तहां आल मण तणी ।  
सुख स बमै बहु सांगानेर ।  
भरे पटोला मोती हार ।  
सोभै चंदवा तोरण घणा ।  
राजकंवर सेवहि बहु तास ।  
दुखी दलिद्री पुरवै आस ।  
पुजा करहि जयहि अरहंत ।  
जिहि अहिमिदं सुगें सुख वास ॥  
मंगल अनंतकीर्ति मुणिंद ।  
मंगल ब्रह्म राइमल सुजाण ॥

दूसरी प्रति का भिन्न पाठ—

अक्षर मात जु भूलौ होय,  
अति अयाण मति थोडी भई,  
बारबार नवि भणै पसार,  
जो नर जीव दया को पाल,

पंडित जन सहु खमिज्यो माहि ।  
कथा पंचमी व्रत की कही ॥  
जामैं जीव दया व्रतसार ।  
रोग सोगा न व्यापै काल ॥

संवत् १६६० वर्षे भादवा बुदी १ शुक्रवारे पोथी लिखी सा० जंता पाटणी दानुकाकी लिखी आगरा  
मध्ये साहिबीजहां की हवेलों श्री जलाखांकोरची की मध्ये वास जैता पाटणी ।

५५. भक्तामरस्तोत्र भाषा ।

रचयिता श्री नथमल विलाला और श्री लालचन्द । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ७१. साइज १०x४।। इच्छ । रचना संवत् १८२६. लिपि संवत् १८५३.

मंगलाचरण—

करम सधन वन दहन अग्नि कन तपत कनक तन दुति रत्रि करसी,  
परम धरम मग परमत तम खग नमत सकल जग लखि सिव दरसी ।  
प्रवल मदन अरि निज बल वसि करि वसु मद हरि करि सिव तिय परसी,  
समवसरन बल सहित अतुल बल रिषभ सुजिन नम मन वच सिरसी ॥

प्रशस्ति—

यह भाषा रचना करो नथमल निज पर हेत ।  
पढ़ै सुनै जे नर सदा ताहि अखै सुखदेत ॥ १ ॥  
हं बड वसं मफार बनि क पृथिवी सुनामधर,  
सीलवती गुनबाम तास चंपासु नारिधर ।  
जिनवरणां वुज भवर तुल्य ताकै सुत सोहै,  
रायमल्ल गुनगोह व्रती देखत मन मोहै ॥ १ ॥  
श्री वादिचन्द्र मुनिराज के प्रनमि चरन जुग जोरि कर ।  
कीनी कथा इसतवन की पढत सुनत सुख होय ॥ २ ॥  
संवत् सोलहसै परधान तापै सरसठ वरष प्रमान ।  
मास अपाढ स्वेन पख सार, तिथ पांचै जानौ बुधवार ॥ ३ ॥  
सिधु नदी के तट विपै ग्रीवापुर अभिराम ।  
तुंग कोट जुत रहै लसै ससि प्रभ जिनकौ वाम ॥ ४ ॥  
ब्रह्म कमंसी बचन तैं रायमल्ल ब्रह्मचार ।  
भगतामर की कथा वर वरनी मति अनुसार ॥ ५ ॥  
जिहि विधि भाषा रचना भई, सो अब कथन सुनौ चित दई ।  
कारन विन कारज नहि होय, सो अब कथन सुनौ बुध लोय ॥  
नगर आगरे माहि बसै जैसिहं पूननीकौ,  
तहां जेठमल साह भगत सोभै जिनजी कौ ।  
तासु तनुज गुणवंत संतं जुग कुल सुख दायक,  
जेठो सोभाचंद चंद गोकुल लघु लायक ॥

खंडेलवाल वर वंस मैं  
 अन्नोदक कारत पायकैं  
 मंदन सोभाचन्द कौ  
 छंद कोस पिंगल तनों  
 अन्नोदक के जोग तैं  
 सुख सौ तहं निवसत भयो  
 छाहीं मिल्यो कारज भली  
 मगर करौली सौ जहां  
 सकल कला में निपुन अति  
 नथमल के ऊपर सदा  
 भगतामर जी की कथा  
 बांधी तक सुनि कै भयो  
 सुनि नथमल वचन कौ  
 मूल ग्रंथ अति कठिन है  
 लालचन्द सौ तब कही  
 जौ याकी भाषा बने  
 जौ लग रचिये छंद कौ  
 जो लौहें सुभ ध्यान की  
 निज पर हैत विचार कै  
 दोऊ मिलि भाषा रची  
 संवत् अष्टादश सत जानै  
 जेठ सुकल दशमी बुधवार  
 परमदेव इस जगत में  
 जैवंतो वरतौ सदा  
 भवजलतारनहार  
 देयासिंधु जग तात  
 सुखदाई संसार में  
 नथमल लाल सुन मात है

गोत विलाला जग विदित ।  
 वसै भरतपुर में सुखित ॥  
 नथमल निपट अयान ।  
 ग्यान अंस नहि जान ॥  
 सो हीरापुर आय ।  
 कछु इक काल गमाय ॥  
 पुन्य तनै परमाय ।  
 पंडित लाल सु आय ॥  
 कविता करत असेस ।  
 करत सनेह विशेष ॥  
 तिन जिन भवत समार ।  
 सो मन हरष अपार ॥  
 उर में कियो विचार ।  
 पंडित करै उचार ॥  
 नथमल हर्षित होय ।  
 सो समझै सब कोय ॥  
 अर्थ बरत सुजिहार ।  
 प्राप्ति सुख दातार ॥  
 नथमल लाल विशेष ।  
 रायमल्ल कृत देख ॥  
 तापै पुनि उत्तीस प्रवान ।  
 पूरत कथा कुरी सुखिकार ॥  
 आदि विषय अवतार ।  
 भवजल तारनहार ॥  
 कर्मभूविधि दरसाई ।  
 सकल जीवन सुखदाई ॥  
 कश्चिन एक जिन को धरम ।  
 देहु भगति अपनी परम ॥

इति श्री भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र काव्यछंद कथा संपूर्ण । मिति भाई सुबी १४ शुक्रवार संवत्  
 ३ का पूरी लिखी करोसीदास ।

### ५६. मृगावती चरित्र ।

रचयिता श्री समयसुन्दर गणि । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ३०. साइज ६।।४।। इंच । रचना संवत् १६६८. लिपि संवत् १६८७. प्रति जीणें दो चुकी है । जगह २ उसके अक्षर मिट गये हैं ।

प्रशस्ति—

श्री खरतरगच्छ कमलदिगंदा  
प्रथम शिष्य श्री पूज्याकरी,  
तसु प्रसाद किया ग्रंथ पूरा,  
सोलहसह अठसठा वर्षइ,  
मृगावती चरित्र कछो तिहुं खंडे,  
मोहण बेल चउपई सुणतां,  
समयसुंदर घइ संघ आसीस,

युगप्रधान जिनचंदा बे ।  
सकलचन्द्र गुरु मेरा बे ।  
प्रगट्या सुजसपइ राखे ।  
दुई चउपई घणे हरणइ बे ।  
घणे आणंद घामंडइवे ।  
अणतां नइ बलि गुणतांवे ।  
रिद्धि धृद्धि सुजगोसावे ।

संवत् १६८७ कार्तिक सुदी ५ शनिदिने श्री मालपुरा मध्ये श्री खरतरगच्छे वा० श्री गुणरंगगणि शिष्य पं० श्री रत्ननंदिगणि शिष्य मुख्य पं० सुमतिसेन गणिना लिखितं ।

### ५७. माधवानल चौपई ।

रचयिता श्री कुसललाभ गणि । भाषा—हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ४१. साइज ७५७ इंच । पद्य संख्या ५५१. रचना संवत् १६१६ लिपि संवत् १६६०. लिपि कर्ता श्री जौता पाटणी ।

मंगलाचरण—

देवी सरसति देवी सरसति, कासमीर कमलावती ।  
ब्रह्मपुत्र कर बीण सोलहइ, मोहन तरं वर मंजरी ॥

प्रशस्ति—

संवत सोल सोलोनरइ,  
फागुण सुदि तेरसि दिवसि,  
गाथा दूहा चउपई,  
काम कंदला कामिनी,  
कुसल लाभ वाचक कहइ,  
जे वाचइ जे सांभलइ,  
गाथा साढी पंचसइ,  
तेह सुणता सुख दीयइ,

जैसलमेर भंझारि ।  
विरचि आदित्यवारि ॥  
कवित कथा संबंध ।  
माधवानल संबंध ।  
खरस चरित्र सुपसिध ।  
सौया मिलइ नवनिधि ।  
ऐ चउपई प्रमाण ।  
जे दुई चतुर सुजाण ।

रावल मालि सुपाट धरि,  
विरचिपह सिणगारसि,

कुंवर श्री हरिराज ।  
तास कतुहल काज ।

५८. मिथ्या दुकड ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा हिन्दी । पद्य संख्या २३. लिपि संवत् १७६२.

मंगलाचरण—

आदि जिणोसर भुवि परमेसर सयल दुख विणासणो ।  
भुवि कमज दिणोसर मोह तिमर हर तत्त पदारथ भासणो ॥ १ ॥  
हूँ विनती करुं हवैं आपणीय ।  
तूँ त्रिभूवन स्वामी सुणि धणीय ॥  
जे पाप करया ते कहूँ अनुक्त ।  
ते मिथ्या दुकड होउ नमक्त ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

जिनवर स्वामी सुगति हिं गामी सिद्धि नयर मंडणो ।  
भव बंधण खोणो समर सलीणो, ब्रह्म जिनदास पाय वंदणो ॥ १ ॥

५९. यशोधरचरित्र ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या २५. साइज १०।।x४।।  
इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर । लिपि संवत् १८२६. पंडित रूपचंदजी  
के पढ़ने के लिये ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गयी ।

मंगलाचरण—

मुनिसुव्रत जिन मुनिसुव्रत जी नतवुं ते सार ।  
तीथकर जे बीसमुं वांछित बहु दान दातार ॥  
सारदा स्वामिणि बलीस्तवुं, जिमिबुद्धि सार हुं वेगी मागुं ।  
गणधर स्वामिनमस्कुरुं, बली सकलकीरति गुरु भवतार ॥  
तास चरण प्रणमीनैं, करैं सुरासुर सार ॥

अन्तिम पाठ—

राय यसोधर २ तणुं जे रास जीवदयानुं पीहर ।  
पाप मिथ्यात निकवसार, रागमोह विहंडणुं ॥  
गुणहतणुं भंडार सुणिइं, जेनर अनुदिन भणैं  
हिय मैं धरी बहुभाव, ब्रह्म जिणदास इम परिभणैं  
तेहनें शिवपुरे डाम ॥

इति श्री ब्रह्म जिनदास विरचिते श्री यशोधरस्वामीरास संपूर्णः । संवत् १८२६ वर्षे आषाढमासे  
कृष्णपक्षे नवम्यां तिथौ रविवासरे पंडित रूपचन्दजी तस्य वाचनार्थे उदयपुरवरे ।

६०. यशोधरचरित्र ।

रचयिता श्री लक्ष्मीदास । भाषा हिन्दी ( पद्य ) पत्र संख्या ४६. साइज ११x५ इञ्च । रचना संवत्  
१७८१. लिपि संवत् १८०१.

प्रारम्भिक मंगलाचरण—

आदि जिनंद नमूँ सदा  
सोभै महिमा अनंत जुत

त्रिजगत गुरु जिनराय ।  
धर्म राज पति थाय ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

राव यशोधर, की कथा  
भवि सु'ण्यौ इसकूँ सदा  
जीव दया के कारणै  
मेरी बुधि भाफिक इहां,  
जे सुणिसी इसकूँ सदा  
ते जग के सुख पायकै  
अक्खर जो चूक्यौ जु हौं  
धुत की विधि जाणू नहीं,  
राजा जयहि राजई,  
तेज प्रताप घणूँ यथा  
सांगेनेरि सुधान में  
भट्टारक देवेन्द्र कीरति,  
पंडित लिखिमोदासजी  
गहिस्य सकलकीरति महा  
पद्मनाभ काईच्छ को  
लीन्हू है इस ग्रन्थ में  
पूरण कोन्हौ भाव सों,  
लागत है सदा,  
दया कारणै पावसों  
राव यशोधर ता बिना

ओसी विधि भाषी ।  
सब थिर चित राखो ॥  
चरित्र सु कीन्हू ।  
अखियर सुभ लीन्हू ॥  
मन बच सुध काई ।  
पीछे शिव जाई ॥  
बुध सुध करि लीज्ये ।  
फोर रोस न कोज्यो ॥  
विस्तसिध को नंदौ ।  
मध्यांन दिनदौ ॥  
मूलनार्हक आनौ ।  
को जहि आनो ॥  
तिन करि कीन्हू ।  
मुनिवर को लीन्हू ॥  
कछु इक अनुसारी ।  
भविगण सुखकारो ॥  
रामैं सुभ बेरा घारो ।  
भवि जीवन केशं ॥  
निति सुणि जे भाई ।  
नांना गति पाई ॥

दिल्ली साहर विषे भलो  
घमे संथान समानथा  
सुन्दर नंद खुस्यालए  
भव्य धरौ निज चित्त में,  
संवत संतरासै भलो  
जे पढिसी सुणिसी सदा,  
कातिक षष्ठी भावती,  
भव्य जीव सुणि जे पछे,  
जैन धर्म परभाव सौ  
तातैं घम सुवारिहैं

जेसिहपुरे जानुं ।  
अनि थानन मानूं ॥  
रचना ठहरानी ।  
भगवन की बांनी ॥  
अरु और इक्यासी ।  
ते ही सुख पासी ॥  
ससि कै रजियारै ।  
वै ही विसंतरै ॥  
संबही सुख होई ।  
तौ ता सम कोई ॥

अथ शुभ संवत्सरेस्मिन् श्रीमन्मृपति विक्रमादित्यराज्यात् संवत् १८०१ का वर्षे शाके १६६४ प्रवर्ष-  
माने कार्तिक मासे कृष्णपक्षे नवम्यां वृहस्पतिवासरे असलेखा नक्षत्रे जिहानाबादस्थ जेसिहपुरामध्ये श्री  
महावीर चैत्यालये पातिसाह श्री महम्मदसाह विजयछत्रे महाराजाविराज श्री सवाई ईसरीसिंहजी राज्ये श्री  
मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक जी श्री १०८ श्री देवेन्द्रकीर्तिजी  
तत्पद्वे भट्टारक श्री १०८ श्री महेंद्रकीर्तिजी तदाम्नाये आचार्यजी श्री नेमीचन्द्र तत् शिष्य पंडित श्री रूपचंदजी  
तत् शिष्य पंडित दयारामेण इदं पुस्तकं हस्तेन लिखितं ।

६१. यशोधर चौपई बंध कथा ।

मूलकर्ता कायस्थ श्री पद्मनाभ । भाषाकर्ता साह लोहट । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १३३.  
साइज ६×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २३-२४ अक्षर । रचना संवत् १७२१ लिखि  
संवत् १८०३.

मंगलाचरण—

तीथेकर जिनै वीसमौ मन मनसुत्रत बदि ।  
ता समया की या कथा हिरदै धरि आनंद ॥

प्रशस्ति—

बीव नंधर खैराडे महंत,  
तामै गढ बूंदी सुभ थान,  
महाराज राजा सिरताज,  
राव रतन गुन रतन समान,

हाडोती वर देस कहतैं ।  
इंद्रपुरी सम सोभैं आन ॥  
पातिसाही थांमनदेधिपाज ।  
..... सुरभान ।

दया सील सागर ध्रुममेर,  
तिनकी मंहिमा कहीं न जाय,  
तिन सुत त्रिलोक समान,  
जिनकै देस सुत भुंदिगयाल,  
निवलेराम ध्यपण समेरथ,  
पतिसाही पतिभखणहार,  
राजनीति निति पालनहार,  
चाँदा विद्या ज्ञान प्रबान,  
जिन लखि बैरी धीरन धरै,  
तास तखत बर घखत बिलंद.

अरि धरि जित काँय जुग जेर ।  
चहुवान मुकट मनिराय ।  
गोपीनाथ बड़े प्रभ नाने ।  
सत्र सकल धो धरि अरि काल ।  
सबल उथ पणहार सुहृथ ।  
हींदुव भम आगल भुज भार ।  
विक्रम भोजराज अवतार ।  
सुरवीर दातां गुर कीन ।  
देसुं दिसां नृप सेवां करै ।  
भोवैस्यं प्रतपै जियमंद ।

॥ कवित्त ॥

मेर अचल ध्रुव अचल अचल सूर्यतिराज घर,  
तेज पुंज रवि ते मन पहुपौ हमो प्रसिध पर ।  
गुण गंभीर वरवीर धीर सागर रत्नगर,  
रतन वंस अवतंस अस सत्र सल सुत नागर ॥

श्री भागस्यं व हिंदवानपति  
संभरि नरेस राजें तखंत  
मही अडोल मेर सम राव,  
चढ़ सूर धर सेष महेस,  
घर घर बुधिं वधाहोई,  
तिनकै राज सुखी सब लोग,  
चाग वावड़ी महल अपार,  
चवार तलावै चहुं दिसि कुंड  
कौ लग सोभा कहुं अगार,  
अन धन कपडौ चीर कपुर,  
सिंहर धंध देवल धुंज सीस,  
इन्द्र पुरी तैं अधिक अपार.

छत्र तिलक सुभंसिरधरधौ ।  
वखत दसुं दिसैं धरंधो ॥ ८ ॥  
दिन दिन वधी चौगनी आव ।  
तौ लग राज भोगबो देस ॥ ९ ॥  
कान पड्यौ नविसुन जे कोई ।  
जानै पान फूल रस भोग ॥ १० ॥  
मैंडी छाजा नाली सार ।  
है दुरग विचि वसै सईस ॥ ११ ॥  
गली गली सौभे वाजार ।  
अरि वैचै ले मौलि जरूर ॥ १२ ॥  
हौलि बुलावै लखि सुर ईस ।  
बूंदी गढ देखौ श्वर सार ॥ १३ ॥

॥ सवैया ॥

बूंदी इन्द्रपुरी जखिपुरी किकुनेर पुरी,  
रिद्धि सिद्धि भरी द्वारिका सी धरी घर मै ।



धौलहर घांस घर घर में त्रिविन्न वांस,  
 नर कामदेव केसे सेवै सुखसर मैं ॥  
 बापी बाग वारुण बजार बीधी, बिद्या वेद विबुध विनोद ।  
 बानी बोलें मुखि नरमैं, तहां करै राज राव भावस्थंघ महाराज ॥  
 हिंदु धर्म लाज पाति सही आज कर मैं ॥ १३ ॥

॥ चौपई ॥

भावक लोग वसै धर्म वतं पुजाकरै जपै अरिहंत ।  
 तिनकौ सबक लोहट सह, करो चौपई धरी सुभ लाह ।  
 बसं वघेर बाल भोवाल, दुगैरया वरगो भवि साल ।  
 धरम धुरंधर धरमौ धीर, ता सुत तीन महा वरवीर ।  
 हीरौ सुन्दर बड़े सुजान, लघु लोहट बुधि कौनिधान ।  
 श्री जिनदेव सगुरकौ दास, कीनौ भाषा ग्रन्थ प्रकास ।  
 लघु दीरघ गण अगण विचार मात छंद विस्तार ।  
 सब्द शास्त्र कौ लख्यौ न भेद, तातै बुधि मति करौ न खेद ।

x x x x x x

वरषा रिति आगम सुभ सार, मास असाढ तीज गुरवार ।  
 पाख उजांल पुरी भई सरल, अरथ भाषा निरमई ॥  
 सवंत सत्रासै इकईस करी चौपई फली जगीस ।  
 मन अभिलाष संपूरन भए, जिन गुरु चरन सीस धरि लए ॥

इति श्री राव जसोवर की चौपई बंध कथा संपूर्ण । ग्रन्थ कर्ता श्री पद्मनाभ दत्तजुसारेण साह  
 लोहट दुगरयौ गोत्रे शर्मा सुत वघेरवाल वासिगढ वृंद । राजराव श्री भावसिंहजी विजयराव्ये ।

६२. योगीरासो ।

रचयिता पांडे श्री जिनदास । भाषा ( पद्य ) । पत्र संख्या २. साइन १।।४४।। इच्छ । पृष्ठ पर १२  
 पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४६-५० अक्षर ।

मंगलाचरण—

आदि पुरुष जो आदि जु गीतम आदि जती आदिनाथी ।  
 तास परंपरहुवा सुनिवर दिगंबर सहतांणी कुंदकुंदाचारिजगुहेमेरां ॥१॥

अन्तिम पाठ—

हं बलिहारी चेतनकेरी सोइक चित्तमनि ध्यावै ।  
छोडि अचेतन क्युं पडा रे भाई आपण सिवपुर जावै ॥ १ ॥  
जोगोरासौ सीखौ रे भाई आवग दोष न कोइ दीज्यौ ।  
जो जिणदास त्रिविधि त्रिविधिकरि सद्धिह सुमिरण कीज्यौ ॥ २ ॥

६३. रत्नपालरासो ।

रचयिता श्री सुरचंद । भाषा हिन्दी ( पद्य ) । पत्र संख्या ६३. साइज १०×३॥ इच्छ । पत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर । रचना संवत् १७३२. लिपी संवत् १८२३. प्रति पूर्ण है लिखावट सुन्दर है ।

प्रारम्भिक संगलाचरण—

श्री वृषभादिक जिन नमुं, वर्त्तमान चौबीस ।  
श्रीमधर प्रमुखां नमुं, बिहरमानवली बीस ॥ १ ॥  
वृषभसेन गौतम नमुं, गणघर थया गुणवर्त ।  
चउदेसि ज्वावन नमुं, मोटा महिमावर्त ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

गद्य दिगंबर गीरुया गौतम,  
तास सीष्य श्री पतिब्रह्मचार,  
कथा कोस ग्रंथ जो ईनें,  
सुरचंद भंया नें आदर,  
अल्पबुधि आवक अवतार,  
शुरुपसायें बुधि प्रकासी,  
संवत् सत्तरह वत्रिसा वर्षे,  
आसोज सुदि ईग्यारस रविदिन,  
रत्नपाल मूनीना गुण गाथा,  
अनेक देश देसनी देशी,  
कवियण कहें में पुरो किधो,  
बिनति करहुं बुधि जन साथै,  
भणतां गुणतां नें सांभलता,  
गुण गातां बली गुणवर्त केरा,

इदं भूषण सूरी रायरे ।  
जिनवर भक्ति सुदायरे ॥ १ ॥  
रच्यो रास सीरदार रे ।  
एह प्रबंध उदार रे ॥ २ ॥  
पंडित सुर ए नाम रे ।  
सज्जन सुणि सुखगामें रे ॥ ३ ॥  
शुभ मूरत शुभ वाररे ।  
वर्द्धनपुर मभार रे ॥ ४ ॥  
मन नाम मनोरथ फलीथारे ।  
रास उत्तम में किधोरे ॥ ५ ॥  
त्रिजोखंड रसाल रे ।  
शुद्ध करो सुविसालरे ॥  
सुणतां हर्ष अपार रे ।  
वरस्त्यौजयजयकाररे ॥ ६ ॥

इति रत्नपाल श्रोष्टनो रास संपूर्णम् । संवत् १८२३ वर्षे पोष शुद्धि १३ सोमवारे श्री मूलसंघे सरस्वति गच्छे वलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्विचे श्री सुरतवंदिरे आदीश्वरचैत्यालये भट्टारक श्री विद्यानंदजी तत्पट्टे भट्टारक जी श्री १०८ देवेंद्रकीर्त्ति जी लिखापित ।

६४. राजुल पञ्चीसी ।

रचयिता लालचन्द विनोदीलाल । भाषा हिन्दी ( पद्य ) । पत्र संख्या ४. साइज ६x४ इञ्च । पद्य संख्या २५.

मंगलाचरण—

प्रथमहि सुमेरु जादौराय, पुनि सारद हि मेताबस्यौ जीव वै ।  
वदौ अपने गुरु के पाय, राजमती गुण गायस्यो जीव वै ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

इह लालचन्द विनोद गावै, सुनत सब जन गह वरौ ।  
राजुल पति श्री नैमि जिन सब सब को मंगल करौ ॥

६५. रात्रिभोजनकथा ।

रचयिता ब्रह्म श्री वीर । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ७. पद्य संख्या ८५.

मंगलाचरण—

श्री गुरुभक्ति करो मन लाय, वचन सुणी मन उलटो थाय ।  
रात्रि भोजन कहु निहाल, सामल उयो सहु बाल गोपाल ॥

अन्तिम पाठ—

भोला कहै भ्रमे पडो जीत्यो जू उँ महार ।  
रात्री भोजन परहरो जेम पावो भवपार ॥ १ ॥  
मूल संघ महेल मणी सरस्वती गच्छे राय ।  
भट्टारक शुभचन्द्र शिष्य ब्रह्म वीरजी गुणगाय ॥ २ ॥

६६. रात्रिभोजनकथा ।

रचयिता श्री किं नसिंह । भाषा हिन्दी ( पद्य ) पत्र संख्या २६. साइज ६x४ इञ्च । पद्य संख्या ४१५.

मंगलाचरण—

समोसरण सोभा सहित जगतपूज्य जिनराज ।  
नमो त्रिविध भवदयिनको तरण विरुद जिहाज ॥ १ ॥

जिन मुख अंबुज खरी, त्याबाद मय सोय ।  
ता स्वरसुति कौ भावधरि, नमौ सकल मद खोय ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

माथुर बसंतराय वोहरां कौ परधान ।  
संगही कल्याणदास पाटणी बखानिये ।  
रामपुर वास आकौ सुत सुखदेव सुधी;  
ताकौ सुत किस्नसिंह कविनाम जानिये ॥  
तिहि निसिभोजन त्यजन व्रत कथा सुनी,  
तांकी कीनी चौपई सुआगमप्रमाणिये ।  
भूलि चूकि अक्षरघर जौ वाकौ बुधजन,  
सौधि पंडि वीनती हमारी मनि आनिये ॥ १ ॥

६७. वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा ।

भाषा श्री पं० दौलतराम भाषा हिन्दी ( गद्य ) । पत्र संख्या १३४, साइज ६x४॥ इच्छ । गाथाओं के ऊपर ही भाषा में अर्थ लिखा हुआ है ।

संगलाचरण—

दोहा

|                                           |                         |
|-------------------------------------------|-------------------------|
| इंद्र मुकट के रतन की जोती हुई जलधार;      |                         |
| ता करि सिंचे पद कमल जिनके भव तप हार ॥ १ ॥ |                         |
| केवल बोध प्रबोध करि                       | परकासे सहु तत्व ।       |
| सुकल सु ध्यान विधान करि,                  | टारे सकल अतत्त्व ॥ २ ॥  |
| श्रावक अरु जति धर्मकौ,                    | दीयो जिह उपदेस ।        |
| सुरनर मुनीवर गणधरा,                       | ध्यावैं जाहि असेस ॥ ३ ॥ |
| ताहि प्रणमि श्रावक धरग,                   | भासौ मति अनुसार ।       |
| श्रेणिक प्रति जौ प्रेमद,                  | आख्यौ जौ गणधार ॥ ४ ॥    |

अन्तिम पाठ—

|                           |                           |
|---------------------------|---------------------------|
| अब तुम सुनहु भव्य इक बैन, | जा विधिदेवा भयो सुख दैन । |
| उदयापुर मैं कीयो बखान;    | दौलतराम अनन्द सुत जान ॥   |
| वाच्यौ श्रावक व्रत विचार, | वसुनन्दी गाथा अविकार ।    |
| झोले सेठ बेलजी नामे,      | सुनि नृप मंत्री दौलतराम । |
| दया होय जौ गाथा तनौ,      | पुन्य उपजै जियकौ धनौ ।    |

सुनि के दोलति बेल सु बेंन,  
नंदौ विरघौ जिन मतसार,  
दौलति बेल लहौ निज बोध,

मन धरि गायो मारग जैन ।  
सुखपावो चंड संघ अपार ।  
होहु होहु सब को प्रतिबोध ।

संवत् १८०८ कार्तिक मासे शुक्लपक्षे तिथौ १४ भौमवासरे उदयपुर मध्ये सेवकालुवालालजी सुख  
जी की बहु बार्ह मीठी तथा राजबार्ह ने लिखा ।

६८. व्रतकथाकोष ।

रचयिता श्री खुशालचन्द काला । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ११४. साइज १२x५ इञ्च । प्रत्येक  
पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर । रचना संवत् १७८७. लांघ संवत् १८२०.

मंगलाचरण—

आदिनाथ बंदू जिनराय,  
वनुष पंचसै जाकौ काय,  
बद्धमान बंदौ जिनदेव,  
सप्त हस्त तन द्वेस समान,

कर्मकलंक रहित सुकषाय ॥ १ ॥  
वृष लक्षण सोभे अधिकाम ।  
प्रियकारिणी मात सुत एव ॥ २ ॥  
सिद्धारथ नृप को सुत जान ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

॥ दोहा ॥

दक्षिण दिसि की कूट में जो सु कह्यौ आवास ।  
तिस मंदिर मांही रक्षै पंडित लिखमीदास ॥ १ ॥

॥ सवैया ॥

देव इन्द्र कीरति भयेजु मूलस्यंघ भट्टारक कौ पदस्थ जाकौ सोहितु है ।  
पूजारु प्रतिष्ठा करवाई अतिसर्मकार मोहनी सुमूरति लखेतें मोहितु है ॥  
जाही के सुगच्छ मांही पंडितश्रीय जु दास बांती कामवेनु तैं सुग्यान दोहि इतु है ।  
खिमावान ग्यानवान पंडित विवेकवान राति घोस आगम विचार दोहि इतु है ॥२॥

x

x

x

x

x

अैसे लिखमीदास ढिग मैं कुछ पढ्यो सुग्यान ।

पठन कीयो मो बुध्य लौं वै तो ग्यान निधान ॥

तिनिहीं के उपदेस तैं भाषा सार बनाम ।

अंत सागर ब्रह्मचार कौ सुभ अनुसार सुनाय ॥

॥ चौपई ॥

सांगानेर धकी इकवार,  
श्री जिनराज तणी बरसेव,

मैं आयौ दिह्यो सुमकारि ।  
करिहूँ सुखदा मनवच एव ॥

|                        |   |   |                           |   |
|------------------------|---|---|---------------------------|---|
| x                      | x | x | x                         | x |
| और सुणौ आगै मन लाय,    |   |   | मैं सुन्दर कौ नदं सुभाय । |   |
| सिह तिया अभिघा मम माय, |   |   | ताहि कूखि मैं उपजू आय ।   |   |
| चदं खुशाल कहै सब लोक,  |   |   | भाषा कीनी सुणत असोक ।     |   |

॥ दोहा ॥

एकसात अठसात लखि संवत सुख दातार ।  
 फाग अरिष्ट विपै जु थिति चारित नाम विचार ॥  
 सतरासै रु सित्यासिये फागुण तेरसि सार ।  
 कृष्ण पक्ष माहि लखो उत्तम मंगलवार ॥

मिती जेठ शुक्ल १३ संवत् १८२० लिखापितं पंडित जोधराजजी भूरामल लिपिकृतं बूँदा  
 ॥२ मध्ये ।

## ६. वैद्यमनोत्सव ।

रचयिता श्री केशवदास नयनसुख । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ३६. साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक  
 पृष्ठ ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २२-२५ अक्षर । रचना संवत् १६४६. लिपि संवत् १७७४.

|                          |                        |
|--------------------------|------------------------|
| वैद्य मनोत्सव ग्रंथ यह   | कह्यौ सकल लिज आनि ।    |
| दुखकंदन पुनि सुख करन     | आनंद परम निधान ॥ १ ॥   |
| कंसराज सुत नयनसुख        | कह्यौ ग्रंथ अभिकंद ।   |
| सुभग सहज सीहजंद मैं      | अकबर राजनरेन्द्र ॥     |
| अंक वदे रस मेदनी         | शुक्ल पक्ष शुभ मास ।   |
| तिथि दुतिया भृगुवार पुनि | पुष्यचन्द्र सुप्रकाश ॥ |

संवत् १७७४ जेठ, सुदी ११ को श्री दयारामसोनी ने ग्रन्थ की प्रतिलिपी बनायी ।

## ७. समयसारकलशा भाषा ।

मूलकर्त्ता आचार्य अमृतचन्द्र । भाषाकार श्री राजमल्ल । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ५३.  
 इज ११×४। इञ्च । केवल दसवें अध्याय की प्रति लिपि है । प्रति की हालत विशेष अच्छी नहीं है । लिपि  
 वत् १६५३, लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १६५३ फागुण बुदी १४ शनिवासरे गढरगस्थंभ मध्ये चन्द्रप्रभचेत्यालये श्री मूलसंघे

बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्ति आम्नाये खण्डेलवालान्वये शेरपुरा की श्राविका लिखाइत मुक्तावली व्रतोद्यापनार्थ उपदेश बाई धनाई । लिखत पांडे कैसोसाह मान्या सुत संगही पूरा संगुणदत्त का देहुरा को पांडे लिखी ।

### ७१. समयसार नाटक ।

रचयिता महाकवि बनारसीदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ११८. साइज १०x५६ इञ्च ।  
रचना संवत् १६६३.

प्रशस्ति—

अब यह बात कहौ है जैसे,  
कुर्दकुर्द मुनिमूल उथरता,  
समैसार नाटक सुखदानी,  
पंडित पढ़ै मृढमति बुझै,  
पांडे राजमल्लजिनधर्मी,  
तिही गरंथ की टीका कीनी,  
इहि विधि बोध वचनिका फैली,  
प्रगटी जगत मांहि जिनवानी,  
नगर आगरे मांहि विख्याता,  
पंच पुरुष अति निपुन प्रवीने,

नाटक भाषा भयौ सु अैसे ।  
अमृतचन्द्र टीका के करता ।  
टीका सहित संस्कृत बानी ।  
अलपमती कौं अरथन सूझै ।  
समैसार नाटक के मर्मी ।  
बालाबोध सुगमकरिदीनी ।  
समै पाइ अध्यातम सैली ।  
घर घर नाटक कथा बखानी ।  
कारन पाइ भये बहु ज्ञाता ।  
निसिदिन ग्यान कथा रस भीने ।

### ॥ दोहा ॥

रूपचंद पंडित प्रथम,  
तृतीय भगौतीदास नर,  
घरमदास ए पंच जन,  
परमारथ चरचा करै,  
कबहूँ नाटक रस सुनहि,  
कबहूँ विग बनाई कै,  
बास हमारा टोडो जानि,  
फेर जिहांनाबाद मकारि,  
महावीर को मन्दिर जहां,  
चित कौं रागरु घरम धरु,  
चतुर भाव थिरता भए,

दुतीय चतुर्भुज जानि ।  
कौरपाल गुणधाम ॥  
मिलि बैठहि इक ठौर ।  
इन्हीं के कथन ने और ॥  
कबहूँ और सिधंत ।  
कहैं बोध वितंत ॥  
सांगनेरि बसे पुनि आनि ।  
आप रहै जैखंध पुरिसार ॥  
सकल पंच जन आवै तहां ।  
सुमति भगौती पास ।  
रूपचंद परगास ॥

इहि विधि ज्ञान प्रगट भग्यो,  
देस देस महि विन्तरथौ,

नगर आगरे मांहि ।  
मृषा देस महि नांहि ॥

॥ चौपई ॥

जहां जहां जिनवानो फैली,  
जाके सहज बोध इतपास,

लखै न सो जाकी मति मैली  
सो ततकाल लखै यहु वान ॥

॥ दोहा ॥

घट घट अन्तर जिन बसे,  
मत मदिरा के पांन सौ,

घट घट अंतर जैन ।  
मतवाला ससुनैन ॥

॥ चौपई ॥

बहुत बढ़ाउ कहां लौं कीजें,  
नगर आगरे मांहि विख्यात,  
तामैं कवित कला चतुर्गई,  
पंच प्रपंच रहित द्विच खोलै.  
नाटक समसार हित जी का,  
कवित बड़ रचना लौ होइ,  
सोरहसैं तिरानवे बीते,  
स्तिथि तेरसि रविवार प्रवीना,

कारज रूप बात कहि लीजें ।  
बनारसी नाम लघु ग्याता ।  
कृपा करिहि ए पांचौ भाई ।  
ते बनारसी सौं हंसि बोलै ।  
मुगमरुप राजमल टोका ।  
भाषा ग्रंथ पढ़ै सब कोइ ।  
असू मास सित पत्र बितैते ।  
ता दिन ग्रन्थ समाप्त कीना ।

॥ दोहा ॥

सुख निवान सक बंध नर,  
सह समाहि सिर मुकुट सम,  
जाके राज सुचैन सौ,  
जैन मोति व्यापी नही,

साहिव साकिरान ।  
साहिजहां सुलवान ॥  
कीनौ आगमसार ।  
इहु उनकौ दगार ॥

॥ सर्वथा ॥

तीनिस दसोत्तर सोरठ दोहा छंद दोऊ जुगल सैं पैंतालीस इकतीसा अणि है ।  
छियासी सू चौपै सैंतिस तेइस सर्वेए बीस छप्पए अठारह कथित बखानें है ॥  
सात फुनिहां अद्विल्ल आर कुंडलिये, मिलै सकल सातसैं सताईस ठोक ठाने है ।  
बत्तीस अक्षर के सिलोक कीने ताके, लखैं छंद संख्या सत्रहसैं सात अधिकाने हैं ।



॥ दोहा ॥

समैसार आतम दरब,                      नाटक भाव अनंत ।  
सोह आगम नाम मैं,                      परमारथ विरतंत ॥

इति परमागम समयसारनाटक नाम सिद्धांत पूर्णम् ।

७२. समयसारनाटक भाषा ।

भाषाकार श्री रूपचंद । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या १३७, साइज १२।।x५।। इच्छ । पद्य संख्या ७२४, महाकवि बनारसीदास द्वारा रचित समयसार नाटक के पद्यों का गद्य में अर्थ लिखा गया है । रचना संवत् १७००.

मंगलाचरण—

श्री जिन वचन समुद्र कौ,                      कौ लग होय बखान ।  
रूपचन्द नौहुं लखै,                      अपनी मति अनुमान ॥

प्रशस्ति—

पृथ्वीपति विक्रम के राज मरजाद लीन्हे,  
सत्रहसै बीते परिठांनु आव रस मैं ।  
आसू मांस आदि घौसु संपूरन ग्रन्थकन्हौ,  
वारतिक करिकै उदारससिमै ।  
जौ पें यहु भाषा ग्रन्थ सबद सुबोध या कौ,  
ठौहू विनु संप्रदाय नार्है तत्व बस मैं ।  
यातें ग्यान लाभ जांति सबनि कौ बैन मानि,  
बात रूप ग्रन्थ लिख्ये महा शांत रस मैं ॥ १ ॥

खरतर गच्छनाथ विद्यमान भट्टारक,  
जिनभक्ति सूरि जू के धर्मराज धुर मैं ।  
खमसाखमांडि जिनहर्ष जू बैसगी,  
कवि शिष्य सुखबद्ध शिरोमनि सधम मैं ।  
ताके शिष्य दयासिंध गणी गुणवंत,  
मेरे धरम आचारिज विख्यात श्रुत धर मैं ।  
ताकौ परसाद पाइ रूपचंद आनंद सौं,  
पुस्तक बनायो यहु सोणगिरि पुर मैं ॥ २ ॥

वाचत पढत अब आनंद सदा एकसौ,  
संगि ताराचंद अरु रूपचंद बाल के ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

देसी भाषा कौ कहै अरथ विपर्यय कीन ।  
ताकौ मिछा इक्क में सिद्ध सखी हम कीन ॥ ४ ॥

७३. सम्बन्ध कौमुदी कथा ।

भाषाकार श्री जोधराज गोदीका । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ६१. साइज १२x१५। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३२ अक्षर । रचना संवत् १७२४. लिपि संवत् १७६३.

भंगलाचरण—

|                      |                   |
|----------------------|-------------------|
| परम पुरुष आनंदमय     | चेतनरूप सुजान ।   |
| नमूँ शुद्ध परमात्मा  | जग परकासक भान ॥   |
| परम जोति आनंदमय,     | सुमिति होइ आनंद । |
| नाभिराज सुत आदि जिन, | बंदौ पूरण चंद ॥   |

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

|                          |                   |
|--------------------------|-------------------|
| मूलग्रन्थ मैं ज्यों सुनी | कथा कहै कवि जोध । |
| सोई ए भाषा सही           | दायक दरसन बोध ।   |

॥ चौपई ॥

|                               |                             |
|-------------------------------|-----------------------------|
| मिश्र एक हरि नाम सुनी         | पढ्यो छंद व्याकरण प्रमोनि । |
| ज्यौतिष ग्रन्थ पढ्यो बहु भाय, | मित्र जोष कहै सुखदाय ॥      |

॥ दोहा ॥

|                      |                     |
|----------------------|---------------------|
| तिनहि पढायो जोध को   | मूलग्रन्थ परवान ।   |
| ता पर भाषा गुन कीचौ  | जोधराज सुख थान ॥    |
| पंडित चतुर सुजान है  | इह जोष हरनाभ ।      |
| ताकी संगति जोध को    | भयौ सामतर लाभ ॥     |
| परम प्रजा पालै सदा   | सब भूपनि सिरमौर ।   |
| रामसिंह राजा प्रगट   | ता सम नांही और ।    |
| ताकै राज सुचैन स्थों | कियो ग्रंथ इह जोध । |
| नाम समकिति कौमुदी,   | दायक केवल बोध ।     |

|                      |                        |
|----------------------|------------------------|
| सांगानेर सुधान में   | देश दुढांहडि सार ।     |
| ता सम नहि कौ और पुर, | देखे सहर हजार ॥        |
| अमर पूत जिनवर भगत,   | जोधराज कवि नाम ।       |
| वासी सांगानेर कौ     | करी कथा सुखवाम ॥       |
| धर्मदास को पूत लधु   | जाति लुहाड्यौ जोय ।    |
| नाम कल्याण सु जानिये | कवि कौ मामौ सोय ॥      |
| ताके पढिबैं कारनै,   | कियो ग्रन्थ ग्रह जोध । |
| नाम समकित कौमुदी,    | दायक केवल बोध ॥        |
| इहै समकित कौमुदी,    | जो नर पढै सुभाय ।      |
| सो सुर नर सुख पाय कै | अनोकरमि सिव जाय ॥      |

॥ चौपई ॥

|                    |                             |
|--------------------|-----------------------------|
| संवत सत्रासै चौबीस | फागुन बुद्धि तेरस शुभ दीस । |
| सुकरबार सो पूरन भई | इहै कथा समकित गुन ठई ॥      |

॥ दोहा ॥

ग्यारासैं अठहत्तरि इहै छंद चौपई जान ।  
कह्यौ कौमुदी ग्रंथ कौ जोध सुमति अनुमान ॥

महाराम के हेतौ सौं राखे अपने पास ।  
काम खजानां कौ दयौ नथमल कौ सुखरास ॥

हुनि भाषा रचना विषैं धारयो मैं उपयोग ।  
पै सहाय विन होय नहीं, तबहि मिल्यौ इक जोग ॥

कारन विन शुभकाज की सिद्धि न होय लगार ।  
तातैं सो कारन सुनौ, बुध जन सुख करतार ॥

॥ चौपई ॥

श्री सुखराम सकल गुन खान, बोजामत सु गछ नभ आन ।  
बसवा नाम नगर सुखवाम, मूलवास जानौ अभिराम ॥  
अशोदक के जोग बसाय, बसुवा तजैं भरतपुर आय ।  
जिनमन्दिर में कियो निवास, मूलवास जानौ अभिराम ॥

|                     |                     |
|---------------------|---------------------|
| जो कहूँ मेरी चूक है | लीज्यौ संत सुधारि । |
| वरुण मातरा देखि कै  | गण आँगण सुविचार ॥   |
| बंदौ सिव अवगाहना    | अर बंदौ सिव पंथ ।   |
| असह देव बंदौ विमल   | बंदौ गुरु निरगंध ॥  |
| जिनवाणी पूजौ सही    | तातै सब सुख होय ।   |
| कविता दुखन नहिं लगौ | सुख से पूरण होय ॥   |
| चंद सूर पानी अवाँनि | पवन अरु आकास ।      |
| मेरादिक जव लग अटल   | तव लग जैन प्रकास ॥  |

इति श्री सम्यक्त्वकौमुदीकथायां साह जोधराज गोदीका विरचितायां उदितोदय भूप अरहदास सेठादिक सुरग गमनो नाम एकादसम परिच्छेदः ।

संवत्सरे १७६३ ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे चतुर्दशी तिथौ बुधवारि जिहानावाद जैसिहपुरा मध्ये श्री वर्द्धमान चैत्यालये श्री मूलसंघे नंदमनाये वलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुंदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक शिरो-मणि भट्टारक श्री १०८ देवेन्द्रकीर्तिजी तत्पट्टोदयाद्विदिनसंनिप्रख्यः भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्तिजी तदाज्ञा-नुवर्त्ती पं० दयारामेन इदं सम्यक्त्वकौमुदी भाषा चौपई ग्रन्थ स्वहस्तेन लिपि कृता ।

१७४. सम्यक्त्वरस ।

रचयिता ब्रह्म जिनदास । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी । पत्र संख्या २६, साइज १०×४। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर । प्रथम पत्र नहीं हैं ।

दूसरे पत्र का प्रारम्भ पाठ—

प्रोटक

जयवंत जय जगि सार सुंदर रामचंद्र बखानिये ।  
लक्ष्मीधर अरु भरत शत्रुघ्न च्यारि पुत्र घरि जाणीइये ॥  
कुलकमल दिनकर सकल शास्त्र सुज्ञानवतं महामती ।  
देव धर्महं गुरु परीक्षण रामचन्द्र क्षतिपती ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

समिकित रासो निरमलाय मिथ्यातमोडपकंदाता ।  
गावो भवीयण रुबडो ए जिमि सुख होइ अनंदाता ॥ १ ॥  
श्री सकल कीरति गुरु प्रणमीनए, श्री भवन कीरति भवतार तो ।  
ब्रह्म जिणदास भणो ध्याइए गाइए सरस अपारतो ॥ २ ॥

## ७५. सिद्धान्तसारदीपक ।

रचयिता श्री नवमन्न बिलाला । भव्य हिन्दी ( पद्य ) पत्र संख्या १६६. साइज १२x६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२-४२ अक्षर । भट्टारक सकलकीर्ति की सिद्धान्तसार नामक रचना के आधार पर भाषा लिखी गयी है ।

सर्वदूरी सर्वज्ञ महंत सकल अर्थ दीपक श्रीमंत ।

गन्धर्व पद वंदित जगनाथ, वंदौ चरण जोरि जुग हाथ ॥१॥

अन्तिममठ क्या प्रशस्ति—

जिहिं द्विषि भाषा प्रब चहु. भयो परम हितकर ।

सो वरनत बुबजन सुनो, करि निज चित्त इक ठार ॥ ६ ॥

॥ चौपई ॥

नगर अंगारो परमपुनीव,

साधर्म्यजन दसैं विनीत ।

जहां जेठनल साह सुजांन.

गुन गन नहिं परम निधान ॥

ताके तनुज दोय गुनवान,

निजकुल कमल प्रकाशन मान ।

जेठौ सोभा चंद बदार,

लघु सुत गोकुलचंद विचार ॥

वंस खण्डेवात अवदात,

गोत बिलाला जग विख्यात ।

अन्नोदक को कारण पाय,

बसे भरतपुर मांही आय ।

॥ दोहा ॥

नंदन सोभाचंद कौ, नयमल निरट अयान ।

छंद कोस निगल तनौ, ज्ञान अस नहीं जन ॥

॥ चौपई ॥

संगी चांदूबाह प्रसिद्धि,

केसोदोस धरन बहु रिद्धि ।

नयाराम ताकौ सुत सही,

पोतदार जानै सब नही ।

नोदी.....नहारन जाकौ सनमान दीहनौ,

फतेचंद पृथ्वीराज पुत्र धनमात के ।

फतेचंद जूके पुत्र नसरुप जगनाथ,

गौतमानवर नैं धरैयसुभवाल के ।

ता नैं जगनाथ जूके बुल्लिबेके हेतु,

हम व्यौरी नैं सुगम कीन्हें वचन दयाल के ।

नथमल नै सुखरास सौं, कही प्रीति दरसाय ।

मूलग्रन्थ कौ अर्थ तुम मोक्ष देय बताय ॥

मूल ग्रन्थ अति कठिन है पढ़ै जू पंडित होय ।

भाषा रचना होय तो पढ़ै सुधी सब लोय ॥

अर्थ समझि सुखराम तैं मध्य लोक को सार ।

नथमल नै भाषा रची निजमति के अनुसार ॥

महावीर जिन जात्रा हित

नथमल आये संघ समेत ।

पांडे लालचंद सौं कही

पूरन ग्रंथ करो तुम सही ।

॥ दोहा ॥

नथमल वच उर आनि के,

अरु निज हेत विचार ।

श्री सिद्धान्त सार की,

भाषा कीनी सार ॥

आधो लोक की कथन अरु

उरघ लोक विचार ।

भाषा पांडेलात नै

कीनी मति अनुसार ॥

॥ छप्पय ॥

भहारक विख्यात सकलकीर्ति विसालमति,

कियो सहस्रकृत पाठ ताहि समझे न तुच्छ मति ।

ताही के अनुसार अरथ मन में आयो,

निजमति के अनुसार किमपि भाषा करि गयो ॥

जो छंद अर्थ अनमिल कहं वरन्यौ होय सुजानि कै,

लोज्यौ संवारि बुधजन सकल यह विनती उर आनिकै ॥

नमौ देव अरिहत मुक्ति मारग परकासी,

नमौ सिद्ध चिद्रूप लोक के अग्र निवासी ।

नमौ साधु निरग्रन्थ सकल परिगढ़ परिहारी,

सहत परोपद घोर सकल जन के हितकारी ।

चंदौ जिन धर्मवर देव सकल सुख संपदा,

पढ़ उत्तम तिहुं लोक में करौ छेम मंगल सदा ॥

॥ चौपई ॥

संवत् अष्टादश शत जॉन

ऊपर पुनि चौतीस प्रवांन ।

माह शुक्ल पांचै रविवार

ग्रन्थ समाप्त कीनौ सार ॥

संवत् १८६० आसोजमासे कृष्णपक्षे तिथौ १३ मंगलवासरे लिख्यते महात्मा गुमान्नीराम नासरोदा मध्ये ।

७६. सिन्दूर प्रकरण ।

रचयिता कौरपाल बनारसीदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १२. साइज ६५४ इञ्च । पद्य संख्या १०४. रचना संवत् १६६१.

मंगलाचरण—

सोभित तप गजराज सीस सिन्दूर पूर छवि,  
विविध दिवस आरम्भकरन कारन उद्योत रवि  
मंगल तरु पल्लव कषाय कभार हुतासिन  
बहुगुन रत्ननिधान मुक्ति कमला कमलासिन  
इहि विधि उपमा सहित अरुन वरन सत्ताप हर ।  
जिनरीय पाय नषजोतिभर नमत बनारसी जोरि कर ॥

प्रशस्ति—

कौरपाल बनारसी मित्र युगले ईक चित्त ।  
तिन गरथ भाषा कियो बहुविध छंद कविता ॥  
नाम सुक्ति मुकाबिली द्वाविशति अधिकार ।  
शत शिलोक परवान सेव, इति गरथ विस्तार ॥  
सोलास ईक्यानव रितु प्रथम वैशाख ।  
सोमवार एकादशी कर नक्षत्र मित पोष ॥

७७. शीताचरित्र ।

रचयिता कविवर रायचंद । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १४४. साइज १२×११ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३३ अक्षर । रचना संवत् १७१३. लिपि संवत् १८०८. प्रति पूणे है ।

मंगलाचरण—

प्रणमौ परम पुनीत नर वंद्यमान जिनदेव ।  
लोकांलोक प्रकास तस कर समकितौ सेव ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

कियो ग्रन्थ रविषेण नै रघु पुराण जिय जान ।  
वहै अरथ ईण मैं कह्यौ रायचंद उर आण ॥

×                      ×                      ×                      ×

संवत् सतरत्तरैत्तरै मंगसिग ग्रन्थ सेमार्पात करै ।  
सुकल पक्ष तिथि है पंचमी, आपो जाण कुमति जियवमी ॥

संवच्छरे १८०८ वर्षे वैसाखमासे शुक्लपक्षे अक्षयतीजतिथीं बुधवारै श्री सधाई जयपुर नगरे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री मूलसर्धे नंधास्नोर्थे धलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यनिचये भट्टारक शिरो-  
मणि भट्टारकजी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्तिजी तत्पद्मोदयाद्रि दिनेभोगप्रख्यः भट्टारकजी श्री १०८ महेन्द्रकीर्तिजी  
श्री १०८ श्री माधोसिंह राजपांडेविराजिते साहि श्री डाडूरामजी की देहुरा मध्ये पंडित श्री ईसरदास सोभाराम  
रूपचंदविराजिते संगही श्री नीकराजी की पुस्तक सौ तदाज्ञानुवर्ती पं० दयारामेण सीताचरित्र चौपई भाषा  
ग्रंथ स्वहस्तेन लिपि कृता ।

७८. सीता हरण ।

रचयिता श्री जयसार । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ११४, साइज ६।।४।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर  
११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २४-२८ अक्षर । रचना संवत् १७३२. लिपि संवत् १६१४. प्रति पूर्ण है तथा  
साधारणतः अच्छी है ।

प्रारम्भिक मंगलाचरण—

सकल जिनेश्वर पद नमू  
गणधर गुरु गौतम नमू  
सह गुरु पद नमो  
सीता हरण जहू कहू

सारेदा सुमरु माय ।  
त्रिभुवन बंदि पाय ॥ १ ॥  
रामचन्द्र घर नार ।  
समेल जो नरनार ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

मूलसंघ सरसती वर गच्छे  
वीद्यानन्दि गुरु गोयम सरपो  
गंधार नगरे प्रत्यक्ष अंतीसय,  
तेह तणो पांटे मलीभुषण  
लक्ष्मीचंद्र ते अनूकमे जाणै  
धीरचन्द्र भट्टारक बाणो  
ज्ञानमूप तस पटे सोहे  
लाहज वसे उद्योतज कीयो  
प्रभाचन्द्र गुरु तेहने पटे,

धलात्कारगण सार जी ।  
प्रणमूं चीरो वार जी ॥  
कलीयुगे छे मनोहार जी ।  
बोधां नो नही पार जी ॥  
लक्ष्मी मंडीत कार्य जी ।  
सांभली तां सूषधायिजी ॥  
ज्ञानतणो भंडार जी ।  
भव्यतणो आधार जी ॥  
बांखी अमी रसाल जी ।



વાદોચન્દ્ર વાદ બહુ જીત્યા  
મહીચન્દ્ર મુનિ જન મન મોહન,  
પરવાદો નામાં નમું કાઢ્યા  
મેરુચન્દ્ર તસ પટે સોદે,  
વ્યાખ્યાય વાંચી અસીયસમાંચી,  
ગોર મહીચન્દ્ર સોષ જયસાગર,  
નરનારિ જે મળે છે સૂણ છે  
હુંબહ બંસી રામાં સંતોષી,  
તેહ તણો પૂત્ર સે તસ ઘરે  
તેહ તણે આદે સાસી હરણે,  
સાંમલ માંગાં તાં સૂઝ હો સો,  
સંવત સતરબત્રીસાનરસે  
બૂધવારે પરિપૂર્ણ જ ચરયું,  
આદી જિણેસર તણે પ્રસાદી  
સાંમલતાં ગાતાં એ સહૂને,  
મહાપુરાણ તણે અણસારી,  
કવિ જિન દોષ મેં દેસો કોઈ,  
મુક્ત આલસૂને રજય પઢયું,  
તેહ પ્રસાદે પ્રન્થ એ કીધો,  
સીતા સીલ તણો એ મહીનાં,  
ભાવધાર જે ગાણ મહીનાં,

ઘટ સરતાં ગુણમાલ જી ॥  
વાંચી જેહ વીસ્તારે જી ।  
ગર્વેન કરો મગાર જી ॥  
મોહે અવીયણ મન જી ।  
સાંમલો એ કે મન જી ॥  
રચ્યો સીતા હરણ નો રાસ જી ।  
તસ ઘરે જય જય કોર જી ॥  
રામાદે તેહ નો નાર જી ।  
જય જય કાર જી ॥  
કીધુ મન હલાસ જી ।  
સીતા સીલ વિલાસ જી ॥  
વૈસાલ મુંદી બીજ સાર જી ।  
સૂર તનય રયમાર જી ॥  
પદ્માવતી પસાય જી ।  
મન માં આનંદ આયે જી ॥  
કીધું સે મનોહાર જી ।  
સોષજો તમે સૂઝકાર જી ॥  
સારદા એ મતી દાષ જી ।  
શ્યામદાસે જસલીલ જી ॥  
ગાંડ સહુ નરનાર જી ।  
તસ ઘર મંગલ ચ્યાર જી ॥

॥ દોહા ॥

ભાવધાર જે મળે સૂણે સીતા સીલવિલાસ ।

જયસાગર રઈ રચરે યહ ચેતસ મન ની આસ ॥

इति भट्टारक महीचन्द्र शिष्य ब्रह्म जयसागर विरचिते सीता हरणाख्याने श्री रामचन्द्र मुक्तिगमन-  
वर्णनं नाम षष्ठमोऽधिकार समाप्तः ।

સંવત ૧૬૨૫ વર્ષે પોષબુદી ૨ શુક્રત્રાસરે ગાંમ શ્રી દેવદનગરે પદ્મપ્રભચૈત્યાલયે શ્રી મૂલસંઘે સર-  
સ્વતીગચ્છે બલાત્કારગણે શ્રી કુંદકુંદાચાર્યાન્વયે ભટ્ટારક શ્રી રત્નચન્દ્રજી તત્પદ્મે ભટ્ટારક શ્રી દેવચન્દ્રજી  
તત્પદ્મે ભટ્ટારક શ્રી ધર્મચન્દ્રજી તત્ શિષ્ય બ્રહ્મ ગોકલજી તત્લઘુ આતા બ્રહ્મેષજી લિખિતં સ્વહસ્તં ।

### ७६. सुदर्शन रासो ।

रचयिता ब्रह्म श्री रायमंज । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ११: सांइज ११॥ x ५ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४२. ४५ अक्षर । रचना संवत् १६२६ ।

मंगलाचरण—

प्रथम प्रणामौ आदि जिहिंद, नामि राजा कुलि चंदयाजी चंद ।  
नगर अंजोभ्या उपने स्वामी पूरव नाख, चौरासी सी जी आंइ,  
मरुदे जी मात हैं उर धरिड ॥

प्रशस्ति—

अहो श्री मूल संघ मुनि प्रगतौ जी लोइ,  
अनंत कीर्ति जाणै सहु कोइ तास क्षणौ सिष जाणव्यौ ॥  
अहो रायमल ब्रह्म मनि भयो जी उछाह, बुधि करि हीण जाणै नहीं ।  
अहो वर्णयो रास सुदर्शन साह ॥ १ ॥  
अहो सोलहसै गुणनीसंद जी वप वैसाख सातै जी ऊजलौ पाख ।  
साहि अकबर राजई, अहो भोगवै राज आत इंद्र समान ।  
और चर्चाउर राखै नहीं अहो छह दरसन कौ राखैजी मान ॥ २ ॥

### ०. श्रावकाचार रासो ।

रचयिता श्री जिनसेवक । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या ११२. सांइज ११x५इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर । रचना संवत् १६०३, लिपि संवत् १८२०. रासो के कर्ता ने अन्य भी ग्रन्थ रचना की है प्रशस्ति ठीक तरह से लिखी हुई नहीं है—

प्रारम्भ—

सकल जिनेश्वर २ चरण कमल ते नमु  
गुण छंडतालीसधारक, वारक मोहतिमिरनिभर, पंच कल्याणक नायक  
पायक सिखसुख सार मनोहर, सारदा सामनिमनिधर  
अणुसक गुरुनिर्भयपाय, श्रावकाचार विधि वरणवुजो तम्हो करो पसाय ॥

प्रशस्ति—

|                          |                           |
|--------------------------|---------------------------|
| श्री मूलसंघ सरस्वती गच्छ | बलाकार गुण विशालतो ।      |
| कुंदकुंदाचार्य हुवा      | अनुक्रमि गुरु गुणमालतो ॥  |
| श्री जिनसेन गुणभद्रसूरी  | अकलंक अमृतचंद्रतो,        |
| ज्ञानी ध्यानी दिगंबर जती | परंपरा सूरी प्रभचंद्रतो ॥ |

श्री पदमनन्दि पाट हुवा  
 भुवनकीर्ति तपमूर्ति  
 श्री विनय कीर्ति पाटि उपव्या  
 भव्य कुमुदचंद्रजसो,  
 आम्नाय गुरु श्री शुभचंद्रतो  
 अध्यात्म गुरुकर्मसी ब्रह्म,  
 अवर शास्त्र कवित गुरु,  
 जेण धर्म उपदेश दियो  
 ते सहु गुरु हुवा मुक्ताणां,  
 गुरु गुण नविलोपिये,  
 सुख हृदय पदम मांहि,  
 मोह तिमर दूरै हरी,  
 सामंतभद्रसूरी कृत,  
 आसावर पंडित कृत,

× × ×  
 वानवार देश सोहांमणि,  
 हाट हार मंदिर मालीया,  
 श्री आदिनाथ तीरथ तणों,  
 समोसरण कल्याण त्रय आदि,

× × ×  
 त्रेपनक्रिया रास जेणें कीयो,  
 श्री महावीर रास कीयो,  
 कर जोडि पद मों कहैं,  
 निज बुद्धि नैं अनुसारै,

× × ×  
 संवत संख्या जिन भावना,  
 मास मांहि सुदामणों,  
 तिथ संख्या चारित्र भेदी,  
 शुभ नक्षत्र शुभ योगि,

× × ×  
 आवकाचार तणों आवकाचार तणों रास कियो मैं एणी—

सकलकीर्ति भव तारतो,  
 श्री ज्ञानभूषण ज्ञान धारतो ।  
 भट्टारक श्री शुभचंद्रतो ॥  
 कुवादी गजमृगेंद्रतो ।  
 आगम गुरु मुनिचंद्र तो ।  
 शिष्य गुरु हीर ब्रह्मिद्रतो ॥  
 ब्रह्मचारी श्री जिणदास तो ।  
 शास्त्र श्लोक पट भापना ॥  
 कर जोडि करु प्रणाम तो ।  
 गुरु लोपी पापी नाम तो ॥  
 गुरु भानु वाणी किरण तो ।  
 ते गुरु तारण तरण तो ॥  
 वसुनन्दि आवकाचारतौ ।  
 सकल कीरति कृत सारतो ॥

× × ×  
 शाकपुर नयर मकारि तो ।  
 प्रजा वासि वर्ण च्यारतो ॥  
 सोहै जिन प्रासाद तो  
 जिनविष, करि आह्लादतो ॥

× × ×  
 जेणें कीयो ध्यानामृत रासतो ।  
 तेणि कीयो एह भासतो ॥  
 आवका चार कीयो रासतो ।  
 साह्यकारी मित्र जिणदास तो ॥

× × ×  
 संवच्छर संख्या प्रमाद तो ।  
 भादवा सुदि मर्याद तो ॥  
 रस संख्या शुभ वारतो ।  
 कीयो मैं आवकाचार तो ॥

× × ×

परिभव जन मन रंजन, भंजन कर्म कठोर निर्भर ।  
पंच परमेश्विनि धरो समरी शारदा गुरु निरग्रंथ मनोहर ।  
अनुदिन जे धर्म पालजी टाली सचें अतीचार ।  
जिनसेवक पद मो कहि ते पांमसैं भवपार ॥

संवत् १८२० भट्टारकोत्तम भट्टारक जी श्री देवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक जिछी महेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक जिछी १०८ चेमेन्द्रकीर्ति जी तत्पट्टित पठनार्थ हेमराज जाति वधेरवाल गोत्र बगडा वास मच लिपि कृत सहास्य भूरामल वाकलीवाल ।

८१. श्रीपालचरित्र ।

रचयिता कविता श्री परिमल्ल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १२५. साइज १०×५। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पृष्ठ तथा प्रति पंक्ति में २६-३३ अक्षर । प्रति सुन्दर है । लिपि संवत् १७६४.

प्रारम्भिक मंगलाचरण—

सिद्ध चक्र विधि केवल सिद्धि गुण अनंत फल जाकै सिद्धि ।  
प्रणमुं परमसिद्धि गुरु सोइ भविक बंध ज्यौं मंगल होइ ॥

प्रशस्ति—

उग्रगोपगिरि च दुर्गमगढ रत्नवरं भूषितं,  
जधीरं कृतमंवरं मदगल पापाण ऐरावतं ।  
तमध्ये श्रीमानसाहिषिपते भूलोकवरविद्यतं,  
तत्राज्यं सुरनाथ तुल्य गदितं तत् केन स वर्णितं ॥ १ ॥  
..... जातु कसुलौ नामेन चंद्रेतयं,  
तत्पुत्रं सुरु रामदासविपुलं भुक्तं न भोग्यं सदा ।  
तत् सुरुः कुलधीपकस्तप्रगटं नामं स कर्णे शुभं,  
तत्पुत्रं परिमल्ल धम्मसदनं ग्रंथरिदं क्रियते ॥ २ ॥

॥ चौपई ॥

|                              |                              |
|------------------------------|------------------------------|
| गोत्रि गीरी ठाढौ उत्तिम थान, | सूरवीर यह रामान ।            |
| ता आगैं चंदेन चौधरी          | कीरति सब जगमें विस्तरी ॥     |
| जाति विरहिथा गुणदगंभीर,      | अति प्रताप कुल रंजन धीर ।    |
| ता सुत रामदास परवान,         | ता सुत अस्ति महा सुर ग्यान । |
| तसु कुल मंडल है परिमल्ल,     | सर्वे आगरा में अरिसल्ल ॥     |

तासु महिन बुद्धि नहि आन,  
 होय अशुद्ध जहाँ पदहीन,  
 बार बार जपौ करि जोर,  
 बंदौ जिन सासन कौ धम्म,  
 बंदौ गुरु जे गुण के मूर,  
 बंदौ माता सीढ़ बाहिनी,  
 बंदौ मुनियन जे गुन धम्म,  
 बंदौ सज्जन कुल सुख धाम,  
 महिमा सागर महा सुजान,  
 जाकै हृद दया कौ वास,  
 ताकै एक अपूर्व रीति,  
 सुख में जल पीवै नृणा खाय,  
 तिनकी संक सीढ़ मनि-धरै,  
 मारसवद मुख थैं नहि चवै,  
 नवौ रिद्धि पूरण भंडार,  
 नृप अनेक सेवै दरवार,  
 सुखी भये जिनसए पाय,  
 परनारी परबन अति आदि,  
 सत्तराज महि मंडल तेज,

कोयौ चौपई वध प्रवान ।  
 फेरि संवारौ गुणियन वीन ॥  
 बुधिजन मोहि देहु मति-छोरि ।  
 जापसाय नासै अघ कर्म ।  
 जिनके होय ग्यान कौ पूर ।  
 जातैं सुमति होय अतिवनी ।  
 नवरस माहिमा उदतिन कर्न ।  
 बंदौ धर्म बुद्धि वर नांम ।  
 ..... ।  
 जीवन कबहु देयन त्रास ।  
 सुरही सौ अति राखै मोति ।  
 अपणैं मारग आवै जाय ।  
 अकवर कै आयस तें डरै ।  
 एक छत्र महि मंडल तवैं ।  
 हय गय बाहण अगण अपार ।  
 दुःखी दीदन कौ आधार ।  
 त्रिमुख भये दुख लहै अबाय ॥  
 तिन तन कोउ सकयन चाहि ।  
 सुरपनि हूथै अविक्रमतेज ।

इति श्री श्रीपालजी को चरित्र चौपई बंध परिमल्ल कृतं संपूर्ण । संवत् १७६४ वर्षे पोष सुदी १०  
 भोमत्रासरे तत्दिने इदं पुस्तकं लिखी जोसीजी पाटन मध्ये वास्तव्यं । तत्दिने इदं पुस्तक लिखायतं बाई  
 तुलसा पठनार्थ ।

८२. श्रीपालरास ।

रचयिता ब्रह्म श्री रायमल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ४०. साइज ७x६ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य  
 संख्या २६७. रचना संवत् १६३०. लिपि संवत् १६८६.

मंगलाचरण—

हो स्वामी प्रणमो आदि जिणंद, बंदौ अजित होई आनंद ।  
 संभौ बंदौ जुगति स्यौ, हो अभिनंदन का प्रणमो पाई ॥

अन्तिम पाठ—

हो मूलसंघ मुनि प्रगटे जानि, कीरतिअनेतं सोल की खानि ।  
ता तस तेना सिपि जानिजे, हो प्रहो राईमल्ल हठ केरि चित्त ॥  
भाव भेद जानि नेही होत, हि दीठै श्रीपाल चरित्र ॥  
हो सोलासै तीसौं सुभ वष, तिथि तेरस सित सोभिता ।  
हो अनुराधा नोपत्र सुभ सर, वरने जोग दोसौ भल ।  
हो भनै वार सनोसरवार ॥ १ ॥

हो रणथभ्रमर सोभौ कविलोसि, भरिया नीरतान चेहु पाँस ।  
बाग विहर बाबडी बणी हो धने कन सैपात्त तणौ निधानि ।  
साहि अकवर राजई, हो सोभौ बणी जिसी सुर थनि ॥ २ ॥  
हो श्रावक लोग बसौ धनवत, पूजा करे जेपे अरहत ।  
धहुबिच यात्रा दान दे हो नम लोग धर्म संजोग ।  
सामाइक योसौ करै हो ..... तन नोदी फिरो ॥ ३ ॥  
हो दोसौ अवि क छानवै छंद, कवियन भनी तसु मति मंद ।  
यद अक्षर कोइ घटै, हो पंडित मति को करौ प्रगास ।  
जेसी मति मोहि उपनी, हो तौसी मति मौ बने रास ।

रास भनौ सरिपाल कौ ॥ ४ ॥

संवत् १६८६ वर्षे आसौज बुदी ५ दिने सुक्रवार आंगरा मध्ये साहिजंदा ..... लिखत जैता पाटणी दानु पुत्र ।

८३. श्रेणिकचरित्र ।

रचयिता लक्ष्मीचन्द चांदवाड । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १२४, साइज १०x११ इंच । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३१ अक्षर । रचना संवत् १७४६, लिपि संवत् १८०८,

भगलाचरण—

|                     |                    |
|---------------------|--------------------|
| गणपति श्री अरहत पद  | महावीर भगवानि ।    |
| धाति करम मिथ्यान तम | हरि उदयाचल भानि ॥  |
| समवसरण लक्ष्मी दिपे | महिमा अगम अपार ।   |
| ईद्व आदि चरण मत्तै  | नमै भूमि सिध धार ॥ |

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

श्री सरस्वती गच्छ गण वलात्कारान्वय कुंदकुंद महान ।  
 नद्यंनय भव्यचित्त कमलसु पदमनन्द जिम भान ॥ १ ॥  
 तिनके पटि श्री सकलकीर्त्ति मुनि भवि जीव समोद दिवाइ ।  
 सुकवि सरल वानी करि महीयल बुधजन मन रजवाइ ॥ २ ॥  
 तिनके पटि श्री भुवनकीर्त्ति तसकीर्त्ति भवनपसरान ।  
 ज्ञातातत्त्वपूरान काव्य करता जिन बिंद प्रतिष्ठा विधान ॥ ४ ॥  
 तिह पर श्री ज्ञान भूषण विराजै परकासन सुभ ग्यान ।  
 निज वचनै दिन कर सम उदयै अद्युत मनास भव्यान ॥ ५ ॥  
 तिन पट विजय कीर्त्ति जैवतं गुरु अन्यमती परवत समान ।  
 स्याद्वाद वजै करि फौडत तिन सिष्य शुभचन्द्र जान ॥ ६ ॥  
 जिन पुंनो पुरुष पुरान पवित्र सुभ कहियौ सुभग बखान ।  
 ना कवि मद थे न कीर्त्ति अहंकार निज मत प्रमोद लहान ॥ ७ ॥  
 निज अधहण कारन ग्रंथ संस्कृत ता मुनि संशेष आनि ।  
 भापा करी ढाल चौबन में लिखमीदास ठान ॥ ८ ॥  
 सुनौ भवी भात्रीक जिन गुण गान ॥

॥ दोहा ॥

|                            |                          |
|----------------------------|--------------------------|
| श्री शुभचंद्राचार्य तिन्ह, | कह्यौ सहसकृतसार ।        |
| ते सुनि, लक्ष्मीदास भनि,   | भापा ढाल पियार ॥ ९ ॥     |
| ना मैं देख्या ग्रंथ कौऊ,   | व्याकरण छंद न जानि ।     |
| तुच्छ मति रह भापा रची,     | बुधजन मत्तीह सवान ॥ १० ॥ |
| आगम चूक पनीसकति,           | उदीर कै धन जूत कपनतनूर । |
| तासा मित्रापन अधिक,        | प्रति पर सपरस मान ।      |
| कुसलसीध करनी उचित,         | ताकी सम नहीं आंती ॥ ११ ॥ |
| पंडित जसरथ सुत सुभग,       | तदानंद तस नाम ।          |
| ता उपदेस भापा रची,         | भविजन कौ विसराम ॥ १२ ॥   |
| संवत सत्तरासैं उपरि        | तेतीस जेठ सु पाख ।       |
| पंचमी ता दिन पूर्ण लहि     | मंगल कारी भाप ।          |
| फेरि लिखी गुनचास मैं       | लक्ष्मीदास निज बोध ।     |
| भूलौ चूकौ सबद कौउ          | बुधजन लीज्यौ सोधि ।      |

इति श्रीश्रेणिकमहागजचरित्र भाषा लक्ष्मीदासचांदवाङ्कृत संपूर्णा । सत्र १८०८ कार्तिक सुदी ६ गुरौ ।

### ८४. श्रेणिकरास ।

रचयिता श्री ब्रह्मजिनदास । भाषा गुजरातीमिश्रित हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ५२, साइज ६।।४।। इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर २६-३२ अक्षर ।

#### मंगलाचरण—

वीर जिणेश्वर पाय प्रणमेश, तीथकर स्तुवीसमे ।

वाञ्छित फल बहू दान दाता, सारदा स्वामीनि बलिस्तुबुद्ध विबुधि सार ॥

#### अन्तिम पाठ—

श्रेणिकराजा श्रेणिकराजा तणो ए रास, पढे गुणो जे सांभजिए ।

कमनें धरि भाष घऊजत, तेह धरै न बहनीछन ।

संपजे सरग सुगती फलमार निमेल, श्री सकलकीर्ति गुरुप्रणमिति ॥

मुनि भुवनकीर्ति भवतार, ब्रह्म श्री जिणदामभणो निरमलो सुणता पुण्य अपार ॥१॥

### ८५. हनुमतं कथा ।

रचयिता ब्रह्म श्री रायमल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ६२, साइज ६।४ इच्छ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २३-२४ अक्षर । रचना संवत् १६१६, लिपि संवत् १७१६ ।

#### मंगलाचरण—

स्वामी सुव्रतनाथ जिनंद, सुमिरत होइ सिद्धि आणदं ।

नमौ सीस जोह कर दोय, नासै पाप भली मति होइ ॥

#### अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

मूलसंध भवतारण हार,  
रत्नकीर्ति मुनि अधिक सुजाण,  
अनंतकीर्ति मुनि प्रगट्यै नाम,  
मेव वृद्ध जे जाइन गिनी,  
तास सीष्य जिण चरणां लीन,  
हरा कथा कौ कियो प्रकास,  
भणी कथा मन में धरि हर्ष,

सारद गछ गरवौ संसार ।  
तास पढि मुनि गणहनिधान ।  
कीर्ति अनंत विस्तरी नाम ।  
तास मुनिगुण जाइन भणी ।  
ब्रह्म रायमल मति कौ हीन ।  
वत्तम क्रिया मुणीश्वर दास ।  
सौलासै सोला शुभ वर्ष ।



रितु बसंत मास वैशाख,

नौमि सतीसर वृष्णिहि पक्ष ।

x

x

x

:

x

x

x

स्वामी सुव्रत नाथ जिनंत,  
न.सै पाप भेली मति होइ,

सुमरत होइ सिद्धि आणंद ।  
नमौ सील जौडे कर दोय ॥

### ८६. हरिवंशपुराण भाषा ।

रचयिता श्री खुलाशचन्द । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या २४६. साइज १२x११। इश्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४२ अक्षर । रचना संवत् १७८०. लिपि संवत् १८६०. लिलि सुन्दर है ।

मंगलाचरण—

महावीर वंदौ जिनदेव,  
तीन लोक में मंगल कर,  
नेमिसुर वंदौ चित लाय,  
पाप विनाशन है जिननाम,

इंद्रादिक करि हैं तिनसेव ।  
ते वंदौ-जिनराज अनूप ॥ १ ॥  
तिहुं-जग दरि-पद अघाय ।  
सब-जिननाम वंदौ गुणधाम ॥

अन्तिम पाठ—

नेमनाथ जिनके वचन,  
तहां ग्रह जिनदासजू,  
ताहीं श्री जिनदासजी,  
सो अनुसार खुशाल ले,

सब जीवन सुखदाय ।  
करि लीही अधिका ॥ १ ॥  
ग्रन्थ रच्यौ इह सार ।  
कह्यो भविक सुखकार ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

॥ योहा ॥

मेरी बात सुनो अबै,  
कलौ जाति खुशाल जु,

भव्य जीव मनलाय ।  
सुन्दर सुत जिनपाय ॥

॥ चौपई ॥

बेश दुहाइर जाणौ सार,  
विसनसिध सुत जैसिहराय,  
देशतनी-महिमा अतिजनी  
जिनमंदिर भविपूजाकरै,  
जिनमंदिर करवाये जना,  
रथ जात्रादि होत बहुजहां,

तामैं धरम तणुं अतिकार ।  
राजकरै सबकुं सुखदाय ॥  
जिनगोहा करि अतिही बनी ।  
केइक अत ले केइक धरै ।  
सुरग विमल तनी वरछवा ।  
पुन्य उपार्जन भवियन तहां ।

इत्यादिक महिमा जुत देश,  
जा मैं पुर सांगावति जानि,  
जाकी सौभा है अधिकार,  
जा मधि श्री मूलनायक थानि,  
कहि न सकौ मैं और असेस ।  
घरम उपावन कौ वर थान ॥ ५ ॥  
कबलों भाखूं भवि विस्तार ।  
सोभै भनि जीवां सुख दानि ॥ ६ ॥

\* सवैया \*

संघ मूलसंघ जानि गछ सारदा वखानि,  
गणजु बलातकार जानौ मन लायकै ।  
कुंदकुंद मुनि की सु आसनाय मांदि,  
भये देवइन्द्रकीर्ति पठव्यतर पायकै ॥  
जिन सु भये तहां नाम लिखमीदास,  
चतुर विवेकी अत ज्ञान कूँ उपाय कै ।  
तिहनें पास मैं भं कछु अल्प सौं प्रकाश भयो,  
फेरि मैं वायो जिहानाबाद मध्य आयकै ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

सहर जिहानाबाद में जैसिघ पुरो सुथान ।  
मैं वसिहूँ सुखतैं सदा जिनेशऊं चित्त आनि ॥ ८ ॥

\* छप्पय \*

महमहसाह पातिसाह राजकरै सुचिक्छौ,  
नीतवंत वलवंत न्याय भिन लेन अरथौ ।  
ताके अमल सुमांदि ग्रन्थ आरंभरु कीन्हौ,  
पर कौ भय दुख सोक कभूह हम कौयन लोन्हौ ।  
इह विचार राजा तनौ इतनो ही उपगार है,  
कौऊ दंडन सकै जिनमत को विसतार है ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

सहर मध्य इक वर्णिक वर,  
ताके गेह विपै रहै,  
तिन ढिग मैं जाऊं सदा,  
तिनकौ वर उपदेश लै,  
साह सुखानंद जानि ।  
गोकुलचंद सुजानि ॥ १० ॥  
पहुं शास्त्र सुभाय ।  
मैं भाषा बनवाय ॥ ११ ॥

ग्रन्थ तनी भाषा रची,  
जसको कारिज ना करियो,

जिन सेवक अनुसार ।  
करयो भविक उपगार ॥ १२ ॥

॥ चौपई ॥

असी जानि भविक सुखदाय,  
काला जाति खुस्याल सुनाम,  
संवत् सतरासै अरु असी,  
सुकरवार अति ही वर जोग,  
पहर डोढ दिन वाकी रह्यौ,  
कसर देखि पैंडित जन कौय,  
मैं तो ग्रन्थ पढे कछु नाहि,  
यातैं दोष न दीजौ कोय,

जिनवर चरित सुवर्णतैं,  
जे भावि सुमरैं भावैं सौं,  
हरिवंशं महत्सास्त्रं  
नाम्ना खुस्यालचंद्रेण

पढिजे सुनिजै मनवचकाय ।  
भाषा रची परम सुख घाम ॥ १३ ॥  
सुंदी वैशाख तीज बेर लेसी ।  
सार नख्यतर कौ संजोग ॥ १४ ॥  
भाषा पूरण करि सुख लेह्यौ ।  
सुनि कर लीज्यौ अक्षर सोय ॥ १५ ॥  
सार विचार नहीं मुमं मोहि ।  
अलप घणौ गुण लीज्यौ जोय ॥ १६ ॥  
उपजै पुन्य अपार ।  
ते पावै शिवसार ॥ १७ ॥  
तस्य भाषा विनिर्मित ।  
भव्यानां खलु शर्मदा ॥ १८ ॥

संवत् १८६० का भाद्रपमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ ८ लिखते वैष्णव चेतनदासे नासरोदा नगर  
मध्ये शुभं भवतु ।

८७, हरिवंशपुराण ।

रचयिता श्री नेमीचन्द्र । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ७७. साइज १२x५ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या  
१३०५. रचना संवत् १७६६. लिपि संवत् १७६३. प्रति पूर्ण है । इसका दूसरा नाम नेमीश्वर रास भी है ।

मंगलाचरण—

श्री भगवान जी बीनडं, अरहंत देव निरदोष अंतरतौ ।  
छीयांलोस गुण शोभता, शोभै हो चौतीस अतिशय सारतौ ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

देस दु डोहड सोभितौ नाना  
कलंपवृद्धिकी वोपमां जसी  
चहुं दिसि सरवर वोपिका  
निरमल पाणी स्यौ भरया,

विधि वृच्छ भलो सुसार तौ ।  
मन वांछित फल का दत्तारतौ ॥ १ ॥  
नदी कुवा अर कुंड अपार तौ ।  
मल उपरि भ्रम करै गुजार तौ ॥ २ ॥

अंबावती गढ़ सोमिता,  
कोट बुरजि अर कोगुरा,  
बाजार सोढे चौपाँड तणां,  
पाटवैर भौरिया सेवै,  
कौलंग सोभा वरणाइ,  
अन धन कपडा स्यौ भरया,  
महिला की पंक्ति सोभिति  
मैहो चौबारा अति घणा,  
चन्द्रवदन सी कामिणी,  
गोखा भांकी भांकती,  
घरि घरि तोरण बाँद जे  
घरि १ गावै कामिणी

गिर बिचि बैसे अपार ।  
देरबाजा बहु सार ॥ ३ ॥  
विधि २ को वस्त अपारतौ ।  
भणिए माणिक मोती परवारतौ ॥ ४ ॥  
गली २ सोभो बाजारतौ ।  
भरिबैचै लो मोल आरतौ ॥ ५ ॥  
संतभूमि उपरि विसतार तौ ।  
नरनारी सब देव कुमार तौ ॥ ६ ॥  
चस्त्राभूषण पहिरयां सार तौ ।  
चन्द्र सूर्य लीजै तिहि बारतौ ॥ ७ ॥  
घरि घरि मंगल होयविवाह तौ ।  
घरि २ जानै पुत्र उछाह तौ ॥ ८ ॥

\* सौरठा \*

अनावती सुभ थान सवाइ जैसिब महाराजई ।  
पातिसाह लाखै मान राजकरै परिवार स्थु ॥

दया सोल पालै सदा,  
तिन की महिमा अतिघणी,  
भावक लोक सबै सुखी,  
मन बाँछित सुख भोगवै,  
रथयात्रा निकसे सदा,  
पोसो सामायिक करै,  
जिनवर थानिक सोभिता,  
सोवन कलस सिखरा परे,  
आवक लोगे सबै मिलै,  
निहचौ देव गुरु शांति को,

बैरी जीति कीया सब जेर तौ  
हिंदु की पति राखण मेरतौ ॥ १० ॥  
नवनिधि स्यौ भौरय भंडार तौ ।  
दुख न जाणै कोई लंगार तौ ॥ ११ ॥  
अष्टविधि पूजा कौ अधिकार तौ ।  
गुरु कौ चिनैकरै भण्य रायतौ ॥ १२ ॥  
धनला गिर परवत कै अंग तौ ।  
घंटो बाजे धुजा उत्तंग तौ ॥ १३ ॥  
पूजा करि जपै अरिहंततौ ।  
चारथौ दान करै दयावंत तौ ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

आवक कौ धरंण करयो,  
अव जो गुरु उपदेश दे,  
मूलासंघ महिमा घणी,

जिनधर्म विते महंत ।  
तो कहूँ महिमोवंत ॥ १५ ॥  
बलात्कार गण सार ।

सरसति गङ्ग महा सोमिता,  
कुंदकुंद भट्टारक भणौ,  
सूत्र सिधांत ल्याया तबै,  
तां पाछै क्रमि क्रमि भया,  
पंच महाव्रत पालवै,  
भट्टारक सब उपरै,  
कीरति चहुं दिसि विस्तरी,  
प्रमत्त मै जीतै नहीं,  
खिमा खडग स्यौ जीतिया,  
ताकौ सिष नेमचंद जी,  
खेठी गोत पदमावत्या,

कुंदकुंदा अवतार ॥ १६ ॥  
जिहि नै विदेह ले गया देवतै ।  
प्रगट बात जाणै सब एव तौ ॥ १७ ॥  
भट्टारक गुणधाम ।  
आचारै अभिराम ॥ १८ ॥  
जग कीरति जग जोति अपारतौ ।  
पांच आचार पालै सुभसारतौ ॥ १९ ॥  
चहुं दिसि मै सब ताकी आणतौ ।  
चौरांगवै पट नायक भांणतौ ॥ २० ॥  
लघु भ्राता तसु भगडु जाणितौ ।  
खंडेलवाल तसु वै सब खांणितौ ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

नेमचंद कै सिख भला,  
पंडित चतुर विवैक सब,  
लिखमीदास दोदराज जी,  
ज्यां दीयो उपदेस नै,  
देव गुरु शास्त्रप्रसाद थी,  
रच्यौ रास श्री नेम कौ,  
आचार्य ब्रह्म बाई सबै,  
नेमचंद बिनती करै,  
सतरासै गुणहत्तरै,  
रास रच्यौ श्री नेमि कौ,  
दोय सर्वैया दीपता,  
दोइ सै साठि दोहा कहा,  
एकहजार दस ढाल की,  
वार्त्ता ठांम पैत्तीस मै,  
गाथा दोहा सोरठा,  
वार्त्ता उपरि जांणि ज्यौ,

झगरसी रुपचंद ।  
सील तणा सब कंद ॥ २२ ॥  
पंडित सब मनकें सिर मौरतौ ।  
रासौ रच्यौ विविध स्यौं दोरतौ ॥ २३ ॥  
सरसति माता तणौ पसावतौ ।  
नेमिचंद मनि घरकरि भावतौ ॥ २४ ॥  
पंडित सबयन स्यौं मनहारितौ ।  
कवियन सबही लेहु सुधारितौ ॥ २५ ॥  
सुदि आसोज दसे रवि जांणतौ ।  
बुधि सारु मै कीयौ वखांणतौ ॥ २६ ॥  
सोरठा कहियै तहां पचीस तौ ।  
एकादास कड खैर जगीसतौ ॥ २७ ॥  
गाथा कही सबै शुभ शुद्ध तौ ।  
कहे अधिकार छत्तीस प्रसिद्ध तौ ॥  
सबमिलि कहा तेरासैं आठतौ ।  
सब ग्रंथ इकईस सेवाल आठसौ ॥ २८ ॥

जा लागि भाषा विस्तरी,  
सकल संघ आनंद रहौ,

चन्द्रसूर गिर मेर सुदीसतौ ।  
नेमचंद हम देय असीसतौ ॥ ३० ॥  
रास भएँ श्री नेम कौ ॥ टेर ॥

ई कथन में श्रेणिक ने गणधर कह्यो । पाछें कवि अरज देस नाम वर्णन, राजा कौ वर्णन, देवस्थल को, गुरु को वर्णन, कवि को वंश वर्णन । इति श्री नेमिचन्द्र कृत हरिवंश भाषायां देशगुरुवर्णन ग्रन्थ कर्त्ता कथन वर्णनो नामाधिकाः पटत्रिंशत्तमः ।

इति श्री भट्टारक श्री जगत्कीर्त्ति शिष्य नेमिचन्द्र कृत नेमरासौ संपूर्ण । भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति का शिष्य पांडे दयाराम जाति खोनी नरायणा का वासी दिल्ली का जेसिंहपुरा मध्ये लिखी मित्ती चंत सुदी १३ रविवार संवत् १७६३ का । भट्टारक जो श्री महेन्द्रकीर्त्ति जी का पट समय लिखी ।

८८. होलो की कथा ।

रचयिता श्री छोतर ठोलिया । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ६. साइज ११।।x१।। इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या १०१. रचना संवत् १६६०. लिपि संवत् १८१०.

चरण—

बंदौ आदिनाथ जुगिसार जा प्रसाद पावुं भव पार ।  
वरधमान की सेवा करै जौ संसार बहुरि नहि फरै ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

सौलासे साठे शुभ वष,  
सोहै मोजावाद् निनाम,  
सोहै राजा मान कौ राज,  
सुखी सबे नगर में लोग,  
इहि त्रिधि कलयुगमें दिनरात,  
छातर ठोल्यो वीनती करै,  
पढित आगै जोहै हाथ,  
बार बार या विनती जाण,  
पढित हासौ को मति करौ,

फालगुण शुक्ल पूर्णिमा हर्ष ।  
पूजै मन की सगली आस ॥  
जिहि बांधी पूरव लगै पाज ।  
दान पुण्य जानै सहु भोग ।  
जाणै नहीं दुख की जाति ।  
हिवथा माहि जिन वांणी घरै ।  
भूलो हूँ तौ विमि ज्यौ नाथ ।  
भूलो आतर आणी ठाण ।  
समा भाव मुक्त उपरि धरो ।

## परिशिष्ट

### १. पञ्चमचरिय ।

रचयिता महाकावि त्वयंसु त्रिमुचनत्वंसु । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ३७५. साइज ११×४।। डब्ल ।  
प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर । लिपि संवत् १५४१ वैशाख सुदी १५ ।

प्रारम्भिक अंश—

( १ )

|                     |                              |
|---------------------|------------------------------|
| एनह एनकमल-कोमल-मणहर | — वर-वदल-कंति-सोहिहं ।       |
| उसहस पायकमलं        | सुनुरसुरवांदियं सिरसा ॥ १ ॥  |
| चउमुहसुहन्मि सद्दो  | इंती सद्दं च मणहरो अत्थो ।   |
| विणिण वि सयंसुकज्जे | कि कीरइ कइयणो सेसो ॥ २ ॥     |
| चउमुहएवत्स सद्दो    | सयंसुएवत्स मणहरा जीहा ।      |
| भइम्स य गोगाहणं     | अज्जवि कइणो ए पार्वंति ॥ ३ ॥ |
| जलकीलाए सयंसु       | चउमुहएव च गोगाहकहाए ।        |
| भहं च मच्छवेहं      | अज्जवि कइणो ए पार्वंति ॥ ४ ॥ |
| तावन्नि च सच्छंदो   | भमइ अवभंस-मच्च सारंगो ।      |
| जाव ए सयंसु-वायरण-  | अंकुसो पडइ ॥ ५ ॥             |
| सच्छह-विचइ-दाडो     | छंदालकर-एहर-दुप्पिच्छो ।     |
| वायरण-केसरहदो       | सयंसु पंचाणणो जयड ॥ ६ ॥      |
| दीहर-सनास-णालं      | सददलं अत्थकेसरवविचा ।        |
| वुह-महुयर-पीयरसं    | सयंसु-कटुप्पलं जयड ॥ ७ ॥     |

( २ )

|                            |                            |
|----------------------------|----------------------------|
| वड्ढमाण-सुह-हुहिर विणिमाय, | रामकहाणए एह कमागय ।        |
| अक्खरवास-जलोहमणोहर,        | सुयलंकार-छंदमच्छोहर ।      |
| दीह-सनास पवाहावंकिय,       | सक्कय-पायय पुट्टिणालंकिय । |
| देसीभासा-उभय-उडुल्ल,       | कविदुक्ककरणसदसिजायक ।      |
| अत्थवहल-उल्लोकाणिहय,       | आसासय-सम तूहपरिडिय ।       |

|                          |                           |
|--------------------------|---------------------------|
| एह रामकह-सिरि सोहंती,    | गणहरदेविहिं दिट्ट वहंती । |
| पच्छई इंदभूह-आयरिणं,     | पुणु धम्मेण गुणालकरिणं ।  |
| पुणु एवहि संसाराराणं,    | कित्तिहरेण अणुत्तरवाणं ।  |
| पुणु रविसेणायरिय-पासाणं, | बुद्धिण अवगाहिय कइराणं ।  |
| परमिण-जणणि-गन्धसंभूणं,   | मारुयएव-रुव-अणुराणं ।     |
| अइतणुएण पईहरगत्तं,       | द्विवरणासं पविरत्त-दंते । |

### घत्ता

णिम्मलपुणणपवित्तकहं कित्तिणु आढप्पइ ।

जेण समाणिज्जंतएण धिरकित्ति विटप्पइ ॥ २ ॥

|                             |                             |
|-----------------------------|-----------------------------|
| बुहयण सयंभु पइ विणणवड,      | मइं सरिसउ अणुण एत्थि कुकइ । |
| वायरणु कयावि ए जाणियउ,      | णउ वित्ति-सुत्त वक्खाणियउ । |
| णउ पच्चाहारहो तत्ति किय,    | णउ संधिहे उवरि बुद्धि ठिय । |
| णउ णिसुणियउ सत्तविहत्तियाउ, | छाव्विहउ समास-पउत्तियाउ ।   |
| छक्कारय दस लयार ए सुय,      | वोसो वसग्ग पच्चव पहुय ।     |
| ए बल/वल-धाव-णिवाय-गणु,      | णउ लिगु उणोइ चउक्कु वयणु ।  |
| णउ बुज्झिउ पिंगल पत्थारु,   | णउ भुम्मह दंडियलंकारु ।     |
| ववसाउ तोवि एउ परिहरमि,      | वरि रयडा वुत्त कवु करमि ।   |

### प्रश्न समाप्ति—

इय पोमचरियसंसे सयंभुएवस्सकहविउव्वरिए,

तिहुयणयंसभुरइए । रावणहवणिवाणपव्वणपव्वमिणं ॥ १ ॥

वंदइ आसिय तिहुयणसयंभुपरिवीरइ यस्मिमहकव्वे ।

पोमचरियस्स सेस सपुण्णो णवइमोसग्गो ॥

संधि ६० ॥ पोमचरियं सम्मत्तं ॥

### प्रशस्ति—

सिरिबिज्जाहरकंडे संधीओ होंति बीसपरिमाणं ।

उब्भकंडम्मि तहा वावीस मुणेइ गणणाए ॥

चउइहसुन्दरकंडे एकाहिय बीस जुब्भकंडे य ।

उत्तरकंडे तेरह संधीओ णवइ सव्वाउ ॥



तिहुयणसयंभु एवरं एक्को कइरायचक्किणुण्णो ।  
 पंचमचरियस्स चूडामणि व्व सेसं कयं जेण ॥  
 कइरायस्स विजयसेसियस्सविट्थारिओ जमो भुवणे ।  
 तिहुयणसयंभुणा पोमचरियसेसेण णिस्सेसो ॥  
 तिहुयणसयंभुधवलस्स को गुणो वणिणउ जए तरइ ।  
 बालेण वि जेण सयंमुकव्वभारो समुव्ववूढो ॥  
 चायरणदढक्खंधो अगमअगोपमाणविद्यडओ ।  
 तिहुयणसयंभुधवलो जिणतित्थे वहउ कव्वभरं ।  
 चउमुइसयंभुवाएण चाणियत्थं अचक्खमाणेण ।  
 तिहुयणसयंभुरइयं पंचमिचरियं महच्छरियं ॥  
 सव्वे वि सुयापज्जर सुयव्वपढअक्खराडंसिक्खंति ।  
 कइरायस्स सुओ पुणसुयव्वसुइगव्वभसंभूओ ॥  
 तिहुअणसयंभु जइ एहो हंतुणंदणो सिरिसयंभुदेवस्स ।  
 कव्वं कुलं कवित्तं तो पच्छको समुद्धरइ ॥  
 जइ ए हुउ च्छंदचूडामणिस्स तिहुयणसयंभुलहुंतणउ ।  
 तो पद्धडियाकव्वं सिरिपंचमि को समारेउ ॥  
 सव्वो वि जणो गिएहइणियतायविट्तदव्वसत्ताणं  
 तिहुयणसयंभुणा पुणुगहियं वंसु कइत्तदव्वसत्ताणं ॥  
 तिहुयणसयंभुमेक्कं मोत्तूणं सयंमुकव्वमयरहरो ।  
 को तरइ गंतुमंतं मज्झेणिस्सेससीसाण ॥  
 इय चारुपोमचरियं सयंभुपेवेण रइयंसमत्तं ।  
 तिहुयणसयंभुणा तं समाणियं परिसमत्तमिणं ॥  
 चेष्टितमयणं चरितं करणं चारित्रिसित्तमोयशब्दापेदया ।  
 या रामोयणमित्युक्तं तेन चेष्टितं रामस्यबोधपति ॥  
 शृणोति जत्त तम्यायुर्वृद्धि मोयते पुण्यं वा ।  
 श्रीकृष्णखड्गहस्तारिपुरपि ए करोति वैरमुपसमेति ॥  
 सो वरसुयसिन्धुवइ रायतणयकयपोमचरिय अवसेसं ।  
 संपुण्णं वंदइवलहुउसंपुण्णं गीइदमंथणसुयणंतविरइयं ॥  
 वंदइ पढमतणयस्स वेच्छत्त दाए तिहुयणसयंभुणारइयं  
 मइयय वंदइयणागसिरिपालपहड भव्वयणसमूहस्स ।

आरोगतमसिद्धौ सति सुहृद्भिर सव्वरस ॥

सत्तमहामर्गगीतरयणमूसासुरमहण्णा ।

तिहुयण सयभुज तयापरिण्ड वंदइ यमणतण ॥

संवत् १५४१ अये वैशाख सुदी १५ सामवायं संख्यां १२७२५ मरे अनुगधा नक्षत्रे च टिका ६०  
सुरिताण बहलोल राज्ये—

सकलविधिविधान (नयनन्दि) पृष्ठ १८१ नं० ३६ के मंगलाचरण के आगे  
की भाग ।

दरविद्यसुवण्ण गुणगणसलग्गु,  
एणं वसुहविलाभिणि हियगहाक,  
पडिक्खवक्खल पर्याहिय एगोहु,  
तहि सुकइ कहइवाचत्तहार,  
ताहि सरसइ कठाहरण देउ,  
तिहुयण एरायण भुअणभाण,  
पम्माखं पगयणेक्कचंदु,  
तहो येमिणामु ठक्कक गरिहु,  
ते लोककित्तिमि एहे थ मु  
महिमा एणिहे मउडुवर्माइडु.

मुत्तार्त्तकरिउ महामहग्गु ।  
अत्थीहावन्ती विसर सार ।  
सिगारविलासावससमोहु ।  
एयरी चवगण धरणधार ।  
रणरंगमल्लु आलीसमेउ ।  
परमेसर अत्थी जणणिहाणु ।  
जय सारणिवास भूवण्णगिहु ।  
स एणुपुण्णपुंजवजाणहु ।  
सुपण्डित चहुविहार एासु ।  
कार विउ कित्तणु तै गरिहु ।

वत्ता

ताहि अत्थसूरहरिसिधुमुणि,  
वर्पास तरंगणि मयरइक,  
मन्नाविण्णइडु, एयच्छातेण,  
पउत्त पऊरिय चित्ताहभासु  
तुमकुल किपि कित्तु मणिहु.  
तिणा भणियं ए कइत्त मुयेमि  
तिणा भणियं ए कइत्त मुयेमि,  
परं महु अट्टगुणाहुय जेव,  
ए देवहि दाणय विंदहि पत्त,  
गुणेक्कु विकत्थवि पाविउ जेण,  
मए पुणु अगुलि उज्झिय तासु,

जिणसासणु पुत्त रणु ।  
तवसि र अहु मण च रणु ॥ २ ॥  
मुण एयण १ पसणमणेण ।  
सुकोमल निम्भन वाणं वलासु ।  
एयामिणजंकइ एाड्ढादिहु ।  
एयामण जंरुइ एाइहदिहु ।  
अयाणमणो २.णु काई करेमि ।  
एलद्ध पसद्धि मिद्धि तेवि ।  
असेम गुणायर अच्छर वत्त ।  
पयवइ सो एययणिय तेण ।  
पणामउ मे गुणलेसु विण्णसु ।

## धृत्ता

पराणिदाणिदलेसलेदणु,  
कलिकंदल अट्टवि गुणगुरुव,  
परेणदपमुहगुणजडगवत्त,  
मा चारु चायसुहडत्तणेण,  
नभेण भुवण कओ रा भवु,  
रुसेण परुपरामेहयात्त,  
एणेण कणयकीडिहि कयत्थ,  
एणविदुंस्थिय कयविरामु,  
तक्खयरक्खणे गरुडहो अभंगु,  
दिणणउं सिवेण सप्पहोपसंसु,  
जेणहु दवीइणां अट्टिदणण,

सदवदरत्तांणद्विय ।  
मइं मुएविकसुसांठय ॥३॥  
महुतोविकित्तिणउ किंवरत्त ।  
अह हवइ सरस सुहइत्तणेण :  
गयकणम्बलेदिणणउं दियहंसवु ।  
खत्तियहणेवि दिण्णिणयहरित्ति ।  
कयत्तित्तचित्त विप्पाण सत्थ ।  
हरिचंदुं चंदमाणहियणासु ।  
जीमूयवाहणेणांवि अंगु ।  
दइं क्खणमसरोरमंसु ।  
को पावइ तिदुयणे तहो पइणण ।

## धृत्ता

तहो चारुचाय चत्तणहचलिय,  
अज्जविजण जणियाणंदभरे,  
एक्कलंकाकित्तियाए जुत्तवीरवित्तियाए,  
कुंमुकुंभयणसुंभु सारणो सुओणिसुंभु,  
जुंजुंजं नवंभुतारुणीलुमारुइकुमारु,  
दोणु भीममो असंगु दुद्धरो कलिगुतुंगु,  
अज्जणो गियांरजूरु आंसथांसु आसपूरु,  
आहवे अदिण्णिपिंडि कालेसेणु पंचहुट्टि,  
कावली तहेन मुच्चुं सूरवीरुणपवंचु,  
कुं दु चंदुं डिडएउ खडयणु खदएउ,  
साहंमीउं साहंमिल्लु भीमएउं भाइमल्लु,  
मिघली महंमहणुं घुंघु सोसलंगु वणु,  
मिघइ उवंगइउ वज्जसत्तविंपएउ,  
आरुणीउं आरुणत्थु पट्टहोइ ओविइत्थु,  
सुदउंसु वीरराउ कक्कसींसु अंगराउ,

कित्तिरमणिविभयकणि ।  
भणइ भुवण भवणंतर ॥ ४ ॥  
देवदाणवाहमल्लु रावणो जगेक्कमल्लु ।  
इंदइ महिददक्खु अक्खओ गवक्खु वक्खु ।  
लक्खणो त्रिवक्खतासु रामचंदु सप्पयासु ।  
साहंहो विसल्लु सल्लु भीमसेणु भोममल्लु ।  
कोणहु कसि कसंणासु दुद्धरिडुकालपासु ।  
एओ तलेपहारि खुण्णखरुपहारि ।  
वकिवीरिउम्भियकुं संकुकेसरी गियकु ।  
वामेएउ मोरएउं केउघोसुसावलेउ ।  
इहु संखेलाउं गुल्लु देवईउ देवतुल्लु ।  
रोमंसोसरोमेजंघु रिच्छकहिताडिजंघु ।  
चंडइइ इहुसंसु मुट्टिउं मणिहु रंसु ।  
वोसलोविसालेवत्थु इत्थिवक्खु सुइवत्थु ।  
सालिवाहणो रसिल्लु कुंतली सुकुंतलिल्लु ।

घत्ता

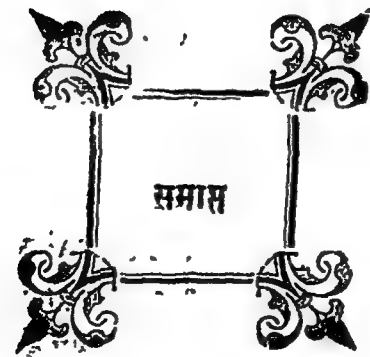
इयु अवगविरे विवपयावजुय,  
ससिकामकुसुमसंकासस,  
मणु जणवकु वम्मीउ वासु,  
काऊहलु वाणु मऊरुसूरु,  
वारायणु वरणाउ विवियह,  
जसइधु जणय रायणामु,  
पालिउउ पाणिण पवंगसणु,  
सिरि सिहणदि गुणमिहभहं.  
अकलंकु विसमवाइय विहण्डि  
भम्भुइ भाराह भरहुअ महंतु,

सुहीढमन्त्रिए असरिस ।  
पसरपूरपुणियविस ॥ ५ ॥  
वररुइ वामणु कावकालियासु ।  
जिणसणु जिणागम कमलसूरु ।  
सिरिहाइसुराय संहरु गुणह ।  
जयदेउ जणमणुणेंदकामु ।  
पायंजलि पिगलु वीरसेणु ।  
गुणभह, गुणल्लु समंतभह ।  
कामहुरु गुंविटु दंडि ।  
चउमुहु सयंभु कह पुण्यंतु ।

घत्ता

सिरिचंदु पेहाचंदु वि विटुह,  
कंद सिरि कुमारु सरंसइ कुंमरु,

गुणगणणदि मणोहुरु ।  
कित्ति वितासिण्णि सेहुरु ॥ ६ ॥



# शताब्दी के अनुसार ग्रन्थों की प्रतिलिपियों की सूची

## १४ वीं शताब्दी

अपभ्रंश

|    | नाम                     | लेखनकाल                      | रचनाकाल |
|----|-------------------------|------------------------------|---------|
| १. | उत्तरपुराण [ पुष्पदंत ] | १३६१ ज्येष्ठ बुदी ६ गुरुवार  |         |
| २. | क्रियाकलाप [ अक्षत ]    | १३६६ फाल्गुन सुदी ५ शुक्रवार |         |

## १५ वीं शताब्दी

अपभ्रंश

|    |                                    |                            |      |
|----|------------------------------------|----------------------------|------|
| ३. | आदिपुराण [ पुष्पदंत ]              | १४६१ भाद्रपद बुदी ६ बुधवार |      |
| ४. | पार्श्वनाथचरित्र [ पद्मकीर्ति ]    | १४६४ भाद्रपद सुदी २ शनिवार | ११८६ |
| ५. | षट्कर्मोपदेशरत्नमाला [ अमरकीर्ति ] | १४७६ अषाढ सुदी ५ बुधवार    | १०७४ |

## १६ वीं शताब्दी

संस्कृत

|     |                                       |                           |      |
|-----|---------------------------------------|---------------------------|------|
| ६.  | आदिपुराण [ जिनमेनाचार्य ]             | १५८७ मंगमिर बुदी २ सोमवार |      |
| ७.  | उत्तरपुराण सटीक [ प्रभाचन्द्राचार्य ] | १५७७ अषाढ बुदी २ रविवार   | १०८० |
| ८.  | धन्यकुमारचरित्र [ सकलकीर्ति ]         | १५३३ पौष सुदी ३ गुरुवार   |      |
| ९.  | धर्मपरीक्षा [ अमितिगति ]              | १५६६ पौषसुदी ६ शुक्रवार   | १०७० |
| १०. | धर्मसंप्रदायकाचार [ मेधावी ]          | १५४२ कार्तिक सुदी ५ गुरु. | १५४१ |
| ११. | प्रतिष्ठापाठ [ आशाधर ]                | १५६० वैशाख सुदी १५ शनि.   | १०८५ |
| १२. | प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति [ अ० रत्नदेव ] | १५७७ अषाढ सुदी ३          |      |
| १३. | "                                     | १५४३ भाद्रपद सुदी ६       |      |
| १४. | राजवार्त्तिक [ भट्टकलंकदेव ]          | १५८२ अषाढ बुदी १३         |      |
| १५. | आवकाचारसार [ पद्मनन्दि मुनि ]         | १५६४ वैशाख सुदी ७ सोमवार  |      |
|     | सम्यक्त्व कौमुदी [ अक्षत ]            | १५८८ फाल्गुण सुदी १४      |      |

|     |                               |      |                       |
|-----|-------------------------------|------|-----------------------|
| १७. | "                             | १५६० | माघ बुदी १३ रविवार    |
| १८. | हरिवंशपुराण [ ब्रह्म जिनदास ] | १५५५ | मंगसिर बुदी १५ रविवार |

## प्राकृत—अपभ्रंश

|     |                                  |      |                          |      |
|-----|----------------------------------|------|--------------------------|------|
| १६. | अमरसेनचरित्र [ माणिक्यराज ]      | १५७७ | कार्तिक बुदी ४ रविवार    | १५७६ |
| २०. | आत्मसंवाध काव्य [ रङ्ग ]         | १५३४ | श्रावण सुदी ५ मंगलवार    |      |
| २१. | अदिपुराण [ पुष्पदंत ]            | १५६४ | श्रावण सुदी ३ मंगलवार    |      |
| २२. | करकंडुचरित्र [ कनकामर ]          | १५८१ | चैत्र बुदी ६ शुक्रवार    |      |
| २३. | कमप्रकृति [ नेमिचन्द्र ]         | १५७७ | आषाढ सुदी ३              |      |
| २४. | क्रियाकलापस्तुति [ समंतभद्र ]    | १५७७ | वैशाख सुदी ४ शुक्रवार    |      |
| २५. | चन्द्रप्रभचरित्र [ यशःकीर्ति ]   | १५८३ | आषाढ सुदी ३ बुधवार       |      |
| २६. | जम्बूस्थानीचरित्र [ महाकवि चोर ] | १५१६ | मांसिर सुदी ११           | १०७६ |
| २७. | नागकुमार चरित्र [ माणिक्यराज ]   | १५६२ | पौष बुदी ५ मंगलवार       | १५७६ |
| २८. | पद्मचरिय [ त्रिभुवन स्वयंभु ]    | १५४१ | वैशाख सुदी १५ मंगलवार    |      |
| २९. | पद्मपुराण [ रङ्ग ]               | १५५१ | फाल्गुन सुदी ६ मंगलवार   |      |
| ३०. | पार्वनाथचरित्र [ श्रीधर ]        | १५७७ | आषाढ सुदी ३              | ११८६ |
| ३१. | प्रद्युम्नचरित्र [ श्री सिंह ]   | १५८७ | माघ बुदी ५ रविवार        |      |
| ३२. | "                                | १५६५ | भाद्रपद सुदी १३          |      |
| ३३. | "                                | १५१८ | ज्येष्ठ सुदी ६ शुक्रवार  |      |
| ३४. | बाहुबलिचरित्र [ धनपाल ]          | १५८६ | वैशाख सुदी ७ बुधवार      | १४५४ |
| ३५. | "                                | १५८४ | आसोज बुदी ५ बुधवार       |      |
| ३६. | भविष्यदत्त चरित्र [ धनपाल ]      | १५६५ | माघ सुदी १५ रविवार       |      |
| ३७. | "                                | १५८६ | मंगसिर बुदी २ बृहस्तिवार |      |
| ३८. | "                                | १५८२ | श्रावण सुदी ११ रविवार    |      |
| ३९. | "                                | १५४० | आसोज सुदी १२ शनिवार      |      |
| ४०. | मदनपराजय [ हरिदेव ]              | १५७६ | कार्तिक सुदी १३          |      |
| ४१. | मेघेश्वरचरित्र [ रङ्ग ]          | १५६६ | ज्येष्ठ बुदी ५ मंगलवार   |      |
| ४२. | यशोधरचरित्र [ पुष्पदंत ]         | १५७५ | मंगसिर सुदी ४ शुक्रवार   |      |
| ४३. | "                                | १५८० | आसोज सुदी १० शनिवार      |      |

|     |                       |                      |      |                               |      |
|-----|-----------------------|----------------------|------|-------------------------------|------|
| ४४. | रत्नकरांडशास्त्र      | [ श्रीचन्द्र ]       | १४८२ | शक १४४७                       | ११५  |
| ४५. | वद्धमान चरित्र        | [ जयमित्रश्ल ]       | १५६३ | ज्येष्ठ सुदी ५ बृहस्पतिवार    |      |
| ४६. | "                     | "                    | १५४५ | वैशाख सुदी २ रविवार           |      |
| ४७. | पट्टकर्मोपदेशरत्नमाला | [ अमरकीर्ति ]        | १५६२ | कार्तिक सुदी ५ शनिवार         |      |
| ४८. | "                     | "                    | १५५८ | चैत्र सुदी १० सोमवार          |      |
| ४९. | "                     | "                    | १५५३ | ज्येष्ठ सुदी ५ मंगलवार        |      |
| ५०. | पट्टपाहुड सटीक        | [ कुन्दकुन्दाचार्य ] | १५८५ | माघ सुदी ४                    |      |
| ५१. | "                     | "                    | १५६४ | माघ सुदी २ बुधवार             |      |
| ५२. | श्रीपालचरित्र         | [ नरसेन ]            | १५१२ | चैत्र सुदी १२ मंगलवार         |      |
| ५३. | "                     | "                    | १५८४ | शक १४४६ भाद्रपद सुदी ८ रविवार |      |
| ५४. | "                     | "                    | १५७६ | मंगसिर सुदी २ बुधवार          |      |
| ५५. | सकलविधिविधानकाव्य     | [ नयनन्दि ]          | १५८० | चैत्र सुदी ४ गुरुवार          |      |
| ५६. | सुदर्शनचरित्र         | [ नयनन्दि ]          | १५६७ | माघ सुदी २ बुधवार             | ११०० |
| ५७. | "                     | "                    | १५०४ | मंगसिर सुदी ६ गुरुवार         |      |
| ५८. | सुलोचनाचरित्र         | [ गणिवेवसेन ]        | १५७७ | पौष सुदी ६ सोमवार             |      |
| ५९. | सुकुमारचरित्र         | [ श्रीधर ]           | १५४६ | ज्येष्ठ सुदी ६ बुधवार         | १२०८ |
| ६०. | हरिप्रेम चरित्र       | [ अज्ञात ]           | १५८३ | आसोज सुदी १० शनिवार           |      |

## १७ वीं शताब्दी

## संस्कृत

|     |                      |                    |      |                               |      |
|-----|----------------------|--------------------|------|-------------------------------|------|
| ६१. | जम्बूत्वासीचरित्र    | [ ब्रह्म जिनदास ]  | १६६३ |                               |      |
| ६२. | जयकुमारपुराण         | [ ब्रह्म कामराज ]  | १६६१ | भाद्रपद सुदी ३ शुक्रवार       |      |
| ६३. | जीवंधरचरित्र         | [ शुभचन्द्र ]      | १६३६ | अषाढ सुदी १३ सोमवार           | १५६६ |
| ६४. | दुर्गापद्मप्रबोध     | [ श्री बृहन्नगणि ] | १६८१ | कार्तिक सुदी ७                |      |
| ६५. | धर्मपरीक्षा          | [ आनतिगति ]        | १६६६ | कार्तिक सुदी ३ शुक्रवार       |      |
| ६६. | नेमिनाथपुराण         | [ ज० नेमिदत्त ]    | १६४३ | शक १५०८ फाल्गुन सुदी ८ सोमवार |      |
| ६७. | "                    | "                  | १६७४ | फाल्गुन सुदी ५ शुक्रवार       |      |
| ६८. | पद्मपुराण            | [ धर्मकीर्ति ]     | १६७० |                               |      |
| ६९. | भक्तानरस्तोत्रवृत्ति | [ गुणसुन्दर ]      | १६५४ | कार्तिक सुदी १४               |      |

|     |                                           |      |                          |
|-----|-------------------------------------------|------|--------------------------|
| ७०. | भक्तामर स्तोत्र वृत्ति [ ब्रह्म रायमल्ल ] | १६६८ | कार्तिक सुदी १३ शनिवार   |
| ७१. | " [ अमरप्रभसूरि ]                         | १६३६ | माघ सुदी २ सोमवार        |
| ७२. | " "                                       | १६६५ | पौष सुदी ११ बृहस्पतिवार  |
| ७३. | यशोधर च रत्न [ ज्ञानकीर्ति ]              | १६६१ | आवण सुदी २ बृहस्पतिवार   |
| ७४. | " [ सकलकीर्ति ]                           | १६३० | आषाढ सुदी २ सोमवार       |
| ७५. | वरांगचरित्र [ बद्धमानदेव ]                | १६६० | ज्येष्ठ सुदी १४ शुक्रवार |
| ७६. | सम्यक्त्वकौमुदी [ अज्ञात ]                | १६२५ | शके १४६० मंगसिर शुक्ला ८ |
| ७७. | " [ गुणाकरसूरि ]                          | १६११ | भाद्रपद सुदी ४           |
| ७८. | क्षुमच्छरित्र [ ब्रह्मजित ]               | १६८० | मंगसिर सुदी ५ रविवार     |
| ७९. | हरिवंशपुराण [ ज्ञ० जिनदास ]               | १६६१ | ज्येष्ठ सुदी ४           |
| ८०. | " "                                       | १६४५ | कार्तिक सुदी ५ सोमवार    |
| ८१. | हरिवंशपुराण [ जिनसेन ]                    | १६६२ | पौष सुदी ५               |
| ८२. | " "                                       | १६१६ | आसोज सुदी १ शुक्रवार     |

## प्राकृत -अपभ्रंश

|     |                                |      |                             |
|-----|--------------------------------|------|-----------------------------|
| ८३. | आचारांग सटीक [ शीलांकाचार्य ]  | १६०४ | मंगसिर सुदी ३               |
| ८८. | आत्मसंबोधकाव्य [ पं० रङ्गधू ]  | १६०७ | अषाढ सुदी ८ शनिवार          |
| ८५. | आदिपुराण [ पुष्पदंत ]          | १६६२ | १६६३ आवण सुदी ५ मंगलवार     |
| ८६. | " "                            | १६६४ | कार्तिक सुदी ६ शुक्रवार     |
| ८७. | उपासकाध्ययन [ वसुनन्दि ]       | १६२३ | पौष सुदी २ शुक्रवार         |
| ८८. | " "                            | १६१२ | भाद्रपद सुदी ८              |
| ८९. | कर्मकांडसटीक [ सुमतिकीर्ति ]   | १६२२ | भाद्रपद सुदी १५             |
| ९०. | चन्द्रप्रभचरित्र [ यशःकीर्ति ] | १६०३ | शके १४६८ आवण सुदी १० शनिवार |
| ९१. | जिनदत्तचरित्र [ पं लाखू ]      | १६११ | चैत्र सुदी ११ सोमवार        |
| ९२. | धनकुमारचरित्र [ पं० रङ्गधू ]   | १६३६ | फाल्गुन सुदी ७ रविवार       |
| ९३. | नागकुमारचरित्र [ पुष्पदंत ]    | १६१२ | ज्येष्ठ सुदी १२ शनिवार      |
| ९४. | पद्मपुराण [ रङ्गधू ]           | १६५६ | मंगसिर सुदी १३ सोमवार       |
| ९५. | पाण्डवपुराण [ यशःकीर्ति ]      | १६३६ | भाद्रपद सुदी १ रविवार       |
| ९६. | " "                            | १६१६ | भाद्रपद सुदी १४ बुधवार      |



|      |                   |                    |      |                         |
|------|-------------------|--------------------|------|-------------------------|
| ६७.  | पाण्डवपुराण       | [ यशः कीर्ति ]     | १६०२ | माघ सुदी १५             |
| ६८.  | पद्मनेत्र चरित्र  | [ पद्मकीर्ति ]     | १६११ | आषाढ सुदी ६ शुक्रवार    |
| ६९.  | पञ्चास्तिकायभाष्य | [ टी. अमृतचन्द्र ] | १६३७ | आषाढ सुदी १४ शनिवार     |
| १००. | सुग्रीवचरित्र     | [ भगवतीदास ]       | १७०० | फागुण सुदी ७ रविवार     |
| १०१. | मेघेश्वरचरित्र    | [ रघू ]            | १६१६ | माघ सुदी ११ बुधवार      |
| १०२. | यशोधरचरित्र       | [ पुष्पदन्त ]      | १६१२ | आश्वीज सुदी १२ गुरुवार  |
| १०३. | "                 | "                  | १६१० | भाद्रपद सुदी ६ मोमवार   |
| १०४. | वट्टमानचरित्र     | [ जयमित्रहल ]      | १६२७ | आषाढ सुदी ६ ५           |
| १०५. | "                 | "                  | १६३१ | मह सुदी ११ शुक्रवार     |
| १०६. | पद्माहुड सटीक     | [ कुन्दकुन्द ]     | १६०२ | वैशाख सुदी २ रविवार     |
| १०७. | श्रीमाल चरित्र    | [ नरसेन ]          | १६३२ | वैशाख सुदी १५ मंगलवार   |
| १०८. | श्रीपाल चरित्र    | [ पं- रघू ]        | १६३१ | कर्तिक सुदी ६ शुक्रवार  |
| १०९. | नन्मतिजिनचरित्र   | "                  | १६२४ | ज्येष्ठ सुदी १५ गुरुवार |
| ११०. | सुदर्शन चरित्र    | [ नयनानन्द ]       | १६७७ | माघ सुदी १२             |
| १११. | "                 | "                  | १६३२ | चैत्र सुदी १४           |

## हिन्दी

|      |                   |                       |      |                         |
|------|-------------------|-----------------------|------|-------------------------|
| ११२. | आदीश्वरफण         | [ भ. ज्ञानभूषण ]      | १६३४ | पौष सुदी १० धवार        |
| ११३. | नेमीश्वरचन्द्रायण | [ भ. नरेन्द्रकीर्ति ] | १६६० | भाद्रपद सुदी ६ रविवार   |
| ११४. | पञ्चेन्द्रिय बोल  | [ धेल्ल ]             | १६२८ |                         |
| ११५. | भविष्यद्गत कथा    | [ त्र. रायमल्ल ]      | १६६० | भाद्रपद सुदी १ शुक्रवार |
| ११६. | सुग्रीवो चरित्र   | [ समयसुन्दरगणि ]      | १६२७ | कर्तिक सुदी ५ शनिवार    |
| ११७. | माधवानलचौपई       | [ कुसललाभगणि ]        | १६६० |                         |
| ११८. | समयसारकलश भाषा    | [ राजमल्ल ]           | १६५३ | फागुण सुदी १४ शनिवार    |
| ११९. | श्रीमाल रास       | [ ब्रह्मरायमल्ल ]     | १६८६ |                         |

## १८ वीं शताब्दी

## संस्कृत

|      |               |               |      |                      |
|------|---------------|---------------|------|----------------------|
| १२०. | आदिनाथपुराण   | [ सकलकीर्ति ] | १७७५ | आश्वीज सुदी ५ बुधवार |
| १२१. | उददेशरत्नमाला | [ सकलभूषण ]   | १७४५ | माघ सुदी १४ गुरुवार  |

|                                                   |                                            |
|---------------------------------------------------|--------------------------------------------|
| १२२. कर्मकाण्ड सटीक [ ज्ञानभूषण ]                 | १७७७ आषाढ सुदी ६ मंगलवार                   |
| १२३. जयकुमार पुराण [ ब्रह्म कामराज ]              | १७३०                                       |
| १२३. " " "                                        | १७१६                                       |
| १२५. धर्मपरीक्षा [ अमितिगति ]                     | १७३३ कार्तिक सुदी ६ मंगलवार                |
| १२६. पद्मपुराण [ सोमसन ]                          | १७५१ शाके १६१६ भाद्रवा सुदी १४ वृहस्पतिवार |
| १२७. प्रतिष्ठापाठ [ आशाधर ]                       | १७२२ भाद्रवा बुदी १ गुरुवार                |
| १२८. प्रद्युम्नचरित्र [ सोमकीर्ति ]               | १७२४ कार्तिक बुदी १३                       |
| १२९. मेघदूतावचूरि [ टी. सुमतिविजय ]               | १७५१                                       |
| १३०. " [ मेघराज ]                                 | १७८५ वैशाख सुदी ६                          |
| १३१. यशोधरचरित्र [ कायस्थ पद्मनाभ ]               | १७६६                                       |
| १३२. श्रीपालचरित्र [ ब्र० नेमिदत्त ]              | १८१४ श्रावण सुदी २ मंगलवार                 |
| १३३. श्रेणिकचरित्र [ शुभचन्द्र ]                  | १७६६ कार्तिक सुदी १ सोमवार                 |
| १३४. " " "                                        | १७३० माघ सुदी ४ वृहस्पतिवार                |
| १३५. सारस्तचन्द्रिका सटीक [ टी. चन्द्रकीर्ति ]    | १७४६                                       |
| १३६. स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा [ टी. शुभचन्द्र ] | १७२१                                       |
| १३७. सम्यक्त्र कौमुदी [ खेता ]                    | १७६३ कार्तिक सुदी ८ शनिवार                 |
| १३८. हरिवंशपुराण [ जिनसेन ]                       | १७८५ पौष सुदी ४ सोमवार                     |
| १३९. षट्पादुह सटीक [ कुन्दकुन्द ]                 | १७६५ माघ सुदी ५                            |

## हिन्दी

|                                          |                                |      |
|------------------------------------------|--------------------------------|------|
| १४०. चतुर्दशी चौपई [ टीकम ]              | १७६३ वैशाख सुदी १२             | १७१२ |
| १४१. चन्द्रनृपरास [ लब्धरुचि ]           | १७६४ वैशाख सुदी १४             | १७१३ |
| १४२. चिद्विलास [ दीपचन्द कासलीवाल ]      | १७७६ फागुण बुदी ५              | १७७६ |
| १४३. जम्बूस्वामीचरित्र [ ब्रह्म जिनदास ] | १७६३ श्रावण सुदी ३ वृहस्पतिवार |      |
| १४४. त्रिलोकदर्पण [ खड्गसेन ]            | १७६८ वैशाख सुदी २ सोमवार       | १७१३ |
| १४५. " " "                               | १७६८ पौष सुदी १३ गुरुवार       |      |
| १४६. धर्मरासो [ अचलकार्ति ]              | १७२६                           | १७२६ |
| १४७. पंचास्तिकाय भाषा [ पांडे हेमराज ]   | १७३६ आषाढ सुदी १२ सोमवार       |      |
| १४८. प्रवचनसार भाषा [ अज्ञात ]           | १७२७ आषाढ सुदी ६ वृहस्पतिवार   |      |
| १४९. वैद्यमनोत्सव [ केशवदास नयनसुख ]     | १७७४ ज्येष्ठ सुदी ११           | १६४९ |

|                                            |      |                       |      |
|--------------------------------------------|------|-----------------------|------|
| १४०. सम्यक्त्वकौमुदी कथा [ जोगराज गोदीका ] | १७६३ | ज्येष्ठ शु० १४ बुधवार | १७२४ |
| १४१. श्रीपालचरित्र [ पण्डित ]              | १७६४ | पौष सुदी १० मंगलवार   |      |
| १४२. द्विचंशपुराण [ नेमीचन्द्र ]           | १७६३ |                       | १७६६ |

## १६ वीं शताब्दी

### संस्कृत

|                                         |      |                            |  |
|-----------------------------------------|------|----------------------------|--|
| १४३. आदिपुराण [ जिनसेनाचार्य ]          | १८०३ | माघ सुदी १५ बृहस्पतिवार    |  |
| १४४. आदिनाथपुराण [ मकलकीर्ति ]          | १८३३ | भाद्रवा शुक्लपक्ष          |  |
| १४५. उपदेशरत्नमाला [ मकलभूषण ]          | १८२६ | मंगसिर सुदी २ बृहस्पतिवार  |  |
| १४६. करकण्डुचरित्र [ शुभचन्द्र ]        | १८६१ |                            |  |
| १४७. ज्ञानसूर्योदय नाटक [ पादिवन्द्र ]  | १८३५ | अषाढ सुदी १३ सोमवार        |  |
| १४८. दुर्गापदप्रबोध [ बल्लभगंगा ]       | १८१२ | पौष सुदी १० रविवार         |  |
| १४९. पांडवपुराण [ शुभचन्द्र ]           | १८३१ | वैशाख सुदी-६ रविवार        |  |
| १५०. पुराणसार संग्रह [ सकलकीर्ति ]      | १८२२ | फाल्गुण सुदी = सोमवार      |  |
| १५१. " "                                | १८२४ | मंगसिर सुदी = शनिवार       |  |
| १५२. भोजप्रबन्ध [ रत्नमन्दिरगणि ]       | १८०५ | चैत सुदी ११                |  |
| १५३. नदीपालचरित्र [ चारित्रमुन्दरगणि ]  | १८२५ | ज्येष्ठ कृष्ण              |  |
| १५४. मुनिसुत्रतपुराण [ रायकृष्णदास ]    | १८५० | पौष सुदी ५ सोमवार          |  |
| १५५. वराहचरित्र [ त्रयमानदेव ]          | १८७३ | आसोज सुदी ५ बुधवार         |  |
| १५६. बद्धमानपुराण [ सकलकीर्ति ]         | १८०४ | माघ सुदी १४ बृहस्पतिवार    |  |
| १५७. सिद्धान्तसारसंग्रह [ नरेन्द्रसेन ] | १८०३ |                            |  |
| १५८. सिन्दूरप्रकरण [ सोमप्रभसूरि ]      | १८२६ | भाद्रवा सुदी २ बृहस्पतिवार |  |
| १५९. द्विचंशपुराण [ ब्र० जिनदास ]       | १८२७ | ज्येष्ठ सुदी ५ सोमवार      |  |
| १६०. आत्रकाचर [ लक्ष्मीचन्द्र ]         | १८२१ | फाल्गुण सुदी ५ रविवार      |  |

### हिन्दी

|                                        |      |                        |      |
|----------------------------------------|------|------------------------|------|
| १७१. आदिपुराण [ ब्रह्म जिनदास ]        | १८५६ | मंगसिर सुदी ३          |      |
| १७२. द्विचंशरोमलि [ शोभानाथ ]          | १८२६ | फाल्गुण सुदी १० शनिवार |      |
| १७३. जन्मस्वामीचरित्र [ पांडे जिनदास ] | १८४३ | पौष शुक्ला बृहस्पतिवार | १८४९ |

|      |                         |                    |      |                            |      |
|------|-------------------------|--------------------|------|----------------------------|------|
| १७४. | तत्त्वार्थसूत्रभाषा     | [ प्रभाचन्द्र ]    | १८०३ | आषाढ वुदी १ शनिवार         |      |
| १७५. | त्रेपनक्रियाकोप         | [ किशनसिंह ]       | १८२६ | मंगसिर सुदी ७ शुक्रवार     | १७८४ |
| १७६. | दशलक्षणव्रतकथा          | [ ज्ञानसागर ]      | १८३८ | श्रावण सुदी ७              |      |
| १७७. | धनपालरास                | [ ब्र० जिनदास ]    | १८२८ | श्रावण सुदी १ रविवार       |      |
| १७८. | धर्मपरीक्षा             | [ मनोहरलाल ]       | १८०२ | श्रावण सुदी १५ वृहस्पतिवार |      |
| १७९. | नेमीश्वरगीत             | [ चतुर्मुल ]       | १८१  | माघ वुदी १४                | १५७१ |
| १८०. | पद्मनन्दपंचविशिका       | [ जगतराय ]         | १८११ |                            | १७२२ |
| १८१. | प्रवचनसार               | [ जोधराजगोदीका ]   | १८४६ | कार्तिक सुदी १२ शुक्रवार   | १७२६ |
| १८२. | वनारसीविलास             | [ वनारसीदास ]      | १८२१ | फागुण सुदी ५ रविवार        | १७७१ |
| १८३. | भक्तामरस्तोत्र भाषा     | [ नथमलविलास ]      | १८५३ | माघ सुदी १४ शुक्रवार       | १८२६ |
| १८४. | यशोधर चरित्र            | [ ब्रह्माजनदास ]   | १८१६ | आषाढ वुदी ६ रविवार         |      |
| १८५. | यशोधर चरित्र            | [ लक्ष्मीदास ]     | १८०१ | कार्तिक वुदी ६ वृहस्पतिवार | १७८१ |
| १८६. | यशोधर चौपई वधकथा        | [ साह लोहट ]       | १८०३ |                            | १७२१ |
| १८७. | रत्नपालरासो             | [ सुरचंद ]         | १८२३ | पौष वुदी १३ सोमवार         | १७३२ |
| १८८. | वसुनन्दिश्रावकाचार भाषा | [ दौलतराम ]        | १८०८ | कार्तिक सुदी १४ मंगलवार    | x    |
| १८९. | व्रतकथाकोप              | [ खुशालचन्द काला ] | १८२० | व्येष्ठ शुक्ला १३          | १७८६ |
| १९०. | सिद्धान्तसारदीपक        | [ नथमलविलास ]      | १८६० | आसोज वुदी १३ मंगलवार       | १८२४ |
| १९१. | भीताचरित्र              | [ रायचंद ]         | १८०८ | वैशाख वुदी ३ बुधवार        | १७१३ |
| १९२. | श्रावकाचाररासो          | [ जिनसेवक ]        | १८२० |                            | १६०३ |
| १९३. | हरिवंशपुराण             | [ खुशालचंद ]       | १८६० | भाद्रवा सुदी ८             | १७८० |

## ग्राम नगर व शासकों की समयानुसार सूची

| ग्राम व नगर का नाम  | शासक का नाम        | समय        | पृष्ठ तथा पंक्ति | विशेष                                |
|---------------------|--------------------|------------|------------------|--------------------------------------|
| अदेहवारपल्लानगर     | X                  | संवत् १५६० | ३४X१२            |                                      |
| अजमेर               | राव श्री जगमल      | " १५८६     | १४६X१            |                                      |
| "                   | X                  | १५६५       | १३८X१            |                                      |
| अकबरनगर [बंगाल]     | महाराजा मानसिंह    | १६६२       | ५०X१५            | महाराजा मानसिंह बंगाल के राज्यपाल थे |
| आगरा                | अकबर               | १६२२       | ६७X७             |                                      |
| "                   | "                  | १६४२       | २१३X१२           |                                      |
| "                   | X                  | १७८१       | २१४X५            |                                      |
| "                   | औरंगजेब [अवरंगसाह] | १७२२       | २३४X८            |                                      |
| "                   | X                  | १७७१       | २४१X१५           |                                      |
| "                   | X                  | १६६०       | २४४X२६           |                                      |
| "                   | X                  | १७६३       | २५६X१२           |                                      |
| आमेर [अंबावती]      | सवाई जयसिंह        | १७७७       | ७X७              |                                      |
| "                   | राजाधिराज भारमल    | १६१६       | ७७X२             |                                      |
| "                   | "                  | १६११       | १०४X२१           | दूसरा नाम आन्नगढ़ है                 |
| "                   | "                  | १६१६       | १२६X१५           |                                      |
| "                   | " पृथ्वीसिंह       | १८२५       | २१२X२३           |                                      |
| आल्हणापुर           | X                  | १६११       | १२८X१६           |                                      |
| चदयपुर              | महाराणा जगतसिंह    | १७६८       | २१६X२१           |                                      |
| "                   | X                  | X          | २५५X२७           |                                      |
| "                   | X                  | १८०८       | २५५X४            |                                      |
| करौली               | X                  | १८२६       | २४६X८            |                                      |
| कालख                | X                  | १७१२       | २०८X२८           |                                      |
| कुंभमेरु [कुंभलमेर] | X                  | १६०४       | ८५X१०            |                                      |
| कृष्णगढ़            | बहादुरसिंह         | १८८१       | ३५X१६            |                                      |

| रुद्रदुर्ग [वृं दी] | कंवर नरवद           | १५६० | ६३×२४  | इनके पिता का नाम<br>अखयराज था       |
|---------------------|---------------------|------|--------|-------------------------------------|
| { श्रीवापुर         | x                   | १६६७ | २४५×२० | सिंधु नदी के किनारे पर स्थित        |
| गोपाचल [ग्वालियर]   | महाराजा मानसिंह     | १५५८ | १७३×१४ |                                     |
| "                   | राजा श्री वीरम्मदेव | १४७६ | १७३×२४ |                                     |
| "                   | डूंगरेन्द्र         | x    | १७६×६  |                                     |
| "                   | सलीम [जहांगार]      | १६६५ | २२०×७  |                                     |
| "                   | महाराजा मानसिंह     | १५७१ | २३१×१४ |                                     |
| गोपागिरि [ग्वालियर] | "                   | x    | २७१×१५ |                                     |
| गोवगिरि [ " ]       | डूंगरेन्द्र         | x    | ११७×३  |                                     |
| घठ्यालीनगर          | राव श्रीगमचन्द्र    | १५८१ | ६६×८   |                                     |
| घटियालीपुर          | x                   | १५८२ | १६७×१७ |                                     |
| चंपावती [चाटसू]     | महाराजाधिराज भारमल  | १६२३ | ६४×२   |                                     |
| "                   | संभासिंह            | १५८३ | ६६×२०  | राव श्रीरामचन्द्र नगर<br>प्रधान थे। |
| "                   | शाह आलम             | १६०२ | १७४×२५ |                                     |
| "                   | महाराजा भगवानदास    | १६३२ | १७८×६  |                                     |
| जयपुर               | x                   | १८३३ | २×११   | बालचन्दजी छावडा<br>इस समय दीवान थे। |
| "                   | x                   | १८२६ | ४×१६   |                                     |
| "                   | x                   | १८५० | ४८×११  |                                     |
| "                   | महाराजा प्रतापसिंह  | १८०४ | ५६×२७  |                                     |
| "                   | x                   | १८०३ | ६६×३   |                                     |
| "                   | x                   | १८२७ | ७२×१७  |                                     |
| "                   | महाराजा माधवसिंह    | १८२१ | १७५×२० |                                     |
| "                   | महाराजा ईश्वरीसिंह  | १८०२ | २२६×२६ |                                     |
| "                   | महाराजा प्रतापसिंह  | १८४६ | २३८×१६ |                                     |
| "                   | x                   | १७०७ | २६७×३  |                                     |
| जावाहरपुर           | x                   | १६११ | ६×१४   |                                     |
| जसलमेर              | कुंवर हरिराज        | १६१६ | २४७×२० |                                     |

|                                       |                  |      |        |                                          |
|---------------------------------------|------------------|------|--------|------------------------------------------|
| जिहानाबाद [आगरा]                      | ×                | १७६३ | २१४×१५ | जैसिहपुरा का नौमोल्लिखी हुआ है।          |
| जयसिंहपुरा [दिल्ली]                   | ×                | १७७४ | २०३×४  |                                          |
| " "                                   | ×                | १७६३ | ६०६×५  |                                          |
| " [आगरा] मुहम्मदसाह                   |                  | १८०१ | २५०×१२ | महाराजा ईश्वररीसिंह का शासन भी लिखा है   |
| जैसिहपुरा [देहली]                     | ×                | १७८१ | २५०×१  |                                          |
| फिलाय                                 | महाराजा कुशलसिंह | १७८५ | ७७×१२  |                                          |
| टोंक                                  | ×                | १८२५ | ४७×५   |                                          |
| "                                     | ×                | १५७६ | १७७×१० |                                          |
| "                                     | ×                | १८०३ | २१५×२७ |                                          |
| ढाका                                  | ×                | १७५७ | २×८    |                                          |
| तच्छकगढ [टोडारायसिंह] महाराजा जगन्नाथ |                  | १६६४ | ८६×२४  | यह गढ जयपुर प्रांत में स्थित है।         |
| " राजाधिराज रीब श्रीरामचन्द्र         |                  | १६१२ | ११३×४  |                                          |
| " "                                   | "                | "    | १६८×१६ |                                          |
| " सलीम [जैहंगीर]                      |                  | १६१० | १६३×१३ |                                          |
| देवपुरी                               | ×                | १८२६ | २१३×१० |                                          |
| देहली                                 | ×                | ११८६ | १२६×१३ | कवि ने 'दिल्ली' नाम से सम्बोधित किया है। |
| " औरंगजेब                             |                  | १७३४ | २३६×२६ |                                          |
| दौलतपुर                               | बाबर             | १५८४ | १७५×२४ |                                          |
| धामपुर                                | ×                | "    | २२५×६  |                                          |
| नयनपुर                                | गयासुद्दीन       | १५३३ | १६×१७  |                                          |
| नरसिंहपुरा                            | ×                | ×    | २१६×१८ | सूरत प्रांत में स्थित है                 |
| नागपुर                                | फिरोजखां         | १५४१ | २३×५   |                                          |
| " महाराजा विजयसिंह                    |                  | १८२४ | ४१×२७  |                                          |
| "                                     | ×                | १५७७ | ६६×२६  |                                          |
| "                                     | ×                | १५६७ | १३२×२  |                                          |
| नोरनोल                                | ×                | १६८५ | २१८×२८ |                                          |
| नेणवाहपत्तन                           | आलाउद्दीन        | १५१८ | १३८×१२ |                                          |

|                    |                 |      |        |                                |
|--------------------|-----------------|------|--------|--------------------------------|
| पडावा              | ✕               | १८२६ | २२१×२४ |                                |
| फरुखावाद           | ✕               | ✕    | ६६×१६  |                                |
| फिरोजावाद          | इनाहीम          | १५७७ | १६२×१५ |                                |
| वगरु [जयपुर]       | ✕               | १७६५ | १७४×१० |                                |
| वणहटा [जयपुर]      | ✕               | १७३४ | ३३६×२७ |                                |
| वोजवाडा            | जहांगीर         | १६७४ | २८×१   |                                |
| वूदी               | रावराजा भावसिंह | १७६८ | २२२×२७ |                                |
| "                  | "               | १७२१ | २५०×२७ |                                |
| "                  | ✕               | १८२० | २५७×६  |                                |
| भगवतगढ             | ✕               | १७६८ | २१६×२१ |                                |
| मधूक नगर           | ✕               | १६४८ | १६×१२  |                                |
| महु                | ✕               | १८२० | २७१×६  |                                |
| महीसार             | ✕               | १६०१ | ६८×१८  |                                |
| मान्यखेट           | ✕               | ✕    | ११०×२० |                                |
| मालपुरा            | महाराजा मानसिंह | १६४५ | ७३×७   |                                |
| "                  | भगवानदास        | १६४१ | १७०×१६ |                                |
| "                  | ✕               | १३४  | २०६×६  |                                |
| "                  | ✕               | १६८७ | २४७×१२ |                                |
| " मेहता            | ✕               | १६११ | ६४×१२  |                                |
| मेदनीपुर [मारवाड]  | अकबर            | १६३६ | १०८×२  | मुहम्मदखां वहां का राज्यपाल था |
| मोजमावाद           | करमचंद          | १५६५ | १४८×१६ |                                |
| मेतनाल             | ✕               | १८५६ | २०५×१  |                                |
| योगिनीपुर          | मुहम्मद तुगलक   | १३६१ | ६२×२१  | देहली का नाम पहिले यही था ।    |
| "                  | "               | १३६६ | ६७×१६  |                                |
| "                  | ✕               | १३६५ | १६०×२७ |                                |
| रणार्थभ [रणथम्भोर] | ✕               | १६५३ | २५७×२६ |                                |
| राजमहेल            | महाराजा मानसिंह | १६६१ | ५५×१४  |                                |
| "                  | "               | "    | ७७×२२  |                                |



|            |                    |      |        |                             |
|------------|--------------------|------|--------|-----------------------------|
| रामपुर     | X                  | १७८४ | २२०X१६ |                             |
| "          | X                  | १७२७ | २३६X१  |                             |
| "          | X                  | X    | २२५X६  |                             |
| राणापुर    | हेमकरणा            | १५६४ | ८८X२२  |                             |
| रावरवत्तन  | राजाधिराजहूगरसिंह  | १५१२ | १७६X२  |                             |
| रेणी       | X                  | १८७१ | २०२X१६ |                             |
| रोहतक      | अकबर               | १६१६ | १५६X१५ |                             |
| "          | सिकन्दर लोदी       | १५७६ | ८०X१६  |                             |
| "          | अकबर               | १६५६ | ११६X२४ |                             |
| लवाण       |                    | १७५१ | २९X१६  | पचवारा प्रान्त में स्थित है |
| लाभपुर     | X                  | १७१३ | २१६X२८ |                             |
| लालघोडा    | महाराजा प्रतापसिंह | १८११ | ८X११   |                             |
| बहादुरपुर  | हुमायूँ            | १५६४ | ५६X१५  | मेवात में स्थित है।         |
| नारायतो    | गयासुद्दीन         | १५५६ | १६५X५  |                             |
| बुरहानपुर  | X                  | १७३२ | २२७X१६ | खानदेश में स्थित है         |
| वेराट      | X                  | X    | २६X३   |                             |
| वृंदावन    | रावराजा विष्णुसिंह | १८३५ | १६X१६  |                             |
| "          | सूर्यमल            | १६०३ | ६६X६   | चौहान वंशजों का राज्य था।   |
| "          | X                  | १८२१ | २४२X६  |                             |
| शेरगढ      | X                  | १८४३ | २१२X२  |                             |
| शेरपुर     | महाराजा जगन्नाथ    | १६६५ | ४०X३   |                             |
| "          | X                  | १८५३ | २५८X१  |                             |
| श्रीपालक   | इज्जतीम            | १५८२ | १४६X१० |                             |
| श्रीवालपुर | कणोनरेन्द्र        | ११२० | १६६X२५ |                             |
| सरानपुरी   | X                  | १६६६ | ३२X२७  |                             |
| सहारनपुर   | बाबर               | १५८७ | १३७X२  |                             |
| संभामपुर   | महाराजा मानसिंह    | १६६२ | ७६X२१  |                             |
| सागपत्तन   | X                  | १६६८ | ५७X१५  | वागड देश में स्थित है       |
| माखूण      | राय श्री सुरजन     | १६३६ | १५X४   |                             |

|             | राज श्री मालदे  | १५६५ | ५५×४   | रा. त श्री खेतमो प्रधान<br>शासक था |
|-------------|-----------------|------|--------|------------------------------------|
| रंगानेर     | X               | १७८४ | २२०×२८ |                                    |
| "           | महाराजा जयसिंह  | "    | २२१×११ |                                    |
| "           | राजा भगवानदास   | १६३३ | २४४×१४ |                                    |
| "           | महाराजा रामसिंह | X    | २४६×१८ |                                    |
| "           | X               | १७८७ | २५६×२७ |                                    |
| "           | महाराजा रामसिंह | १७२४ | २६१×२६ |                                    |
| साहदरा      | मुलकगौर         | १७३३ | २०×१६  |                                    |
| सारुडानगर   | X               | १६५४ | ४२×१   |                                    |
| सिकन्दराबाद | इम हीम लोदी     | १५८० | १६४×१  |                                    |
| सिरिउजपुर   | X               | ११४४ | १०६×६  | मेवाड में स्थित                    |
| सिद्धनद     | हुमायुं         | १५६२ | १७३×८  |                                    |
| सूरत        | X               | १६६१ | १३×२   |                                    |
| "           | X               | १७२२ | २३६×२५ |                                    |
| सुजानपुर    | X               | १७२४ | ३५×१३  | मालवा प्रांत में स्थित             |
| सुवर्णपथ    | X               | १५७७ | ८५×१   |                                    |
| हरसोरगढ     | X               | १६२८ | २३६×१५ |                                    |
| हिसार       | बहलोलसाह        | १५४२ | २६×१५  |                                    |
| "           | X               | १७०० | १५५×२० |                                    |

## आचार्य-मुनि-भट्टारक-लेखकों की सूची

|                 |                           |              |                                                      |
|-----------------|---------------------------|--------------|------------------------------------------------------|
| अकलंक           | १४,५४,१६४,१६५,२८७         | कुमारसेन     | १८५                                                  |
| अखयराज          | २१२                       | कुमुदचन्द्र  | २८६, २०७, २२१, २४३                                   |
| अचलकीर्ति       | २२७, २२८                  | कुशलचन्द्र   | २१०                                                  |
| अजित (ब्रह्म)   | ६६                        | कुसुमभद्र    | १६८                                                  |
| अनंतकीर्ति      | १८, ३५, २३२, २३६, २४, २६६ | कुसललाभगणि   | २४७                                                  |
| अभयकीर्ति       | ८६                        | केशवदास      | २५७                                                  |
| अभयचन्द्र       | २०६                       | केशवसेन      | ६१                                                   |
| अमरप्रभसूरि     | ४३                        | केसर         | ६६                                                   |
| अमरकीर्ति       | १७१, १७३                  | कौरपाल       | २६६                                                  |
| अमरेन्द्रकीर्ति | ४१                        | खडगसेन       | २१६                                                  |
| अमृतचन्द्र      | १३२, २३७, २५७             | खुशालचन्द्र  | २५६                                                  |
| अंबसेनगणि       | १४२                       | खेता         | ४६                                                   |
| आशाधर           | २४, ३३, ४४, २७०           | गगदेव        | १८८                                                  |
| इन्द्रभूत       | ६०, ११६                   | गंगादास      | २१६                                                  |
| उद्धरसेन        | १२७, १४६                  | गाल्हा       | १३८                                                  |
| कल्याणकीर्ति    | २३२                       | गुणकीर्ति    | ८५, १०५, १२५, १२६, १३७, १४६, १५६, १७३, १६०, १६२, २३६ |
| कमलकीर्ति       | २०२                       | गुणचन्द्र    | ४२, ५७, १५५, १५६                                     |
| कमेतिलक         | ६४                        | गुणभद्र      | १, २६, ६७, ११६, १६५                                  |
| कल्याणसागर      | ४३, ६१                    | गुणभद्रसूरि  | ८५, १३७, १४६, १५८, १६२, १६३                          |
| कृष्णदास        | ४७                        | गुणाकरसूरि   | ६४                                                   |
| कान्तिसागर      | २४२                       | गुणसेन       | ६६                                                   |
| कामराज          | १०, १३                    | गुणसुन्दर    | ४२                                                   |
| किशानसिंह       | २२०, २५४                  | गुणरंगगणि    | २४७                                                  |
| कुन्दकुन्द      | १३२                       | गुणलाभगणि    | ८५                                                   |
| कुंवरसेन        | ११६, २२८                  | चन्द्रकीर्ति | १५, २८, ३०, ३१, ३४, ४१, ४३, ५३,                      |
| कुमारकीर्ति     | १७३                       |              |                                                      |

|                  |                               |                 |                                  |
|------------------|-------------------------------|-----------------|----------------------------------|
|                  | ५५, ६२, ६५, ७३, ७६ ८७, २२५,   | जिनसुन्दरसूरि   | ८५                               |
|                  | २३२, २३५, २५८, २८०, २८६       | जिनहर्षसूरि     | ८५                               |
| चन्द्रसेन        | १२७                           | जिनशालसूरि      | ८५                               |
| दत्तकमल          | २३१                           | जिनसेन          | १, १३, ७३, ६०, १२८, १४२, १६५,    |
| चारित्रसुन्दरगणि | ४५                            |                 | १६१                              |
| चेतरामजी         | ६६                            | जिनसेवक         | २६६                              |
| जगकीर्ति         | १५६                           | जीवणराम गोधा    | २०२                              |
| जगत्कीर्ति       | ४.२६, ५७, ७७, १७४, २३५        | जीवराज          | १२, १३                           |
| जगतराय           | २३३ २३४                       | ज्ञानकीर्ति     | ५७                               |
| जयकीर्ति         | ६३, ८५                        | ज्ञानकुञ्जरगणि  | ८५                               |
| जयमित्रहल        | १६७, १६६                      | ज्ञानातलक       | ६४                               |
| जयसागर           | २६७                           | ज्ञानसागर       | २२२                              |
| जयसन             |                               | ज्ञानभूषण       | ३, ५, ६, ७, ११, १६, ५०, ६२, ६८,  |
| जयशेखर           | ६५                            |                 | ७३, २०५, २३६, २४८ २६७, २७०       |
| जयनंदि           | १७०                           | टीकम            | २०८                              |
| जटिलमुनि         | १४२                           | त्रिभुवनचन्द्र  | २०१                              |
| जम्बूस्वामी      | ६०, ११६, १२४, १८७             | त्रिलोककीर्ति   | ३२                               |
| जिनचन्द्र        | १, २, १५, १६, २०, २१, २३, २८, | दयासागर         | ६१                               |
|                  | ३६, ५३, ५४, ५५, ५७ ६१, ७२,    | दिलाराम         | २२२                              |
|                  | ७३, ७६, ८६, ६४, ६६, ६८, ६६,   | दीपचंद कासलीवाल | २११                              |
|                  | १०८, ११३, १२५, १२६, १२५,      | दुलभसेन         | ६७                               |
|                  | १२८, १३८, १४६, १४८, १४६,      | देवेन्द्रकीर्ति | ४, ६, १४, २८, २६, ३२, ४५, ५७, ६१ |
|                  | १५४, १६२, १६३, १६४, १६७,      |                 | ६७, ७६, ७७, ८६, २१४, २१६,        |
|                  | १६६, १७०, १७४, १७५, १७७,      |                 | २१६, २३१, २३२, २३६, २४०,         |
|                  | १७८, १८०, १८६, १६०, २००       |                 | २४६, २५०, २६३, २६७, २७१,         |
| जिनदास [ पांडे ] | २१३, २५२                      |                 | २७७                              |
| जिनभद्रसूरि      | ४२                            | देवेन्द्रभूषण   | ३५                               |
| जिनकुशलसूरि      | ८५                            | देवनन्दि        | १३६                              |
| जिनराजसूरि       | ८५                            | देवसेन          | ११६, १२६, १३५, १४६               |
| जिनवर्द्धनसूरि   | ८५                            |                 |                                  |
| जिनचन्द्रसूरि    | ८५                            |                 |                                  |

|                |                                                                                                                                                                   |                   |                                                                                                                                                                                                                                                                       |
|----------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| देवमंगल        | १८३, १६०, १६२                                                                                                                                                     | नेमिचन्द्र        | २०, १४                                                                                                                                                                                                                                                                |
| दालतराम        | २५५                                                                                                                                                               | नेमीचन्द्र        | ३, १७, ६६, ६७ १२६, २७८                                                                                                                                                                                                                                                |
| धनपाल          | १३८, १४२, १४६, १४८                                                                                                                                                | नेत्रानन्द        | १३८                                                                                                                                                                                                                                                                   |
| धनराज          | ७                                                                                                                                                                 | नेमिदत्त (ब्रह्म) | २६, २७, ५६, ८७, ६८                                                                                                                                                                                                                                                    |
| धमचन्द्र       | ०, १५, ३६, ४१, ५३, ५५, ७३, ८८,<br>६५, ६६, ६६, १०४, ११३, १२५,<br>१२६, १२७, १२८, १३१, १३२,<br>१३८, १४८, १४६, १६२, १६६,<br>१७०, १७४, १७५, १७८, १८०,<br>१८६, १६०, २०० | पद्मार्ज          | १३, ७६, ८२, १३८, १६८, १८७,<br>१८८, २०१, २३४                                                                                                                                                                                                                           |
| धमकीर्ति       | २०, २१, ३१, ३२, ३३, ८५, १०८,<br>१६२, १६६                                                                                                                          | पद्मार्ज (मुनि)   | ५७                                                                                                                                                                                                                                                                    |
| धमदास          | १०, २२८                                                                                                                                                           | पद्मनाभ           | २५०                                                                                                                                                                                                                                                                   |
| धमदा गणेश      | ६३                                                                                                                                                                | पद्मप्रभसूरि      | ६५                                                                                                                                                                                                                                                                    |
| धर्मपूषण       | ११६                                                                                                                                                               | पद्मसेन           | ७३, १४२                                                                                                                                                                                                                                                               |
| धर्मसुन्दर     | १७३                                                                                                                                                               | परिमल             | २७१                                                                                                                                                                                                                                                                   |
| धमसेन          | ३०, ११६, १२६, १३०, १४६,<br>१८३, १८८                                                                                                                               | प्रचण्डकीर्ति     | ८५                                                                                                                                                                                                                                                                    |
| घोरसेन         | १३६                                                                                                                                                               | प्रभाचन्द्र       | २, १५, १६, २०, २८, ५४, ५५, ६३,<br>६७, ७२, ७३, ७६, ८५, ८७, ८८, ८९,<br>६४, ६६, ६८, ६६, १०४, १०८, ११३,<br>१२५, १२६, १२७, १२८, १३१,<br>१३२, १३८, १४६, १४७, १४८,<br>१४६, १५४, १६२, १६३, १६४,<br>१६७, १६६, १७०, १७३, १७४,<br>१७५, १७७, १७८, १८०, १८६,<br>१६०, २००, २६५, २६७ |
| धुसेन          | १८८                                                                                                                                                               | प्रयागदास         | ४४                                                                                                                                                                                                                                                                    |
| धेल्ह          | २३४                                                                                                                                                               | पुष्पदन्त         | ८५, ६०, ६२, १०८, ११०, ११२,<br>१४२, १५४, १६२, १६५, २८७                                                                                                                                                                                                                 |
| नथमल बिलाला    | २४५, २६४                                                                                                                                                          | पूरणचन्द्र        | ४७                                                                                                                                                                                                                                                                    |
| नन्ददास        | २०५                                                                                                                                                               | पूर्णभद्र         | १६२, १६३                                                                                                                                                                                                                                                              |
| नन्दमित्र      | १८७                                                                                                                                                               | वनारसीदास         | २०७, २४१, २६६                                                                                                                                                                                                                                                         |
| नयनन्द         | १८१, १८७                                                                                                                                                          | वल्लभगणेश         | १८                                                                                                                                                                                                                                                                    |
| नयसेन          | ६७                                                                                                                                                                | भगवतीदास          | १५४, १५६                                                                                                                                                                                                                                                              |
| नरसिंह         | ७३                                                                                                                                                                | भद्रनाथ           | ६०, १८७                                                                                                                                                                                                                                                               |
| नरसेन          | १७०, १७१, १७६                                                                                                                                                     |                   |                                                                                                                                                                                                                                                                       |
| नरेन्द्रकीर्ति | ४, २४, ३४, १७५, २३२                                                                                                                                               |                   |                                                                                                                                                                                                                                                                       |
| नरेन्द्रसेन    | ६३                                                                                                                                                                |                   |                                                                                                                                                                                                                                                                       |

|                  |                                                                                                                        |                  |                                                                      |
|------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------|----------------------------------------------------------------------|
| भवसेन            | १६०                                                                                                                    | रत्नकीर्ति       | २, २२, ३५, ३६, ४१, ४७, ८६, १०८                                       |
| भानुकीर्ति       | ६७                                                                                                                     |                  | १४६, २०६, २१२, २२८                                                   |
| गारमल्ल          | १०७                                                                                                                    | रत्न             | २                                                                    |
| भावसेन           | ११६, १२८, १२६, १३७, १४६,<br>१७३, १८३                                                                                   | रत्नचन्द्रजी     | २०५                                                                  |
| भीमसेन           | ३५                                                                                                                     | रत्नभूषण         | १६                                                                   |
| भुवनकीर्ति       | ३, ५, ७, ११, २०, ३७, ५७, ६८, ७१,<br>७३, १५० १६०                                                                        | रत्नमंदिरगणि     | ४४                                                                   |
| भूधरदास          | २०६, २११, २४०                                                                                                          | रत्नाकरसूरि      | ४६                                                                   |
| भैरव्या भगवतीदाम | २११                                                                                                                    | रत्नसिंह सूरि    | ४६                                                                   |
| मंगलदास          | ४८                                                                                                                     | रत्नशेखर         | ६५                                                                   |
| मलयकीर्ति        | ८५, ६७, ११६, १३७, १४६, १८३,<br>१६२                                                                                     | रत्ननंदिगणि      | २४७                                                                  |
| महिलभूषण         | १४, २७, ३४                                                                                                             | रत्नदेव (ब्रह्म) | ३६                                                                   |
| महसेन            | १३८                                                                                                                    | रविपेण           | २८, ३२, ७१, ७६, १४२                                                  |
| महेन्द्रकीर्ति   | ६, १८, २८, ३५, ४८, ५६,                                                                                                 | राघव जी          | ६६                                                                   |
| (महीचन्द्र       | २६८                                                                                                                    | राजमल्ल          | २५७                                                                  |
| माघनदि           | ६३                                                                                                                     | राजकीर्ति        | ४३                                                                   |
| माधवसेन          | २०, १४६                                                                                                                | रामकीर्ति        | ११, १३, १७३, २३६                                                     |
| माणिक्यकराज      | ६६, ८४, ११३, ११४, ११५                                                                                                  | रामधन्द्र        | ३६, १६१                                                              |
| महेन्द्रसेन      | १५५, १५६                                                                                                               | रामनंदी          | १८८                                                                  |
| मेधावी           | २०                                                                                                                     | रामसेन           | ३०, २५, ४७                                                           |
| मेरुचन्द्र       | २६८                                                                                                                    | रायचंद           | २६६                                                                  |
| मोहनविजय         | २४२                                                                                                                    | रायमल्ल          | ४३                                                                   |
| यशकीर्ति         | २०, ४१, ४७, ५७, ६१, ८५, ६८,<br>११६, ११६, १२२, १२४, १२५,<br>१४६, १५५, १५६, १५६, १७३,<br>१८२, १८३, १८४, १८७,<br>१६०, १६२ | रूपचंद           | २३५, २६०                                                             |
| रघू              | ८५, १०४, १०७, ११६, ११६, १६६,<br>१५६, १७८, १८१                                                                          | लच्छीराम         | ६६                                                                   |
|                  |                                                                                                                        | लब्धरुचि         | २०६                                                                  |
|                  |                                                                                                                        | ललितकीर्ति       | १५, ३२, ५३, ७३, ७७, ६४, १०३,<br>१२५, १२६, १३२, १६२, १६६,<br>१७०, १८६ |
|                  |                                                                                                                        | लक्ष्मीचन्द्र    | ७, २०, ३४, ४१, २०६                                                   |
|                  |                                                                                                                        | लक्ष्मीदास       | २४६                                                                  |
|                  |                                                                                                                        | लक्ष्मीसेन       | ३५                                                                   |

|                |                                |                   |                                                                                                                                                                                                                                              |
|----------------|--------------------------------|-------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| लाखू           | १०१                            | विजयसेन           | १७३, १८८, २१०                                                                                                                                                                                                                                |
| ल ड्यका        | १३                             | विष्णुदत्ता       | १८७, १८८                                                                                                                                                                                                                                     |
| लाभमेरगणि      | ६३                             | विजयप्रभसूरि      | २१०                                                                                                                                                                                                                                          |
| लोहार्य        | ७४, ६०, १५६, १८८               | विनोदीलाल         | २५४                                                                                                                                                                                                                                          |
| वज्रसूरि       | १३६                            | वीर               | १००, २५४                                                                                                                                                                                                                                     |
| वज्रसन         | ६५                             | वीरसेन            | २०, ६६, ६०, १६५, १६                                                                                                                                                                                                                          |
| वसुनन्दि       | २४, ४०, ६३, २७०                | वीरनन्दि          | १६५                                                                                                                                                                                                                                          |
| ब्रह्म गुलाल   | २२०, २२७                       | वीरचन्द्र         | २६७                                                                                                                                                                                                                                          |
| ब्रह्म जिनदास  | ६, १०, ७१, २०३, २०८, २२४, २६३  | वेगो              | १०४                                                                                                                                                                                                                                          |
| ब्रह्मरायमल    | २३२, २३६, २४३, २४५, २६६, २७२   | वृषभदास           | ३४                                                                                                                                                                                                                                           |
| वादिचन्द्र     | १५, १६, २४५, २६८               | वर्धमानदेव        | ५४                                                                                                                                                                                                                                           |
| वादिभूषण       | ११, १३                         | शक्रकीर्ति        | ८७                                                                                                                                                                                                                                           |
| वादीभसिंह      | ४०                             | शिवगुप्त          | ७४                                                                                                                                                                                                                                           |
| वासाधर         | ५८, १४२, १४४, १४५              | शुभचन्द्र         | १, २, १५, २०, २१, २३, २८, ३६, ५४, ५५, ६३, ७२, ७३, ७६, ७७, ८६, ८४, ८६, ८८, ८९, १०८, १११, १२६, १२७, १२८, १३१, १३८, १४६, १४७, १४८, १४९, १५४, १६२, १६३, १६४, १६७, १६९, १७०, १७४, १७५, १७७, १७८, १८०, १८६, १९०, १९५, २००, २०१, २३२, २३६, २५७, २७० |
| विनयसागर       | १                              | शोभानाथ           | २१२                                                                                                                                                                                                                                          |
| विद्यानन्दि    | ६, १४, १८, ३४, ३५, ६७, ७०, १६५ | श्रुतकीर्ति       | १२०, १५५, १६५, १६५                                                                                                                                                                                                                           |
| विजयकीर्ति     | २७, ३५, ३८, ३६, ६२, ६८, २०७    | श्रुतसागर         | १३                                                                                                                                                                                                                                           |
| विमलसेन        | ३०, ११६, ११६, १३७, १४६, १८३    | श्रीधर            | १२०, १५०, १५३, १६५, १६३                                                                                                                                                                                                                      |
| विद्यभूषण      | ४३                             | श्रीधरसेन         | ७३,                                                                                                                                                                                                                                          |
| विजयेन्द्रसूरि | ४६                             | श्रीचन्द्र        | १६४, १६५                                                                                                                                                                                                                                     |
| विजयसिंह       | ६७                             | क्षेमकीर्ति       | ४१, ४८, ५६, ५७, ७६, ११६, १४६,                                                                                                                                                                                                                |
| विश्वभूषण      | १                              | क्षेमेन्द्रकीर्ति | ११६, २७१                                                                                                                                                                                                                                     |
| विवेकनन्दि     | १७                             | क्षेमासुरि        | ८६                                                                                                                                                                                                                                           |
| विसालकीर्ति    | २३, ३०, ४१, १७३                |                   |                                                                                                                                                                                                                                              |
| विश्वमेन       | ३०                             |                   |                                                                                                                                                                                                                                              |
| विष्णुकुमार    | १२४                            |                   |                                                                                                                                                                                                                                              |
| विष्णुमेन      | १४२                            |                   |                                                                                                                                                                                                                                              |
| विशुद्धपन      | १५३                            |                   |                                                                                                                                                                                                                                              |
| विनयसुन्दर     | १०३                            |                   |                                                                                                                                                                                                                                              |

|                 |                                                                                                               |              |                  |
|-----------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------|------------------|
| सकलचन्द्र       | ५७,१५६,२४७                                                                                                    | सोमसेन       | २८,२६            |
| सकलकीर्ति       | २,३,५,७,१०,११,१३,१६,१६,<br>३७,४१,५३,५६,५७,६२,६८,<br>७०,७३,१५०,२०४,२०५,२०६,<br>२०८,२१६,२२४,२३६,२४६,<br>२६३,२६५ | सोमसुंदर     | ४४               |
|                 |                                                                                                               | हरिदेव       | १५३ ४५०)         |
|                 |                                                                                                               | हरिनंदि      | १६५              |
|                 |                                                                                                               | ह रभूषण      | १७३              |
|                 |                                                                                                               | हरिराज       | ५८               |
| सकलभूषण         | २,३,४,५,६,२०१                                                                                                 | हृषकीर्ति    | ५३,६५            |
| समंतभद्र        | १४,२४,६७,१६५                                                                                                  | हरिपेण       | १०६,११०          |
| समयसुन्दरगणि    | २४७                                                                                                           | हरिकुल्लरगणि | ८५               |
| सहस्रकीर्ति     | ३६,४१,१०५,११६,१२६,१३७                                                                                         | हर्षसागर     | १                |
| स्वयंभु         | १४६,१६६,१७३,१८३,१०८,<br>१४२,१६५,२८२,२८४,२८७                                                                   | हेमकीर्ति    | ७६,१८७           |
|                 |                                                                                                               | हेमचन्द्र    | १८,७६,८२,११६,१८६ |
| सिद्धकीर्ति     | १६,८५                                                                                                         | हेमरत्न      | ६५               |
| सिद्धनंदि       | २०,२८,५६,६७,८५,१४२,२८७                                                                                        | हेमराज       | २३०,३३५          |
| सिद्धसेन        | १०८,१०८                                                                                                       | वरक्षिच      | २८७              |
| सिद्ध           | १३२                                                                                                           | वामन         | २८७              |
| सिद्ध           | १३२                                                                                                           | कालिदास      | २८७              |
| सुधर्म          | ६०                                                                                                            | वाण          | २८७              |
| सुधर्मेसेन      | ७३                                                                                                            | मपूर         | २८७              |
| सुभद्र          | ७३                                                                                                            | श्रीहर्ष     | २८७              |
| सुनंदिसेन       | ७३                                                                                                            | राजशेखर      | २८७              |
| सुमतिकीर्ति     | ३,७,११,२३२,२३६                                                                                                | जयगम         | २८७              |
| सुमतिविजय       | ४८                                                                                                            | पफीनि        | २८७              |
| सुरेन्द्रकीर्ति | १,४,८,९,२६,३६,४८,५६,५७,<br>७०,७७,२३२                                                                          | प्रवरसेन     | २८७              |
|                 |                                                                                                               | पिंगल        | २८७              |
| सुरचन्द्र       | २५३                                                                                                           | गोविंद       | २८७              |
| सोमदेव          | १७,५८,१६५                                                                                                     | दहो          | २८७              |
| सोमकीर्ति       | ३४,३५,४७,१७३                                                                                                  | भामह         | ३८७              |
| सोमप्रभसूरि     | ६६                                                                                                            | भइवि         | २८७              |
| सोमरत्न         | ६५                                                                                                            |              |                  |



## कुल-वंश-जाति आदि की सूची

अग्रवाल-६२, ६७, ११७, १२२, १३०, १५७, १७३, २०५

|         |                         |
|---------|-------------------------|
| गोयल    | ६०, ८२, ८५, १३५         |
| गग      | ११६, १३७, १४६, १५६, १६२ |
| वांसल   | ६७                      |
| सिधल    | ८२, २३३                 |
| इश्वाकु | १०५, १०६, ११४           |
| कायस्थ  | २५०                     |
| कामव    | ६२, १११                 |

खण्डेलवाल—

|            |                                       |
|------------|---------------------------------------|
| अजमेरा     | ४, २८, ५५, ८४, ६४, १२७, १३८, १६३, १७० |
| काला       | ८६, २०२, २५६                          |
| कासलीवाल   | ५५, ७३, ६६, २११                       |
| गंगवाल     | २०, ६६, १५४                           |
| गोदोका     | २३७, २३८, २६१                         |
| गोधा       | ७२, १२६, १३२, २०२, २३८                |
| चौधरी      | १२८                                   |
| चांदवाल    | ७६                                    |
| छाबडा      | ४, १२६, १६२                           |
| टोंग्या    | ५६, ८८, १७७                           |
| नायक       | ८६                                    |
| पाटणी      | २, ४, ४१, ४८, ५३, १४८, २२३            |
| पांड्या    | ४, १६६                                |
| पांड्या    | ६६, १०८                               |
| पाटोदी     | १७५                                   |
| पापडीवाल   | २१६                                   |
| बाकलीवाल   | ५६, १७४, १७५, २३८                     |
| विलाला     | २४५, २६४                              |
| यज्ञजाल्या | १५                                    |
| यज्ञ       | ४                                     |

|                    |                                  |
|--------------------|----------------------------------|
| वैद                | ३६                               |
| भौमा               | २६                               |
| रात्रका            | १७०                              |
| लुहाड्या           | ८७                               |
| साह                | ४, १५, १६, ६३, ६६, १३८, १६३, १६७ |
| संठा               | ४, १६०, २८०                      |
| सोनी               | ४                                |
| सौगाणी             | ४४, ७७                           |
| सावडा              | ११३                              |
| गुजर               | १३५                              |
| गोलशृंगार          | ७०                               |
| चालुक्य            | १६१                              |
| चन्द्रश्रुति गोत्र | ६५                               |
| जैसवाल             | ६५, १०१, १०५, ११३                |
| तोमर               | १७६, १८२                         |
| धक्कड वंश          | १४७                              |
| परमार              | ४५                               |
| पुरवाड             | १३८, १८०, १६३, १६६, २६१          |
| पद्मावतीपुरवाल     | ११८, १८२                         |
| बारहसेनी           | २२८                              |
| माथुर              | १५०                              |
| यादव               | १३६                              |
| राठौह              | १७५                              |
| लमेचू              | ५८, १७७                          |
| न्यामरेवाल         | १७, ३४, ६८, १४७                  |
| वाडवंस             | १४६                              |
| बोरु               | ६३                               |
| श्रीमाल            | २१२                              |
| हुं बड             | १३, ४३, ५७, २४५                  |

‘आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर, की ‘ग्रन्थ सूची’ के सम्बन्ध में कुछ

## पत्र पत्रिकाओं एवं विद्वानों के विचार

लोकवाणी ( साप्ताहिक जयपुर )—इस सूची के प्रकाशन से देश के पुरातत्वान्वेषी विद्वानों और साहित्य-कारों का ध्यान इस ‘भण्डार’ की ओर आकर्षित होगा । ... उस श्रम के लिये जो सम्पादक ने इस सूची को प्रस्तुत करने में उठाया है, हिन्दी जगत् उनका सम्मान ही करेगा ... हम आशा करते हैं कि विद्वान् इस शास्त्र भण्डार की ओर आकर्षित होंगे और उनके अन्वेषण कार्य के परिणाम स्वरूप भारतीय संस्कृति के कुछ अमूल्य रत्न दुनिया के सामने प्रगट होंगे । ऐसे प्रयत्न में सहयोग लेने के लिये ही इस ग्रन्थ सूची का उपयोग है । आमेर शास्त्र भण्डार के साथ ही इसमें श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहा-वीरजी शास्त्र भण्डार चान्दनगांव (जयपुर) की पूरी सूची दी गयी है जो इस पुस्तक की उपयोगिता को द्विगुणित बना लेती है ।

वीरवाणी ( जयपुर ) सूची को प्रकाशित कर क्षेत्र के मन्त्री महोदय ने एक अनुकरणीय कार्य किया है ... इसके प्रकाशन के लिये हम क्षेत्र की प्रबन्धक समिति के मन्त्री महोदय को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते कि ऐसे साहित्योद्धार के कार्यों की ओर उनकी अभिरुचि और प्रवृत्ति हुई है ।

ज्ञानोदय ( बनारस )—... प्रस्तुत सूची शोध विषयक कार्य करने वाले विद्वानों के लिये बहुत ही उपयोगी है । अति प्रसन्नता की बात है कि आमेर ग्रन्थ भण्डार के ग्रन्थों की प्रशस्ति भी निकट भविष्य में प्रकाशित होगी । ... सूची संग्रहीत है ।

जैन संदेश आगरा )—... पुस्तक साहित्य सेवियों और अनुसंधान कर्त्ताओं के बड़े काम की है । इस उपयोगी प्रकाशन के लिये श्री महावीर क्षेत्र कमेटी को साधुवाद है । विद्वान सम्पादक ने इसमें जो पारश्रम किया है उसकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है ।

खण्डे वाला जैन दितेन्द्र । इन्दौर — ... यह बहुत बड़ा और सच्चा सेवा कार्य है जिसे महावीर क्षेत्र कमेटी ने अपने हाथ में लिया है ।

जैन जगत् ( वर्धा ) — ... इस प्रशस्त कार्य के लिये क्षेत्र के कार्यकर्त्ता और सम्पादक विद्वान् धन्यवा-दाई हैं ।

जैन-मित्र ( सूरत )—... इनकी सूची बनने की आवश्यकता थी अतः यह कार्य श्री खिन्दूकाजी ने महावीर क्षेत्र कमेटी की ओर से उठा लिया है ... मंदिर के शास्त्र भण्डारों के लिये अवश्य मंगाइये । साहित्य खोजी विद्वानों को तो अवश्य मंगाना चाहिये ।

अनेकान्त ( देहली )—... महावीर क्षेत्र कमेटी की ओर से साहित्य प्रकाशन का यह कार्य अभिनन्दनीय है ... पुस्तक अन्वेषक विद्वानों के बड़े काम की है ।

६. वीर—( देहली )—“... सूची के सम्पादक ... का प्रयत्न सराहनीय है जिन्होंने प्रयत्न और परिश्रम से प्राचीन ग्रन्थों को जनता के सामने उपस्थित किया। ... आशा है शास्त्रों की प्राचीन प्रतियों से साहित्य एवं इतिहास प्रेमी विद्वानों को अनुसंधान में काफी सहायता मिलेगी। विद्वानों को ऐसी पुस्तकों की सूची अवश्य देखना चाहिये।

१०. जैन गण्ट ( अंग्रेजी लखनऊ )—The Mahavir Kshetra Committee Jaipur. deserves congratulations on publication a catalogue of the ancient manuscripts as old as 1334.

संवत् १३३४ तक के प्राचीन प्रतिलिपि वाले ग्रन्थों की सूची प्रकाशन के लिये श्री महावीर क्षेत्र कमेटी धन्यवाद की पात्र है।

११. डाक्टर ए. अन उपाध्याय कोल्हापुर, लिखते हैं—By bringing to light the valuable contents of the Amer Bhandar you have highly obliged the students of Indian literature and those of Jain literature in particular. It is a highly useful catalogue. It is necessary that wide publicity should be given to the contents of the Amer Bhandar and I shall do my best in that direction.

आमेर शास्त्र भण्डार के बहुमूल्य ग्रन्थों को प्रकाश में लाकर आपने भारतीय साहित्यिकों तथा विशेषतः जैन साहित्यसेवियों के लिये बड़ा उपकार किया है। ग्रन्थ सूची बहुत उपयोगी है। आमेर शास्त्र भण्डार के ग्रन्थों पर विस्तृत प्रकाश डालना आवश्यक है और मैं भी इस दिशा में सभी प्रयत्न करने के लिये तैयार रहूंगा।

१२. प्रो० रामविह तोमर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, लिखते हैं—भण्डारों में बहुत ही महत्वपूर्ण सामग्री है। इस सामग्री से आपने इस ग्रन्थ द्वारा प्राच्यविद्या अनुसन्धान में रुचि रखने वाले जगत् का परिचय कराया है। इसके लिये आप बधाई पात्र हैं। आपने बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया है और इसके लिये आपकी जितनी भी प्रशंसा की जाय कम ही होगी।

१३. श्रीदलसु ब माणत्रिया जैन कलचरल रिश्च सोंगइटी ( बनारस )—आपने संशोधन विभाग की स्थापना करके अत्युत्तम कार्य किया है... ऐसी सूचियां ही आगे जाकर साहित्य के इतिहास को लिखने में बहुत काम की सिद्ध होती हैं। इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए आपको धन्यवाद देता हूं।

१४. श्री अगरचन्द नी नाइटा ( बीकानेर )—आपने इस उपयोगी एवं महत्वपूर्ण काम को हाथ में लेकर दि० समाज में अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है। प्रशस्ति संग्रह छप रही हैं यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई। आप अनुसंधान विभाग को जारी रख जयपुर के समस्त भण्डारों का निरीक्षण करवा कर सूची पत्र प्रकाशित कीजिए एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन करवाइये।

१५. श्रीयुत प्रकाशचन्द्रजी जैन व्यवस्थापक पन्नालाल सरस्वती भवन ( व्यावर )—आपका इस दिशा में यह महान् प्रयत्न स्तुत्य है। इस सूची से साहित्य प्रसार में खासी सहायता प्राप्त होगी।



